श्रुपसेवोमी संतश्री स्वामी कीदया आरामसं
दयाकवीरसा दिवनौदयासव संतन कां
मुष्य विवादसवा जोतमुष्य विवादसवा ना

चौपई ॥ संतदास सतगुर के चरणं ॥ तिन व
दकरि सरणं ॥ जातें उपजे ग्यान विचारा
मभरम विहारा ॥ बौहौ स्यौं जगत जनम
तिन कौ निजानंद पद पावैं ॥ १ ॥ तिन व
हे धरो ॥ लोक हित पारथ नाथा करों ॥
विचपुना पो ॥ सो ब्रिचनादि संग्राब
व्यासदि समझायो ॥ व्यास व्यास करि
यौ ॥ २ ॥ सो सुषकलौ परीषत आगें ॥
पनसौं जागें ॥ सोई सूत अजइ बिस
अठ्यासी रिषमन घेरे ॥ ३ ॥ श्री भग
कनायो ॥ तातें नाम सनाप वसन राष्यो ॥
को पंपवतायो ॥ या मार्ग कौ हेतन
॥ उहा ॥ व्यासदेव जौ भाग वता ॥ भ
कथा ॥ तिनमें विवाद सकलौ ॥ भैन

तोयाप॥२०॥राजाउवाच॥चौपई॥ते तो बिप्र उग
तेसारे॥युमदान अरू से दगनारे॥बिप्रको
कायो कूपूरन॥तातें नासभये सबतूरन॥२१॥
तेननमत आपसों कून॥कोदो कृपाकरिकर
णउवन॥ऐकमनाजादवे तेमारे॥आपहीअ
पकून बिधिमारे॥२२॥श्रीसुषउवाच॥मूको भार
उतारनकाजा॥मूऔतारली यो ब्रिजराजा॥ब
हुबिधि मूको तारनतारयो॥तबमनमगोयात
बिचारयो॥२३॥जो लगइह जादवकुलसारो॥तो
लग नहीं मुभारनतारो॥ममआदी नरहे ऐसारे
तातें नजकरिवननमारे॥२४॥ इजो कोइ सके
नहीं मारे॥तातें कीजे जतनबिचारे॥उपुबहु
नहीं मारे॥तातें कीजे जतन पायथरषांदी॥
बासबटे बनमाही॥पवननमत पायथरषाही॥
२५॥आप आपमें अगनउपावे॥तास लागि
सकलजलजावे॥तोहीयेहपवनद्विजआप
कौधअगनताहीआपुही आयो॥२६॥ करिबि
सतारहीदिसहार॥ऐवहरायो कसनबिचार

सोध्याइ ॥१॥ छंद ॥ श्रीसुकउवाच ॥ द्वारावतीआ
यताहांपालकौ ॥ ताहांनदपआपकौतालक ॥
नादिताहांनंतरआवै ॥ ऋसदेवकोदरसनपा
वै ॥१॥ जीवनमुक्तजैतेतजाकूं ॥ बंध्योजीवत
जैकुंताकूं ॥ जाकौसकललोकमेंकाल ॥ जाहां
ताहांतेसदैनबेहाल ॥२॥ मानवतनईतेसोराज
इतनहरिसेवाकीसाजा ॥ बैठेतांहिब्रसुसुरराआ
ऋसनदेवसेवाकेकाजा ॥३॥ ऐसीदेहनाण
तेपावै ॥ हरिकीसेवाकुंबटकावै ॥ पलमेंकटे
कानतकापास ॥ हरकूंपावेहरिकोदास ॥४॥ ते
कबेरवसुदेवकैभोन ॥ नारदकायोंकिपाकर
गोवन ॥ तिनबहुभांतपुजाबिसतरी ॥ तापीववा
नीउचरी ॥ वसुदेवउवाच ॥ हेप्रभूजीतुमारोआ
गमना ॥ सबदेहनकौसुषकोभवना ॥ औपमा
तुमहकूंनकादीजे ॥ जेनकदरसंकलनवछी
जे ॥५॥ औरदेवदेवसुषदुषकौं ॥ तुमसेसाधप
गटप्रसुषकौं ॥ जिनकेहिरदेबिराजेरांम ॥ तिनै

तेंहोइकुनमहिकांम॥ऐसेफलदाइकसबदेवा
तेतोलहेजतीकरिसेवा॥जुंकरलेदरसनके
कोइ॥आपकरेअभ्यासेसोइ॥तुमसेसाधू
सदासुषदाइ॥जिनकीमहिमाकहीनजाइ॥
॥८॥जध्यपदरसमनयेकितारथ॥पूछेदेव
पितारथ॥जेन्नागवतधरमसुनजीव॥जनमम
रनतजिपावैपीव॥९॥जिनआचरनतुमकुंदे
व॥हरिपरसनसोभाषोनेव॥पूरबजनममेंसे
वाकरी॥मायामोहसमझनहीपरी॥१०॥तबमें
हरीपुत्रकरिबस्यो॥तादीतेंहुनहीनधर्यो॥ता
तेंअबमेंतुमरीसरनां॥ज्योकबूकरोमिटेज्यूम
रना॥११॥काहातोकहुजगतकेदुष॥जामेसुपन
हुनहींसुष॥जाहांजाहांजाइताहाहांकालु॥ह
रिबिनजीवसदाबेहाल॥१२॥ऐसेबचनसुनेज
बनारद॥तबतेबोलेपरमबिसारद॥१३॥नारदउव
च॥धनबसुदेवधनतुमबांनी॥जाकरिपूबेसारं
पांनी॥कोइहोइसकतजगघातक॥बिसनुध

रमतैरहनपातक॥१५॥ श्रवनकीरतनआदरयो
न॥ अनुमोदनउकैरसयान॥ सोपुनहोवततका
ल॥ बहुरिपरैनहीजमकेजाल॥१६॥ तुमयेहकी
यो॥ बमोउपगार॥ मोहिसुमरावोसरजनहार॥
जाकोसरवनकीरतनऐसो॥ अंधकारकोसूर
जजैसो॥१७॥ तुमसूंकहूंकथाइतीयास॥ जातै
छूटैनवकेपास॥ रिषबदेवसुतनौजोगेस॥ ति
नतसुनायोजनकनरेस॥१८॥ मुनयकैबुलपयाइ
नन्नयो॥ जनममरनसंसोसबगयो॥ अबउत
पतकहतहूंतीनकी॥ पूरनघातरामसूंजिन
की॥१९॥ स्वायंभूमुनयनृपसरताजा॥ ताकोतनयप्री
यबृतराजा॥ ताकोअंगनधसुतनयो॥ नाभ
जनमताहीतेंतयो॥२०॥ ताकेरषबदेवअवतार
जिनप्रगटायोबह्मबिचार॥ ताकेपुत्रएकसत
तनये॥ सकलबेदकेपारहीगये॥२१॥ तिनमें
बडोभरथसेनाम॥ ताकेहिरदबसतनितराम॥ जातें
भरथखंडयेहकह्यौ॥ तबऊजेनानानामतेलह्यौ॥

॥२१॥ प्रथमहीबहूतजोगऐहजोग॥समजत्यागे
पुनतीनोजोग॥मनक्रमबचनकरीहरनगत
तीजैजनमतहीजनमुक्त॥२३॥तिनमैंनवनवष
कनरेस॥ऐकरश्रसीकरमउपदेस॥नवतैमाहा
नागअधिकारी॥सबतजिसेवैसदामुरारी॥
॥२४॥तजेअनर्थअर्थबिसतारे॥याबिधिबो
हूतजीवनसतारे॥देहअतीतदिगंबरनेस॥
सदाहिरदमैंऐकअलेष॥कबाहरअंतरिबपर
बुध॥पियताइनआबरहोतसुध हमतचमसक
रनाजननाम॥इनबकायोबुलमैंधाम॥२५॥
आपआदसंसारयसारा॥सबकोंजानेसरजन
नहारा॥देतभावकोकीनोबंम॥याबिधिबि
चरैसबबहमंम॥२६॥सुरअसुरसाधगंदरबा
किंनरजषिनागनरबरबा॥सकललोकमेंअ
बयाचारी॥आमरहतसबमेंअधिकारी॥२७॥
निमसेनामजनकके[illegible]रा॥ऐकबारतनकीनही
जग्य॥रिबसीसोनतजिनकीदेह॥आवतदे

षेनरपतनबदेह ॥२८॥ राजाबिप्रगगनउठि
धाइ॥ आगेकैलेबेकंआरौ॥ कमकमआप
धरेसगासन॥ कमहाकमतेबैवेआसन॥२९॥
तबताहाकमपूजाकान्ही॥ करिकंफेतप्रदि
नादीन्ही॥ अ॰ कआभरनबसवबहुरगा॥ ते
सबसोनततनकैसंगा॥३०॥ ग्यानबिचारबुह्म
मयजैसे॥ बुह्मपुत्रसनकादिकजैसे॥ तबकर
जोरिनयोनृपमाथो॥ बोलोबचनप्रेमअतिबा
थो॥३१॥ उक्त॥ तबनृपकआनदबढेपो॥ कबुनर
हीसभार प्रेममगनकैरबोलोयो॥ बानीप्रेमरस
ल॥३२॥ बदेहउवाच॥ चौपई॥ तुमपारषदप्रभ
रजीके॥ मैजानेसबहिनमैनीके॥ जीवनकेउधा
रबेकारन॥ सकललोकमैबिचरोआरन॥३३॥
॥ धन्यमैधन्यमेरोअवतारा॥ जातेपायोदरस
तुमारा॥ नानाजुन्यजीवऐहआवै॥ मानवतन
कबहुइकपावै॥३४॥ याबिधिनरदेहबहुगदे
दुलभसाधुसंगानलहे॥ जिनसंगमिटेनवफा

था॥जैनअनंतलहेनरअंधा॥२५॥प्राननाथहरिद
रदबिराजे॥बूटेकमभ्रमभयनाजे॥अधोवन
होवैसतसंग॥तोतुकरजरातभयभंग॥२६॥
तातेंममसंदेहमिटावे॥प्रमलेमसोमोहिसुनावे
भगवतधरमहीकहोविसतारी॥जोमैहुसुनवे
अधिकारी॥२७॥जिनतेंमिटैजगतभयभारी॥व
रूरआपकहेतमुरारी॥सुनवचनसवनसुष
पायो॥तबहीमानदेवेनसुनायो॥२८॥कवीजुबा
न॥राजाप्रसनकरीतुमऐसी॥वमभागीपूछत
हेजेसी॥निरनैयहोकहेहेवा॥हरिकेचरके
वलकीसेवा॥२९॥ताकूछोफिकरेनजोइ॥ुधको
मुलहोतहेसोई॥जांहातांहाग्राह॥जांहांदुषभा
री॥कालपासकूटरनटारी॥३०॥तातेंकहो
भागवतधरमा॥मिलेरामबूटेभयभ्रमा॥श्री
मुषश्रीभगवानसुनायो॥आपमिलनकोपंथ
बतायो॥३१॥मूरषहूजोहोवेकोई॥इनपंथनहे
रियावसोई॥भ्रमनहीहोवलमनलागो॥भरम

नसासुताजीवजागै ॥७२॥ आषिमृदङ्गधावै
कोइयाहरियंषनकबनयहोई ॥ हरीकानं
गतिसबनतैंन्यारी ॥ कोटेबिघननटरनठारी
॥७३॥ हरिमितनकोमारगऐही ॥ हरिनजिमुक
तिहोइहैदेही ॥ मनक्रमबचनबुधअरुचित ॥
होइसुभावकृतजोनत ॥७४॥ सोसबहरहीसम
रपनकरै ॥ योंभागवतधरमबिसतरै ॥ जब
एहजीवहरिहीबिसर्यो ॥ तबहरकीमायाआ
वर्यो ॥७५॥ तबअपनोसरूपभुलायो ॥ आप
मानतनमेंमनलायो ॥ इतभावतबतैताउप
न्यो ॥ ताहातैएहमरिमरिजनम्यो ॥७६॥ तातेंबु
धिसेवहरिचरनां ॥ जातैमिटैजनमअरुमरनं
॥ सोधितेउतमगुरदेवा ॥ हरिकोजानकरैनासे
वा ॥७७॥ सोज्युंज्युंआचरनबतावै ॥ त्योंहीतुं
हरिसंहिततावे ॥ कपटनभजतजेसबकामी
छूटैजगतमितत्तबरामी ॥७८॥ इतकबूहैइनरा
जा ॥ अपभ्यास्योसोमनकोकोजा ॥ जेसमुषा ॥ ११

मनोरथसुपना॥मनहकारितेदोन्योतथना॥४
८दैनहींकछुयरहैसोसोहै॥ताकेसंगकागसो
बमोहै॥तोसेतबिकलनहींकीजे॥मनदहरि
बरामरसपीजे॥५०॥हरिकेजनमकमगुननामं
सुनैकहैसुरत्रजगामं॥तजैलाजहोवैनहसंग
मगनरहैनितहरिकेरंगा॥अेसेभजनतप्रेमअधि
कावै॥सबतनरोमाचितआवै॥गदगदप्रेमअ
टवटैवैना॥द्रवचितजलबरषैनैना॥५२॥रोवै
हैसतुचसुरगावै॥कबकुमुनगहरहजावै॥लोक
बेदकुलकाजनजानै॥ज्युंतनमतबिन्नसयुं
वानै॥५३॥दसुंदिसपुरतसिंधुनगनंगा॥रबिससि
सतारहंसअरकागा॥षितजलपावकपवन
अकासा॥ज्योंकछूदेषेजोहरिदासा॥५०॥हरि
केरूपसकलमेंजानै॥जाहाताहांपरनामहि
वनै॥कबहजुलनन्यासेआनां॥नहोअ
ननभजेभगवाना॥५५॥ज्युंज्युबटेअसनग्रा
नुरागा॥त्योंत्योंओरसकलकोत्यागा॥त्यों

नीर॥१५॥अंधकारजबरूपदीहरै॥तेजतपपव
नहिसंचरै॥ब्रह्मसुंसपरसहिहरै॥आकास
पवनकरतबनअमयवास॥१६॥कालका
योतबसबदहिषीनं॥तामसअहंकारनभली
नं॥तामसअहंकारमनमिलै॥राजसअहंका
रदोऊमिलै॥१७॥इसीबरूराजसअहंकारहि
संतकुअहंकीन्हो॥आहारहि॥बुधिदेवसातअ
हंकार॥मंततवकीन्होआहार॥१८॥महंतत
सोप्रकतहिमिलै॥याबिधिकालसकलकू
गिलै॥औसीहाबिधिबारंबार॥उतपतप्रलै
अनतअपार॥१९॥ऐहसबहरकामायाक
रै॥उपजावैप्रतपालतहरै॥मैतुमकूसषेपसु
नाई॥ब्रह्मस्योकरोप्रसनमनलाई॥२०॥दुहा
औसीसुनमायाअपरबल॥उपज्योनृपकै
चित्त॥तबपूबीआधीनकै॥तातरवेकैरीत॥
२१॥राजाउवाच॥चौपई॥औसीअप्रबलईस
कीमाया॥जीनएदसकललोकनरमाया॥

ताकूंतुमसेगपानीतेरो॥हमसेदेहाकुंनसत
रो॥२१॥ताकूंसुषहीनरयेदेवा॥सोकौकिपावै।
तावोसेवा॥ऐसुहिवचननृपकेसुधा॥तनवे
लेचोथेप्रबुधा॥२४॥प्रबुधिउवाचा॥सकल
मनषसुषनकेकाजा॥करकेमआरंनही
राजा॥तिनकेवलडुषअधिकारा॥अवहूं।
आरूआगेंविसतारा॥२७॥पाइडूधनडुषअ
पारा॥निसदिनचितताकोअधकारा॥सोतु।
अतिडुलभनहीआवे॥जोआवतोघरनर
होवे॥२५॥सुंदीकुटंबगिहसुतदारा॥पलक
माहिटहजाइपसारा॥जोपंथमाहिमिलानो
होई॥घराकमाहिविवरैसवकोई॥२६॥जेक
भूयाहेकेमकूंमावे॥तिनतेंजुन्यअनतडु
षयावे॥इनमकोईनहीवनावे॥आपुआ।
पुकूंसवकोईजावे॥याहीविधिनसुरवलो
का॥थेरनरहाविधिकोओका॥गोटवकेनी
चबहूभांती॥तिनकेमनकांमिटीनकातीरहा

१९ मधमछरअरुचाहमानो ॥ कामक्रोधग्रस
तो नसमाना ॥ विसनाबंधेकडूनहींजानै ॥
आपुआपुमैंजुघराबानै ॥ १९ ॥ कालहीपाइ
बाहातैंपरै ॥ बहुरिआययाहाअवतरै ॥ युवि
चारबैरागउपावै ॥ तबहीसोधिगुरसरनही
आवै ॥ २० ॥ सबदब्रह्मसबनसोंगावै ॥ पारब्र
ह्मनतहिरदैराखै ॥ ऐसेगुरबिनग्यानन पावै
तातैंसोधिगुरुपैआवै ॥ ब्रह्मजाननतासेवांग
नै ॥ आतमसकपटकामनाजानै ॥ तातसीखे २
नजातिकेअंगा ॥ जिनतेहरजातजनसंगा
॥ २१ ॥ सबतैंमनकोसंगमिटावै ॥ नुलटसाध
संगतिमनलावै ॥ अरुदीननपरिकरनाआ
नै ॥ समभमित्रताउत्तमबहोमानै ॥ २२ ॥ सोचयाव
तपमुनततपा ॥ बहुबिधिजेवैगुरसैंसिषा
ब्रह्मचरजअरुकोमलरहनां ॥ हिंस्यात्या
गिडदसबसहनां ॥ २३ ॥ रेकोएकीआस
पनहीबाधै ॥ बसनटूकैकेबलकलसाधै ॥

जहांतहां चेतन आतम है सो ॥ [illegible]
सो १९ ॥ ग्रंथ न गत का सरधान रै ॥ [illegible]
ब परहरै ॥ देह न चन अरूग [illegible]
दम सत संतोष न हुं भौ ॥ १७ ॥ [illegible]
गुन हरजी के ॥ सदा सुजन [illegible]
हा कहन रंतर ध्यावै ॥ [illegible]
भावै ॥ २० ॥ जपत प जोग [illegible]
न धन सुत दारा [illegible]
हर न बेद्दा ॥ या विधि सक [illegible]
२१ ॥ थावर जंग मदूरं [illegible]
धुन कावांने ॥ [illegible]
जिस दन कहत सुनत सुप पावै [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

राजा सुनौं क्रम गत गहनां ॥ जातें जंतु है बैन
न कहनां ॥ ये हु ज्यों है त्यों वेद बषानें ॥ तातें
याहि न कोई जानें ॥ १८ ॥ वेद प्रगट कर्ता
हरि देवा ॥ रिष अरु पुरष लहैं क्यौं भेवा ॥ जे
व लहा बिन मिटन मरनां ॥ लहैं भेव या बह
रि सरनां ॥ १९ ॥ तातैं तुम बोले तब बाता ॥ ता
तें कर्सो न क्रम बिसाता ॥ अब मैं कहूं सु
गां नौं चित लाई ॥ जानें जा हि न अधिकाई ॥ २० ॥
क्रम जोग है तीन प्रकारा ॥ क्रम अक्रम क्रम वि
पसारा ॥ हरन मति सो कही ऐ क्रम ॥ हर बिन
सो सकृत बिक्रम ॥ २१ ॥ सो अक्रम जो है
उत्या गे ॥ ग्यांन बिनां सु बयां हां न त्यागे ॥ क्र
म कृत बूटें सब क्रमा ॥ उपजें ग्यान मिटें जव
न रमां ॥ २२ ॥ करम तजन कहें क्रम गहां वैंता
तें बेदन सम ज्यौ आहे ॥ पहलैं सुरगादैं फ
ल ना षें ॥ आगें सक कल हरि करि ना षें ॥ २३ ॥
जो कोई बाल करो गा हो वें ॥ औषद क

टूकनामसुनरोवै॥ ताकूंताकुंपितादिषा।
वै॥ओषदकाजतोनउपजावै॥८७॥ओ
षदकोफलताकुंनांही॥ओषदपियेरोग
सबजांही॥ज्युंसुरगादिकलोभदिषावै॥
करमनासकोक्रमकरावै॥८५॥ सुरगा
दिकफलपुहयतबांनी॥तोरेपोहयहोइ
फलहांनी॥ताेकरैबेदकेक्रमा॥हरिके हि
तबधोयहधरमा॥८६॥ओरकछफलनु
लनजांनैं॥हरिकेहेतक्रमसबठानैं॥भेंकर।
तायुंकदेनभाषै॥ज्योंकबूहैसोहरकोक
रिराषै॥८७॥याबिधिप्रेमजगतउपजावै॥
तबसबक्रमआपुहीजावै॥तबहीप्रगटै
ग्यांनप्रकासा॥मिलेरांमछूटैभवपासा
॥८८॥बेदकपंथकलोभेतुमसूं॥अबसु
नतूंपंथ्यपुनभोसूं॥हिरदैगांठिकाटीजो
चाहै॥सोविधिसूंपूजाअवगाहै॥८९॥
बेदमिलतनाथतरूपूजा॥जातेंमिटसंत।

नुमहजा ॥ श्रीगुरतैंपरसादहिपावै ॥ जोज्यो
ज्योसबबिधिहिबतावै ॥ ९० ॥ जागुरतपरि
२बयाहोई ॥ हरहीजानकेपूजोसोई ॥ अत
पवहोइकरैसनाना ॥ मनकीतजैबासन
नाना ॥ ९१ ॥ बाहेअपानठीकजमुहाई
औरपवनगुनउठेनकाई ॥ सनमुषबैठेकरै
तनरषा ॥ अंगन्यास[illegible]करपदिअंषा ॥ ९२ ॥
आसनसोधिसुंजसेवाकी ॥ मबलेबैठेत
जनवाकी ॥ बिसनरूपप्रतामामजानै ॥ अ
रघपावअरू बिसदरगानै ॥ ९३ ॥ मूलमंत्र
चै करिपूजाकरै ॥ औरनकछूउचरै ॥ सकलअ
हरजीकूंध्यावै ॥ संषचक्रगदापदमनीला
वै ॥ ९४ ॥ भुषनवसनपारषदसहिताह
सतबदनदेषतदुषदहता ॥ बिवधतांतसना
अ नकरावै ॥ करितिलकेदैबसत्रपहरावै ॥ ९५
॥ बहुसुगंधमालापहरावै ॥ बहुतभांति
करिभोगलगावै ॥ गंधधुपआरतीउसतो

रे॥॥घटाआरतीसबदबिसतारै॥९६॥या
बिधिमत्रनस्तसबकरै॥नामीवअसतुत
बिसतरै॥बहोरिकरैमोस्तप्रणांमा॥पढैमं
त्रवेदरनांमां॥बाद्रबसतमितेतेआ
नै॥औरनिमतसपूजाठानै॥तनमयनये
नरंतरसेवै॥माद्प्रसादमाथकरिलेवै॥९८
बहुरिदेवकं हिरदेधरै॥मूरतनपिटारकरै
याबिधिहरिकैआतमजानै॥जथासकत
सबपूजाठानै॥९९॥ऐसेसेवतउपजेग्यं
न॥बेगहीजानमिलैभगवांनं॥१००॥दुहा॥९६
सुनबचनबदेहके॥बाढयोमनमेंप्यार॥तब
बगुनअरूक्रमनसहत॥पूछेहरिअवतार
१॥इती श्रीभागवंतमाहापुराणऐकादसकंधे
बसुदेवनारदसमाधेजायते॥त्रीतीयोध्याय॥
३॥राजाउवाच॥चौपई॥अबओतारकथा
बिसतारो॥गुनअरूक्रमसहतउचारो॥जे
जेलीयेतहैगेआगे॥अबहूसबभाषोअ

नसबहरिकोंकियोप्रनामा॥ तान्हीएकउरबसी
नामा॥ करिप्रनामसबबारंबारा॥ पहूंचैसु
कलइंद्रदरबारा॥२७॥ तिनइंद्रहाप्रसंगसु
नायो॥ बिसमयउोमइंद्रमनआयो॥ बहु
रिताकोहंसाअवतारा॥ चारिनारीसनंन
कादिकुवारा॥२८॥ दत्तकपुउअरपिताह
मारा॥ आगेंरूपब्रह्मबिस्तारा॥ हयग्रीव
मधुप्रानन्निवारे॥ ताकरिहरिबेदउधारे
॥२९॥ मत्यब्रतराजाहरिजानि॥ ताकूंहरजी
कीयोबिरक्तिी॥ बिनहीप्रलयदिषलायो
मंछरूपग्यानहिसमझायो॥३०॥ बहुरिबा
रारूपहरिधार्यो॥ हिरण्याषअतिदुष्ट
हीमार्यो॥ बोरीकृतीमहीजलमांही॥ सोउ
परिधारीपलतांही॥३१॥ कूरमकोभेदगिर
धर्यो॥ अमृतकाटिसुरकारजकर्यो॥ प्र
हलादराजदुकार्यो॥ तबहरजीतत
कालउबार्यो॥३२॥ बालखिल्यादिकजेरिष

राजा॥ अगुण समान ओंकार बिराजा॥ क
स्यपके काजे ऐक बारा॥ इ घनकों तेब ना
हिपधारा॥२३॥ तहागाइके पग जल नरी
या॥ तिनमें आप आप सबपरीया॥ हंस
करे इंद्र तहा धरे॥ तबतिन दिरदे हरि सं
भरो॥२४॥ जब आत्मको कोई नांही॥ तब तु
मनाथ उधारन मांही॥ ताते हम अब नये
अनाथा॥ करूं ना सा धुंग दोक रिहाथा॥
॥२५॥ इतनी सुन आरतकी बीना॥ तांहा उ
विधा इसारंग प्रांना॥ तब हर कर गहस ब
उधारा॥ बाल बिल्या उकार न अवतारा॥२६॥
ब्रह्म दित्या न यइद्र संभार्यो॥ तब तब हर जी
प्रगट उधार्यो॥ सुरबनिता जब असुर नह
री॥ तब ते हर सरनहि अनुसरी॥२७॥ तब
हर जाते सकल उधारी॥ असुर मारि सब
विबपत निवारी॥ पुन नरस घ रूप हर धा
र्यो॥ अरु सुरहरनाकिस्प जिन मार्यो॥

१५॥ जनप्रह्लादतादहिलीन्हौराषी॥ जाकाप्र
गटकह्सबसाषी॥ जबजबअसुरअपर
बलअतान्नरो॥ देवनकेअसतलहरिल
रो॥ २॥ तबतबसबनंतरमाही॥ बिसुक
लाअवतारधराही॥ मारिअसुरसबदु
षमिटारे॥ सरनागतसुरनरसुषपारे॥ ३॥
॥ बावनरूपइंद्रकेकाजा॥ भैषपाबलि
बलीयोबलराजा॥ तीनलोकलेइंद्रहिद
ए॥ बलकोभक्तिआयबासीनए॥ ४॥ ब
हुरिअधरमीउपजेराजा॥ परसरामप्रग
टेतिनकाजा॥ इकीसबारकरानिछत्रीता
नभवनमेंकहूंनबचा॥ ५॥ बहुरिनएद
स्थसुतरामा॥ जेहैप्रगटलोकअभिराम
साइरउपरसलातिसतारे॥ रावनआदिदु
ष्टसंहारे॥ ६॥ आगेरामाकिस्नअवतार
भूकोप्रबलहरगेभारा॥ जउकुलंजनम
कमतेकरिहै॥ जिनसंगलागीजीवनसतरे

दे॥ ७७॥ असुरदेव जगनके करता॥ जीवन
मारिउदरते भरता॥ बुधिरूपहरजीतबध
रहै॥ जिपानि दयाबंकबि सतरिहै॥ ७५॥
बहुरघर गेकुलंकरूपा॥ अतिअपरा
धकरहे जबमूपा॥ कुलके अंतसकल
संघरिहै॥ बहुरप्रबृतसतजुगकरहै॥ ७६॥
औसे बिस्नकेअवतारा॥ कोइकिहतन
पावपारा॥ कहूएकभेतुमसं कहे॥ और
र अनंतकोटि अनेतिनरहै॥ ७७॥ इनकुक
हे सुनजो गावै॥ प्रेमसहतनसबासुरध्या
वै॥ सो भोसागरमनहीरहै॥ पावग्यानप्रम
पदलहै॥ ७८॥ ऐबैनासुनकुमलमकेका
नोयुसनिरंद॥ प्रभुजी तनकाकोनगत॥
तेनन जेणो बिंद॥ ७९॥ इतीश्रीभागवतेमाह
पुराणे एकादसकंधे बसदेवनारदसमाधे
इतेजोदापरवर्नेनचतुर्थोध्याय॥ ४॥ बदेहु
वाच॥ चौपई॥ जेनकरेहरजीकासेवा॥ ति

पनि कहोक न जाति देवा ॥ तिनकै तिरपतन
पन आवे ॥ निसदिन ति मना ॥
वै ॥ २ ॥ परजो बहु विधि कमउ पावे ॥ तो
मोहि कहो कब सुख पावें ॥ एक हो बच
जब नजन कै रहे ॥ अहमचम सनामतब कहे
॥ चमसतुबोव ॥ हर जी वि प्रबदन तें करे
न बाहु तैं बग्रा हि सतरे ॥ जंगन तें बैसउप
जा रो ॥ सुइ ति मै चुरननतें आ ए ॥ धोया
ही नाति कायो आसमी ॥ तातें नजनसा
बन को धमी ॥ ते आपही क प्रतिपाल
॥ आपही पोषै दीन दयाला ॥ ५ ॥ गैसे प्र
भु कं जे बीसरे ॥ ते अपराध आपतें करै
तेही गुरद्रोही पिंड द्रोही ॥ स्वामि
द्रोह कृतघन वो ही ॥ ६ ॥ तिन अपराधन
धिगत जावे ॥ कब हु नु सुष नही पावे ॥ सु
के जो षता गंत जआद ॥ तिनकु द्दृ रि कथा
श्रवनादि ॥ ७ ॥ ते मनम अभिमान न धरै

तातैंतुमसेंक्रिपाकरैं॥ यातैंइनकोहोइअनु-
धारा॥परउंचनकोवारनपारा॥७॥बिप्रछ-
त्रीबैस्यरुबरणा॥उपरआदिवेदविधि-
करणा॥इनसबहिनकेतेअधिकारी॥ता-
तेहोइहैवोहोतअहंकारी॥८॥तातैंपर-
जनकूंजानैंनांही॥योहपतिबानीमन
रमाही॥बिसनभगतउत्मअधिकारा॥पर
योताहिनलषैगिवारा॥१०॥क्रमअक्रम
बिक्रमनजानैं॥अतिकठोरआपहिबडु
मानैं॥हमपंडितजगनकेकारक॥औरब
हुतक्रमनबिसतारक॥११॥आपनमैंबो
रनभीवै॥ध्रीगेबानीबहुभांतसुनावै॥क
मैंअरुअर्थअर्थेकरमानै॥पढिपढिवे
दसास्त्रबहुआनै॥१२॥बहुसंकलपकरम- प
नमांहीं॥बहुतदहतआरंभनकरांही॥त्यौं
हीत्यौंराजसअधिकारा॥कामक्रोधलो-
भअहंकारा॥१३॥दंभकपटचतुराईथै॥

नै ॥ हरि भगतन की हासी गनै ॥ आप आप
मित बैठे जब ही ॥ ग्रिह के सुष न सहै हैं तेब
ही ॥६०॥ जन मन आन दिखन नांही दंभमा
न सो जग करावै ॥ बहु रूप सुन मार अपा
नी ॥ तिन अपराधन अधगति जानी ॥६१॥
इत नौ धन आयो यह ग्रहै ॥ ऐतो मित इतो
तब कहै ॥६२॥ कुल संपति बिद्या कुल करा
ई ॥ त्याग रूप बल गर्व बडाई ॥६३॥ इनको
मद बढयो अधिकाई ॥ ताते हरि द समक
न आई ॥ हरि भगतको गनै हासी ॥ मग हर
मरैं बाक फल कासी ॥६४॥ थावर जंगम सब
घट मांही ॥ हरि पूरण षाली कहुं नांही ॥ जु
आकास लयत नहीं होई ॥ जु हरि बिद क
हत है सोई ॥६५॥ परबै मुढन कबहु जानै
ताते हरि भगतन नही मानै ॥ बहुत मनो
रथ निस दिन करै ॥ त्रिस्ना ताप जल नही
टरै ॥ मदपान अरु मास आहारा ॥ नारी

नेहसहतजगसारा॥ तासकलत्यागनिम
ता॥विधिसेवेदतगावै चिता॥२२॥संगकरे
तोनारिविवादी॥ताहमेंबहुततघनादी
कै कहककहदेवरतादानो॥प्रज्ञानमतचि
तनहीआनो॥२३॥या विधिक्रमक्रमवहुत
बुझावै॥ बहुरवेदसबत्यागकरावे॥ऐ
सेहीआमषअरूमदयानो॥जगपमादि
कहूं [illegible] नहीआनो॥२४॥बहुरुउहांकु
तेभुमावे॥ऐसोतातपरजकोपावे॥ दूरका
सरनहिआवेकोई॥सारीविधिसमझेगा
सोई॥२५॥क्रेतोतिनकासरनहीआवे॥अ
भप्रायसारोसोपावे॥वेहरिजनअरूहरः
हिनजाने॥आयहिकूंपदतकरमाने॥२६
तानतातपरेजनहीजाने॥पढिपढिवेदअ
नधिराठाने॥घनऐसोजोकरेउधारा॥सो
धनषोवविथागवारा॥२७॥जोधनहरिकेका
जलगावे॥सोतवप्रेमनगतकूंपावे॥

तातें होइ ग्यान प्रकासा॥ तब हरि मिलै मिटै भव पासा॥२८॥ ऐसो धन ते मुढ अयानां॥ देह काज बोव भरमाना॥ काल निरंतर हरत न देषे॥ बहुत मद मत हरि करि लेषे॥२९॥ मद्य मसा जीग मग्यानी जे॥ और सुत कहुं नावन ताजे॥ तई कुआप तें अग्याना॥ षान पानें तें अधगत जाना॥३०॥ त्यो बिनता रत दान हि रहै॥ और सुत कहुं नावन लेवे॥ सो उजो लग एक सुत होई॥ सुत के चरण त्यागी एसो ई॥ ऐसो सकल बरण को धरमा॥ ताको सुलन पाव मरमा॥ मरम हीन सुरत मत बषानै॥ मुरष आपही पद तमानै॥३२॥ तातें बहुत करम अग्यानी॥ ईर्षा यमन हि करे नष नै॥ द्रोह कर बहु जीव न मारे॥ ते बहु जनम तनही संहारे॥३३॥ थावर जंगम सब घट माही॥ एक हरि जो कहु नाही॥ तिन को द्रोह करै तिन पोषै॥ दारा सुत न ग्यान संतोषै॥३४॥

नहीमुरषनहीं तत्वग्यांनी॥ पढियढिग्रघदो
इअभिमांनी॥ तेअसाधरोगीसबजांनी
तीनसूंग्यानन में केग्यांनी॥२५॥ तेसबकरे
आपनीघाता॥सुपनहूनलहकुसलाता
कर्मपंथमसुषकूचाहे॥इम्रतदेकरबिषे
बिसावहे॥२६॥नानातापतपततेरहे॥करे
मनोथिफलनहीलहे॥बहुतन्हातक्रमम
करनुपजाए॥सुतावितदारासकतमन
नाए॥२७॥तिनसबदिनकूबोफियादीहा॥
बंधेआपजमद्वारेजाही॥जमकेहूतनरक
भुगतावे॥ताहाकेडुषकहेनहीजावे॥२८
तिनकूकुनहिराषनहारा॥हरिरबकसो॥
नाहिसन्नारा॥काहाकहूकबूकहीनजा
ही॥दरबिनकहूथलकसुषनोही॥२९॥दु
॥चमसर्बचनसुनभुयको॥वदयोत्रास॥
अरूप्यार॥तबजुगजुगकोपूबायो॥ह
रिकोनजनप्रकार॥३०॥राजोउवाच॥

कौन समक सै अवतारा ॥ कैसो बरण नाम
आकारा ॥ कहि विधि जे बरण आश्रमां
कौ हो ध्यान के साधन धर्मा ॥ जिन तें ग्यां
न लहे सब त्यागै ॥ नित हरि चरन कमल अ
नुरागै ॥ सुन त्रय बैन भ्रमत के भाजन ॥ त
ब बोलै नव मकर भाजन ॥ ६ ॥ करभाजन उवाच ॥
चौपाई ॥ तत चेता द्वापर कलि काला ॥ बा
हूत नात न जा ए गोपाला ॥ बहु बिधि बर
न बहुत आकारा ॥ बहुत नाम बहु नज
न प्रकारा ॥ ७ ॥ सत जुग सुकल बरन भुज
चारी ॥ सीस जगत नवल कलधारी ॥ कं
वज नउ कर जप माला ॥ दंड कमंडल अ
रु सय बाला ॥ ८ ॥ तब मुन षट हो व सब सु
धा ॥ सब नर खौं हि रदै प्रबुधा ॥ अस्य क
र ईडी यम न प्रानां ॥ करे सब त हरे को ध्या
नां ॥ ९ ॥ हंस रूप धर्म जोगेसर ॥ निरमल
परमातम अरु ईस्वर ॥ पुरषोतम बैकुंठ

अबिक्ता॥ तिनकै नामहोरहैबिक्ता॥७६॥र
क्त बर्ण त्रेताजुगमांही॥ त्रैगुनमैबलागलु
पदरोहा॥पीतकेसौसुबर्णुकहाय्या॥रिगु
जुगस्यामशरीरमैनाय्या॥७७॥तबातिनहित
जग्यादिककरैं॥बेदबिहितक्रमनबिसतरैं
सर्बदेवमैहरिकुंजानैं॥तबसबयुंदरिसे
वाठानैं॥७८॥स्त्रिगमैश्रग्रायकहोजै॥
ब्रिसनबृषाकपिजग्यमनीजै॥सर्बदेवउ
रक्रमीबिजश्रंत॥ऐसेनामकहेसबसं
त॥७९॥द्वापरश्रतबिस्नुघनस्यामा॥संषा
दिकश्रायुधिश्रभिरामा॥चारिबाहश्र
गुलताधरमा॥लषमीचहंनबस्तश्रान
रना॥चवरछत्रश्रादिबहुसेना॥महा
राजलषनसुषदेना॥बेदतंत्रपंथसेवा
करैं॥सबश्राग्रयनपूजाबिसतरैं॥८०॥
बासदेवसंकर्षणदेवा॥प्रद्युमनश्र
नुरूद्धश्रभेवा॥नाराइनजगवंनश्रनं॥

तो ॥ जिनको कोइ लहन अंता ॥५१॥ विश्व
रूप विश्व सुरस्वामी ॥ सबै आतम सब अं
तरजामी ॥ बहुत भांत अस्तुत बिसतरै
बिधसूं पूजा सापुर करै ॥५२॥ कलिजुगमुनी
तपी तं बरधारी ॥ क्रस्नदेव घनस्याम मु
रारी ॥ सहत पारषत बहुरूपा ॥ नारनां
श्रवन कीरतन पूजा करनां ॥५४॥ इन्द्रीम
नबो हीन रे विकारा ॥ तिनतैं राषे चरन तु
म्हारा ॥ सब बिधि सब तारयको बासा ॥ सु
मरत ही पुरवै सब आसा ॥५५॥ शिव बिरं
च सुर नर मुनी ध्यावै ॥ जाको भेद बेद न
ही पावै ॥ राष लेत सरन जो आवै ॥ जनमम
रन सब दुष मिटावै ॥५६॥ केवलदी नहो
तउकारहि ॥ भवसागर कै पार उतारहि
ऐसो चरन तुमारो गायो ॥ ताको सरन
दीन मैं आयो ॥५७॥ अतिउ प्रकार सुरब
ठक जाको ॥ ऐसो राजबोमि करिताकों

दस धिम्रगतिबचनसत्करनं॥ बनक्
गवनकीयोतिनचरनं॥५७॥ हेमम्रयदे
तामनमायो॥जोताकेपीबेउबघ्यायो
॥जोजगतकेपुआधीना॥ऐसेचर
नसरनमेंलीना॥५८॥ ऐसीबिधिक
लिमसततकरै॥ बहुबिधिनामहरी
उचरै॥सुनेकहेंसुमरेंअरूध्यावे॥तत
तकालतत्वकूपावे॥५९॥याबिधिजे
हरिसेवें॥तिनतिनकूहरपानदीदेवें
गयानपाइनिजतत्वसमावें॥ जहेजाइब
हुरनहींआवें॥६०॥ जेकलिजुगकेगुन
कूजानत॥तेबहुबिधिसतुतकवानत
॥जेसोपरमसारकलमांही॥ऐसोऔ
रजुगनमनांही॥सतजुगध्यानजगते
तामांही॥द्वापुरपूतामापूजाआही॥क
लिजुगकेवलनामादिक्कगावे॥सोसे
फलततकालहीपावे॥६१॥यानवसाग

रमाहिनिरंतर॥ दुषतजीव परैनहीं अंतर
तामैंहरगुननामउचारन॥ एकजीहाजस
कलिकौत्यारन॥६३॥ पापअपारघोरक
लिमांही॥ जामैपुन्यलेसकहूंनाही॥ तामैं
जेहरगुननउचार॥ तेतरैआपऔरकं
त्यारै॥६४॥ तेकैतकततेई बडभागा॥ जे
कलिकारतहरिअनुरागी॥ आपसुम
रिऔरनसुमरावै॥ तेजुगजनमबहुर
नहीं आवै॥६५॥ सतत्रेताद्वापुरअवतरही
तेकलजुगकीबंछाकरही॥ कलिकब
साधनऔरसुमनाही॥ हरिगुनगावततरै
रहीसमाही॥६६॥ औरकहूंकहूंकोई
देसबिसुवा॥ द्रवाडदिमानवतहांबुधा
जेउपजतेभगतहाकरै॥ तातैंताहाबहु
तउधरै॥६७॥ औरजांहांतामरपरलीकृत
माला॥ कावेरीपयसवनीबिसाला॥ पो
रसुरसतीपंबमबहनी॥ गंगाआदिहरत

सुर्दहनी॥६८॥जे मानव पीवं जल इनकौ॥
हरहै इहिरवय मलतिनकौ॥ ते सबिता
हो इहरि भक्ता॥साधुसंग होवैं आसक्ता
॥६९॥नु तक टूब पित्र रिषदेवा॥इनकैं रिन
करैं सबसेवा॥सोनरैनीऊ नहीं सेवै॥
करैं जो सब तजि हरकौं सेवै॥७०॥जो बिधि
तजि हरिचरनन आवै॥तिनकैं मलहरि ह
रि बुसावै॥ब्रह्म हरि मत उपजन कोई॥उ
पजक देहरै हरै सोई॥७१॥तातैं सबविधि
कौ फलता का॥गहीऐ हरपद बाधि अने
का॥सबके प्रभु सबही सुषदाता॥भरना
गत पातन विष्याता॥७२॥जब जब जो जो
सरनहीं आयै॥तबही तबही तिन हरि
पायै॥तातैं और सकल परहरी ऐ॥श्री भ
गवान चरन चित धरीऐ॥७३॥ऐसे सुनन न
वहूके बैनां॥जनके हिरदै अत उपज्यो।
चैनां॥संसौ मिट्यो सकल भ्रम भाग्यो॥ब

रिबिसतार॥७६॥ इती स्री भागवंते महापुराने
एकादसके थेबसुसेव नारद समाद जायते ओ
पाख्याने पंचमो ध्याय॥५॥ स्रीसुक उवाच॥ मै
त्रेय हरि सुनो नृप आत्म विद्या जा कजा
ना मिटे अबिद्या॥ मिटे अबिद्या ब्रह्म दिपावे
ब्रह्म पाइ फेर नहीं आवे॥१॥ ब्रह्मा
सिनकादिक संगा॥ नारद आदि रंगे हरि
रंगा॥ सक्र प्रजापति चतुर्मुख आदिक मा
हादेव लोकेस्वरादिक॥२॥ सुर समुद्र
गले सुरपत॥ पवन अस्वनी सुत गृहपत
बसु गंगेगेरा रुद्र तुं देवा॥ साधादिक गरु
विस्वदेवा॥३॥ रिष गंदरब पित्र अरुनाग
चारन सिवा भरै अनुरागा॥ अपसर
गुप्तादिक बिद्याधर॥ किंनर जक्षादिक
मायाधर॥४॥ कस्न देखवे कारिज सारे॥
नंद तब द्वारका पधारे॥ केई नाचे केई गावे
केई बाजत्र बहुत बजावे॥५॥ केई जयजं

सबदउचारे॥केईकिरनजसबिसतारे या
बिधिकरैबहुतऊबा॥मगनभएहरिप्रे
मप्रवाह॥६॥श्रीभगवानमनजुतनधा
री॥दरसनसबमनहरनमुरारी॥लोकन्ह
मंजसहि बिस्तारैं॥श्रवनादिकनसकल
अघजारै॥७॥धन्यारिकपूरनवारावती॥
जाकीसमनहीअमरावती॥तामेब्रह्मादि
कचलिआए॥अकिरनदेवकेदरसनपा
ए॥८॥सुरगबुबफुलनकीमाला॥बादत
कीन्हादीनदयाला॥पावतदरसतरयतन
हाहोवे॥चित्रलबेसेसनमुषजोवे॥९॥ चि
त्रबदनबहुअसतुतिकरै॥उत्तमअघि
नजसबिसतरै॥सहतबीनतीअरूपर
नामा॥दरसनपाएसबपुरनकामा॥१०॥बदेह
॥हेप्रभुचरनसरोजतुम्हारा॥मनक्रमब
चनाचितअहंकारा॥ईद्रीयब्राबुधिप्रान
अरूदेह॥बदतेहैहमप्रगटएहा॥११॥जा

कौप्रानबचनमनसाधै। सावधानतीसदि
नआराधै॥ नावसहतअमेअतधावैं
तेउयाविधिप्रगटनयावै॥१२॥ धन्यधन
हमधनभागहमारे। प्रगटदेषेचरनतु
म्हारे॥ जीनकेध्यानकोरतनस्रवनां॥ ब
रनहोवआवागवनां॥१३॥ तुमअवैत
वैतयहकरो॥ अपनीमायासबबिसत
रो॥ तुम्ही [illegible] मेउपजेसंसारा॥ सदारहतुमरे
व आधारा॥१४॥ तुमहीमाहिलीनसौहोइ॥
कोउतुमकौपरससकै [illegible] नाही॥ रागरहत
आनंदसरूपा॥ अजितअमितअविद्रुय
अनूपा॥१५॥ बहुघे [illegible] यनस्रवनअरु
दांनां॥ कियाउपासनतपअसनानां॥
त्यागजोगमेघ्यपादिकजोते॥ आतमसुष
[illegible] करनहीसोते॥१६॥ तुवगुनस्रवनन
परतअघनासे॥ जुतुममाहिसुरप्रकासे॥
जातेजनमकर्मतुमधारो॥ दीनबंधदी॥

ननउधारे॥१७॥जोतुमचरनकवलमुनी
ध्यावे॥ नवनैयमीतनपलछिटकावे॥ओ
रनिजन्नगातिनैरंतरसेवै॥नयनहीसमभै
नहीकहूलेवे॥१८॥ग्रसोंकेवेदजिमता
हिरदैधरतोचरनहिवैतां॥वहूरऐकसे
वसहकांमा॥ऐकमनऐचाहनहंकामां॥१
९॥जीवनमुकतमएऐकसेवे॥प्रेमभाव
सोग्रतसुखलेवे॥ऐकजप्पादिनसनजे
॥सुवदेवमंतुमकंजं जे॥२०॥ऐकवर्णाग्रा
दिग्राश्रमो॥तुमरेहेतकरसवधर्मो॥ऐ
कऐकरूपकरिध्यावे॥द्वैतनावकहून
हीत्यावे॥२१॥ऐकतुम्प्रतमाकोसेवे॥ ऐ
कनामनिरंतलेवे॥ऐकसुवनकारतन
ध्यानं॥कालगकहिएंबिधिनानं॥
२२॥सुजेजेतुवचरननसेव॥तेतेसववा
वतफललेवे॥सोतुवचरनप्रगटहमपाये
तातेंग्रवदीजेमनभाये॥२३॥येहहमवे

भेव॥३५॥ सोलसहसगोकसत आगे॥ जे
नकैहिरदैप्रेमअधिकागे॥ हावभावसु
प्रीतबढावै॥ मदनबानबानबहुनातिच
लावै॥३६॥ तुमतोसवसहीवोनांही॥ तिह
चेतनजानदपहमांही॥ औरकोमैहूबै
वेकोई॥ कामबासनाबंधेसोई॥३७॥
ऐसेनदीप्रगटतुमकीन्ही॥ जिनकोमहं
मापरनचीन्ही॥ एकगंगचरननकीनीर
परसतनमैलकरसरीरा॥३८॥ दूजीतुव
कीरतकीसलता॥ त्रिभवनजहातहाबि
सतरंता॥ स्रवनकरतअंतरमलनासै॥ नि
मलहिरदेब्रह्मप्रकासे॥३९॥ ब्रह्मप्रकास
नवभयेनाही॥ वेरेएकमेकमिलमांही
इहैनदैभजेपंकत॥ तेनकुर्कलकरैन
हीखंडत॥४०॥ तातैनाथकृपाअबकाजे॥
साधुसंगहंमकहुनितदीजे॥ जिनमेकथा
नदीहमपावै॥ जातेतुमचरननचीत

लावै॥७२॥सुषउवाच॥युंतेसिवसंक्रादिक
संगा॥असतकरीबहुतपरसंगा॥ब
हुसुबिधिऐबचनसुनाऐ॥ताकेकाज
सकलमितआऐ॥७३॥ब्रह्माउवाच॥दे
प्रभुहमतबबीनतीकानी॥धरनीभारभ
रीजबचीन्ही॥तातुमलीनोअवतारा
सकलउतास्योभुकोभारा॥७४॥मेटिअध
मधमबिसतास्यो॥सबसंतनकोकारज
सास्यो॥अरुकीरतबोहोबिधिबिसता
री॥भवसागरतरबेकुंसारी॥७५॥तेओ
वतारभुपजहबंसा॥सकलजनमको
मेट्योसंसा॥बहुबिधिकानेकमअ
पारा॥जिनसूलागेजहभवपारा॥७६॥
अरुजहकुलउदिस्रापबिनास्यो॥नही
रहेहैदिनद्वैनास्यो॥तातैदेवकाज॥
सबकस्यो॥करबोकछूनाहिउबस्यो॥
७७॥गहेबुषसतअधकपचासा॥तातैं

तिनपरसाधदुषपरहरये॥ जुनावनसैसा
ड़रतिरीते॥८०॥ असीसुनहरजीकीबा
नी॥ सबजादवननलीकरिमानी॥ तब
चलवेकुंसकलबिचारैहि॥ अपनअ
पनरथनसमारैहि॥८१॥ तबउकैहरि
कोनजदासा देषसकलबिधिन्ययोउ
दासा॥ चालिरैकोतहाँरेजापैआये॥
चरनपरसकरबैनसुनाये॥८२॥ उधवउ
वाच॥ देवदेवईस्वरजोगेस॥ भुवनकार
तनहरनकलेस॥ जदुकुलकोसंहारहू
करहो॥ अबतुममृतलोकपरहरहो॥
बिप्रसरापमिटनसमर्थौ॥ नहीमेटोसो
रहअर्थौ॥ मेरीजीवनचरनतुमारा॥ जे
सैमानउदकआधारा॥८३॥ प्राननाथ
अबऐसीकाजे॥ संगआपनैमोकूंली
जै॥ तुमरेसबआचरनअनूपा॥ सबकु
मतकलानसरूपा॥८४॥ जिनकूंपाइ

औरसबत्यागे॥ त्रिभुवनकेसुखदुखसेला
गे॥ आसनगवनआसनअसनानां॥जाग
तअरुसोवतबिधिनाना॥६५॥सदानिरंत
रकोमदासा॥कुंपलतजुतमारोसाधा
ई॥मायाभयतें नहीकहुं॥तुम्हबिनऔर
धन मसबनरहूं॥६६॥गंधबसनमाला
आन्हरना॥ तोवउतीरनकेमैंधरना॥मा
हाप्रसादनिरंतरयोध्यो॥दरसपरसबहु
बिधिसंतोष्यो॥६७॥ऐसैंमेंनिजदासतु
म्हारो॥मायाकरिहैकादहमारो॥माया
मैंअरुतुम्हरेहेत॥दोहिंदिगंबरउरनि
धरेत॥६८॥इन्द्रीयदेहप्रानमनसाधा
हीं॥सावधानतुमकेआराधाहीं॥बहुबि
चारसदामनलावे॥तेनिजरूपतुमारोपा
वे॥६९॥हमकुबऊमअरूमनजाने॥हरि
देगपानबेरागनआने॥तुमारेन्नगतन
केमिलसंगा॥नवतिरहसुनतुयरसंगा

॥१०॥ तुमरे बचन क्रम परकासा ॥ आसन गग्र
न रूप परकासा ॥ कहत सुनत सुमरत सुष
मांही ॥ नवू सागर हम रहै हि नांही ॥११॥ ताते
माया नय नही आनौ ॥ आपही सदा मु
कति कर मानौ ॥ पर तुम बिना ग्यान तजि
जाही ॥ ताते मोहि बोफिए नाही ॥१२॥ दुहा ॥ ऐसे
उधव निज भगत के ॥ सुने बचन गोपाल
तब करूनामय क्रिपा ॥ बोले बचन
रिसाल ॥१३॥ इती श्री भागवते महापुराणे ए
कादस स्कंधे श्री भगवान उधव समाध बह्म
अध्याय ॥४॥ श्री भगवान उवाच ॥ महाभाग
उधव ईह यां हि ॥ जु ते कही बात हत तोहि ॥
सिव ब्रह्म सनकादि देवेसा ॥ बाढ मम बा
कुव प्रवेसा ॥ भुमे भार बढ्यो जब भारी
तब नृ ब्रह्मा या स पुकारी ॥ ब्रह्मादिक न
बीनती करी ॥ तातमन षदेह मे धरी ॥१४॥ अ
ब नृ को सब भार उतारयो ॥ सकल सुरन

कौकारजसारयो॥ अरकीनौजसकौबि
सतारा॥ तातेंजीवजाहिनवपारा॥३॥जडकु
लआयपलसौदिजपास॥ आपहीआय
भेहोइनासा॥ आजहीतेंसतपतदिनमां
ही॥सिधिद्वारकारावेनाही॥७॥ जबहीमें
तजिहूऐहलोका॥तबपावगेउथ्मवसो
का॥कालिजुगआनिअदिष्टतहोई॥ता
तअघकरेहेसबकोई॥५॥ तातेंसुनउ
धवबदनागा॥ अबतुंकरसबहनको
त्यागा॥ मोमसदाचितधरकरो॥ समद
रसीहोइजुमैंबिचरो॥६॥ जोकबूकहन
सुननमैंआवै॥ अरूमनबुधिजहांलू
गिजावै॥सोऐहसबमनको कृतजानौ
बनभ्रंगुमायाकरमानौ॥७॥ जीनऐहस
कलसत्यकरिजानां॥तिनकैभेदभयो
हनानां॥ ताभेदहिजुमकरनहिजानै॥ वि
धनवेदताहीमेंगानै॥८॥ विधनवेदम

ष जो बेदा। सो तांको जाकै है भेदा। भेद मिट
बिन करन त्यागा। तातैं ऐ है कायरबिभागा।
जुं जुं तजै सुषा सो होई। तातैं बेद बता
वै सोई। आगा जाइ बूमा वसारे। जे आप
हौं ते बिसतारे। ॥१०॥ तातैं ऐह सब मिथ्या
जानो। उतनी च गुन रैष मानो। इद्री यम
नअरु नै हट करो। अहंकार ममता य
रहरो। ॥११॥ सुब दूलि सकल बिसतारा। ऐक
ही आतम को आधारा। सो आधार बुसत
को जांनो। असी बिधि भव के नय मानो।
याबिधि बेद अर्थं कूं जानो। बहुर नै ह
चल हरदै करि आनो। दहलोक को आ
सा बंनो। याबिधि अतराइ सब षंनो। ॥१२॥
जेतनी या कै आसा होई। तेतनो बिघन
करै सब कोई। जुं जुं तजता जाव आसा।
त्युं त्युं मिटै बिघन के पासा। ॥१३॥ जब यैह
होइ आतमा रामा। जब है ... नहीं आसा

रा साको धामं॥ तबबिघननके करतादेव॥
तेउ लटकरनेतसेव॥१५॥ तातेबिधनबे
दसबनाये॥ ज्यासा वोफि हिरदेहरराषे॥
एकब्रह्मकरसबकूंदेयो॥ इजोकबह्
मुखनलेयो॥१६॥ अरूजिनथायोब्रि
स्नगियानं॥ तिनकेबिधनबेदनहीनां
नां॥ परितिनकेनेतहिबिधहोईकदेन
बेदनपरसेकोई॥१७॥ वदुषसुषगुनदो
षनजांने॥ बालकसमआचारनठाने॥ प
रिबिधिसारीसेवाकरे॥ औरनबेदअ
पपरहरे॥१८॥ असबपरिसं[illegible]हिरदेए
अतिसा[illegible]गयानाबिगयानसहितबेद
त॥ सबजगब्रह्मज्ञानथरहोई॥ बह्
रयुनमनपावसोई॥१९॥ असेसुन
हरजीकेबेनां॥ अतहुकरअतसुषदेन॥
॥ तत्वसुननकानादी॥ तबबोलेउधव
निजदासा॥२०॥ उधवबाच॥ जेनसरहं

जोगतपजाइन॥जोगदानजोगेसुरमा
इन॥तुमयेहत्यागकह्योमेरेहत॥सोइ
करिनहीआवचित॥२१॥क्योंहोइविषी
इनकोत्यागा॥पुत्रकलित्रादिकअनुरा
गा॥यहतनयहधनएहसुतमेरे॥एह
बिनताएग्रिहचेरे॥२२॥याबिधिममअ
हंकारसमुद्र॥बुफिरह्योमेमुतिकाछु
द्र॥तुमरीमायाअतिभरमाया॥तातेंपा
नहरिदेनहीआया॥२३॥अबमोहि
सिषदितुपदेसो॥मेरेंतुरकबूगपानप्रवे
सो॥तातेंअबबहुबिधिसमजावो॥मम
उरप्रनगपानबतावो॥२४॥जातेंसबत
जितुमकूंपाउं॥बहुरूंजगतजनमनहींट
आउं॥अरूदूजोओसोनहीकोइ॥जातें
लोग्रगपानकोहोइ॥२५॥बुलादिकतनधा
रीजेते॥तुममायाबसिकीनेतेते॥तातें
मायाहीकूंदेषे॥कर्मअरूभोगनलि

करिलेषै॥२६॥तातेमजनतुमारीसरना॥नि
सोकाजेयाउतुमचरना॥तुमारेआदिनअं
तनपारा॥ग्यानरूपसबहीतेंन्यारा॥२७॥
सोईतुरगदोकरजाको॥माया कबूनसवै
करताको॥तुमहीतेउपजेयहजीवा॥जै
सेअगनहूतेंबहुदीवा॥२८॥सदारहैतुम
रेआधारा॥नितउवियोषोसरजनहारा॥ऐ
सेप्रभुकूसेवनाहीं॥ तातेंपरपरमदुषमां
हीं॥२९॥याभवकेदुषकहेनजाहीं॥पचौनि
रंतरमैंतनमाहीं॥ अबमोकूसरनागति
जानो॥देकरग्यानसकलभयभानो॥३०॥
मेरेतनधनमनतुमचरना॥मनक्रमबचन
आयोमसरनां॥ ऐसेसुनउधवकेबैनां॥
हंसकरिबोलेअर्जुनेनां॥३१॥श्रीभगवा
नउवाच॥उधवमकहदेहूग्यांना॥ स
तकहतहूंनाहीआनां॥याजगसाधन
देहूतेतो॥आपआपनउधरेतेतो॥३२॥ आ

पहोमतोबरोपचावै॥ बोमबुरोनतोकूंठां
नै॥ गुरूआपनोआपहीहोइ॥ पसूपषी॥
भावजोकोई॥२३॥ परनरतनअसोहनीको
ब्रह्माआदिसबनकोटीको॥ जातब्रह्मबि
चारदियावै॥ ब्रह्मजगतजनमनदीअ
वै॥२४॥ एकपदहै॥ पदवीइपदएका॥ चौप
दादिबहुपादअनेका॥ मैबहुभातिसि
षविसतारी॥ तिनमप्रियनरदेहमारी॥२
५॥ मोहियावैसोयाकरियावै॥ औरसबन
सुषदुषभोगावै॥ यामममेरोकरबिचारा॥
सावधानहोइबोहोतप्रकारा॥२६॥ ना
इयातोजमहदेहा॥ दीयादअरसकल
सनेहा॥ अपनअपनेअर्थनगहै॥ सो
इसत्तकोनकोलहै॥२७॥ अरूसोवत
बसुपनोआवै॥ तबतोदशीतनबिटा
कावै॥ सुपनमाहिसुषदुषकूंलहै॥ ना
गबातसकलकूंकहै॥२८॥ तातेमैतो

इहत न नाहीं॥ मैं तो बासकी यो या मांही॥ सो
बिनता सुत बित परिवारा॥ मेरो तो नहीं स
कल पसारा॥ ६९॥ ए तो सकल देह संगा
जाहीं॥ सो इह देह कदे हम नांहीं॥ जा
तैं सुपनमाहि न्हीं कोई॥ उहां सकल
औरही होई॥ ७०॥ आरूनाई मैं तो इहत
न नाही॥ सो तन दीसे सुपना मांही॥ तातें
इह घर न रहावे॥ वाकूं तजि या मैं फरि
आवै॥ ७१॥ वा मैं रहया तैं वह फुवी॥ ये
इह इग्यान गहलो मैं मूवी॥ जो एह देहं दे
हकूं नहीं॥ इन्द्रीयनकै सब ग्रंथ न गहैं
॥ ७३॥ इन्द्रीय बुध्यादिक बानी॥ जाकूं को
ई सकै न जानी॥ सो मैं नित्य निरंतर एका
उपजै विनसै देह अनेका॥ ७४॥ नाई
सो मैं काहा तै आयो॥ कि न तन दीनो कि
न उपजायो॥ अब तो मैं देह आधारा॥
पल कर रह न सकूं नर धारा॥ ७५॥ ए दोउ

तजिकामैरहे ॥ सोहसततादिदृढिगहैं ॥
ऐसेबिलविधिकराबिचारा ॥ त्यागेदेहा
दिकपरिवारा ॥७६॥ सोजाहातातेले
व्यपाना ॥ कबहूंकबनजानआना ॥ या
बिधिआपअपकूंत्यारै ॥ लहब्रलज
वउषनावारै ॥७७॥ इहबिचारमानव
तनहोइ इजोकुलनपावैकोइ ॥ तातैं
म तुमानत्तनपायौ ॥ अरूमैतोकबूतोहिल
षायौ ॥७८॥ तातैतजोसकलकोसंगा ॥ म
नक्रमवचनहोइनहंसंगा ॥ सबतैंपरअ
पकूंजानो ॥ सोआधारब्रह्मकोमानो ॥७९॥
जाहातातदेषोउपदेसा ॥ याबिधिक
रोबुलपरवेसा ॥ ऐसेजादातहांतले
व्यपाना ॥ वहूतकनरैबुलपरवाना ॥
॥८०॥ तिनमैंकहूएककाबाता ॥ जोइतदा
सकथाबिष्याता ॥ दतदिगबरअसंज
दनुया ॥ तिनकोहेसमादअनूपा ॥८१॥

॥५०॥दुहा॥सुनउधवइतीहासअब॥नाम्र
परमअनूप॥ कहतादता३॥इनादि अ
रूपूबतउरूप॥५१॥ ऐकसमउयत
जपुनामां॥ एगएसिकारभोधि नउधा
मां॥तबतेनगुनवकटदेस ता देषोऐक
परमअबधुता॥५२॥ नरननेहचल
इबयाचारी॥ तेजनधानतरणलनधारी
करयनामबहुतप्रकारा॥जइनुयत
बबचनउचारा॥५३॥ जदउवाच॥ देप
नुपूरनप्रमदयाला॥ कहोकथाकरि
होकथाप्रेअसीबुधिकाहंतुपाई॥ जा
तैबिचरोसहजसुनाई॥५४॥ नरोअज
ताइबाचारी॥ बालकसमसबचिंता
टारी॥सबजुगनिसदनगेहबिचारो॥ध
मिअग्नीकामबिसतारो॥५५॥सोउनही
उयजडुषपावे॥तिनसंलागिसबआ
वगुमावे॥तमसमरथसबहीबिधिजां

नौ॥ क्रिपन पुनपी वैन बषानै॥५६॥ सब विस
रस तरुनतन सुंदर॥ तुष्ट पुष्ट कोलिपनंदुद
र॥ नाक बूबाछोनाकबू करी॥ जहुंउ न मंतकै
भुम बिचरै॥५७॥ त्रिसनाकामलोभई ला
गी॥ सकल लोकदा कैतृष्णागी॥ तुम आद
न मई दागो नाही॥ जुग वेद गगो दिक्समांही
॥५८॥ देह अर्धी सब हो को त्यागो॥ रहो आनंद
। तिसो कहिलागो॥ संगन कोई राषो देवा को
ईलहन सकतुम भेवा॥५९॥ तातें कहो क्रिपा
करि नाथा॥ मुजल बूतपकरो हाथा॥ मुंज
मुप बीनती करी॥ तब अवधूत गिरा उचरी
॥६०॥ अवधू उवाच॥ सुन जहनुप परमव
डभागी॥ जाका मत हरस्यौ अनुरागी॥ बहु
त कहे मेरे गुरुदेवा॥ जेन तम सब जान्यो भे
वा॥६१॥ परम मतो आपत लोनो॥ तिनरमे सो
कि निहुन दीचीन्हौ॥ ते गुरु सकल सुनो तु
म मोसूं॥ हर जन जान कहत तुमोसूं॥६२॥

धरनीपवनगगनअस्तुपानी॥अनलचंदरविकपोतहीजानी॥अजगरसिंधुपतंगअरूभ्रंगा॥कुंजरमधुहरतारूकुरंगा॥८२॥मीनापिंगलाकुररबाला॥कन्यासरकरताअरूबाला॥मकरीभ्रगीइचोबीसा॥इनसुसीष्योसुनोमहंसा॥८४॥प्रथमधरनीमेगुनदेषे॥सोमेपरमततकरलेषो॥सबहीरहेधरनीआधारा॥तापरमुहकरैअपकारा॥८५॥वोरवोरअतउतमअंगा॥तिनकूकरबहुतबिधिभंगा॥तापरन्यरबतबुबअनंता॥परउपगारसबबरतंता॥८६॥परअपराधककूनहीजानै॥उलटआपउपगारहितानै॥ऐसीसीषधरनकीलेवै॥सोनरहरचरननकूसेवै॥८७॥प्रानबाइज्युलेआहारा॥स्वादकुसुवादकोइप्यारा॥योहरजनआहारहिलेवै॥स्वादकुसुवादनहीचितदेवै॥८८बिनआहारबिचारनआवै॥सुवादकुवा

सवादनमनवहरावै॥ तातैऐतोलेआहारा॥
जेतोहोवप्रानआधारा॥६९॥ अरुजुपव
नफिरैजगमाही॥ सुधवअस्तुयालिपकहूं
नाही॥ नानाभेदनिमेसंचरै॥ प्रिपअप्रिपगु
नदोषनधरै॥७०॥ बुबिषीइनग्रिहतेजोगी॥
मनक्रमबचननहोवभोगी॥ भेदअनेक
नमअनुसरै॥ परकबभेदहिरदैनहीधरै
॥७१॥ अरुजुपवनगंधसंजोगा॥ लपत
नयोजानैसबलोगा॥ परसोपवनसदाइ
करूपा॥ लिपनकेबहूइसोअनूपा॥
॥ पचजुतनरमतजुदेहा॥ सकलविकार
नहीकोगेहा॥ तामजोगीलपतनहोई॥
ओरलिपतजानसबकोई॥७२॥ जुसा
वइनमएकआकासा॥ अरूसबहिनको
तामैवासा॥ मवउपजेबिनसबरताईगी
गनलिपकालतिहूंमाही॥७३॥ सुबहा
बिधिसबजगतयसारा॥ मुनीदेमअात्म

आधारा॥जोकबूदीसेजटहैसोई॥जाकेसं
गतचेतनहोई॥७५॥ जुंआत्मदेहनभेदे
षे॥सुंपरमातमजाहाताहांलेषे॥ऐकअ
नतकहंआनरनां॥लियनलियजनमन
हीमरनां॥७६॥ सोपरमातमऐका॥कदे
नदेषेभुलअनेका॥ जुगजनेघटनभेदो
ई॥ब्रह्मरिपुनजहाताहासेई॥७७॥ क
हबेकेईनातरऐका॥पुआत्मअरूब्र
ह्मबेका॥जुंब्रह्मेहपवनदामनी॥बर
षेब्रह्मबासजामनी॥७८॥ परनलिनलि
पतकदेनहाहोई॥औरलपतजानसबा
कोई॥ तोंआतमदेहअनंता॥उपजेबर
तेयावअनंता॥७९॥परआतमलिपत
कहूनाही॥साधाबिचारयोंमनमांही॥ई
हअबरगुनतोहिसुनायो॥अबनांषु
जोजलतयायो॥८०॥नितनेरमलऔरनि
मलरहरे॥तापमेटसीतलताकरे॥सबा

सुषदाइकहितरसवंत॥ ७गुनजलकेसी
षसंत॥८१॥ जतेजवंतअतदीपतजुक्तो
षोमरदतजादांतहांनरमुक्त॥ स्वादरह
तसवभषणकरै॥ अगनहांजयसंचनध
रै॥८२॥ त्योहीगपानतेजमयहोइ॥ इद्रीया
दिसबदीपतसोइ॥ जद्यपवहुविधि
भोजनकरै॥ स्वादरहतगुनदोषनधरै॥
८३॥ काहूहतषोमनहीहोइ॥ काहूके
गुनलेषनसोइ॥ उदयवानलेइआहा
रा॥ कहनजानसंचइसारा॥८४॥ गुपत
रहनहींसुतजनावे॥ कीन्हेप्रगटप्र
गटकैग्यावे॥ परस्ताअंतकरते
इ॥ तेनकेपांपरहनहींदेइ॥८५॥ सु
मुनीगुपतआपतरहषोजिलेइता
कोगुमदहै॥ उतमभोजनादितहोइ॥ प
रउवपातैलेवसोइ॥८६॥ बहरूप्रगा
नएकरसएका॥ बहुविधिदीसकाव

यो मुनिकै तेसुने अरु पेषे ॥ सकल अर्थ ईश्निेछ
लेषे ॥ नित आत्मा अकर्ता जानें ॥ सकल निवृत्त विचार

अनेका ॥ तुं आत्मा एक सब माही ॥ भेद
देहऊ तसचै नाही ॥८१॥ दीवा मसाल प्र
गट जो होई ॥ ज्वाला ता तल पेषे सब कोई
परते दीसे त्यो के त्योही ॥ धृत दिन देह जा
तह्युहि ॥८८॥ जेसे ससके बादे कला तु
त्यो दिन दिन दीसे न ला ॥ पुरन केकरि न
दिन नासे ॥ सकल मिटत नही प्रकासे ॥
॥८९॥ त्यो बालादअवसता आवे के
करि नें क्रमही क्रम जावे ॥ जब आतमा
देषीर नाही ॥ परदेस दाकाल तिरूमा
ही ॥९०॥ उपरि वा किरनन से जल देवे ॥ स
मय पाइ बहुर युफेर देवे ॥ परि कबहू
अनुमान आने ॥ ता यो ही यो आप कुन
ही मानें ॥९१॥ जु घट जल प्रतिबिंब तसु
रा ॥ लपत देषी एपर हइरा ॥ त्यो आतम दे
ह समंधा ॥ स्थूल देह जानत हवंधा ॥९२॥
॥ अबकयोतकी कथा सुनाऊ ॥ तेरेम

नकौप्रेममिटाउ॥ ऐक कपोत कपोती स
गा॥ बनमेंकीन्हौं ग्रह परसंगा॥ ९३॥ आ
पआपमें अतआसक्ता॥ आवपहरमें
पल नहीं बिरक्ता॥ मन सूंमन अंग नसंअं
गा॥ नैनेनैननबढ्यो बहुरंगा॥ ९४॥ आव
नगवनअसन असयानां॥ संयनबैथ
नसारीबिधिनाना॥ मिलसकतकमन
कूंकरै॥ नरनैरहैनकबहूमरै॥ ९५॥ सो
कपोत बिनताबसकायौ॥ हावभावत
नमनहरतायो॥ बनतासोबंबसोला
वै॥ कष्टसहतजाहीबिधिपावै॥ ९६॥ सो
असचीजितअतुमराजा॥ अपनोलषे
नकाजअकाजा॥ तनमयोनयोनरत
रहै॥ प्राननहूतैंताहिप्रीयकहै॥ ९७॥
ताकातीयागर्भ रहउपजाया॥ तिनमैंमन
दोनुमिललाया॥ तबहरैमायासिसुन
रमैंया॥ कोमलअंगरोमतेनऐ॥ ९८॥ तबदे
तिमुलाये आपआपमेंसकलबसीपे

उचारांकूलाये॥ तनग्रिहमाहिनबालक
पाए॥१९॥ तबदेषमाततेबाला॥ बंधेजा
लमाहिबेहाला॥ तबसोतालपुकारत
धाई॥ जालदेसजालमाहिंबंधाई॥१००॥
तबकपोतदेषदोसबबंधे॥ हरिमायाकी
नेसबअंधे॥ तबसोबहुबिधिकरैबि
लापा॥ देषैबहुतआपनेपापा॥१०१॥ हाह
पापकूनमेंकीन्हें॥ असोदुषदईमोहि
दीन्हें॥ जाकीएहपतबरतानारी॥ पुत्रलै नि
सुरलोकसिधारी॥१०२॥ मोहिबोकिसुनग्रि
हमांही॥ सबमिलआपईपुरजांही॥ नामें
सुषभोगएहलोका॥ नाहिंसाधनपायोपर
लोका॥१०३॥ धर्मअर्थकामसबजामें॥ क
छूवेनहीरह्योग्रहतामें॥ अबप्राननराषें
कछूनाही॥ घरीघरीमेंदुषअधिकाही॥१०४॥
याबिधिभयोबहुतबेहाला॥ बंधेदेषबि
नताअरुबाला॥ व्याकुलबुधि

हरजीकेसंगा॥ सदारमोजुत्रौ अरधंगा॥६६॥ काहाऔरसुरनर[illegible] जेबापरेत्रा पहीमरिहै॥ अरुतेसुषकोईधरनाही॥ देषतसकलतपलककमजाही॥६७॥ मेरीदिष्टदुषसबआवै॥ कालआधीनकाहासुषपावै॥ तातेंभयदनेहचलजानी॥ क्रिपाकरहंसा रंगफ्रंरणी॥६८॥ जिनमेंबैरागउपायो॥ अपनचरनकवलचितलायो॥ ऐहहराक्रिपाबिनानहीहोई॥ जोबैरागलहनरकोई॥६९॥ जातेसबभवबंधननासे॥ हिरदेमोपतआपपकासे॥ मैंतोमदभागनीऐसी॥ त्रिभवनमाहिनहीकोईतैसी॥७०॥ ताकोकसोहरकोभजनो॥ कैसोकालजालकोतजनो॥ परितेंदीनबंधुगोपाला॥ पततउधारनदीनदयाला॥७१॥ तिनहूआपाक्रिपाहेकरी॥ जिनमेरगरिऐसधरी॥ अबहेयापरसादहिसीसा॥ नसदिनभजेचरनजगदीसा॥७२॥ जितनयादेह नि

संबा
रवाहूं॥सोतुनहीआरंमांहि॥सहजभादिजो
हरजीत्पावें॥ताकरियादेहबरतावें॥५३॥या
भवकुंयपरयोनतप्राणी॥बिषयआवरण
दृष्टबियानी॥तायरआजरकालगरास्यो
युंनरबहुतपाससूपास्यो॥५४॥ताकूहर
बिनकूंनबूमावें॥आपहीतेंनहीबूटेए।
पावें॥अरुआपहीआपकूंराषे॥जबस
बखुस्तहिरदेतेनाषे॥५५॥जबहीहरकास
रनहिआवें॥तबहीआपहाआपुबूमावें
वेंप्रभुनजानंदमथदेवा॥काहाकरगोंति
नकासेवा॥५६॥परसबजगतकालबिट।
कावें॥हरकासरनआपसुषपावें॥तातें।
वोरसकलकोंतजों॥प्रेमभावहरचरणन
भजों॥५७॥याबिधिआपहीआपउधारो॥ञ
बनहीभवसागरमेंभारो॥यूंपिंगुंतापरम
गतयाई॥दहलोककीआसमिटाई॥५८॥
सीतलकेसज्यामगाई॥

हाथमेंधारे॥ बहुरलगीजबचावरबनैं॥ तो
ऊलगेसबदतेंकरनैं॥१७॥ तबतन एक एक
हीराख्यो॥ चुरैहिरदबहुरनहीनाख्यो॥ मोबे
चरयोऽब्बाचारी॥ तातेंदेषहिरदमेंधारी॥१८॥
॥ बहुतनसंगबढैबकवादा॥ जैहत्तहो
इसंबादा॥ तातेंरहएकालजोगी॥ सदाबि
चारेबुलरसनोगी॥१९॥ आसनप्रानदेह
मनबंधे॥ दिढबैरागहिरदेमेंसंधे॥ निहचा
लहोऽनितबुलबिचारे॥ पुंकमकमरजत
मकूटारे॥२०॥ सुंसुनेहचलवढैसमाद॥
तजतोजावसबकलउपाध॥ जबतुपाव
कहीधनहीन॥ त्योहोवनजपदमतान॥
॥२१॥ तबकबहुकबढ़ै॥ तब नहीजानेक्ति
तासमानदेह॥ जाने॥ सुंआगहोऽनर
पतगयो॥ सेनासबदबहुतबिधिनयो
॥२२॥ परसिरकरनेदनहीपायो॥ याबिधि
सरमेंचितलगायो॥ ऐसीसीषलईमता॥

तैं॥नहिचलबुधिलईमसजातै॥१५॥ जोलोग
नतेमसनुवेंगा॥बसगुदामैंरहअसंगा॥साव
धानअतियोरीबोलै॥गतादिकअंत्रनहीवे
लै॥१६॥ ग्रिहआरंभदुषकोमूला॥तेआरंभे
जेनरभूला॥सरपपराइग्रहनमरहै॥याबि
धिमुनयहसषारहै॥१७॥ एकईआपनिरं
जनदेवा॥जाकोकोइनहनभेवा॥आपहीत
माया बिसतारै॥ सतरजतमबहुभेदपसारै
॥१८॥ बहुरुआपहीसबसंग्रहै॥निजानंद
मयएकैरहै॥ तातैंएसबमिथ्याजानो॥याक
कोकरतासोसतजानो॥१९॥ इहसषामक
रीतलैवे॥सबतैपरबलकूसेवे॥जोदातारप्रह
मनकोधारै॥मिसबासुरकबहुनटारै॥
२०॥ रागदोषभयकूंदीदेरी॥सीतरूपतादि
कोसोइ॥जुगीकाटहुतरहतान्हो॥तोम
नदृढचरननथरकान्हो॥२१॥ यहचौबीसगु
रनकासिषा॥तोसमनावीदिढदेषा॥अ

वतिनतेंसीखोसोकहै॥तेरो॥२१॥सवकोउग्या
नहिदहै॥२२॥मेरीदेहसोहिसमझावै॥हिरदैग्यां
नवैरागउपावै॥जुवालापनगयोवितोइ
तृहीअवऽजोवननजाइ॥आवृजुराग्र
तुतुआगे॥वहाविधिदुषदेहसेलागे
स्वानस्यातनकोयदेमछ॥जातप्रीतन
जोरेदेछ॥२३॥पुत्रकलत्रग्रथपसुगेहा
कुलकटूंबसबसेवगजेहा॥तिनसमि
तजादेहा॥सोइअंतमाहादुषदेवै॥२४॥
आगेकेबहुकर्मउपावै॥जवजमके
दरवारपववावै॥रसनमतपैचनैतरसाप्रा
णसदाचाहजलअसनां॥२५॥नैनरूपक
सवहीसुनां॥इद्रीचहनारकोरमनां॥व
चासेपरसनासावहुगंध्या॥चरनगवना
करकरहैधंधा॥२६॥याविधिसवमिलि
ऽहैताकं॥वथ्योदेहसंदेहैताकं॥ताते
रहदेहकूंतजीते॥सदानिरंतरहैकं

भजी॥१॥ हरिकेवमाया गुन विसतेरे॥ तव
नाना विधि देह सवारे॥ तिन मन सतुष्ट न॥ तिन
भयो॥ वहरो मानुतनि भयो॥२७॥ ता
कंदे सवादी तसु वर्षायो॥ ताम अपनो ध
भवनायो॥ तव हरिजी बोले ऐह वानी॥
जो परगटदे वेद वषानी॥२८॥ मो दिल
हसो याकरि लहे॥ याकरि सवभव व
धनदहे॥ अवमेरहे तकरउपाया॥ तव
मयाको करो सहाया॥२९॥ तातें येहअ
तदुल नदेह॥ श्रीभगवान स्यो निज गेह॥
अतदुरल भकहै जतनै पावे॥ जोपावे॥
तोघर नरहावे॥३०॥ प्रतदिन मत्युनरतर
ग्रासे॥ एक दिनातत काल विनास॥ ज
रारोग भव सोक नधाना॥ जामे पलक सु
व नहीं प्रान॥३१॥ तातें तादिया इकरिरा
जा॥ करली जे अपनो काज॥ तातें यह
छूटे संसारा॥ जाके दुषको वार न पारा॥

उपाइ॥ अवताकोसाधनकहे बहुतभात
समझाइ॥७६॥इतीश्रीभागवतमाहपुरा
णेएकादसस्कंधश्रीउधवसंवादेउधवस
माधेयाख्यानेनामनवमोध्याय॥९॥श्रीभ
गुतइतीदसमध्याय श्रीसंपूरण श्रीभगा
वानउवाच॥ सुनउधवअवसाधनका
हूं॥ तेरेसबसंदेहदहूं॥ जातेउपबुला
यपानावटेओरसकलभ्रमनानां॥११॥
ममभगतनेमारगभाषे तेसबहिरहे
वेठेमआषे॥ तेकहाएआतमकेघर
मांओरसबबंधनकेकमां॥१॥ तिनकुं
सावधानकेजान॥ बरओंग्रामकुल
मेघ्यामानें॥जेजेवहुआरंभनीकरें॥२॥
॥आगेकेंबधनउपजावे॥जेनकेसंग
जमफेरजावें॥जोबिचारआरंभनतजें
दोइभेदकोमचरनममभजें॥७॥ जाहे
लगहनानाबुधताहालगउधवजान

कुबधा॥ हेतभाव सो भरमकरजानै॥ सुप
नमनो थिसमकरमानै॥ ५॥ तातैं औरक
रमसवतजे॥ तितनैं मुतकबूरकनजे॥ तेउ
सत्यकबूनहीजानै॥ करैतौकरनहीतौ
मानै॥ ६॥ जगतमाहिजोअंतरपरै॥ ते
तेचुलनकबहूकरै॥ जोजासमनअंत्र
जानै॥ तोतासमसहजमेंमानै॥ ७॥ जेमन
माहिं नहचलैधरै॥ नेमनकभावस्योक
रै॥ वृत्तबिगगुरसरनहीजावै॥ तातैंभेद
सकलकोपावै॥ ८॥ जमअरुनेमकब
नहीसेवै॥ सतगुरकहसीषसोलेवै॥
मानरहतमबरनदीजानै॥ तनमनअ
रपप्रीतकवानै॥ ९॥ जाहाताहातैंमम
तायरहै॥ सावधानआलसनहीकरै॥
तजअसुपावयानहिंबोलै॥ तनमनन
हचलकदेनडोलै॥ १०॥ श्रधासहतअा
सक्तनहोई॥ गुरचरननसेवसिषस

इ॥ दारासुत बित ग्रह कुटंबा॥ सकल जु तु
आतम पत अंबा॥ १९॥ तिन सौं हि न समके
रि लेषै॥ मम मेरो करि कहे न लेषै॥ रहे उदा
स आस पर हरै॥ निस दिन बुध माहि मन
धरै॥ २०॥ सुषम थूल देह द्वै जैसे॥ नमरूप
माया कृत है॥ इन दोनु ते आतम न्यारा॥ स्वप्र
कास चेतन न अरूप री॥ २१॥ थुल सरीर प्र
गट जड तेहा॥ चेतन करै ताहि बहु देहा
सो बहु तन जड है अंगा॥ चेतन दोइ आ
तम संगा॥ २२॥ सो आतमा दो हो तें न्यारा
देह प्रकासक द्रष्ट आधारा॥ जु रविका
व अग्न परजरै॥ सो इजे प्रकासत करै
॥२३॥ पर सो अन ते द्रष्ट न्यारा॥ स्वप्र
कास आतम आधारा॥ बहुधा सेवक्रा
का वन संगा॥ पावत तप तरु सन संगा
॥२४॥ जु दोउ तन हैं माया का॥ ते आ
तमा आप करि जोा॥ तिन संग जनम

मरनदुषपावै॥ लहआनंदतबहीबिट
कावै॥१७॥ तातैंबहुबिधिकरैबिचारा
आतमजानसबतैंन्यारा॥ एकअंजन
माअरअंबनासी॥ चेतनघनपूरनसुष
रासी॥१८॥ तनउपजबिनसबरताई
परमआसुषसुधनकाई॥ सकलबि
कारनकोसंघाता॥ परगटदीसआ
वतजाता॥१९॥ मोसंपासंकसोसं
मामें चेतनपदजडबहुरंगा॥ युंबी
चारत्यागतनममता॥ आतमदसटस
कलनमसमता॥२०॥ याबिधिहोइरदहू
रग्यानो॥ मिलैबुलबटसबनानो॥ प्र
थमऔरअसथरगुरदेवा॥ दूजीसि
षकैनितसेवा॥२१॥ गुरकेबचनस
रवनमधानो॥ याबिधिउपजपावग्या
नो॥ उपजकावतनकेगुनदहै॥ करम
वीजकोईनरहै॥२२॥ तंबसुंपानक

द्वा

तेजसमावै॥ ईधनबिनानफलक्करावै॥ त
आत्माव्रसमयहोई॥ ईधनकर्मनसम
करसोई॥२३॥ अरुजेमूढनरविधिजानै
तेबहुविधिकरमनकूंवांनै॥ तेनकर्म
नकेफलभुगतावै॥ जनममरनकीअं
तनपावै॥२४॥ जाहाजाहाजाइताहांताहं
कभरनिसदिनरहेसदावेहाल॥ ऐसेज
गदासत्पोकोत्पोहीं॥ परारोकोपलरह
नयुही॥२५॥ औरऔरहोइआकारा
॥ तानसंगतमनबहुतप्रकारा॥ कब
हुंपानहिरहनहीआवै॥ जनमजनम
मरमरिदुषपावै॥२६॥ करमनजोका
मिनआचरै॥ सुषहूजोसुषभोगनक
रै॥ ऐव्यासदीसपरतंत्रा॥ तातमबत
जोरहिमंत्रा॥२७॥ जेपंडतसुरतश्रुमती
जानै॥ ततलहिविनकरमनगंनै॥ तेमु
रषदेहअनमानी॥ आपहीआपक

हाव गपानी॥१८॥हरजन सेगनकबहुक
रे॥ तत्वन सुनकारमविसरावौ॥तिनतेम।
लेजेकबूनहीआवे॥तत्ववचनहरदेश्रा मुने
ने॥२९॥ जयमअतसुषनकूजांनत्र
रवनगुरदेहनमाने॥परसोतमनस
मजलेजातेलहनगतको सेऊ॥३०॥
कामतमत्तुनेततिनकूयसे॥ताकोको।
होकाहासुषप्रसे॥जुकोईमारणकूलु
जे॥सतीनेकटपरेलेकाजे॥३१॥ अरु
ताकोसोगनजुगावे॥सोदुकोदोका
हासुषापावे॥अरुत्युदापुरनसुरतो पर
का॥मदमेवरनघाभयसोका॥३२॥
तिनकेहेतजतनबहुकरे॥तिकिन।
दोडविधनअतपरे॥जुषेतीमविघने
का॥जुसुरगादिकलहेकोईएका॥
॥३३॥अरुजोलहसोतोठपरनांही देष
तविनसजाइपलमांही॥याहाजरापक

रसबकोई॥ अरु जो अंतराइ नदीलेंऊ ॥२१॥ तब जो सुरग लोक कूं जावें के कू देव देव सुष पावे॥ अपन पुन्य को उ पजायो उत्तम जाइ बिमान ही पायो॥२२॥ बहु गाध बंगा प: कौं करे॥ बहु सुंद रनारी मन धरे॥ इह या होइ तहां चलि जा वे॥ सह तबिमान बिलंब न लावे॥२३॥ इम्रत पान तांहा न त करे॥ बस्त्रादि कि अणि देह बहु धरे॥ तिंहूं ... तमगन बहु त सुष पावे॥ परवे का कबू सु धिन आवे॥२४॥ जे तो पुनयाहा को होइ॥ ते तो रहु सुरग में होइ॥ पुन्य षीण होवह जबही॥ काल तांहा तदावत बही॥ सो सुष को होत जु कुंप जावे॥ ता उष का कबू कहत न आवे॥ र लोच दपण कुप कररहे॥ काल आधीन का तादुष दहे॥२५॥ कोई सुष पाव कहजे

तो॥ गन तेहै दुष तेतो॥ सोत जि सुरगन सुमम
आवे॥ पीवहु नअनत वेपावै॥७०॥ इहान
बीबिधिकी गततोसू॥ अवनषधकी सुनी
योमोसूं॥ जो कुसंग में प्राणी परे॥ तो बहु
भातअधम ही करे॥७१॥ बाबकामइही
याधीन॥ असील तपटलो नीदीना वहु
जीवनकी हस्या करे॥ प्रेमत सुतणाक अ
नुसरे॥७२॥ मही एक बसुसब मांही॥ तिन
केद्रोह नरकमें जाही॥ बहुरअसथावा
तिनहूं है॥ जनम जनम बहु संकट सहे॥७३
तातें बिधन षेजे करे॥ तेसब जनम मरन
मय रे॥ कुमकरत नतत नधरे॥ तनधरध
र बहुदुष सूमरे॥ तातपवत भसुवनाहीं
भावबहुलोककुमन जाही॥ लोकपाल स
बलोक समेता॥ इतनर है बहुत नजेता
॥ सोबहुला इअतनरहे तातरबाजका
तन्नुगहे॥ अग्ररहमेरेनवमांही॥७५॥ पव

अरु जो बहु बिधि ग्यानकूं लहे योगि
न पाध देद मरहे ॥ सो बहु सुकुल पतन
होइ ॥ अरु यह कर जानीजे साइ ॥ ५६ ॥
कैसे बिचर कस रहे ॥ देसे जीव केसे
कहे ॥ कसे यह रके सस वे ॥ के सुनेकुं
नाबिधि जोवे ॥ ६० ॥ अरु आतम एक के
नाही ॥ एक मु ... एक बधा ही ॥ ६१ ॥
उत्तर के ॥ एतो बहुत एक कुं उक्ता ॥
॥ गुन अदा नद आतमा अनाद ताते ॥
तो बंधन ... नित मुक्ति कु कह दे वा
॥ याको मोहि बताये सेवा ॥ ६२ ॥ यह
उधव न जभगत के ॥ सुन करन समल व
न ताको पत उतर कहे ॥ हरजी करु
नाअन ॥ ६३ ॥ इती श्री भागवत महापुरा
णे एकादस स्कंधे श्री भगवान उधव समादे
ना मुकती बंध पद समजो ध्याया ॥ १० ॥ श्री भग
वान उवाच ॥ चोपई ॥ सुन उधव अब य

रमगयानी॥जातें भेद मिटै तुव नानं॥ बंधु॥
मुक्ति तोहि सम ज्ञान॥ तेरो सब अग्यान मि
टाने॥१॥ बंधु मुक्ति जो कही एक कोई॥ सो तो स
कल गुन नत होई॥ ते सब गुन माया के
जानो॥ इन तें इर आतमा मानो॥ सो करमो
ह जनम अरु सुष॥ भय अरु मरनादि
क बहु दुष॥ ए सारे माया कृत केवल॥
सदा एक आतमा नह केवल॥२॥ जो सुष
न सुष दुष अनेका॥ तिन मैं आतम को न
ही एका॥ ते सब बुधि रु मन को होवै॥ इं
द्री देह प्रगट ते सोवे॥३॥ फुन बुध्यादिक
कबू नहीं रहै॥ जा को प्रगट सुषोपत ल
कहै॥ तब आतमा निरंतर होई॥ परता
को दुष सुष नहीं कोई॥ जो सुषपतम ५
आतम रहै॥ तो बिहार पीव लोग है॥ प
रता को कोई नहीं बिकारा॥ ए सब मा
या के विहारा॥ पर आतमा आपन माने

वाहा॥ सबपर्व ए सब विधि निरवाहा॥ मधु
रा आदिक हरयाम नजावे॥ बहुत भातक
रि प्रेम बढावे॥ ६९॥ औरन कं अर्ची हिसि
षावे॥ ठे रवाहेत्त मा पधरावे॥ वह विधि
कर बाग फुलवाई॥ को [illegible] सहेत
चतुराई॥ ७०॥ पुर मंदर बहु भांत करावे॥
पुनि हरि सन्निकेन भावे॥ आप माहि जो सक्ति
न होई॥ तो [illegible] मगाने सोई॥ ७१॥ बहु
विधि महमा कहं करावे॥ ग्रे [illegible] कहुक
ह करावावे॥ मंदरादि बहु भांति बुहारे॥ व
हु बिधि साचधुल निवारे॥ ७२॥ चित्र बिच
त्र चोक वित्तरे॥ कै कर दास आपही करे॥
मैनै हित कवंदन नहीं जाने॥ जो कछु करै
सु नहीं वषाने॥ ७३॥ मो॰ करै आरती जा
सु॥ और कछु नहीं देषै तासु॥ मम प्रसाद
प्रीत सं लेवे॥ प्रीतहीन जीवन नहीं देवै॥ पु
नि संपुं उपजे प्रेम॥ तुं तुं अधिक बढाव

नेम॥ममभगतनकेरहआधीन॥ तनमनध
सुनितलवलीन॥७५॥अरुएकादसवोर।
हीमद्यममपूजाकरहअंद्र।सुरजअगन
विप्रअरुगाई॥जगतमैंषआकासरु।
बारि॥७६॥जतअरुधरनआपमेंत्योंही॥
सबनमाहि पूजा ममयूंही॥विद्याइसु
रनकापूजा॥मोकूबोडिनजानदूजा॥७७॥
वधीराजसकरजयजावै॥सातकसीतम
बनबरतावै॥ तामसग्रीषमसल बिनासैं
सकलजगतकूंआपप्रकासै॥७८॥ तातें
मेरीपुमबिभुती॥ असजानकरेअस्तुत
॥पावकमाहिहोमकरजेजे॥ बिप्रनअत
तिभावसंनजे॥७९॥ त्रिणजलादगाइ
नकापूजा॥ नक्तिभेदषमैंओरनदूजा॥
भक्तिभेषनिजबंधुजानैं॥ अतिप्रनकेपू
जाठानै॥८०॥पुंअपनबंधसुबंधी॥ तिन
संधीतसबनके बंधी॥तिनकूंबहुतमा
186

गतेंजानै। इजीओरउपाइनमानै। व्है
षगमृघजातुध्यानुअसुरदक। चारनसिं
धनागगुह्यादिक। असुर विद्याधरगंध
र्वी। जिनजिनपायोतेते सबै। १० बेमसु
दरअंतजनारी। बकूराजतामस। अधि
कारी। जुगजुगतेसतसंगतेआए। तिनह
तिनमेरेपदपाए। ११ वृतासुरवृषपरबाना
बलप्रहलादनभीषणजानो। [illegible]
रीबहनवंता। गजअरुगीधव्याधिअघवं
ता। १२ तुलाधारकुवज्याबुजगोपी। धर्मन
कीसीमाजनलोपी। जगवंतविप्रनकी
बनता। पुरषनकाकाहेनअबमनता। १२
ओरअनेककाहांलोकहीए। कहतकह
तकह्ह तनलहीए। तिनकबूदियावे
दनजानें। सांषअसजोगनहीपहचानें
१७ जपतपजगपबृत। कनकीन्हे। ओ
रधरमनकोइन्चानेहे। परजोसाधसंगाजे

नधा॥तोसबमेरेचरननआ॥१५॥अ
रुतुंउधवयुंमतजानो॥तिनकूसंगतेमे
रीआनो॥उधवसंतरुमेदेईनांहीमेंहीकुं
संतनउरमांही॥१६॥किनहूमिलुधारकै
तनकूं॥मितिकरसोधुतिनकेमनकूं॥
ऐसीविधिकिनकूतारूं॥एकनसाधरू
पउधारू॥१७॥साधनहोइमनकेमलहरू
सोमनआपनचरननधरू॥ऐसीविधितिन
कूंउधारूं॥जाहातारूंताहामहीतारूं॥१८
साधुसंगसोमेरोसंग॥साधसकलहमेरोअं
ग॥तातेंदोउसाधसंगजानो॥केतोदोऊ॥
मेरेजानो॥१९॥गोपीगायवृषगनगनाग॥
औरमुढवुधिबडभागा॥ममसंतनप्रेमजिने संग
बंधो॥भावभगतमोकूआराधो॥२०॥औ
रुकबूसाधननहीजान्यो॥अरुनहीबुलस
पकरमान्यो॥परतिनकोहितमोसंनयो
तातेसवमनकोमहगायो॥२१॥अमहीवि

व बड भागा ॥ तो क बेद सब को करत्यागा
जो रसु नो सुन न कूं जो ई ॥ प्रबुत निरब्रुत जे ।
क बहो ई ॥ ३५ ॥ सुब तजा क चरन मम ग्र
वै ॥ द्वैत भाव मन तें बिसरावै ॥ जहां तहां मम
रूप ही देषै ॥ आपापर कछु और न लेषै ॥
ऐसे के करि मो कूं पहो ॥ जात जगत जनम
नहीं अहो ॥ युह र जी बाणी बिसतरी ॥ तब उ
धव अंसका करी ॥ ३६ ॥ उधव उबाच ॥ हे प्र ।
भु तुम त्याग बेद को कह्यो ॥ सो मेरे सं ॥
र रह्यो ॥ तुम्हारी आग्या बेद कहावै ताहि ।
को ठिक सै स ... है ॥ ३७ ॥ तुम्हरे सुत मैं कर
नें भाषो ॥ तुम ही ताहु हर कर नाषो ॥ ताते मन
... न मत है मेरो ॥ धर का जे अपन जन
केरो ॥ ३८ ॥ किधु बे सत्य किधु ए देवा ॥ या ।
को मोहि बतावो ॥ देवा ॥ तब गोपाल बचन
उचारै ॥ सुखि उदम ध्याग्र अंधारे ॥ ३९ ॥ श्री
भगवान उबाच ॥ उधव अब सुन उतम मग ।

ना॥तातैंतुबहटैसुमनानां॥प्रथमहीग्रा
पनिरंजोकौ॥अरकबूंनहीहतीअने
क॥७०॥बहुरकीयोमायाबिस्तारा॥र
चीदेहबहुअंगप्रकारा॥तामेंआपम
पुरुषकीयौ॥प्राणरूसबदसंगकरिम
लीयौ॥७१॥सोतासबदचक्रआधारा॥प
रानामकान्हेआगारा॥मणिपूरकपसा
तीनामा॥चक्रबिसरूमधामधामा॥७२
बाहरपूंटबैषरीबांनी॥जोयहलोकरू
वेदबांनी॥षरयुमाअअरुअषरजे
ते॥नानाभांतिबिसतरेतेतो॥७३॥लोकि
माहियोरेबिसतारे॥वेदमाहिअसबदसा
रे॥पातिनकोबहुबिधबिसतारा॥ताको
कोईलहेनपारा॥७४॥जैसेअनलकाव
मथकाढ्यो॥ईधनपवनसंगबहुबाढे
युंमबानीकोबिसतारा॥जातेंप्रगट्यो
सकलपसारा॥७५॥यहबिसतारसबद

सुबतनहीकेजानौ तिनतेंपरआत्मामा
नौ २ तातें रससातम केगहे सातगके
रिरजतमकेरहे पीछे समाहिथर
होई सातगुतबस्याग सो ३ त्रीअ
सीविधितीनगुनरहै तबहोवबंसबु
मरहै ज्योंज्यौंयहसत्यग्रंथकारा त्यु
तुप्रेम भग्ग अधिकारा ४ सक
लबस्तुखातकजबभजे तबहीसातक
गुनउपजे सा तिगज्योंज्योंत्योंत्यों नग
ती तौंत्यों अनंतेबिकती ५ तबरजत
म दोउ मेटजा तातेंतिनकेगुननंही
आवे रषरुसाकभान अपमान नि
ज आल सगरबव मानो ६ राम ६
आदे होहै बदसकलरजतमकेते
ते तातेंजबहिरजतमजा ी तबतिन
केगुनउपजेनाहीं ७ तातेंसातगसंग
तिकरै रजतमकोसंगतपरहरै मुलस

कलकोसंगतकीन॥संगतबोरसंगत॥
त्यागन॥९॥देसरुकालपुरजगयानां॥
ग्रंथरूकाभजनमत्रग्ररूमैधानां॥गर॥
भाधानग्रादसंसकारा॥मंत्रजोपाए
दसप्रकारा॥१०॥ऐदसजाकेहोवजैसे॥
गुनविसतारताकेतैसे॥सातगतोस॥
तकउपजावे॥राजसतोराजसबुधिपावे
१०॥तामसतोतामसविसतरे॥जैसेगुर
सतेसेंकरे॥जारीजामजोगुनदीसो॥
सोउतमजानसोई॥११॥परजोउतमस॥
मवषाने॥सोउतवैसातकउतमजां हि
नै॥जोग्रालिनदतमोगुनसोदे॥सोरा॥
जसकुबमधमजो है॥१२॥तातेंएदस
सातकसेवें॥राजसतामसनामनलेवें
राजसतामसजोदिलसोई॥तोहूसतै
हटकावसोई॥१३॥सातकसंगत
जैसत्तातुंतुरहेन्नग

गदितउपजैबिगानदेषाकसकलभ
गवांन॥१३॥अरुदो- देहनभ्रमजानै॥
सबबिसतारसुपनसममानै॥तबपह
बुह्ममा थित है॥सातगहुकाओरन
जोवै॥१५॥जुंबासनतेंउपजअनतात्र
ग रूहोवमारूत बल॥सववासनकेरह
सोई॥आपुहीबहुरउपस मतहोई॥
१६॥तुसाधनयातनकेहोवै॥होवपचं
डयातनकंषोवै॥बहुरपुआपुउपसम
तिहोई॥साधनतेसरहनहीकोई॥१७॥
गुणातीतसोकहीएजोगी॥तीनु का
न हरसभोगी॥सोवहुसुभवमन॥
हीआवै॥मोहिमिलसोमाहिसमावै॥
१८॥तातैंसबसाधनबटकावै॥रोकनि
रंजनमोकूंध्यावै॥तब हरी॥कासुन
उदर तबानाजनउधवतबप्रसनभ
षानी॥१९॥उधवबाच॥देपभुन्हात्र

सोकहीरो॥गणादिकक् तजसुषलै। दीरो॥परतेविषसुषनकूं चाहै॥तातेंव ह्योरंभसम्रादि॥२०॥तेवापुरेसदाडुष रहै॥कवहुलसुषकूनहै॥परेतेतोविष यनडुषजानें॥ज्ञानकूंफकुनदिमवानें २१॥ज्युंवकरामारणाकूंलायो लेबेरीय नेमैवादकायो॥वदनरलजकवूनही जानें॥जिनसांमिलिविषीयादिकगानें॥ २२॥अरुजेसेंगर्दवअरुकुत्ता॥तिरस कारतेसहबहुत्ता॥सुषकेहेतसबन गायीनां॥सदाहदंडपडुबेलअनदीनां २३॥वेतोमुढकबूनहींजानें॥तातेंवि षीयाउद्यमठानें॥एतोनरजानेंसबबा ता देषजगतचलोसवजाता॥२४॥प्र थमतोसुषआवनाही॥जैआवतो परनरहाही॥अरुजोदिनचारनही॥ आवोक्तहहरत ५॥

पकहनांही ६९ तातेंतिहगुननतें
न्यारो निजानंदमयरूपहमारो ता
मैंचेतकैकरेंविचारा सहजहीव
हैत्रिगुनपसारा ७० देहविषेंवे
धोअभिमानी तातेंभेदनवपारह
नानां तातेंनिजानंदविसरायो का
लसषामाहादुषपायो ७१ ऐसेंजा
नतअभिमानां कदेनकरेंसुषन
कोध्यानां तिहगुननतेंकरबुते
चोथपदवाअभ्यास के ७२
जवसहजमेंमाहसमावे वहरू
देहकेदनहीपावें गरुजोसकल
ग्रंथविसतरें वेदधर्मनानाविधि
करें ७३ सुनतमांहिवहुताविधि
जानें परजोजानेतनहीत्यागें सो
नतसोवतजागतजानें ताकोमैदृष्टि
तवषानें ७४ जेसेंसेनकरनकोइ

सोवतसुपनलहपुनसोई॥बहुतभ।
तकरविहार॥देनदेनजलपानअ।
हारा॥७५॥बहुस्युरैनभातेसोवे॥।
दिवसभातुहीफरजोव॥असीबि।
धिकेपुदिनबीते॥जाग्रतसोवतसक
लवदाते॥७६॥बहुस्युबहुत्रसीमन
आने॥रातिहुदिनकीनेंदभाने॥कदे।
नसोवतजागतरहे॥सावधानआल
सनहीगहे॥७७॥असेकाजआपनो
करे॥चोरादिकधनकुनहीहरे॥परज
बयाहजागकरदेखे॥तबयहसके
लबृथाकरलेखे॥७८॥सोवनजागन
सबबोहारा॥जाकेहितजागसोसा॥
रा॥आपहीसबमिथ्याकरजाने॥क
बहुमुलससनहीमाने॥७९॥तुही
बेदधर्म॥आचरना॥अरुजेसुख।
जिनकेहेतकरना॥तेसब

हा

पवाकैरा पडितछोडैसकलपसारा ८२
भ्रमतेधरसोदेहअभिमानां तातेबूणअ
भ्रमपैनांनां तातेकैरैबहतबिधिकंर्मा ८३
सुषनिमितबिस्तारैधरमाप्रतेसकल
रूपाकरिजांनैा सुपनजागरणसमक
रिमांनौ जोदेहादिकसकलपसारा चे
तनकरिबरतावनहारा ८४ सुषदूष
भोगकरैअरुजांनै आपहीसुषीदूषी
करिमांनै बहुरौजबहीसुपनकोप
वै बहुबाबूहारनसोमनलावै ८५
तबहुजांनैसकलपसारा आपापरि
सुषदूषबिवहारा बहोरिसुषोपतिमा
हिसबजाई मनबुधिचितअंहंकारन
काई ८६ तबआत्मानिरतररहे जा
गेबातसकलजोकहे लिपोदिषोअ
रुआपोगयो जहांलगपीछेअनुभयो
सोआत्मापैकरसरहे तिहकाल
८७

धारो मैं द्रौबि स्म सकल को ईस मो बिनु औ
र सकल अनीस १८ सोचा रु सत्य जे ज
तप जोग प्रिय सम यम श्री कीरति भोग
औ रख स्तु जहां लों सार ते सम समै रै
आधार १० तातें जो मम सरणही आवै
तम बस्तु सकल सो पावै मो बिनु व
हे साधन कहै तो हु कहें न सुष कों ल
है ११ मैं निरगुण पार सब गुण सेवो मै
निरपेक्ष सकल चित देवो कछु न चहै
करै उपकारा सब को हित सब को आ
धारा १२ सब उपजावो सब प्रतिपालो
सब पोषो सब संकट टालो तातें मोहि
तजै दुष पावै तब ही सुषी सरण ज
ब आवै ११२ सरणागत कों बेगि उधा
रै आप मिलाउ भव भय टारै तातें
सब तजि मो कौं भजो पावो मोहि जग
त भय पेत जो ११३ उद्धव मैं पेहें ग्या
न सुनायो सनकादिक न परम सुषा
पो हृद पूर ह्यौ संदेह न काई मो हि पि
लकी बिधि सब पाई बहुत भांति आसत
ति बिसतरी मेरो भजन नहिं उं धास्यो
तिबिसतरी मेरो भजन निवास्यो ११४

न
भै

आपु कैतारथकरितिनमानी॥द्वैतभाव
जिनमध्यकोनेो॥तबतिनकेस्तुतिकरि
ब्रह्माकेदेखतआगेही॥१६॥सदलीनके
नंदबढायो॥तनमेआपनेधामसिधायो
तातेउद्धवयहतुमजानौ॥आपनोपरम
गरिमानो॥१७॥सनकादिकनसुमा
मकीयो॥तेलीबचनतुमेमेदियो॥तातेपर
गनउरधारो॥ब्रह्मजानिसबद्वैतनिवा
रो॥१८॥मम आधीनसदाहीरहो॥दूजीसब
सबासमादहो॥ऐसेहीनिजपदकोपेहो॥
जातेजगतबहोरिनहीऐहो॥१९॥दोहा॥पु
उद्धवतोसोंकह्यो॥परमगणनुसार॥याके
गहेनिजपदलहै॥छूटेसकलसंसार॥२०॥
इती श्री भागवतेमहापुरानेएकादसस्कधेश्री
भवतउद्धवसबादेहसगीतायाभाषायात्रयो
दसो धाय १३॥श्रीभगवानउवाच॥चौपई॥
ऐसोसुनिहरिजीकोगणन॥भक्तिउधारक
भरमसबभान॥पेउद्धवदृढकरिउरधरी
परिकछुप्रश्नकसनसोकरी॥१॥उद्धव
वाच॥परमदयालदयानिधिदेवा॥मोकोब
उबतायोमेवा॥भक्तिहृतेपयेतुवचरना॥
छूटेजगतजनमअरुमरना॥२॥परअवपेक
प्रश्नकोकहो॥मेरेपासदेहढीरहो॥जेबरे

२० नोपसहितसबउद्यमकरै ।। गतिमधमें
जांनिउरधरै दांनजोगजतिमकरिश्राषै
इहीमुक्तिसाधनकरिराषै २१ येकईजगणं
दांनतपरहे येकैईजमनियमेसगरहे येक
हीतीरथनवरतमनधरै कहेकहालुनवहे बि
धिकरै २२ तिनतेसुर्गादिकसुषपावे क्षी
नभयेइहांफिरिश्रावे बहेरुनीचिजोनि
बहरहेनरकनमेकेईजुगरहे २३ गुरु
जबरहेसुर्गहूमांही तबहूसुषकछूपावेन
ही कामक्रोधनिंदाश्रभिमाना रागद्वेषई
र्षाश्रभिमाना २४ ईतातेकिनसग्रनित
रहे तातेकौनभांतिसुषलहे भक्तिबिना
बिधितौकहीजावे कहतहांहूतेंढहवे
२५ तातेउडोभरमहे सारा सुषममच
रननिकीश्राधारा जिनमेरैचरननिचित
धर्यो साधनसाध्यासकलपरिहर्यो रहै
तिनकुंजहवसोसुषहोई सोसुषकहैन
पावेकोई सोसुषकह्योसुनोनहीश्रावे सो
हैधैजानेसोपावै २६ सोभावेसोमोसंमांगे
श्रोरसकलश्रासाकूत्यागे ममश्राधीन
निरंतररहे दूजीसकलकामनादहे २७

सकलबस्तु तें कौ की त्याग॥ अंतह क
धरे है राग॥ समदरसी नित सीतल ची
॥ मम चित की नहे है॥२०॥ बित रंगा॥ ता
दसा॥ इसा सुष रूपा॥ सो सुष जो अति प्र
म॥ अनूप॥ जो जन मेरा सुष कूं जानै॥ ति
के मन कित हूं नही मानै॥२१॥ ता के सब
आधीन नही रहै॥ पर सो मो बिन कछू न ग
है॥ ब्रह्म लोक कूं कछू न लेवै॥२२॥ लोक प
ला चित न देवै॥२३॥ सब भू राज नैन नही
देषै॥ स्वर्ग भूप तात सुष न लषै॥ जो गमि
द्व अनुमादिक अष्ट॥ जोगी जन हित साधे
कष्ट॥२४॥ तिनहू कूं कब हूं नही लेई॥ अ
पहते मिल सेवै तेई॥ मुक्ति निकट ही रहे स
दा॥ पर मेरो जन छुवै न कदा॥२५॥ मै हो प्रे
क सदा प्रिये तौ कौ॥ मम चरनन चित रातौ
जा कौ॥ ताही तें मेरे प्रिये सोई॥ ता बिन और
नही प्रिये कोई॥२६॥ तुम मेरो सुत बित नही
प्यारो॥ नही संकर सो [illegible] प्रहमारो
न ही प्रिय तुम सम [illegible] सरसा [illegible]॥ श्री अरध
नी त्यो ना हिसहा ई॥२८॥ पाये नही प्रिये मेरी
नमस्तेहा॥ जे सो तुम सौ परम
॥ तुम

पतिसंगी बधनकरै होतपरसंगी १२ तातै
तिनकोसंगहीतजै सावधानममचरननां
भजै निरभैठौरकरैग्रस्थानां मो बिनसंग
तजैसवग्राना १३ मेरोध्यांननिरंतरकरै
प्रेमसहतहिरदैमैधरै कुसब चनसुनिहि
रदैरापैं उद्धवग्रौरप्रसंकोभाषै १४ उद्धव
बाच हेप्रभूतुम्है कौनबिधिध्यावै कौनरू
पमैचितलगावै मैतोमुक्तिमेईतुवचरनां
प्रजोचहै मिटापोमरनां १५ क्रिपासिंधुतु
मकरनांकरो ध्यानजोगबांनी बिसतरो सु
नि उद्धव निजजनकीबांणी तबश्रीहरिज्ञा
श्रापबषांणी १६ श्री भगवानोवाच उद्धव
तोकूंध्यानसुनाउं जोगसहितसबश्रंगव
ताउं जोगसहित जोध्यानहीकरै तोमन
वैरजपरिहरै १७ समश्रासनमैश्रथिर
होइ जघनिपरिराषैकरदोइ देहसमांनच
लैनहीडोलै नासादृष्टिकछूनहीबोलै ९
ईडापूरककूंभथिरधारै पुनिरेचकपिं
गलानिसारै बहुस्युम्नपुरिपिंगलाद्वा
२ ईडानिसारैबारंबार १८ इदिपेत्रपेस
कलपरिहरै मेरोहेतहिरदैमैधरै उद्धवद्वै
बिधिजोकहावै तामैदहिसतगुरुतैपा

वै॥८०॥ मंत्रसहितसो नामसगर्भ॥ मंत्रबिना
सो कहिये अगर्भ॥ तातै जोगसगर्भ सै नाम
सो उत्तम है प्राणायाम॥८१॥ पूरै राषै रेचक
करै॥ ओंकार मंत्र और धरै॥ घंटानादतुल्य औ
र ध्यावै॥ तासे मिलि करि प्राणचलावै॥८२॥
पूर्वत्रिकालअभ्यासै कोइ प्राणायाम सिद्धि
तिहोइ॥ बहुरयो हृदैकमलकूं ध्यावै॥ अष्ट
दरी सुनि बिगसावै॥८३॥ औ धैमुषतै ऊर
ध करै॥ ताकै मध्य सुरजही धरै॥ सुरजमैपू
रनसी सआनै॥ सिसमैअनलतेजमलै मा
नै॥ अनलमध्य मम रूपही ध्यावै॥ प्रेमप्रीत
सेंमनहीलगावै॥ अंग समान चत्र भूजरू
प॥ अतिसीतलसुषदैन अनूप॥८४॥ नूतन
सजलमेघतनस्याम॥ ताउततल्यो अब
रकेंब्रिध्धाम॥ मंदहाससो जोनिधिआनन॥
मकराकृतकुंडलसुभकानन॥८६॥ कंठकौ
सुभ औरबनमाला॥ और भृगलताल छि बि
साला॥ संषचक्र अरु गदा अरूप द्या॥ हस्तचा
रिहै सोभास द्या॥८७॥ हेममुकटहीरामनज
ड्यो॥ अतिसोभायमान सिरधस्यो॥ मालति
लकअभुज बरनैन॥ भक्ति प्रसाद सुधाकौ
ऐन॥८८॥ किंकन अंगमुद्रिका पगन

परकटिमैक्षुद्रिका अरुसबजरधजाग्र
रेखबृंद चीन्हत चरणदूषण [illegible] द १९
नषमणिगणअतिमा प्रकास उरअग
न अंधतमनास और सकलअगनबहुदू
षण जिनकै ध्यान मिटै सबदूषण २० बैस
किसोर परमसुकमार नषसष ध्यावैबा
रेबार चरन नितै प्रीतअगारी ध्यावै पेक
गहेपकै हि क्रिटिकावै २१ पलटैनष
सिषपरजंत निसदिन हिदै ध्यावै संत औ
र बासना सबपरिहरै मैरै रूपअरुआमन
धरै २२ याबिधिजबमन निश्चलहोई त
बफिर अंगन ध्यावै कोई अतिसुदमुषमन
धारै और सकलचितवन निवारै २३ या
बिधिमन अपनैबसहोई तबबिराटमैधा
रैसोई सकलबिराटरूपममजानै मोतैभि
नकछूनहीमानै निहचलमपोभेदकू भा
नै तबताहतैमनहीनिवारै सुक्षनुस्वबृम
बिचारै २५ बृम्हबिचारिनिस्वकरै सबअ
कारदूरिपरिहरै आत्मबृम्हपेककरिदेषै चे
तनरूपअपडत तैपै २६ निजानंदनिश्च
लनिरधारि सत्यसरूपबासिनलीपारि पेक
आतमाआपेआप दूषदूषरहितपुन्यपाप
रहै

९१॥कोलनकमजीवनहीमांया॥आपेग्र
पनिरंजनराया॥ऐसें अगिनअंघटुनहोइ
॥तातैं जैपतंगासोइ॥९५॥बहुरिअगिन
हीमाहिसमावै॥तबहीपतंगानासगामा
वै॥ऐसे आत्मब्रह्मबिचारै॥एकजानिक
रिद्वैतनिवारै॥९६॥ऐसीभांतिबिचारही
करतैं॥निसदिनब्रह्ममांहिमनधरतैं॥त्रि
गुणकारसकलभ्रमभागै॥होइब्रह्मसो
व्रतजोजागै॥९८॥होयेकरिब्रह्मब्रह्ममि
लिजाहै॥जहांतैंबहुरिसोंनहीआवै॥ऐ
सीबिधसबद्रसनिहैं॥मेरोनिजानंदप
दलहै॥९९॥दोहो॥येहपैडौतोसोंकहौ॥जा
तैंहरिपुरजाये॥परयामेंकहेंबिघनहैं
तेभाषसमझाये॥१०॥इतिश्रीभागवते
महापुराणेएकादसस्कंधे श्रीभगवानउद्
वसंवादेचतुर्दसोध्याये॥१४॥श्रीभगवानुवाच॥
चौपई॥उद्धवजोगपंथसमझाऊं॥तामें
बहुतैंबिघनबताऊं॥जोइंद्रीयमनप्रान
निरोधी॥सावधानहोयेजोगहीसाधी॥
जोमेंधरैआपनोचित॥ताकौंसिद्धबि
लगनहैंनित॥जोतिनसिद्धनकूंपरिहरै॥
मोमचरननकूंत्रनसरै॥२॥तिनसूक

नहीं है तौ गुरु है तौ अब सकल कृपा ही जा
न्यौ है सो अब नि संशय मन धारी ॥ उद्धव की
नी सुनि बिहारी ॥ उद्धव उवाच ॥ के प्रका
र धारणा के [illegible] सिद्धन कौ कै बिधि से
[illegible] तिनके नाम कृपा करि कहौ जोगमि
लै सिद्धनन कूं कहौ ॥ भगवानुवाच ॥ धारना सि
द्धि है स्वामी तुम्हरी क्रिपा होय जिन आक
लौ उद्धव सब महि है मैं धारी ॥ तब बोले गो
पाल मुरारी ॥ श्री भगवानुवाच ॥ उद्धव
सिद्धि अठारा कहिये मन धारण करे
जै लहिये ॥ तिन मे अष्ट सिधि प्रधान दस
मह मति करु बषांन ॥ आतें देह रूप
अणु होय ॥ कित हु न हो अबरण कोय
अणिमादिक सिधि पेह जानौ ॥ महामोह
नी माया मानौ ॥ जो तन मैं महा [illegible] विस्तार
जहां तहां के कहुं वारन पारै ॥ महिमा नाम सि
धि सो कहिये ॥ कबहू [illegible] तिनता कूं गहि
ये ॥ [illegible] ओपरे ह ह ही अतिल घु करै मुष्य
आवे द्रष्टन परै ॥ सो पैहल लघु मा सिद्ध क
हावे ॥ मन जन मा कौ निकट नै आवे ॥ जे
जे इंद्रि पै भोगन करै जहां तहां विषय पैन
बिसतरै ॥ तिन सब भोगन जाकरि लहिये

प्रापतिनामसिधिसोकहिये॥११॥येकरि
ठोरवैठेरहे॥ दि सेसुनेसकलवीकहें॥ ताहि
श्रोगोचररहें नकोइ॥ सोप्रकासकसिधके
होइ॥ १२॥ इंद्रीयेदेहवुधिमनप्रान॥ तिहूलो
कतिनकोअस्थान॥ तिनकूंताप्रेरेजुजा
नै॥ तिहईसतासिद्धवषानै॥ १३॥ विषयेसु
षनकूंकदेनगहे॥ जातेअतिग्यानदितरहे
॥नामअविसितासिधकहावे॥ मेरैभक्ति
निकस्नहीजावे॥ १४॥ जोईकामनमेसो
लावे॥ सोसोसकलपलकमेआवे॥ वसि
तानामसिधहैसोइ॥ मेरैजनआदरैनको
इ॥ १५॥ अष्टसिधयेअतिपरधान॥ ईनतेम
धममध्यौआन॥ तनकेगुनबाधेनको
इ॥ नामअनूमीकहीयेसोइ॥ १६॥ दूरश्रव
नसुनेजनवैना॥ दूरदरसदेषेसबनेन॥ म
नकेवेगमनोजनधावे॥ कामरूपवहुरू
पबनावे॥ कहीपुकेतनमेकरेप्रवेस॥ सिध
कहीपरकाईप्रवेस॥ निजईछ्यातेतजेसरी
रासोसवरं... मृ... हेवीर॥ १७॥ मिलेअसरन
विचरेदेवा॥ देषेतिहैलहैसबसेवा॥ सोसु
रकीडादरसनकाहीये॥ मिथ्याफलहेक
देनगाहिये॥ १८॥ जोसकलपकरेसोहोई॥
प

गै धा॥र॥ सब्द कहन पूर्व ताहि ॥ ऐसोई जहां ॥ आसो चाहै त
होना है ॥ अपूर्ति है ॥ लगाति सिद्ध करावै ॥ १९ ॥ पै
न्त मिथ्या ग्र हरस कहीये श्रीरूप चतुष्ट न
हिमाहि है ॥ बरतमान ग्रंथ मत में ॥ विषा स
वकछू मांनै लिषै ग्र लिष्या ॥ र॥ यहै सिद्ध त्रि
काल ग्यान ॥ ग्रागै सिद्ध वधांनै ॥ ग्रान सी
तर्ङ सब्रादि ॥ वकोद्द ॥ तिनही निवारै सो ग्र
धंधा ॥ र घा ॥ दियम ग्रसत ग्र ॥ गनस्वरूजल पै भ्रा ॥
नो है है ई सो ग्रचभी ॥ पृथ्वी भ सो सिद्ध करा
वै ॥ व हार जेनता कै निकैटन ग्रावै ॥ २२ ॥ वै
ग्रे षद स ग्र सपेपंच ॥ मिलि तेईस संकलप
रपंच ॥ येमें मूलरूप ॐ चारी ॥ सा षा वहोत
नहो विस्तारी ॥ २३ ॥ मन धारना करै ते ग्रावै
जोतिनिकूं वहो विधा ॥ बिचलावै ॥ जोतिन
नै बिचलै नक बहो ॥ तो मन चरन निपावै त
नहा ॥ र भ ॥ जो धारना तै जो ग्रावै ॥ जैसे जोगी कूं
बिचलावै ॥ सो सब ॐ घवतो ॥ सो कहे ॥ जोग
पंथ कै विघ्नन दहा ॥ रूप ॥ सर्ग सुरूप जो कछू बि
स्तारा ॥ सो नानाविधि रूप है मारा ॥ ताहि ता
हि माहि मन लावै ॥ तैसा तैसा सिद्ध ही पावै ॥
२४ ॥ सबद स्पर्स रूप रस गंध ॥ पंच भूत कै
सु दम बंधा ॥ तिन मैं जा जा मैं मन लावै ॥ ताही

ताके रूप ही मिलि जावै॥२७॥ महा तत मैं मन ही लगावै॥ पंच भूत साथा करि ध्यावै॥ जा जा साधा माहि मन धारैं॥ ता ही ता सम मिटेह न धारै॥२८॥ पंच भूत के जे परमानु॥ तिन मैं जोगी धारै ध्यानु॥ ता ता सम निज लघु देह ही करै॥ का हू तैं कहु नहीं न परै॥ २९॥ ऐसी तिक अहंकार मन धारै॥ ताको मेरो रूप बिचारै॥ तब जे इंद्रिय पे जोगन करै॥ होत न आति बिषय बिसतरै॥ ३०॥ जो करदी आले बरदेषै॥ त्रि भुवन आचरन निदेषै॥ फिरे काल रूप मन धारै॥ सब ब्यापक सब ईस बिचारै॥३१॥ ताते सिद्ध ई सता पावै॥ त्रिगुन न जाने त्यों बरतावै॥ जाही सो जो इकर नावै॥ ताकै अंत्र तो जपत जावै॥३२॥ आदि पुरुष जो मेरो रूपा॥ ताते धारै चित अनुपा॥ ताते सिधि अवसता पावै॥ विषय पै निबिन आनंद दावै॥३३॥ निरगुन ब्रह्म माहि मन धारै॥ सब कर्ता सब ईस बिचारै॥ ताते बसता सिध भले है॥ सो ही सो पावै सो चहै॥३४॥ भासु इस त्रामप मो हि बिचारै॥ ता मै जो गीमन को धारै॥ ताते सुद्ध आपु रहै होई॥ षट उरमी ब्यापै को ई॥३५॥ ध्यान धारपूा न मन धारै॥ सबद रूप उर माहि बिचारै॥ तब जहां लगी पवन को आस॥ सुने तहां लौ बचन बिपास॥३६॥ नैन मैं सूरज को धारै॥ अरु सूरज मैं नै

देषिनो पहसु भिदू स्फुर गणेन॥ ब्रह्मको बिस
स्मृतीतब गोविंद परम सुजान॥ ५६ इति
श्री भागवते महापुराणे पंचमस्कंधे श्री भ
गवान गोविंद संवादे भाषायां पंचदसमोध्या
य॥ १५॥ गोविंद बाच॥ तुम हो पारब्रह्म अबिना
सी चितानंद बिग्यान प्रकासी॥ आदि अंत
बिन ध्यान नहीं जाको कोई भेद लहै नहीं ताको
॥ १॥ तुम प्रतिपालो तुम बिनसावो तुम सब
बाहरि अरु भीतरि सब आश्र लिपति लिपो क
है नाहीं॥ २॥ जहां न हो तुम ही हो एक परम ब्रह्म
जो द्रिष्टि अनेक॥ ३॥ रूप अनूप रह जग अति बिस्ता
रा॥ रचनी च बिबिध प्रकारा॥ ४॥ अरु रचना जीव
सत प्रकृति मानों॥ बिषपे नस बहो भांतिब
खानों॥ ५॥ एके एक दृष्टि करि आवै कैसे समझ कर
ब्रह्म करि ध्यावै॥ ६॥ ग्यानवंत तुव जन है जेते
॥ ब्रह्म दृष्टि देषत है तेते॥ ७॥ तातै तुम अब करता
करो॥ निज अनुभूत मो सो बिसतरो॥ ८॥ तिनमें
देषि सर्व भिन्न भेद षो॥ तन अद्वैत ब्रह्म करि ले
षे॥ ९॥ सुनि उद्धव के अति मन बैन बोले हरिजी क
रुना ऐन॥ १०॥ श्री भगवानोवाच॥ उद्धव प्रश्न
भलो तुम कीन्हो जाते ब्रह्म गति चीन्हो॥ ११॥ प्रे
म सग्र रजु नही करी॥ तासौं मै जा बिधि अचरी
॥ १२॥ ताही बिधि अब तो हि सुनाऊं॥ जैसे ब्रह्म

दिष्टि उपजाऊं जैसे अरु पांडव कुरु समेत त
वहीं जुरे भारथ के हेत ॥८॥ तब अर्जुन के रु
सब देषे सकल आपने बंधु करि लेषे
इन सबहीन कूं जै मैं मारूं आपही आपन
र कर्ता ऊं अरु ऐसी विधि आन्यो अहंका
र आपही मान्यो मारनहार तब मैं ताहि
ग्यान समझायो ॥ ताको सब अग्यान मि
टायो ॥९॥ प्रसन्न करी अर्जुन तब सी तुम मो
सूं कीन्ही है जैसी ॥ ताते उत्तर कूं उचरों प्रा
विधि सूं दिष्ट कूं करों ॥१०॥ उद्धव मैं सबही न
को स्वामी अरु सबही को अंतरजामी ॥ आपहि
ते सब कूं उपजावों सब पोषों सब कूं हरतौ
॥११॥ सकल रहैं मेरे आधीन मोही मैं सब प्र
वैलीन ॥ ताते सब मैं हूं जानहु पूर्वि भूति जानै
सब माहीं ॥१३॥ प्रतोसे बिसेष सो कहूं तेरी
हेत दिष्टि कौं देहूं सब रिद्धिकन मोही मैं रि
धक ॥ तिन मैं काल सकल जे भद का ॥१४॥
सो मैं प्रकृति त्रिगुन की आदि पंच भूतन मे
मे भूतादि सुत्र सकल बंधन मैं जानौ ॥ बडन
माह महतत्त हौं मानौ ॥१५॥ सब सूक्षम निमा
हि जीव देषौ ॥ सब दुर्जन माहि मन लेषौ ॥ वेद
न मैं ओंकार मैं त्रिन मैं मानौ
ग्यान मैं ब्रह्म जानौ ॥ अक्षर मैं अकार अ दे
॥१६॥ छंदन मैं गायत्री छंद

रवैये रा सब देवन के मध्य पुरंदर सकल
वसु मिमै मैं वैसंदर २१ नालंबकं ठूपका
दरसनमें निरंजन नाम द्वादस दिनकरमें
तिनमें मैं नारैसिंघु महोरव्य तिनमें मनु
मे सबराजनिकरि मे २८ देवरिषिनमें नार
द नाते हे नाम मैं नाथेन तिमेमानो सि
द्धनमें मैं कपिल स्वरूप पषुनमाहिगरू
ड मम रूप २८ प्रजापतिनमें मैं हुं दक्ष ति
नमें मम सरजो है लोमस बादनमें प्रधान
मनो है सब असुरनमें मैं प्रहलाद २९ तब
प्रकासमाहि दिनेस जनि दिगणमाहि
धनेस तिनमें सोम सकल जे उगन स
ब घ्रांतन में मैं हुं केतन २१ गजराजनमां
हि मैं ऐरावत मैं अनंग जे सि ९ पा
वत तहा बरन जे सब जलजंत नागनमें
मम रूप अनंत २२ नरनमाहि मम रूप न
रेस सरपनमें बासुकी सर्प हूं वे अबार
हि मे नि मे जानो दं उधरन तिनमें जममानो
२३ सकल मृगनमें मैं मृगराज सरतन
में गंगा सिरताज सब अरमतनमाहिसनत
से बनतनमाहि विपु ममबास २४ सकल
सरनमें रूप समुद्र सब कधनुक धारनिमें
रुद्र मैं हूं धनुर्ष त्रापूर्ण धनमाहि परमान

वासमैंरुतिमाहि॥२५॥जेअतिगहनहीमा
लातिनमैंभीपीपलसबबनसपतिनमैं
॥मैपुरोहितिनमाहिबसिष्टातसोंबृहस्प
तिजेलखि॥२॥सेनापतिनमैंमैंसेनानी
॥धर्मपुत्रतिकब्रह्मजानी॥सकलओघ
धनमैंनवजानो॥पितनमाहिअर्जमामा
नो॥२६॥ब्रह्मजगपसबजगपनमाहि॥वृत
अद्रोहसमाकोनाहि॥वायुअग्निजलस
रिजानी॥ओरप्रेमनघटसोधकजानी
॥२॥आत्मगुरुदेहआतमाबिचारि॥ब्रह्मचा
रिनीमैंसनतकुमारि॥स्त्रीपनमैंसतरू
पारानी॥पुरुषनमैंस्वायंभूजानी॥२
८॥सावधानतिनमैंसंवतसरओ है मैठोर
तिनमैंऽऋतुअग्रमैंधरमऋतुमैकोदिन
गुफनलीप्रीपेमोनसमान॥३०॥त्रियापु
रुषसंजोगीजेतेंब्रह्महतेंऽरैसबतेंतें॥
सकलबनिकमैंहनुमंत॥रुतिनमाहिस
मरूपबसंत॥३१॥मारगसिरमासमैजा
नो॥नि [illegible] दि त्रनमैंअभीचहीमानो॥
दिवलअपसितेररहितजेदूदश॥कमलको
ससबहीनमैंसुदरश॥३२॥जुगनमाहिस
तजुगसेनाम॥बेदनमाहिबेदमैंसाम

नरकौ बुधि बारै नहीं आवै ॥८॥ सखदे
वन मण गुरु को सेवै तन को कछु आ
परमान दे मैं ॥ मि ला आदि और कछु जो
श्री गुरु को आगि समूर पै सो ही ॥९॥ तब गु
रु ता कौं आ ॥ ज्ञा देवै तब परसाद आप
लेवै ... तजात भोजन
मन राति प्रभात ॥१०॥ नी की भांति गुरु से
वा करै जिन लीसौ पीछे अनुसरै ॥ ऐसे
... धारै मन मैं नहीं लेग बिचा
रै ॥ ऐसे गुरु कू सब रतै सो ही जो लग
वे दस मापत सो है ॥ पुनि ब्रह्मा को हि लो
कही बा है तो जहे ध्यान ही संबा है ॥११॥
गुरु कौं देह समर्पण करै ॥ वेद विचार हि
दे मैं धरै ॥ गुरु घर आगन अपु सब मां
ही सेवै मो हि अब रक कू नाही ॥१२॥ जु
ती अरु जुवतान के संगी ई नि कौ क
दैन होय प्रसंगी ॥ दर्स परस बानी प्रहास
॥ त्यागै दूरि मानि अति त्रास ॥१३॥ सौ
च आचमन अरु अस्नान सध्यो पास
ना तिय अभिमान ॥ तार प पसे वा जप तप
मि ला तजै दर्स संभाषण ई ला ॥१४॥
मन अरु बचन देह न सकारै मैं भजन

द्विदै मैं धरै ॥ अरु सम भजन सब निको
धर्म ॥ भजन बिना सब ही अधर्म ॥८०
॥ ऐसो ब्रह्मचरय ब्रत धारी ॥ द्विजनृप
निसि दिनु वेद बिचारी ॥ निगति पाप
ऐसी बिधि होई ॥ मेरी भक्ति लहै तब
सोई ॥८१॥ ऐसी बिधि भवसागर तिरै
मेरौ परम रूप कौं भजै ॥ अरु जो कोउ
होय सकामा ॥ तो सौं करै जुवती अरु
धामा ॥८२॥ कै निहकाम गहै बनबास
कै अधिकार पाय संन्यास ॥ अरु जो उ
पजै मेरी भक्ति ॥ तो वह करै न कहै अ
सक्ति ॥८३॥ यह है ब्रह्मचर्य को धर्म ॥ या
तें द्विजौ सकल अधर्म ॥ अब गृहस्त को
धर्म सुनाऊं ॥ सकल गृहस्तन कूं समु
झाऊं ॥८४॥ ब्रह्मचर्य जो नहीं ठहिरावै ॥
तो गृहस्त अस रमहि आवै ॥ गुरु तें बे
द पढै जबतही ॥ गुरु दक्षिना देह पुनित
नहीं ॥८५॥ गुरु तें आग्या लेउ रधरै ॥ तब
बिधि सौं स्नान नहीं करै ॥ तब देखै उत्तम
कुल लक्षना करै बिबाह हि त्रिप बिच
क्षना ॥८६॥ मूर्ख ही करै बिवाह बिचार ॥
बिप्र [illegible] है चारो
[illegible]

[illegible] बैस
[illegible] न नहूं
[illegible] और अहंत निकष्ट
[illegible] ते ओ आइनेजगत
[illegible] कौ कसमान दंत
[illegible] आ जिके विडुको
[illegible] नवत है ऐसे
[illegible] जैसे इनिसे
[illegible] कौ विकनगहे पट
[illegible] है नते याहि
[illegible] देह स्तनतपमापे
[illegible] हो बाये पराव
[illegible] रिये हरिभी
[illegible] सेवा बिलकरि
[illegible] लगरहे
[illegible] नाहो सेहो कौ
[illegible] केहा से सो बि
[illegible] है९ नाकोई
[illegible] श्रमपरहै
[illegible] हामेरहि तका
[illegible] हें ऐसे नाव
[illegible] हरे नी जिसम

मैसोई तैतौ सी धन्य
है। जेतौ कमरतन अर मैसतसंग पावै।
ऐसो ॥१३॥ ग्रहो सकल समस्त धरै है कूर
मूढ़िन कूं मार गमावै मैं अन्य पर
नहीं मांहे नोहे छिपी करिकै कू नांही
॥१२॥ शान सि दिन करै बिचार मिथ्या नो
नै सब संसार। ज्यों स्वप्न सब ऐसे
ऐसे ॥१३॥ ये सब
जल कै मिथ्या तरंग ज्यों निद्रा मुक्ति स्वपनो
यो मुक्ति है है आवै तौ त्यौं मिटै
मोहे ज्यों ज्यों नगो बारबार
सुपन मोहित ॥१४॥ यों सिपर प्रति देह ही
आदि हे है तो सब जित तित जावै। अरूपो
हो समाधि के लोक पावै हरषगए स
अति सोवां ॥१५॥ तातें सकल वासना दि
हे ग्रति पु समान भवन मेरे है ग्रह को
र ममता नहीं और सब माया व धन क
रिजानौ ॥१६॥ सबकौं रमन मेरे हेत करै।
मो बिछि श्रुत राये पर रहै प्रेम नाम दृढ़
उरमे राखे। और सकल हिर तैं नाखैं
॥१७॥ ऐंका पुत्र भये बन जावै किंबा गृह
ही मांहि रहो वै ऐसो जहां मुक्ति कौर
मानो और कछू हिरदै न ही आनो ॥
टा ग्रस जो सोय नवन ग्रस तो जुवत

सुता दिनसौ ग्रैनरता॥बिषपालैं टत्रिसो प
ग्रति॥ग्यान रहेत क्रमनमै चातुर॥१९
॥आपही परब्रह्म सहिनजानें॥औरन
की चिंत्यातासे र ग्रानै॥भाइ बंधपितर
रहे मेरे मो बिन दुषलहै बहुतेरे॥२०॥पै
हे अबला लघु संतति जाकी॥मो बिनु को
पे कहा गति ताकी॥पे अनाथ मो बिन
सब बाला॥क्यु करि जीवै अति बेहाला
॥२१॥मो बिन ईन्हे कौन प्रतिपालै॥कौन
बिबिधि दुषन कूं टालै॥ऐसे निसि दिन ग्रा
भै चिंता॥कबहू नहीं होवै निहचिंता॥२
२॥कबहू न सुष पावै पालौकां॥ग्रसै छि ऐ
तो भये सोका॥या बिधि चिंता करत अपा
र॥२३॥नरका ही जावे बारंबारा॥२४॥दोहा॥
ब्रह्मचर्य ग्रहचर्य कौ॥मै भाष्यौ यह ध
र्म॥यातै उद्धव और कछु॥सो सब जानि
अधर्म॥२५॥इतीश्री भागवते महापुराणे
एकादसस्कंधे श्री भगवान उद्धव संवाद
भाषांटीकायां ग्र ग्रमधर्मनिरूपणो नाम
सत्पदसोध्याय॥१७॥श्री भगवानोवाच॥
अब मै कहु धर्म बनबास॥अरु अधिकार
सहत संन्यास॥जाते मेरी भक्ति हि पावै॥

र नै आवै॥ ... अव विपचा
रहित पाये ममत्सर नै आवै॥ ... वनजा पेरहै येकंत
सहितै ... वन जापेरहै ... नैदेहको जो बाधिवनै
नाति सूल तिमे रहै नैदेहको ... बाधिवनै
सगमोती ... दम लेपकरे तिही क
... छालातनधरै ॥ ग्रिणनि
वीसेज सेवारै छीनवै मव ग्रेरथनि
वारैरहै दंत मलनहीपरिहरै ॥३॥ भूमि
सपेनविप्र कालसनांन मलनंगता
... सलसनान॥ ... ग्रीषममरितुपंचाग
निसाभोमामे ... नहीबांधै ॥ सौसम
कालजलधारासहै ॥ सीतकालसे पार
... ऐसी भांति कैतपदकर धर्धना
बाधे तोजलपुहकर आगिनि पकरितु
... नलघुपवित्र आदि द
... सलेऽ मलसूं ... रे ॥ पाषाननके
देनलिसूं बोटै यानै देहीजीविकाआपू
नही आवै ॥ ऋषिकनगहैनसंचयजा
नै ॥ ... तिनही तिनसों मोकौंजे ओर
जापवनवानवासीतजे आगिहोत्रअ
रूपतीमास तोहीदसीसवात २ मास
... हिती सबद्धिकौ मनहितकरै सोबि
न और हिरदै नही धरै सोतपकरिमो

चै श्री राधौ।प्रान है है इद्रि पमन बाधे
।छौपौ है सुद्ध वैहै मम मे कि।श्रीरत्रि
न बिस्तार बिरक्ति।पौतब हौ मम चर
न नि श्री।बै।कै क्रम बम्ह लोक है श्र
वै।१९।श्रस जो श्रे सौ का ष्ट हौ करे प्र
कामना छिरे मे धरे।ता सम मुरव दु
जोनो हौ।नावौ बपा सकल प्रमजा
हौ।छौपौ पंच हारत नरपनपा छौ।पाहे
सुध से न्यौ सहौ श्रा छौ।सक लत्रि पा
के त्याग हौ करै।मन सौ मम से रा श्र
नु सरै।१२।क्रमरुचित सब लोक हौने
जानें।तातें छिन मी गुरु करि मानें।त्या
हौ है तै करै सब त्याग।मन बच क्रम
सौ दिढ बैराग।१३।बेद बिहित बिधि
मो कौ जजौ।क्रौ त्विज कौ सबै स दैत जे
जब कोई सन्यास हौ करै।तब ही सुबि
धि लिबि लतै।१४।परि यह बिघन औने
वा कू नाही।मैरै चरन धरै उर माही।
जो काब ही न कुब स्त हि राखे।ता को पी
न श्रीरस ब नासे।१
कमे धारे।जौमल त्यौन हौ

सोदेसिदे ॥ मिष्टान्नपानधरै ॥ व्रतबोनत
लपांनकरै ॥ हि ॥ सत्यबातबानीकौ ॥ र
बोलैगिरदै ॥ बिचारकरै नहीं डोलैमो
निधारिबानीकौ डंडु ॥ ग्ररकृपा
कैनमनमैहु ॥ १७ ॥ चिंताकरै सम्र
घरिमोपर ॥ ग्रौरकछुकहुँगहैनहि
प्रामोऐविप्र चतुरबिधिजेते जोगिर
हैमिनाकूंतेते ॥ १८ ॥ विप्रकरीपजेद
सप्रकारा ॥ तिनकौतुमसौंकहेबि
चारा ॥ देवबिप्र रिषिबिप्रहीजानौ बि
प्र बिप्रसौं छत्रीमानौ ॥ १९ ॥ वैस्यसूद्र
ग्रपैसबिडाल ॥ पसुम्लेच्छ बिप्र
चंडाल ॥ जिन्हौनितरूपदेपठावै
सकलग्रंथस्तनलबतावै ॥ २० ॥
इंद्रीजीत सीलयसंतोष ॥ देवबिप्र
सोनिगतरोष ॥ तपग्ररुसत्यचाहि
साकरै ॥ दिनदिनग्रटकर्मनचतुस
रै ॥ २१ ॥ काललोपकबहुनहीहोवै रि
षिब्रह्माणकरिपतुहैसोइ ॥ बिनहि
सोफलस्योहै ॥ तिनसौदिहीबरतावै

मलन   सौ

रर नरघासीतजे रसमवसहैं॥विप्रवि
प्र नित श्रायहीगहैं॥ग्र स्यादिका
निकरै निश्चारोह॥रक्षमैमूरतजेतन
मेहि॥२३॥नीति लहीतजै नैग्रारम
॥छुनी बिप्रहि दै नहीदेम॥ग्रसजो
गै तिसु बनिजहीकरै॥पसु राषैमेती
कि सहै॥२४॥सो बहवैस्य ब्रह्मणक
कहियो॥ताते लेमि दानहीगहियें॥
तैल लोन घृत दूध रुलहा॥तिलग्र
रु नीरसमही मधुम [illegible]॥२५॥ई निको फा
बनिज करतु है जोई॥सुद्र विप्रकही
यत है सोई॥सब मतनि कौं द्रोहि करै
॥सबकौ छिद्र न देषत फिरै॥२६॥प्रति
दिन हिंसा सो अभिका सा॥विप्र कहा
है सो म नारास॥द ग्रम दग्र कारका
रिजा॥गम्य ग्रगम्य न षेग्रनाराज॥२७॥ ले
कृत घ्न सकल रूप छुन को बदल॥सो
प श्रुव हरण करै बिच दाण॥वापी कू
पतलाव प्रयावै॥बनबागादिकना
स करावै॥२८

ना

सै सैंसा विश्रम नै कू वषानै ॥ भेदक
सौ सो परधन है ॥ निंदप न्हर बैश्र
नता वहै ॥ ह ॥ सो चंडाल विपुकार
सो ते है ॥ भेद वन्ध विधि विप्र जानै ता
है ते सो विना कै ॥ औरस कलह
है प रिहै ॥ १३ ॥ मात घरनतै सिद्वा पा
है ता ही करि संतोष ७ प्रजावै सो
हि स्वावै नंदीत ३ ग ॥ ताते कछू ईक
है हि मान पूर्व कोई भगे ताकू दैपै
बैन तम माहि मनहा हापैकरापै ॥ वि
वै रै धरनी हैते सं गा करै कछु नस
वारै ग्रेमा ॥ २ ॥ तन मैं है इच्छया निगर
है करै मेरा हय हिरदै मैं धरै ॥ निस
दिन रहै आतमराम ॥ विषय सुषन
कौ सुनै न नाम ॥ २ ॥ समदरसी अ
रु धीरज वंत ॥ सदा रहै निरभय पद क
ता मै रै साधु सपोत्रि ति सुधि ॥ परम
ववेकी जो जल दूधि ॥ ३ ॥ ५ ॥ आपुही
मोहि विचारै वा ॥ कहै न देषै म्हु दि
ग्रैनैवा आतमग्रै सब्रुम्ह कौ जानै

सु अमुक्ति दो ६ अममानै ॥ ३ ॥ पावै धन
व इंद्रिपन वसि होसि मुक्ति ६ ह्वा मन
नु भै सो ऽ आश्रै सैं नानि इंद्रि पन जीतैं
मोक्ष सु निरतिका र सब बातैं ऽ हो
देहै लोक लै लोयै विरक्ति तन है नही
होवै आसक्ति ॥ ५ ॥ गुर मा मा दि कथ
प नोय रैपमि स्वाग्र पि प्रवेस हो करै
॥ ६ ॥ ऐसे पवित्र ऐसे सवन सरितावा
न पुरुष जहां आचरना तहां तहां नि
तहीं चलि जावै ॥ तिन आस मेन नि ह
पावै ॥ ७ ॥ तिनके लहै सिलाको अनं
ता तैं होवै मन परसन ॥ ताहीतें निर्म
लता लहै ॥ ८ ॥ पजै ग्यान सकल मल
दहै ॥ ९ ॥ ई इंद्रिय अ ये नि संतप न दोषै
लण ॥ १० ॥ गुर सबन सुर तें पै ॥ तातें स
नतें गहै विरक्ति नहि ६ व्याम निबि
है आसक्ति ॥ ११ ॥ पुरु सब अहंकार
बित जानै ॥ आतमा विषै स्वपन सम
मानै ॥ काहू देन हि दै चितवन करै ॥ मन
बच क्रम दु रि पा रि है ॥ १२ ॥ ऐसी वि
धि नव ६ पजै ग्यान ॥ होयै वि

सबग्रोंन ।।ग्रौरी भक्ति ह्रिदै मै ग्रावै।। तब भ
व बनौ ग्रमृत टवा वे ।।४२।। ब्रिधि विप
धसौ ग्रौ ग्रमसो नै ।। भेद सुमति कौ ग्रंक
नमोनै ।। ग्रति बुधिपरवालतासमरेहै बि
धिनैप्रधव कौ ग्रूकहै नगहै ।।४३।। सब
परग्रोंजनमत।। चैतनमपदासै ।। जडवल
पुषातवानारैनहितोई कवहूंवादनठौ
सोई।।४४।। बाहरिमधापेक समरहै ।। काव
हेकोईपद्धिनगहै ।। जो तौ कहै सुनैतौ
तोहीन बमतौ नही तांजे कयौ ।।४५।। का
हैहै डैदवेगनग्रानै ।। ग्ररु काहू कौ ग्रापु
नतौनै ।। छिद्र ग्रादिसै हृदवैन ।। ग्रंतधरे
सिरंतरचैन ।।४६।। कमाहि कौ ग्रपमानन नि
कैरै ।। मनकौ चैन माभि बिसरे ।। परस
मानवैराहि बाटनौ ।। सब कौ लिव्यारहै
कै सौनौ ।।४७।। ग्रातमग्रपुनेतन माहि
मोहिसवमै हूनौ नाही ।। जोरहै ग्रचर नि
माहि सरिसपेको घाट बिसोग जाति ग्रौ
नेको ।।४८।। नहीई छ ग्रनि छ हीकै गोर स
व ग्रापहीको बिसतै ।। जाते ग्रातम बुधि
हिराकै ।। मै देहै कैतलैसवनापै ।।४९।।
समनै समयनौ जनन ही ग्रावै ।। तो हव

प मनमैं लद्यौ॥ मर चितसवदेहहि
जानौ॥ तिनतैं सव दुष्ष सुषमानै॥५॥ तिस
वदृ घसुष क्रम सरीरा॥ पोआतममैं जो
म्यानी॥ रावकेवल हारहीन हारसौ॥६॥ यु
म भेकी रिप्रानहारासौ॥ पु प्राणनरापेहो
यैबिन्नारि॥ नेहैसो हिकूटैसे सार जोमैरी
ईवातैं सपद्यौ॥ नेतमम धूम सो कछू पा
दौ॥ धशायो॥ असनन हीवस्त्रादिक चौ
पुषे अपीयकी सुधिन आनै॥ दो॥ गि
स्माहीकरि मानै॥ प३॥ कोई देषुन मनमैं
धैरे॥ सो बिन ओरसकल परहैं॥ सो च
आवे मन ओरस्मान॥ ओरैक कछू आ
चारुन जान॥ प मतेक कछू से कातैनही
कैरे॥ जोल कछू सोई दाग्रा चरै जोमैरे
सु लिकौ मैपनाही॥ दो॥ प्रमजानत है
माहीं॥ प आपरतणा विकमै निआ चरै
॥ नौकि निकौ हित मनमै धरै॥ त्यौगदानौ
विधि विकै करनाही॥ विधिनमेद भ मज्जा
नै माही॥ पहूपर अपनी ई दाग्रा चरै
लोकलिखौ हित हिरदै धरै॥ तालो
दृष्टकौ नाही॥ ध्यान दृष्टिमत है
॥ आपूरव सै सकारहैतैं

सो करै तो नौ कहै हो सो भक्ती नही ग्रा
है सो पाप तिरस्कार न दरपावै ॥ पर अरु
नाहै ते पूछै है याका सो कहै है पावै
को त्याग पर्मभक्ति जु तिनही पा
है एसो सतगुर कै उपदेश ही आवै ॥ पर
अमही तिनका दै सो जु कि पावै मोहि
होय भव मुक्ति पार कौ ब्रह्म रूप कर
है मैं निर्बंध लिक है नही लेवै ॥ ६ ॥ अघा
सहित भ्रम रूप याते सो मन क्रम बचननि
रंतर भजै जो या गिद्ध मुह विचार ही पावै
तोल भी गुरु तज्नि कहै व आवै ॥ ६१ ॥ पी
कै सो जानै सो रहै प्रमहंस कै धर्मना
गहै ॥ पर जिन षट रिपु जीते नाही इंद्रि
ये अरु पवि कार तमा ही ॥ हरि चैवल बु
द्धि मन ग्यान वैराग्य ताकौ सकल वृथा
है ताका भेष दिखावे जीव का करै ता
को दोष कछो नही परै ॥ ६२ ॥ देव पितर
रिषि भूतन नावै तिनको रिण ग्रपनै
सिर राखै ग्रतरगति मै ताहि कि पावै
आपुहि बंध उपजावै ॥ ६३ ॥ सो सुष को
नवै है पालो व ञ्चसंत्यौ भ्रष्ट होय पर लो
क [illegible] वर्ण आश्रम के धर्म इन तें भक्ति लहै

दत्तिकर्म॥६॥ पाञ्चरात्रशास्त्रकै धर्मप्रधान
मारेनारे करन बखान॥ परमरुचि हिंसा
संन्यासी को॥ श्रुति विचारित पवनवा
सी को॥६१॥ गृहमैं दया जाप मम कर्म॥
बृह्मचर्ज गुरुसेवा धर्म॥ बृह्मचर्ज तप सौं
संतोष सकल सुह्रिद कतहूं नही रोष॥
६२॥ ऐसो जन नसकल मम कारन॥ ऐस
बहिनि के धर्म सुधारन॥ पुनि देहिं वनिता
रितु दान॥ मैं लिन गामन करै दिन आन
६३॥ विधि अपने अपने धर्म मेरै हेत
करै सब कर्म॥ सब मै जानै मेरो भाव॥
काहू परि न धरै अभाव॥६४॥ सोपावै मे
री दृढ भक्ति॥ और सकल तें करै विरक्ति
ताते उपजै मेरौ ग्यान॥ देखै मो हि मिटै
सब आन॥६५॥ ऐसे कै पावै मम रूप॥ ब
हुरि न आवै परि भव कूप॥ जे है सकल व
र्ण आश्रम॥ तिन कै परमे भावे धर्म॥६६॥
भक्ति सहित मो हि मिलावै॥ भक्ति बि
ना भव सिंधु बहावै॥ ऐसी तव लहै सो
मा भव सिंधु बहावै॥ ऐसी तत्वलहै सो
तिरै॥ और सकल नितजनमै मरै॥६७॥
देहा॥ यह उद्धव तासौ कह्यौ वर्णाश्रम
कौ धर्म॥ तातें मम भक्ति लहै छूटै व

कलका मि० १३ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे
कादस स्कंधे श्रीभगवान ने उद्धव सं भाषे
मादौ नाम पोडसो श्रध्याय धर्म निरूपण संपूर्णं
श्रष्टादसमो श्रध्याय १४ श्री भगवानो
वाच उद्धव ब्रह्मा रुद्र संकरषन रमा तिन के मैं
सब मांहे धर्म है न मेरे हि मम भक्ति है
पावे ता ते मेरो ग्यान नहीं पावे वरना श्र
म मिथ्याभिमानी सब साधन तजि मो
कूं भजे सो ऐसे मोकूं प्रिय नहीं लागे २ ग्या
नी के मेरी ही सो साधन गुरु मेरो ई नित श्रा
रा धन मोहि कर मोकूं श्राराधे तन म
न ई द्रिय मोसो बांधे ३ मो बिन स्वर्गादि
क न हले ई मेरे ई चरन निचिंत रहे ई मो
बिनु मुक्ति कर्दन न हागे मो विन सकल
वासना रहे मेरी ही हित मेरी ही ताके प्रिय
मो विन सकल श्रोर श्रातिप्रिय जे है स
हित ग्यान विग्यान ते ई जाने मोहि सु
जान प ग्यानी ते मेरे प्रिय ने नाही सदा
बसे मेरे मन मांही ऐता को मेरे सो ई प्र
५८ जो न ही पर से कोई ६ जप तप तीरथ व
रत गुरु दाना कहे का हल गिजे बिधि
नाना ते सब कैसे न होके ल गे सो ग्यान

कलातैसेवैजेसो॥१॥तातै ग्यांन हिरदै मैधारे
औरसाधसकलनिवारो॥स्वमेरूपत्री
मनोजानो॥मोहिजानिप्रभूसेवाठने॥
ताह्नैकरिसहितग्यांनबिग्यांन॥देषै
पेकसकलभगवान॥वहतैममनिज
रूपसमायेजहाजायेकोईनहीआपे॥
हजबहीप्रांणीग्यांनरहीपावै॥तबही
ममनिजरूपसमावे॥ग्यांनबिनानही
पावैमोहि॥परनिजमतोकहतहौतो
हि॥२॥जद्दतीमैबिबधबिकारजनम
मरनसुषदूषपरकारतेसमतपातन
कोजोनेसोतनमायाभमकरिमानो
॥११॥आपहीसुधनिरंजदेषै॥केतआतो
तयेकईदेषै॥पेहजेसकलप्रगटदेहो
दिसेआतममेहतनआदि॥१२॥आरु
औतहरहैकछूनाही॥आपमेंआग्यांन
हलैबरताही॥ग्यांनदृष्टिकरिदेषेजब
हलेबरताही॥ग्यांनदृष्टिकरिदेषेजब

तैसैं । ऐसे सो सुश्री हरिजी को ग्यान है १६
ग्यानपुंज को प्रकास नहीं । जैसे रवि को आ
तेम्र म ग्यान क्रिपा करि कहो । मेरे नाना
भ्रम छीद हो । स्वरूप यो ही नाथ यो विगल
लित आपनो प्रमनिधान १६ । जाके
थों है सकल महत । जाते हो पे जगत को
अंत जाबिन ग्यान कछु नाही । साधन
सकल वृथा श्रम है जाही १७ । जाको पा
ये मुक्ति नही देवे । और रन परदिष्ट
न देवे । ऐसी भक्ति क्रिपा करि कहो । अ
पने जन हो । औरनि रखहो १८ । यह भव
मारग बिकट अनंत । जामे भ्रमत ना पा
वै अंत । ता पर ते पै त्रिविध संताप । तिन
मे मेरे आप ही आप १९ । ताते जी ब्रम्हा
दृष्ट पावै । सु पठ नै सो दृष्ट दै आवै । ता
को दृष्ट जोरि दै कछु नांही । मैं बिचार देषे
मैं मन मांही २० । तुम्हे चरन छत्र सिर धारे
सो सम सत संताप निवारे । ताको दस
दिस अम्रित बरषै । ताके दरसन और स
ब हरषै २१ । जो काहू कंगाल ही दीजे
ताके सीस छत्र देदीजे । सो कै नृप
महा सुष पावै । और औरनके दृष्पमि

शावै।सो अपनै सब दूषन निवारै।सो
ऐसौ न्यो लोक मांही।तासम और
कहूं को नांही।२३।अरु जैलाकी स
र लहीं।आवै।ऐसे सकल परम पद पा
वै।पदा भरन अपस्यो बेहाला।नापर
उ रह्यो महा अ हिका लो।२५।माता तैं विष
या विषहि सुपजा मैं।तिन नि मत बहे
रे धर्म सनातन।ताते सदा अमित दूषन
पावै।जाकौ कहे अंत न आवै।२६।ताता
कूं ज्यां पियू पियावैं।ताहि कूं
पतैं मृतक जीलावै।वचनामृत की
बरषा करो।आपने गुणनि बांधि रे
क्रो।२८।तुमही जगत पिता जग स्वा
मी।जग पालक जग अंतरजामी।ऐसे
वचन सुने भगवान।तब ध्रुव सौं
भाष्यो ग्यान।२९।श्री भगवानोवाच।।
ध्रुव परसन्न करी तुम जोई।धरम पुत्र
कीन्ही थी सो ई।सरस ज्यौ मै भी मम परे
हम कूं सुन तव वचन ध्रुव रैं।२०।तैं ये
व मैं तुम्हें सुनाऊं।भक्ति ग्यान विग्या
न जनाऊं।प्रकृति पुरुष महातत्व अ
हंकार।सब दादि कनैपा

क्षेपे दस पे का पेच मे
त्रिगुण अक हि क्षिपे दसपे नाम बिब
तभिहि भये अनेक पाव स्नाम बिसतार
धपुकार इमि अठाइस को बिसतार
उर्ईन बिन और कहै कछू नाहि पेक
छ इपै सब माही जाकरि सकल पे
लकरि नांभै ताकौ साधु ग्यान वषाले
उपाअरजअयग्र ठाईस तत्व मापजा
नेसकल अतत्व आत्म ब्रह्म पेक करि
नांभै हा छिक सब मिथ्या मानै उर
रनु नांनिरमे सु विचारै तौ समस्त
ममक्रम बिचार जैसें छिसा मोहि मिट
नावैं आठाइस कौ बर ही पावै
उ आकारंत निरंतर ग्यान बिचार दपे
ब्रह्म मिटै बिस्तार ताकौ कहियेत है
बि ग्यांन तातें न है मोहित जिअग्यान
४ आदि हैतै अरु रहि है अंत सो ही है अ
बहु बरतंत वर्त्तिका रूप गटे है जैसे अ
दि हैते अरु अनंत मते ते उपनाते अब
हे मिथ्या करि देखे तिहु काल माहीं ले
जे ऐसे तिहुकाल मे धरनी घट नामि
दिक मिथ्या वरनी ३ अतिके
रन कहि मे आवे ने तिने तिसु तिम

...मा।नानाकार बेद भ्रम भाखै।।ब्रम्ह
सत्य है जो सब नाखै।।३४।।सकल घट
मैं एक बतावै।।ऐचनीचस भेद मिटावै
ऐसी भांति बिचारै बेध जानै मोहि मि
टावै भेद।।३५।।अरु त्यों ही सब परगट
देखै।।स प्रधातु के सब तन देखै।।अरु
देखै ऐपजत बिन संत।।पंप्रत है बिचा
रै संत।।३६।।अरु सत्यपुरुष भये है जेते
।।तिनको बचन बिचारै तेते।।पंकै मतो
सबन को देखै।।जानै मोहि भेद भ्रम ले
षै।।३७।।अरु त्यों अनुभव हिहि दै बिचारै
चेतन राखि अचेतन डारै।।सब चेतन आ
धारा।।इहि बिधि बिबिधि बिसतारा।।३८।।
चेतन जे उग्रर थन गहै।।चेतन बिन कै
ई नहीं रहै।।पौ वेदांत तथा दृष्टांत।।अ
भरू अरू त्यौं ही सिध्धांत।।३९।।इनि
चारु को मतो बिचारै।।मोहि जानि स
ब भेद निवारै।।सकल द्रुस्य तै होइ बिर
क्तौ।।चेतन ब्रम्ह सदा अनुरक्तौ।।४०।।
कामर चित सब मिथ्या मानै।।ब्रम्ह तौ
कलौन सार जानै।।देखौ सुनौ हृदै मैं

आवै सो तव भजन जो निबहावै ॥ ५ ॥ मेरी
भक्ति हृदै धरै जिनते भक्ति हो पतेक रै
भक्ति मम तो हेतु है जे ते तुम सों पाछै भा-
षौं ते ते ॥ ५ ॥ अब बह सौं तुव हेत बिचारौ
भक्ति सो मन उचारौ मेरी कथा सुनै अ-
रु कहै प्रीत सहित तन रंग अंग है ॥ ६ ॥ पू
जा प्रीति निष्टा धारै बहुति भाति स्तुति उ
चारै बंदन करै परदछिना दे ई ॥ अरु अ
ष्टांग प्रनाम करे ॥ ७ ॥ सब भक्तन मैं मो
को मानै पर मम जन मेरे तन मानै मम
भक्ति निको बहु बिधि सेवै तव मन-
भन तिनही को देवै ॥ ८ ॥ मेरै हेत करै जो
कारै मेरे गुन कहे उरधारै दूजी सब
कामना निवारै ॥ ९ ॥ मेरै अर्थ अर्थ सब
त्यागे सुष अरु भोगन तें बैरागे जप
तप जोग व्रत दाना सपना सन भोजन हू
न मैं नाय ॥ इत्यादिक सब मम हित करै
नातें अंतर सो परहरै सदा आप कूं मो
हि निवेदै प्रेम स त्रहेर जग पुहि मैं दै
प ॥ ऐसे जन मम भक्ति हो लहै तब अब
सेष कछू न हो रहै साधन सो भलहै सो

२॥

सकल। कालक्रमतें होवै अकल्ल ।। परा
जब मो विषे चित्तकौ धारे तब ही सांति
कर अंतमरण्‍ै ।। ४८ ।। स्वपि ग्यान वैरागादि
नकौ महिजलतें है नडभागा ।। ४९ ।। अरु जो
मेरी जुक्ति न पावै है देहगेह सो चित्त लगा
वै। तब होवै तमरज अधिकार बंधै अ
धर मधरै संसारा ।। ५० ।। बंधमुक्ति कौ चित
है कारन। वोरै चित चित इत्यारन ।। मोमे
धारै मी कौल है। भव मैं धारैं भव मैं बरै ।।
५१ ।। तातें धर्म ग्यान वैरागा ईस्वरता आ
दिक जो नाम। है समस्त मेरे आधीन। ता
तै होवै मम लौलीन ।। ५२ ।। सेवत मोहि
सकल ये पावै ।। मो बिन कोई निकट न
आवै मेरी भक्ति कहावै धर्म ।। ५३ ।। और दृजो
सकल अधरमा ।। ५४ ।। एकब्रह्म दरसन
सो ग्यान ।। ५५ ।। बिनु और सकल अग्यान
।। अरु गुन ह्वै सो है वैरागा जो समस्त बिष
येन कौ त्यागा ।। ५६ ।। अश्र रूपे स्वजे सिद्धि अ
नमादि । मम सेवग कौ सेवक आदि ।।
तातें जे मम सरन ही आवै तें ई भक्ति मु
क्ति कौं पावें ।। ५७ ।। दोहा ।। ऐसें अरजुन्त
बैनजु ।। हा ।। कहै क्रिपाकार

[illegible] बिन बोलैं सकल ग्रस
[illegible] कमनुमै जो है पे ग्रसग सो ब
हि नुरमजो दरसे है चेग सो हित्यागलजै फल
करै सो भृत ३१ परम मम धर्म ७५
अपोरुप मैं सौं नहीं ग्रान सो दरसनादी
[illegible] प्रागासमनपरम बलकहिये जा
करि [illegible] सबु मनगाहीसे ९६ भाग जो
रस [illegible] स्वर्गहि पावै चेतन निजानंद हो
[illegible] है मेरी भक्ति में कपट ला [illegible] भक्ति
बिना सो सकल ग्राशा न ९७ जाते भेद
मिटै सो बिद्या ३ द्वंद दूजो सकल ग्रा
बिद्या [illegible] मानि ग्रकर्मतगाहै मम
जनताको लजानो है ९८ निहिकं चनु
निरपेक्ष निलोभ इत्यादिक जे गुनते
लोभ सो सुष जो सुष दुष ग्रतीत पुन्य
न पाप ७ स्म नहीं सोत ९९ बिषपेनि
कीई छा दुष जानो गुनासंपन ग्राद्या
सो मनो बंध मुक्ति की जुक्ति ही जानो
मम जनपंडित ता हि बषानो ८ ग्रै
हेकारता के जगत ग्रादि ग्रपने केहि
दे है गेहादि सो समस्त मुर्ष ई जानो ता

तैंग्रौर भांतिमतिमानो॥८१॥जोकरि मोहि
लैहैसोपं ष्य॥जोप्रव्रतेसो सकलकृपण
॥नितसेतोषीसीतल हिदपे॥सालकाचि
तसबनिपरदष॥८२॥पैहैखरगसुषनि
कोभंडार॥नरकनमैतामसत्रधिका
र॥सतगुरुपेकबधुकरिजांने॥श्रौरस
कलपडैरीमानौ॥८३॥सतगुरुहै सो
मेरोरुप॥जातैजीवतजैग्रहकूप॥सत
गुरुबिनाबंधनहीकोइ॥सतगुरुबिना
सोबैरीहोइ॥८४॥मान वतनसोइग्रह
कहीपे॥ताकैग्रहै॥जहीकैरहीपे॥सो
दुलदीजो॥त्रिसवंत॥क्रपणइंद्रपबस
बरतंत॥८५॥बिषियनिग्रानासक्तिसो
इस॥बिषपेनबसतैंसकलग्रनीस॥इ
तनीप्रस्नकहीमैतोसौं॥जजाबिधिपू
छीतुममोसौं॥८६॥बिधिनेषदकेलद
नजैसैं॥भलांपुरषजानतहैतेसैं॥बिधिन
षधजोलौजांनौ॥नेचनीचबरनैभेदन
मांनौ॥८७॥सो पहसकलनषधहीजा
नौं॥भेदद्रिष्टिमेबिधिमतिमानौं॥बिधि
निषेदपञ्जुमानवमानैं॥पउतकदेनद्रि

है नहीं आनै। ह्वै तातैं विधिनिषेद क्रम।
जातौ मेरे कलस सकल करि मानौ ह्वै
होता विधिनिषेध भरम जानौ। ज्ञान क
हो जब क्रम सब बचन तब सुमरखै ने
सबकी हितु सम।१०। इती जो आगरता
लघुराते पि का हस कां दे श्री भगवान
के जु व सनवादे भाषा पा म कौन विसति
नौ धाप्पा छ्री ओ क्री ने च द्वि ना च वापड़ी
देषु मेरी तुम कर नाकरो मेरो पेह सम्मो
पारहरो तुमरी आज्ञा कहीं पै बेद ताही
मैं ही सत है मेरी आज्ञा विधि निषेध सो भेद
बखानै ताही तैं सब कोइ मानै तुम्हरी
आज्ञा कौं भ्रम तैं मैं जातैं विधि निषेध
नाहीं है मैं।। अरु प्रगट दीसै देव वि
विविध कौ बहा विधि भेद प्रगट बि
षिवरण आ सम तिनि के विविध
नीति विधि क्रम।३। तिन के प्रगट फल
भरमा दि।। अब कौन हीं पर रूप पञ्चान
नाहिं।। अरु निषेध प्रगट पतित लौंम अ
नत्र शाखिक जे सब लौं म।४। बननमें
संसार है जेते अरु तिनके काम पुनि

तेते॥तिनके फलप्रगटनरकादिक॥
कहै हैतेपरसे॥ नाईनवादिक॥ याजाके
फलही जोकहै॥ जाको करिनरतो बे
होतहै॥ अरु तौ हू बादै सबपकाल॥
परगट बिधि निषेध गोपाल॥ ६॥ अरु
जो बिधिनम नही सत्य॥ तो सुष रुह
पफल आसक्त॥ कोई स्वरग नर्कन
होजावे॥ तो बहै भ्रमकरि बिधिकरा
वै॥ ७॥ अरु काकहिये बारबार॥ तुम्ह
रेब चनअनप्रकार॥ पद तौ कहौ तु
म्हारो बेद॥ जाते बिधिनषेदके भेद
॥ चादेव पितर मुनिमानव॥ जेते॥ बेद्है
नकारे देषे तेतै॥ बिधि निषेध तिनके
फल जोनै॥ अरु त्यही तातै कै ठाने
॥ ८॥ सकलतम्हारी आगामा ही॥ जौ
जो पावै तौ वरनाही॥ सो मिथ्या को
कहिये बेद॥ याके मोहि बतावो भेद
॥ १०॥ के बिधिबचन बडे संदेह॥ वहैस
ताकि क्षप्र भूपह॥ येहप्रश्न संदेह मि
टावो॥ येक जातिके बचन सुनावो
॥ ११॥ सो बिधिप्रगट ग्यान बिस्तारो॥ जो
पनेरवै जीव निस्तारो॥ सुनि गौसी

बकी बानी ॥ तब बोले श्री सारंगपानी
॥ दोहा ॥ श्री भगवानुवाच ॥ गुह्य परम
न अब कहौं तेरै सब संदेह ही रहै मे
नाये हैं तीनि ॥ ७ पुनि क्रम सुमति गि
न समुझाय ॥ ४ जो जाको देखौ अधि
कार ता कौं तै सो कियो बिचार जो
भायो सब हीन सो ग्यान तातै बिष
ई तैं जीन ग्यान ॥ ५ तातै क्रम कर्म करि
सकल सुद्धि ॥ लेकरि ग्यान मधि ठ
हिरा ॥ ६ ॥ तातै बचन सकल समसत्
॥ बिभिन भेद भिन होय असत्य ॥ ७ ॥ परपं
सकल ग्यान के कारण ॥ ग्यान लहै तै सु
कल निवारण ॥ युत मसी ठी ब्रह्म की
जानी ॥ तातैं कहूं संदेहन आनौं ॥ ८
जिन भव सुष जो रहै सो जानै ब्रह्म
लोक लौं दुष करि मानै ॥ तातै तिन के
दुष भाजै ॥ और सकल तजि द्वै रहै ॥ ९
थिर तिनकौ ग्यान जोग अधिकार ॥ थिर है
करनो ब्रह्म बिचार ॥ अरु जन बिषै
दुषन ही जानै ॥ अरु तिन के दुमन
ही मानै ॥ परम भगति सुनि करि सुष म
नै मेरौ भजन भलो करि जानै ॥ ताकौ

भक्ति जोग अधिकारी॥ ऐसे ज्ञान त
त्व बिचारी॥१९॥ अरु जे बिषयन के आ
धीन॥ तिनके नेम सौं लवलीन॥ के
पासुन कौं नहीं अवकास॥ अरु मम
प्रीत नहीं आभास॥२०॥ तिनकौं कर्मजो
ग सुखदाई॥ इनतें औरैन अ॰ प॰ ६ पाप
पेती जो भावत होत सो॥ निहस्थल
चित है सुनयो मोसों॥२१॥ प्रथम होत जो
ग कर्म बिस्तारो॥ बिषये जीवन कूं नि
स स्तारो॥ जैं बहु बिधि युन बिस्तारा
॥ कपापु सग बिबुध परकारा॥२२॥ तिन
मे पृतन ने पजे जो लौं॥ कर्मजोगन ही
त जिपतौ लौं॥ अरु जौ लौं नबढै बैराग
॥ बिषयन कौन मिटै अनुराग॥२३॥ तौ
लौं कर्म जोगन दीतजे॥ कर्मन ही करि
मोकौं भजे॥ अपने धर्म माहि थिर रहै॥
कबहू भूलि न बेध न गहै॥२४॥ भजन मा
महौ कबहौ बिधि करै॥ सकल कर्म
म हित बिस्तरै॥ मन नैई दा सकल लो
रावै॥ सो जन स्वर्गन कूं हि जावै॥२
चैसै ग्यान भक्ति कौं लहै॥ ताते कर्म
लिमा दहै॥ ६ छवपहत नमानव औरै
सकल पि छिमै नाहि जे सो॥२ धार

नरककेबहुयाकौ॥परिकौहीनहीपा
वेताकौ॥ग्यानभक्तिपातनकरिलहै
॥औरसबनिमवजलवहै॥२७॥जोग्रै
सामानवतनपावै॥सोसमस्तकामना
मिटावै॥तजेनिषेधसकलईकर्म॥ग्रै
रुथामनाहीतजेधर्म॥२८॥ग्रैरुफिरि
नहीवहैनरदेह॥परमतननहीपावै
येहा॥ग्रपवहसोनरतनपावै॥पारि
कोनृग्यानाहिकनरहावै॥२९॥मातपि
तामाईकूललोग॥ ॥टावेकरिस
जोग॥पानुपानग्रादिकसाधै॥बाला
पनतेताकौबाधै॥३०॥तातेजोहुगिनाहि
मरैताललगिजतनप्रथहीकरै॥पातन
कूमिथ्याकरिमानै॥स्वरूपुनित्रसदानि
कारिजानै॥३१॥तातेजतननिरतरकरै॥साव
धानताहिरदेधरै॥पातनमेग्रासक्तनहोइ॥
करैउपायमुक्तिकोसोइ॥३२॥जेपंछीनरबा
साकरै॥तामैप्रीतिमोहि॥ ॥मनधरै॥स्वत
त्रिछेहीकाटेकोइ॥जिनकैहिदेदयानहोइ॥
३३॥त्रिछसगाजेपछीपरै॥तोतिनकेबासिहृ
केमरे॥पछिजोप्रथमहीत्रिछहीत्यागि॥काहू

देषि आपने ठिगायौ ॥३४॥ आयुही ऐसी भांति
बेचावै । यो छे लेहाटहे जहां भावै ॥ त्यौं ही नर
तन तरु औ धारा । आतम पंछी कियो अगार ।
३५ । ताको निसदिन करे अहार । सदा निरंतर
बारंबार । ऐसो देषि धरे मन त्रास । अथ सही त्य
गे तरु को बास ॥३६॥ यामें आय बसे ए करे । तो
तेबहु रि जनमे मरे । मानवतन भवसागर ना
व । आसरि कृपा हि हैते यावा ॥३७॥ जो मैं गुरु षेवट
सुषदाई । सानकूल में पवन सहाई । तोहू आप ही
नाही जो नहीं तारै । नाव छोडि भवसागर डारे ।
३८ । ताको आतमघाती जानो ॥ जो आतमघाति
ने मानो ॥ अरु जो भवतें होइ विरक्त । दुवमय जा
नि न होइ विरक्त ॥३९॥ सो समस्त इंद्रिय बसि करै ।
मन नि निस्चल करि मोमें धरै । जो मन धावत
अचल न होई । तोहू आतुर है उन सोई ॥४०॥ पे
के बरन दी सकल निवारै । क्रम क्रम सकल ते
या धृही टारै । कछू इक दूरै आसा मन की । छि
दे राषि मूल मनन को ॥४१॥ दैवे सात जीव को हेत
सावधान नित रहै सुचेत । आगे फल को अव
छिवता है । सुष दिषाय विरक्तै ये जावै ॥४२॥
ऐसे क्रम ही क्रम मन धारे । क्रम क्रम सकल है
कर नि...

जीति मनकी गति जानै ॥ ७३ ॥ मनजीत
न कै परम गे पावै पातै मन जानी ज्ञा
ये ऐसै अब कौनु रंगा म होई अख धार
सब होईन सोई ॥ ७४ ॥ तबै ता परख वार
कैं असवार हुन ही कर ये कहा ही
बार कहो हियै कू रूप साहित चलावै
पीछे कै देवा वक रावे ॥ ७५ ॥ ऐसी बि
धि पद कान सकरै जो जोगी क्रम के
मनम धरै सो वा विचार निरंतर के
रै जा बिधि पद ग्पद जे सरै ॥ ७६ ॥ तत
नि को गे पति बिचारै जो जो बि
नसै सो मन धारै सकल गे पाछि इ
रै को देखै आपु ही परै सकल लेले
सै ॥ ७७ ॥ या बिधि जो लगि मन बसि
होई तो लगि वा रै बिचार ही सोई
ऐसी बिधि जब सा ध बिचारै गुरुके
बचन हिदै मै धारै ॥ ७८ ॥ तब सबही
ते हो नबिर का मन धर मो मै हो पै
अनु का जोगपथ ते अ ह प्रकार २ अ
रु पहै आतम दे ह बिचार ॥ ७९ ॥ अरु
मन श्रवन कीरतन ध्यान मनजीत
न कौ पै पवन आन जोगा रूसा धान

सबपक्षनमैंलीन्हेबीन
क्रियेतीन॥ पायो॥ जातेंम
प५६ चितेचौथानही चौथे कछुन
नमोमेंठहरायो॥ ताते मोको अनुसर
करनो है नय पक्षन पापके चावे॥
नो॥५१॥ प्रश्न जो कदे रहावे॥ ताहि और
सावधानता ऐसन पाप है कहिये जा
नकरै गपाई॥ सो सो नाना विधि जोई
धापर॥ और करै अधिक मल होई॥
सोसो अधिक इमलजानो॥ बेहि
विधिनिषेध सब मानो॥५३॥ विधि
कछु तिममति दोई॥ जातें बधे रहै
निषेधये कीन्हे आपतें बहि अरवनकर
सबको ई॥ विधि अचारै॥५४॥ भला
अपने अपने नाके॥ करो अबधे
पीछे सब बधन सकल त्यागे बार
सकल कुउजो॥ सकल बहुत प्रकार॥५५
बार॥ ताते कीन्हे नहीं करना॥
॥ताते विधिनिषेध चीन धरना॥ अरु
सकल त्यागि मोमें मिथ्या जाने॥ ॥प
विनषेध जिन सबदूषक करि मानो॥५६
अब

परसमरपनलिषेकूंनांही॥ प्रबलगुनप
रपाहीन ही नाही॥ ताकौ भक्तियोग
अधिकार नहीं जे छूटे सकलबिकार
५७ मेरीकृपाजिरंतरसुनै हिर्दैमांहि
मेरे गुनगुनै दृढ बिस्वास हिर्दै मेरा
है मेरे गुन नाम जित भावै॥ ५८ पूज
यानिरूपन मैं रहै परि मन के बच
न त्यागै ग्रहै॥ सो नित भक्तियोग सो अ
है॥ मो बिन अंतरापे सो तजे॥ ५९ तत्रप
रपूजा बिस्तरै॥ ममहि तजो कछू सो
सबकरै॥ याविधि सकलबासनाना
सै॥ मेरो रूप हिर्दै परकासै॥ ६० तातेबु
रूप मम जानै द्वैत भाव मिथ्याकर
मानै॥ सेसबकर्म भ्रममय भागे॥ अंहका
र तजि सो बृत जागे॥ ६१ जहांतहां सो मो
ही कौं देखै॥ मो बिन और कछू नही लेषै
॥ ऐसे है ममरूप समावै॥ पाही जनम
और नहीं पावै॥ ६२ तातें जाके मेरी भक्ति
निसदिन मम चरन अनुरक्ति॥ ताकै
जप नाही ग्यान॥ औस नाही बैराग
निदान ६३॥ तो हू सो मो कूं अनुसरै

ग्रुति दुस्तर भव सागर तिरै॥ बरर्न ग्रम
कै धर्म नि करै॥ बहुत भांतित पकृ ग्र
नुसरै॥ ६॥ निसिद्धि निसा छ्रु गर्नान बि,
चारै॥ आहि बैराग सकल गहि डारै॥ सा
धै जोग ग्रष्टि प्रकारा॥ दान ब्रतादिक ब
हु प्रकारा॥ ६॥ पायै सब ग्रापूही ते चलि ग्रा
वे॥ मम जन कै ग्राधीन रहावे॥ मेरी भक्ति
सकल सिरताजा॥ तैसै सकल नरन
मै राजा॥ ६८॥ भुक्ति मुक्ति फल नही प्रहरे
॥ मम जन की निति सेवा करै॥ ग्रसुज द्यु
पिमै बहु विधि कहे॥ भुक्ति मुक्ति कछु
दीन्ही चहै॥ ६॥ पेरमे रैनित जन नही
लेवै॥ सकल त्याग मम चरन निसेवे॥
॥ निरपेक्षता परम है ग्रेप॥ मो बिनु सक
ल बस्तु कै हेय॥ निस्पृहता पहसु ग्रा ग्र
पारा॥ जलान काल कमै ग्रधिकारा॥ नि
स्पृहमै निस्पृही जो होय॥ मेरै भक्ति कही
जै सोय॥ ६६॥ मेरे समल छुनै है जामें॥ मे
रे रूप ज्ञानि पोतामै॥ सब तैं निस्पृहि
नि मम भक्ति॥ भै निस्पृहता सो ग्रनुर
क्ति॥ ७॥ तातै निस्पृहता सुषग्रेसो॥ स
कल बिस्व मे नाही जैसो॥ सो निस्पृह

ज्ञानमैं सुषमा है निस्चै साहब के निक
ट न आवै ११ जै पंकत म तौ है मेरै तिन
कौ पूरन भाव नहीं तिरै राग दोष वर्जित समु
द्र सैं त्रिगुणातीत ब्रह्म कूं परसै १२ ऐसे
तीनसं थाभि स्तारैं है तिनि के बहु जीव निस्ता
रे जे ईसे मन ईनमें आवै ते इते मेरे पद पावै
१३ [illegible] जेई न पंथन कौं तजे करै क्रम
अधिकार तिनि प्रभु जीवन कौं कहै बि
धि निषेध विस्तार १४ इती श्री [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ग्यान भक्ति अरु कर्म ३ पाये आप मिल
न कौं दिये बताये परि जे अति हीन प्रभु अगण
नाई तिनकौं छोडि [illegible] करै कछु आन १
वस्तु कौ मन मांहि दै धारै तिनि हित बहु क
र्म नि विस्तारै ते प्रभु दूष निरंतर पावै भ
व प्रवाह मांहि ही बहि बहि जावैं २ तिनि हित
विधि निषेद ज्यूं डारै तिनि कै बहु आरंभ
निवारैं आपनो आपनो अधिकार तामैं
बरतैं तिनि विस्तार ३ [illegible] जो नीचो सब प्रह
रैं आपने क्रम माहि अनुसरै सो सो तिन

तिन के विधजानो। जाते और निषेधही मानै
। अपेक कछु वस्तु वुधि मति देषो जीवपसन
कौ वधनलेषे। उपजी वस्तु समस्त्र सुध
। आतम पेक सो सदा सुध। पाक मुक्कम
सकल को उवनु कारन। मे पेह की पालेद
5 चारन पाप को डाप धर्म गन हिवा नीपा
विधि वहु और न कौ उ। ग एह पसमस्त जग को
बोतार। पाते जग को वारन पार। क्षिति जल
तेज पवन अकास। सव जग पंच भूत प्रका
स। ७। व्रह्मादिक थावर पर्जत। पंच भूत क
र सब वस्तंत। अरु आतम पेकै सब मां
तातै भेद क कछु नाही। चाप रित पाप
मै भावी वेदाता कर कीन्हे नाना भेद। ति
न के सार पसुष के हेत। विधि चारै फल
निसमेत। सो देस काल गुन द्रव्य स्व भाव। ६
न को भाषे नाना भाव। पेक निषेध पेक वि
धि भाषै। पौ सकौ चमाहि सब राषे। ९। जो
देसि कस न म्रिगा नाही। अरु दिज सेवा न क
रांही। अरु जो करम मजो वहरे हे। पाश्चमलेछ
तहा वास गहे। ११। अरु जु द्यापि तु रुकोत
हा नाही। परि मग ह रत्रा दिक के माही। अ
रु जो मृगा धादि क पर हरे। परकद रजता द्र
रु जो म्रिगा धादि कपर हरै। परकद रजता मेटी होये प
रिन करे। १२। अरु कद रजता मेटी हो पे प

रिनहूमैं रसरकौमैं सोनहै रतनबेषबहुहै
तिनमें बासा किन्ही कौनै ॥१७॥ तिनतेंयों
रहैसमझैजानैं तिनमोहीवासाहिककठौनैं
असनौकाल धर्मकै नाही सतकर्याधिन
नैनामगोपिनमेंसहूपनिकैकलहैजै
जतनसानमें बिधिकैगनबखानिकसल
लिसमपलादिकौतेहिदिसमपह
सनैसुमैबदननाहीं सुधैतेपुहपाईकै
तोतौ तबबहुमानाहै सुसबहुतकौरहे
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥१९॥ [illegible]
तैऔरजेजानै सुमर सुमरे रमत्यागै
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

पै।।फांधु गयेतें निरमल कहीये।।सल्कि अव
स्यातप असनान।।सेसकार सुअकर्म अरु
दान।।२२।।अमसुमरणतें होवै सुष।।करै ग्रन
था होई असुष।।मेरो मंत्र लीये बिधि जानैं।।मं
त्र बिहीनां निषेद ही मानैं।।२३।।अरु पै मो ल्हि
ध सब कर्म।।करै विपजीय होये अधर्म।।देसा
अरु काल क्रम अरु करता।।द्रव्य मंत्र पषट
आचरता।।२४।।यजब सुध होई तब सुष।।क
है असुध पो होय सुष।।पै असुध तो होय अ
सुष।।अस्कहूं होव सुध असुध।।२५।।सुध
असुध भेद है जाकै।।राज दुरूकौ है ताताकैं
जो कहीये ऊंचे का धर्म।।नीचे कौ है वैहै है
अधर्म।।२६।।अरु जो कछू धर्म नीचे कौ सो
धर्म ऊंचे कौ।।ताहीतें दो ऊ भ्रम जानैं।।मेरे
भक्ति बादन ही मानैं।।२७।।जो कछू है बिपरी
त लीजै।।लैं ऊंचै नीचै कौ दीजै।।तो तिन मैं
तो भेद न होई।।मरतो अमरये कसम होई।।
२८।।जो यह है बिधि निषेध ऊ होवै।।ऊंच नीच
की औरे न जोवै।।पर ये दो ऊ है कछू नाही आ
पु बिचारो अंतर मांही।।२९।।नीचे नीच कौ
आर चौरी मदिरापानादिक ऊंकार तो है
ऊनकौ दूषन नांही।।नितहि नहै
है।।३०।।जैसे मस्यो

रहै वो मूढ़ नांही परजै कक्र बढ़े है ३० वै
से यावत है हिये वे नीचे ३१ अरु जो यही
वा रतु से संग रतु कै सम पजु व ता प्रसंग
तोता कौं कछू दूषन नाहीं सो नित है दूष
न हीमांही ३२ ताते तिन कौ संग न करतो
तन कोमल बचन सुकल पूरनो ज्यौं ज्यौं
प्राणी कोई क्रम तो तो छूटे पावे सर्म ३३
छेम ६ मे सव हीन को पेह मेटै सोक मो
ह संदेह या नि मत मै वेद सुनाए पारे पो
रे मे ठहराए ३ पापाकू भूमका हि सकल
निवारे ऐसी भांति न जीव निस्तारे तब
नर विषपेन तम जाने तब तिन माहि
आस कि हीवाने ३५ ताते हिरदै कीं पज
कूप ताल तहुं क लरु को धाम ताही है
को ध उपजावे तब अविवक आपही
आवे ३६ सो अविब कहे सब गणन ता
ते प्राणी मृतक समान ताते काज अकाज
न माने निसदिन बहु बिधि चिंता ठाने ३
७ सब पुर पार प है वे हान निस दिन रहै
दुषत अरु दीन ताते समुझे आपुन आन
म पा जीवै विह समान ३८ ज्यों होवै
ल्हसर की पालि स्वास लेपे पो पोवै का
ल चरु पु निकै है कम फल जेते स्वागि

दिकनानाबिधिकेते॥३८॥तेतेकहिकरि
रुचिउपजाई॥मे॥निषेधनिबिधकर
बाई॥जैसेओषधकडूकपीमावै॥बाल
ककौलाडूदिषलावै॥४०॥ओषधकोफ
ललाडूनांही॥ओषधहूतैरोगसंहारी॥ बे-
सुर्गहितजोकर्मनिकरै॥पुनिसुनितत्वफ
लहीपरहरै॥४१॥तबअ्रनषतजिअर्पही
पावै॥मोमेंकैनिकर्मसमावै॥अरुपेजब
तैजनमहीपावै॥तबतैबिषयेआपुकमा
वै॥४२॥पुत्रकलत्रकूरमरुप्रानां॥इनुकै
हेतचहैसुषनानां॥आपुआपुकूकैरेग्र
नर्थ॥तिनकौमुरषजानैअर्थ॥४३॥ऐ
सेपाभवमैनितभ्रमै॥कहेनजानैसुषके
मरमै॥अरुतिनकैजोभरमतदेषै॥सदा
निरंतरदुषतलेषै॥४४॥सोतिनकूकबहू
नकहावै॥अर्थरुकामकदेनदृढावै॥ता
तैमैतोसबबिधिजांनै॥कैसेकर्मरुका
मबषानै॥४५॥परजोकछूसुरतिमांहि
सुनाये॥अर्थधर्मअरुकामबताये॥तेतेतो
सकलकूआवनकारना॥हितबिचारकी
नौउचारना॥४६॥ऐसेबेदतत्वनहीजा
नै॥मुरषपुषातबैनबषानै॥फलनहेत

आरंभै कर्म तिनको करै न छूटै भ्रम ॥४७॥ का
मीकूं मन लोभ अधिकारी त्रिस्ना आकुल
सदा विकारी फूल ही माहि फल करि मानै
॥ता मन लागि तत्व न ही जानै ॥४८॥ मैं तिन
कै तिन ही रिदै माहि परतो है ते जानैं नाही
जाते पैठ सब जगत पसारा अरु समस्त
जाकी आधारा ॥४९॥ जाकी सक्ति पाइ इस
ब बरतैं देव कसंग लोइ ज्यों निरतै जाकी
आपा सब कोइ मानै कोइ मरि जादा न ही
मानैं ॥५०॥ है सो मैं परगट सब ईस जैसैस
काल देह मैं सास परितें काम करमत म
अंध न मोहि देषैं अरु न ही बंध ॥५१॥ जैसैं
नैन रोग भये होवै आगे होती बस्तु न जोवै
॥ यौं अग्यान अंधक भि ष्ट देषै नही निकट
भये ईस ॥५२॥ तैसौ बिन मम मतो न जानैं ही
ति जीव निज ग्यानि कठानैं तै फिरि तिन ही
है नैं परलोक जनम जनम पावै भै लोक ॥५
३॥ जब पावैं हिंसा बहु दैषी है निह निज आ
जाव का पेषी तिनके हेतक हा पन बानी
॥ है सो जग पहि माहि बषानी ॥५४॥ प्रभु
ध पैक जगप मैं भाष्यौ अरु वस्तु दूरि क
रि नाष्यौ जब प्रानी ता मैं ठहरावै तब पु
नि वेद सकल मिटावै ॥५५॥ प्रानि मत प

७९ हिंसा भाखी सो मुरष जिन ततकारि राषी
। तातैं बहु बिधि कर्मन करैं। बहु कामना हि
दै मैं धरैं। ५९। पसु हिंसा करि कैं बिहार
। जे जे पावैं बहु परकार। देव पितर भूतन
कूं जजे। ६०। ते सुष ई दान हीत जे। ६१। सु
पन तुल्य स्वर्गादिक लोक। तिनकों भैत
म सुभि पो लोक। तिनकी इच्छा हिदै धरैं
। दूर्वापर च कर्मनि बिस्तरैं। ६२। बिघु
होइ बहु कर्मन मां ही स्वर्गादिक न पा
वै नाहीं। जौ कोई सापेर पार ही जावै। धन
हित यह कै धन होत गावैं। ६३। पापी है प
रै बिघन जे कोई। तो द्रव्य ते जावै सोई। तो
जे बहु बिधि कर्म न पावैं। ६४। इह लोक
तै जावै। ६५। सातिक जे ते देवनि भजे जथा
दिक निराज सी जजे। तामस भूत प्रेत व
हे जो है। तन मन धन तिन तिनकों देवैं। ६६
। ६७। इहि जग्य बहुत बिधि कीजे। विप्र बहु
त भांति दक्षना दीजे। तातें स्वर्गादिक
सुष पैये। तहां बहुत बिधि भोग भोगियै
। ६८। पुनि जब हो वै तिनको अंत। तब
हूजै भुव मैं धनवंत। ६९। ऐसी भांति काम
ना करैं। तिन निमत कर्मन बिस्तरैं

६३॥ तनकोमेरी जात नाभावै ॥ मति कहतै ॥
॥ हिरदे आवै ॥ जो हिय बेद कारमर्म और ॥ धरम अ
रथ को मर्म अरथ बिस्तारै ॥ ६४ ॥ पहिले था यि ब्रिम्ह
हे तातें ॥ ब्रम्ह नाम है जो सकल न छूटावै ॥ पर
श्रुति को आसन हीजाने तर्क है और आगे ब
षाने ॥ ६५ ॥ सबद ब्रम्ह महा दुरबोध है जाको कोई
लेहै न थाह ॥ ६६ ॥ ब्रम्ह स्थूल रूप है वाके भी बिन
भेद लहे को ताके ॥ ६६ ॥ प्रान स्वास परसे नाम
यस्ती को मन मै धाम तौ जीव ब्रम्ह यह सो मूल
८ यो थी आछे बिराट स्थूल ॥ ६७ ॥ भेद तीन को कोई न जा
नै ताते और और बखाने ॥ अनियार कोई न होय
वै सूक्ष्म यथा हीन है जावै ॥ ६८ ॥ अतिग भार ज्ञ
रथ है याको ॥ कोई भेद न जानत ताको ॥ सब हि नमै
अंतरजामी ॥ मति अनंत सकलन को स्वामी ॥ ६९ ॥ स
ब व्यापक ब्रम्ह सरूप ॥ तिय तन का स्वयम अनू
प ॥ सोई व्यापक सब ही मांही ॥ सबद रूप है जा को नां
ही ॥ ७० ॥ कमल नाल में तत्व नसे सबद रूप सब मे
मे ऐसे सोई प्रगटो बहु बिस्तार ॥ मन को रि हिरदय
ते सुखकार ॥ ७१ ॥ ज्यों मकरी तन ते बिस्तारै करि बि
स्तार बहुरि सहारै ॥ बेद रूप त्यों मम बिस्तार के
कारन मूल अविकार ॥ ७२ ॥ ताते अदेख बहुत पको

प्रतिनौं तें छंद द्वादश होय॥ चारि च्यारि अक्षर अ
धिकाही॥ छंद होत ऐसी विधि जाई॥ ७॥ ये कहि
तें पूर्होहि अनेक बहु रैसैं सकल ये के के ये कं गा
यत्री अरु सत्रहो बीस॥ अनुसति का छंद अष्ट अक्षबीस
७॥ जो बैंसनु ष्टप सोहै॥ बृहती नाम तासु ती
पट कौं है॥ पंक्ति नाम अक्षर चौस॥ त्यौंहि ले
त्रिष्टुप च्यवलीसा॥ १५॥ जगती छंद अष्ट
चालीसा॥ कहत पार नही कोटि बारीस
॥ या विधि परगट वेद विस्तारा॥ जा कौ क
हूं वार नहीं पारा॥ १६॥ कहा छिदै मैं का
ह बतावौं॥ लेकर अंत कहां ठहरावे॥
॥ ऐसो मत तोनं को जानै कोइ॥ मो बिनु भा
वै बिधि कीन होई॥ १७॥ जग पर रूप कहि
मो कौं राखै॥ सकल देव मम मो कौं भा
षै॥ मेरे हेत कर्म करवावै॥ मोतें पजा
सकल बतावै॥ १८॥ अंत सकल को
भाषै नास॥ मो कूं कहै नित परकास॥
नाना रूप निरूपा जनावै॥ ये क ब्रह्म
कहि सकल गनावै॥ १९॥ जैसें सांपज
वरी माहीं॥ यों सब जगत बतावै नाही
मो कौं नित निरज भाषै॥ अंजन सक
ल दूरि करि नाषै॥ २०॥ तातें सुरति नि

नसै हि बृत है परि पैहै को इत न न मूवै
सोन है नन ग्रंथीत है निह का मरहै।
हौ हैन दई ह्वै पै सु निकरि निजत
न कोउ छूद लसो ग्रेनद प्रस्त करीत
व दूस सो जातें छूट वंद रा ई। ९१
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
वाच है देखसवनतहु कैते कहे
न वा को सो मै है जिन कोर चित सके
स स र जो दसै नाता पर क्रिा ९ कुम्हो
श्री हा है स तिनको है नते द्द दूरि रतै मगह
रह है ते रघवहै वे हि कहै अरु तिन
नहु नि तौ है गहै र वै ई जहैत त्व छवी
स ग्र त्तो वी ई वा हे पची स वै ई पट गे
र ई चार वे ई भा मे सपत विचार ३ के
ई न हु को ब रै बिन्द वे ई भाषे दस गुरु
पव वैई तत्व वता वे पाउ स ग्रत्यो प
ला कहे दूपा दस २ के ई भाषे दस ग्र रु सा
त पे रि पन्नत सुन्तहि बिघ्यात जौन सो प्रा
न ल है नाघे आपुने आपने मत ही राषे।
कौन कारी निन्है नसुनावो सतमता

सोमोहिबतावो॥सुनि उद्धव केबैन रसा-
ला कृपासिंधु बोले गोपाल॥६॥ श्रीभग
वान वाच॥ हे उद्धव जो जो सब भाषे॥
जिन जिन तेतत्व निराषे॥ ते ते तुम सब जानो
सत्य तन बिचारे सबै अ सत्य॥७॥ मायादि
षिक है जो जेते॥ माया मांहि सत्य हैं तेते॥ मो
हि देषै अ जो तिन को देषै॥ तो सम तहें मि-
थ्या लेषै॥ माया मांहि जुक्ति बिचारे॥ अ
पुनो अपनो मतो उचारे॥ पहस्रो यह मोप
ह पोंही॥ कहे सबै मीलि अपन मांही॥८
पहस्रोही है जो मई भाषो॥ तेई रीक्रि हांस
त्यही राषो॥ या बिधि मम माया भ्रम लाये
॥ तिन नाना बिधि पच लाये॥९॥ मम मा
या की सक्ति अनंत॥ तिन को पपनि को न
पा अंत॥ जब सम दम उर अंतर आवै॥ तब
ये भेद सकल मिटि जावै॥१०॥ जेते तत्व स
कल माया के॥ जिनते भय मते ता ताके॥
क्रम क्रम तत उपजाते गये॥ त्यों त्यों भेद
बहुत बिधि भये॥११॥ जैसे एक वृक्ष दो बि
स्तारा॥ ताकी संपत बहु तिप्रकार॥ कछु
साषा बहु तैपर साषा॥ अर तिन की बहु
बिधि उपसाषा॥ तिन बिस

तार [illegible] पातपूलफलविधिप्रकास
रूतावू नहीं बणि कोई जौजैं करें सत्य
सो होई ॥ १ ॥ थोरे हो पै कहे जो सा षे ब
हैं तहो हि भिवेप रिसाषा ॥ जे पसाषा
सिबहुविधि मेवे ते सब पंथ सत्य सब
जोहै ॥ १५ ॥ यो संसार वृक्ष विस्तार माय
मूल ब्रह्म परकार ॥ तत्व सकल साष
परसाषा ॥ श्रुति न केवहु विधि साष
॥ १६ ॥ ताते जो बरनै तो सत्य पर सब म
ा सकल असत्य ॥ ज्यौं ही जो जिन को म
न आयो त्यौं हीं तौ नित बरन सुनायो ॥
॥ १७ ॥ माया करि बुधा सो आतम ताते छूटे
सो पर मातम ॥ पै के अरु जड ते चौबीस
॥ तिन को मिलै सकल छबीस ॥ १८ ॥ अरु
जे बंध मुक्ति है दोई ते मन माया सत्य न
कोई ताते बुधि है मे नांही ॥ पोप ची सजा
नो मन मांही ॥ १९ ॥ सत रज तमगुण है जे
ते जड स रूप माया के तेते ॥ रज उतपत स
ति का प्रतिपाल ॥ तामस रूप ग्रहत है का
ल ॥ २ ॥ राजस हहतै क म ये विकार ॥ तामस
ते अबवे क अपार ॥ सातिक गुण ते उप
जे ग्यांन ॥ पै है माया के गुण नान ॥ २१ ॥

इनतैंपरैंआतमामांनैा।तातैंव्रह्मरूपा-
करिजांनैा।प्रकृतीसत्ताइतैंकहै।अरु
तांहीसुनिऔरैगाहै।२२।सोहैकालगु
ननबिस्तार।पलसूतसुनाऊसौंसक्ति
पसारा।तातैंकालरूपहरिजांनैा।अ
रुसुभावमहतत्वहीमांनैा।२३।तातैं हौ
तत्वअधिकनहीगयै।पंचवीसछ
वीसैंकहीयै।प्रकृतिपुरुषमहातत
अहंकार।तनमात्रातैपचप्रकार।२
४।करनत्वचानैनरसघ्रान।पेपा-
चोइंद्रीपैहैंग्यांन।पापुउपस्थचरन
करवांनी।पंचकर्मइंद्रीपैहजांनी।२
५।मनइसहूइंद्रिपैकौराजा।जाकीस
क्तिकरैसबकाजा।छितजल तेजपव
नआकास अठाईसतानगुणपास।
२६।गति३तसौकर्मअरुबचन।।
पेपंचइंद्रिपैफलरचाना।तातेंअष्ट
बिंसतितत्व।अधिकनभाषैग्यांनी
सत्वा२७।अष्टआदितीमायापैकापु
रषसक्तितैभइअनेक।तनमात्राम
हतत्तअहंकार।पैहैकारनसपतप्र
कार।२।पंचभूतअरुमनइंद्रिपै

प्रकृति बिरगहो ॥ [illegible] जिनमै भेद न जानौ
ऐसे प्रकृति मे के सब अनुसरै ॥ जिनमे प्रकृ
ति कहि होवै किये कौन ग्रात माजो
हि ग्राहीये ॥ [illegible] क्रिया कहि रुण बानी बि
स्तरो [illegible] संसप रिहरो तुव
माया बंधो ससा सार तुम ही कहै तो हो
[illegible] मही माया की गति जा
नौ [illegible] कृपा करो तब तुम ही भानो बा
नी सुनी [illegible] अपने की तब बोले श्री
[illegible] कौ ॥ [illegible] श्री
[illegible] ग्यान अगाध कोई पेक
[illegible] समाधि सो मह ग्यान सुना जौ तो
[illegible] अनुभूत मोहि ॥ [illegible] अब
[illegible] सो सू नाम पूल
[illegible] प्रकार [illegible] जे बरतै हो पे बिना
सत्ता मे [illegible] तिन मय प्रकास ॥ [illegible]
व पह है मेरी माया ॥ तिन सतर जत मगु
न [illegible] माया ॥ तिनकौ त्रिबिध सकला
बि सारा ॥ जाको [illegible] बारन पारा ॥
[illegible] बिध [illegible] नौ परि बहै भेद जि
[illegible] जीव [illegible] नित पे [illegible] अध्यात मग्र
[illegible] भूत [illegible]

गनेदभूत॥४॥ द्विगत्र धातमरूप॥
अधिभूतारविअधि दैवतमिलि अ
दभूतातीनों मिलिपरसपरजवही ति
नकोकारजसीझैतवही॥५॥तीनों
बिनाकछूनहीहोरीतीनों मिलिवरतै
सबकोईत्वचासपरसपवनजेता॥
नो॥कर्णनिरुसबदृदिसाप्रेमानो॥
प॥नासागंधअस्वनीसुता॥जिह्वार
सबरुनजलजूता॥चितचेतनाअंत
रजामी॥बुद्धिबोधनाब्रम्हास्वामी॥प
॥अहंकारअहंकर्तारुद्रामनमानि
प्रोदवालाचंद्र॥प॥बिबिधिविधप्रप
चपसारा॥सकलपरेआतमनिजसा
रा॥प॥इनतीनोंबिनजगतनहोईते
आतमबिनुरहैनकोई॥आदिसका
लकीआतमयेकाजातेचेतनहोही
अनेका॥पप॥आतमस्वप्रकासअवि
नासी॥चेतनरूपसकलपरकासी॥
येसबआतमकेआधारा॥अरुआतम
सकलकेपार॥पप॥वनआतमाकं
छूनहीहोई॥अरुआतमानजानेकोई
महतत्वनेपजो अहंकार॥तिहंगु

गामिको विविधिप्रकार। सो
आपोल मूलकरि मानो। ताकौ कीपो
जगत सब जानो। सो आतमा आप
उहिलीयो। नर भए आपु आपुकौ
कीयो। ५१ आतम सदा सुकंई रूप
ग्रहै कारतेपरै अनूप। सोजब रूप
आपनो जानै। तवही सकल उपाधि
हि भानै। ५२ सोकछु है मैनही उपा
धि सम। परि आतमा लई कौ खिडाधि
सैं जबही अपनो रूप। तव आतमा
तजै भवकूप। ५२ अरु तव रूप
आपनो जानै जव मम चरण हिरदै
मै आनै। जगदि अप्र सब संसार।
जो विश्व दीसे विवध परकार। ५४
परजौ लौ नही ताकौ भजे जौ लौ
निजि अगयान न तजै। जबही मेरी स
रनही आवै। तबही आतम गयान ही
पावै। है। गैसौ श्री मुष बैन सुनि
परवैराति पुलषकौ ग्यान। गै
कीनो पुसजव दरिशन परम
सुजान। है। गै। नृप। है। तुम

करिरहित बुधि है तिनकी कहीपे दे
व कौन गति तिनकी सकल बिया
पी आतमपेकौ कोकारिपावै दह
अनेक हरि अरु सुमगुन सुमकर
मैहैतेतेत्रिगुणरहितकहीपेस
बतेते तिनकमिनिनिह क्रम बुध
बो कोकरि ज्योतिअजोनीपावे ६
अरु अमरमरै कैसे करिहै ॥ बापा
कौमोहि बतावो भेद पहनुमा
बिनानकोइजानैजद्यपिबिद्या
वेदबखानै जोकछुपढेबधसा
ह नातेतत्वनजानैकोइ या बि
धि ग्रहवपूछो गणनातबहरि
बोले श्रीभगवान ॥६॥ श्रीभग
वानोवाच ॥ सवयरुमनपरम
बिकारी सबइंद्रियनिमाहिअधि
कारी इंद्रियनके सबमनईकरे सु
षहितवहे ग्रहमबिसतरै ॥ हि ह
॥सोतनतजिहजेतनमावैतेहि
तहिही आतमा आवै निजजित

सुषमि सुनै आरु देषै॥ तिन तिनकौ
उतमकै रिदैमैं॥६॥ तनकौ सोमन
भिसदिन धावै॥ पह तनकौ छीन भये
तहां जावै॥ अरु तनपाई बिसारै मा
कौ॥ जनममरनक हितु है ताकौ
है॥ जौ तनमैं बांधै अभिमान कौ
दुषरूवतन॥ जो आन॥ जनममरन
आतमना सोई॥८॥ जो जनममरन
नहीं कोई॥९॥ जैसे सुपन मनो
२ पजावै॥ ऐसे तन छोडि और ई
पावै॥ तब पातन की सुधु न रहै॥
बाही तनकौ आपुही कहै॥१०॥ जन
मरु मरन सुभूतकौ होई॥ आतमज
ननमरन है सोई॥ प्रेरक छु आत
मनही मैं॥ अरु कबहू नाही आ
तरै॥११॥ पै तनमैं मनकौ आभि
मानो॥ तातें तन उपजत है नाना॥
तेसब आतमाकै आधारा॥ तनम
न बुधि चित अहंकारा॥१२॥ ति
नसंगति आतमकौ रूप॥ तिन

हितजै छिनपलनही सुष॥ जैहव
सकल देहहैजेते॥ सदा सकल बि
नसतहैतेते॥१३॥ कालनदीपरवा
हपुवंडज्ञाकरिपलकुपरतनहोय
३॥ जैसेनदीनिरंतरवहै परदेषन
कोतोहीरहै॥१४॥ अरु जो अविनि
रतरजावे॥ पोरिषपादिकतिनमेरहि
जावे॥ अरु जैसेसववृक्षनकेफल
दीसेतोपरिषिरनाहीपुल॥१५॥ कालहि
तोहासवदेहनिकोजानो॥ जद्यपिअ
म सतनिरंतरमानो॥ वाकलुकुमारि
वस्थाजातीलेषै॥ परतोहमुरख
मुवादिकदेषै॥१६॥ परतोहमुरखमाने
नहीजाने॥ मैवस्तोपोकरिमाने
॥ पर आतमसोसदाअजनम देह
संगतैपावैजन्म॥१७॥ अरु तुअमे
२मिरअजानो॥ देहसंगमरनोसुमान
॥ जैसेअगिनदारुकेसंग॥ सदा है जे
पतिअरुभंग॥१८॥ जोलगितनकी
संगतिरहै॥ तोलगिआतमअ
महै॥ गभैप्रवेसवढिअ

स
अवृषानाथाकुमारा॥७९॥जोनिम
ध्या जारासमरनो॥ नाव अवस्था देह
आ वरना॥ आतमएक रूपसब हि न
मैं॥ कोई नमिलिये तिन तिनमें॥८०॥ औ
मैंनो नि मुक्ततब होइ॥ मेरीसरनाग
ति जोको॥ आपनो हादै पिताबिचा
रे तिनकोमरनो ऽरमै धारै॥८१॥ आ
ई गौअबमै अनुरक्त॥ तोहीते ऽदे
आसक्त॥ तेतोप्रगटकालवसभये॥
॥ परवसको छिपरे सबगये॥८२॥ मेरी
मोहे है गति ऐसी॥ भई बाप दादे की
जैसी॥ असमेरे बालकजैसे॥ हमहैं
तोपिताकेतैसे॥८३॥ सकल अवस्था
सो ममगई॥ यह तो प्रगट ओरई भई
॥ नाही बिधि जैहै मनदेह॥ सबकू टैहे
पुत्र तजे धन गेह॥८४॥ पौऽरमै बहुभा
ति बिचारै॥ आपने व धन सकल निभ
वारे हे हाहि कसब संगतितजे॥ सद
॥ निरतर मोको भजे॥८५॥ बीजजन
ममता याके है अंत॥ खेतोखेतमाहिबर
तत खेतीकरन हारतें न्यारा॥ पौतक
नारो करै बिचारा॥८६॥ क्रमबीज

विस्तारैनांही॥१६॥गदकीरैजैहै तन मा
ही तनतै न्यारा आपकूंजानै॥संग कौ
रैतेसुषदूषमांनैं॥१७॥ज्यातै तन कौसं
गनिवारि॥याबिधि आपकुआपकौ त्या
गै॥जोतन न्यारो आपुनजानै॥तनसुष
हेत कमबहुठानैं॥१८॥तिनतेनानाद
हन्निपावै तिनमनजैमम रिजावै॥सांति
कतैसुरकैरिषि होई॥राजसनरकै ता
दानव होई॥१९॥तामसपस्वादिककै
भूता॥याबिधित्रिगुनजगतउदभूत॥
न दीप आतमसदा अनाहि॥केवलकं
कूनकैसमीला॥२०॥पारतकरितै का
तो होई॥संगदोषबंधुतहै सोई॥जैसे
नाचैगावै कोई तिनकौ हूजो दृष्टा
होई॥२१॥त्यौं आपूरीबैठे करै॥ता
नतालरागहिररधरै॥त्यौंमायागु
नकमिनठानै॥आतमकरैआपुकूं
मांनैं॥२२॥तिनही कमिनबंधेआप जो
कछुकरै होई सबपाप॥तिनकोजानि
तजैनहीजोलौं॥जनमसरनदूषमिटै
नतोलौं॥२३॥जलप्रवाहढिगुमढोर
कोई॥तटबिछुनदेषै॥ चलसोईन

पेन भ्रमत जो कोई दुषे तब सबघट
नी भ्रमती लेषे १४ तैसे पेह आतमा
फिर जाने और सकल चंचल करि मा
है निहूल मन करि देषे जबही ते
सब हू रत सब तब ही १५ जैसे स्वा
पन मनोरथ भ्रम षा पेसब जग अरु बि
षमा सषा परज द्यप जग सत्य न को
है तौ फिकादे निवर्ति न होई १६ जैसे
स्वप्न सत्य कछू नाही पर जौलौ है ता
ही मांही तौलगि सकल सत्य ई जाने
सुष दुष पावै ने ग्यमठाने १७ त्यो
अग्यान वस जौ लौ जन मम रन न
ए मिटै न तौ लौ तातै ने भव सब भ्रम
जानो महा अग्यान पि रूप करि मानो
१८ विषयन को ने ग्यप कि टकावो
अरु जे हेत सकल मिटावो जो लगि
आपु हीसमुझै नाही तौ लगि है नाना
भयै माही १९ जो रु आपु ही समझे
नहीं तौ लौ मम आधीन निरंतर रहै
जग उपहास सब से १० कोध्ये कु
करै आप मान कै ई गाहि बाधे
अग्यान कै ई मृते पृ केतन मे सौरे

धृ॰२ भीषके अनिमे ॥१॰२॥ पेकैउहिकैं
मुहउठावे पेकै निंदे चोटलगावे ॥
औसेबहविधि दुष उपजावे बहवि
धिभबैनसुनावे ॥१॰३॥ आपहिजेअ
पनो अपबिचारे सोपेकैमनमेन
नहीधारे बहकष्ट नितेमन निआ
वै ऐसो भवतजिमम चरननिआवे ॥
१॰४॥ मेरोपंथ षडगकीधारा जोन
डोंसोतेरेपारा हरिकेबैननिदु
करिजानि उद्धवपूरसकरी भवमा
नि ॥१॰५॥ उद्धवउबाच ॥ हेप्रभुतुमबे
नसुनाये तेमेरे उरदृःकरआप जो
असाधुबेकाजधकावे तातेसहेकौ
नविधिजावे ॥१॰६॥ मेरेहिदेग्यानबह
रावो सहनउपायेमोहिसमुझावो
जेसहनोतमकरिजाने अरुतो
औरनिपासवषाने ॥१॰७॥ पारितेआप
परेनहिसरे अंतप्रकृतिकेयसधेरे
है केवलतुवचरनअधारा तिनके
कोइनहीविकारा ॥१॰८॥ तेनितनिह
चलसीतलरुपा नित्तानंदितपर
ने

मअनूप जिनकौं कहै लियैं कछू ना
हीं सदा बसैं तुब चरनन माहीं ११
और सकल प्रकृति आधीन सदा स
बिकारनि आगें दीन तातें तुम ही क
रुनाकरो [illegible] नादि कमपमह्रि है धरो
१४ ॥ दोहा ॥ ऐसी कौं प्रभ जब रैव
वपरम सुजान ॥ भाषैं सहन पापैत
कौं भय भंजन भगवान १५ ॥ इति श्री
भगवते महापुराणे पंचमस्कंधे
ध्रे श्री भगवान [illegible] ध्रुव संवादे [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ हे ध्रुव ऐसो न ही को
ई दूरजन बचन कुभित न होई द्
जैन बचन बान जो सहै मन क्रम ब
चन है भिन्न ही लहै १ जो ऐसो सो
साधु कहावै पो बिनु साधु पद हिन
ही पावै चैचिक सी सह है गहि बा
न अस्त भेद हि मर्म स्थान रा तो ति
न तैं दूष हो पन ऐसो दृष्ट बचन बा
न नितै जैसो परम तो हि ज पाप सुना
ई सहन सीलता [illegible] वह तां [illegible]

मोसौ सुनौं पै कोई तिहास ॥ जातैं होय पे
हिदै परकास ॥ ७ ॥ छकपे के गान म
पै भाषी ॥ ताकी तोहि सुनाऊं साखी
॥ ८ ॥ किये श्री साधुन बहु आप मानो
॥ तिरसकार ठानो बिधि नाना ॥ तब
ताहि निहूं क गाथा कही ॥ कुमति श्र
पुनी सबही दही ॥ ५ ॥ सो अब सुनो सु
चित है मोसौ ॥ निज जन जानि कहे त
सै तोसौ ॥ मालव देस रहै उर जाको
घेती बनिज जीवका ताको ॥ ६ ॥ जो ध
वेत लोभी अरु कामी ॥ बिप्रनि के
अपजस को नामी ॥ जाकै होय पद्रवा
अधिकाई ॥ अरु जो नहीं देही नहीं होय
ई ॥ ७ ॥ आपुन कौ पीड़ा उपजावै ॥ पु
त्रादिक पानै नहीं पावै ॥ देव रु पितर
अतिथि नहीं पोषै ॥ बैन हु तैन कौ है
संतोषै ॥ ८ ॥ सोक दरजनु जो ऐसो हो
ई ॥ ताते नीच और नही कोई ॥ तातें सो
कदर्जै द्विन सो ॥ सब जग मे जिन अप
जस लैसो ॥ ९ ॥ गपातालप्र ति छिव क्व
निज तन कौ ईन है हेत न मरचे धन

कौ पुत्रादिक कलपं दुपजै है गोत
मृतादि र्खेद नि कैं ॥ १० ॥ पुत्र कलत्र
कन्या सा हीन होत नौ है संबंध सगा
हा ते सब दोह निरंतर वैरी ता कौ ग्रप
ते सब कृपा वैरी ॥ ११ ॥ ऐसो दोष पापग्र
सित ता को [illegible] समान मित है जा कौ
धर्म कांम [illegible] कौ करी हीन देह लोक
के सुभ तै हीन ॥ १२ ॥ जिन हित पच्च
रमा हित करै [illegible] कलम रह स्यपदंउ कौ
भैसौ तिन कियौ है व तन कोप ता
तै भयो निपुधन लोप ॥ १३ ॥ कछु द्रव्य
गोलनु हरि लियौ चोरी भये हु तैक
कुग्रंथि लागे तिन सो क
छोक धरा निमो छिवी सस्यो ॥ १४ ॥ क
छु राज निग्रह है गयो पावक हू भांति
छीन सब भयो जब ताको सब धन
हरि लियो तिरस्कार तब सैने कीयो
॥ १५ ॥ बहुत कष्ट करि धन उपजा
यो सो नहीं दियो न आपुन पायो
ता तै उपजै चिंता चित निस दिनु व
सो हिरदै मै चित ॥ १६ ॥ होवै तपतप

देकौपावै॥ औसे कष्ट बहुत विधि
धावै॥ ऐसी विधि उपजो बैराग
जातें सकल दूषन कौ नाग॥१७॥
तब सो विप्र बचन उचारे॥ बहुत
ति करि आपु हि धिकारै॥ कहो वृथा
मै कष्ट ही पायो॥ आपु आपु को दूष
उपजायो॥१८॥ बहुत श्रम उपजा
यो देह॥ स्वपन समान भयो सो स
बे नामें घर वो नामें बापे॥ नामें पे
कहुं और थल गाये॥१९॥ द्रव्य कर
जो कीहै जेतो॥ पे कहू और पन आवे
तेतो॥ नाय ले लोक नही पर लोक॥ के
वल बढे दूष भये सोक॥२०॥ बहुत
कष्ट सहि ईहां उपावे॥ पुनि पर लो
क नरक मै जावे॥ परम जस स्वन को
जस सुध और जै पंडित ग्यान प्रवुध
॥२१॥ सकल गुन नि के हैं जेते लोभ
वेस ते ना से तेते॥ जैसे रूपवंत औति
कोई॥ कहू औगन ल छन होई॥२२॥ मे
कष्ट को छिद्र कापेका मे है गुण
रूप अनेक॥ पो धोरो उ होवे लो

न
धिआवै परमानंदहैं हीपावै सोन
र तनमे जिदिदे ह करनामैप
हरिजी को गेसउ तावोपाईश्र
र घनहीसाधै सबतजरु रिकोत
ही श्राचे जहीं श्रनरथ श्ररथकोंगहै सो
भवसिंधु आपुतेबहे २१ ताते हजोनहेम
तिमद यरेदुषनिमेतजि श्रानंद दंवपित
रूषिभूतसहाई पुत्रकलित्र श्रायुन हि
त भाई २२ धनपाईजोईन हितयोध श्रौर
नहु कौ नहीसंवाये सोसबत्यागिनरकमे
जावे तहाश्रति नानादुषपावे २३ सो तन
धनमेवृथागमायो भवदुषतनही श्राय
बचायो जिहियापबुधि श्रैसोकरे जो तबह
रिजन नैमेरे २४ सो नरतनमेवृथागवा
यो छोडो श्ररथ श्रनरथ पायो वय
बलपश्रायुसकलसमभागो नधौसिंधु श्री
वृधसवभो २५ श्रबमें श्ररथकोन विधि
साधौ दुसारा धर्म हरिको श्राराधौ भाइजे
श्रनरथसबजाने तेतैक्यों श्रारभनिग
नै २६ छोडै श्ररथ श्रनरथनपावै क्यो

२ ५

स
तत्र सकलदे

[illegible] सबमौ
[illegible] दसक
[illegible] कदाता
[illegible]
[illegible] सिमाना [illegible]
[illegible] दईकन
[illegible] मनुष्य [illegible]
[illegible] काहा
[illegible]
[illegible] ५० [illegible]
[illegible] तिन
[illegible] निर्वाण [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ७६ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ७१ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ७५ [illegible]

ताकौ भजौ ॥ और सब काल दिर दैतैं लजौ ऐसौ
निश्चल मतसैं भयौ भिक्षुक भयौ सब काल
धरस्यौ ॥ ४ ॥ सीतल हिरदय त्रिपास
बैरागी ॥ निश्चल भयो विप्र बड
भागी ॥ अैसैं कारन मतानै कूना
ही ऐसौ आप की विचरै भव माही ॥ ५
॥ इदि सप्रान बचन मन गाहौ ॥ अंत
र बाहरि सैं साहौ दलौ ॥ आपु ही कौ हे
कौन लषावै निंदा हित गहनमैं ता
है ॥ ६ ॥ संसकार नहीं तन कौ जाकै
जौ तन है कब लग तन ताकैं निंदु
क बदि विपु कौं जावै तब वह दूषघा
त की होवै ॥ ७ ॥ केई ताकौ दुःख
दैं ॥ केई पान षोसि लेजावै ॥ केई ले
हि कमंडल करतैं ॥ केई निकसे नद
है घरतैं ॥ ८ ॥ केई धूरि भीषमैं डा
रैं ॥ केई मूठ क्रोध करि मारैं ॥ केई ग्र
सन कौ लै भागो ॥ रिध करि केई प
गलागै ॥ ९ ॥ केई षेपकौ परिहरै ॥
मारि मारि वानी ठेरै ॥ केई षो

सैसे नपमान ॥ कै है ओ ॥
करि देखै ॥ कै कोसि मोसि धू निलेवै
कैसे अग्रणि ॥ वैसे नाही ॥ भोजन कार
मैपावै नाही ॥ ५ ॥ कै इतने मे ॥ कै म
तैसे मिद्ध करै वह तै कै ईकौन मिल
गादु वारो ॥ कै ईसी सम धूलि नल ग्रारै ॥ ५
॥ कै ईमोनकृ आईबो लावै ॥ कै ईबोल त
मौन ग्रहो ॥ कै इताहि बाधि कारा
सो ॥ कै ईग्यानन पावै माथै ॥ ५ ॥ कै ईक
है वहै तग्रपमान ॥ मिटै वह विधि मूढ
ग्रर्थान ॥ ६ ॥ है चोर ज्ञान नहीं पावै ॥ हिन
कैसो मिसि औरि ग्रावै ॥ ५ ॥ पाको दी
न म ग्रदीत ॥ तातै यह है वाको लाचित
सकलनकूं देव याही पारहं सो ॥ सोवन
काज कैसी यह धर्मो ॥ ५६ ॥ ओय कैसो
है सो ॥ महापुरुष देव को ॥ सो ये ॥ देखो
हि मानवहारै कैसो ॥ निरपाको उर ले है
नतैतो ॥ ५७ ॥ और नवंत ॥ औ इगाय है कैसो
पवनपूंडमेरु गिरि है सो ॥ ताको ज्ञान
चै निरमलकूं कको ॥ है सो ॥ ब्रह्मज्ञानी ध्यान मो
गहि रहो ॥ ५ ॥ ५८ ॥ पाको करि बोध बवले

है॥ काठमांहि॥ दे॥ पशुमारै॥ हासी सतवीनतीकरै॥ हितसौं विषपैवे नि ॥ चरै॥ ॥ प्रवृत्तिकदुष भा थैहै जैसौ॥ ॥ तातम कपावैतैहै सी तजस नष्पादिकदेविका जरारोग आदिक ॥ ॥ का ॥ ऐसेवहवि धिपावेदुष ॥ कदेन आवैतन कौसु षपरसोकछूनमनमै आनें ॥ आप मैं करसिकर्म सोजानैं॥ ॥ तब तिन भाषीगाथा सेकाहिर्दै धारे प्रेम बिबेका ॥ नकहै वचनतव जे हामै तोसो भाषातु हैते ॥ ॥ निदेकरे बाच॥ अथपद ॥ कलोगन पैते ॥ अरु नहीदेही नही अरु जेते नागर नहीकर्म नही काल॥ ऐसमस्तहै मनके षाल ॥ जगतचक्रमैमन हि फिरा है॥ जीव महादुष मनतें पावै॥ मनेकरे विषयेनको भोग॥ तातें होय क्रमसंजो ग ॥ ॥ होवै सतरजतम विस्तार॥ तातें जोनि विविधपरकार तातें दुषनिरं तरहै ॥ देहजोगतें

संतकैहैपुरु
तातैंदुषदाईमनपैक ।। स आ
परमविवेको आपुआतमा । रैसनीति
नीति परसोमनकरिकै ही ता
६७ मनसों बंधो त्रविद्यामांही मानवि
तै बंधनमें तैनाही विषपरदुषपा
ष्य भिनो मांवे ताकै संगजीव पा
वै ६८ यहै जीवब्रह्म को अंग करिरहि
कों सेमुत मनके संग मनलपर
तब्रह्मस्वरुपा सौ सदापकर मनइक
मपूर्नासौ ६९ तातै बंधन जबमनर
ले सागआतमाजनमें मरे वजाव
हतजावई ७० होई तावसी अपनोम
तैकहीकोई ७१ तातेजिन नहीरसो
नगहो ताहि कछु बारनो नाहीं ता
आकीमनवसिकीन्हो नाहीं ७२ स्व
भ्रमसकलब्रुधाईजाही । कासी अ
नाहिकदेवकहेसना । अपने घ
दै वृतनाना । श्रमेविस्तैरे भ
न करे समक मनमनुविस्तरै अरोसकल
बाबेषपैठे ७३ और मनवासिनाहिं
पिबिसतारे परनोमन

कालोमिथ्याग्राचरनग्रनेक॥१
३॥मनवसकाजकरैसवतेते॥वि
धिग्राचरनवेदमेंजेते॥मननिग्र
हसोउतमग्यान॥मननिग्रहवि
नेसवग्रग्यान॥१४॥तातैंजोमन
निग्रहकरै॥सोविधिकाहेकोविस
रै॥ताकोंविधिनहतेकछुनाही॥
सवविधिविहेमननिग्रमांही॥१५
॥ग्ररुजोमनवसनाहीयेक॥तोवि
धिकीन्हेंव्रथाग्रनेक॥सवविन
कोफलमनवसकरनो॥मनव
सकाजसकलग्राचरनो॥१६॥म
नकोंवसकरैजोकोई॥ईद्रियेस
वगुणग्रापुहीहोई॥मनवसवि
नईद्रियेवसनांही॥करिकरिज
तनवहतमरिजांही॥१७॥मनवस
भयेसकलवदेखातीन्यौभवन
करैतिनसेवा॥सकलवलनितें
मनवलवंत॥भाखिरैसवविन
कोग्रंत॥१८॥मनकोंकोईजीतिन
सके॥वहतउपायनिकरिकरि
थिकें॥ग्रैसेमनकूंजीतेकोईसव

है मोहि ६१५ मोह
हीन मोहि प्रबल है सो बाद रिमुद
जेपेरि पुब समनही करै बैरी मित्र बहत बि
धि का बिसरै ॥ न होत ग्ररु हित तिन
धि मानै तिम्ब तिमुढ सुषी नहि
है जानै ॥ ८ ॥ पनजीतै बिन जुगजु गरोवै
होवै ॥ सुषउ मिथ्यातनु कौ ग्रापु
दुषरूप ॥ ८१ ॥ तब
मानिकारि बधो मन को तिनसों
बहुकौ ये दहै सनबंधी पहनै पहस
मुरषममता बंधी मित्र सत्रु ठानै बहुते
मस्त हे मेरे ॥ ८२ ॥ ताते मुढ महा दुषपावै ॥ ७
है ॥ ८२ ॥ ताते मुढ मन मरि मरि जावै
पजि उपजि मुनि मरि मरि जावै
ताते दुष को मन ही कारन ॥ ग्र
तम कू भवजल मैं डारन ॥ [illegible] ॥ ग्र
रु जो सुष दु षदाता पते मोक्ष द
षद ते है जेते ते सब दुष सुष मो
को नाही देह पेक सब ग्रैतम मा
ही ॥ ८४ ॥ ते कुषसुष देह ही पावै ॥ ग्र
तम के वह निकट न ग्रावै ॥ ग्रग्या
न जीवह
सूपतन को संजोग करै ॥ जीवह

६

सुमेग ॥ ८ ॥ पालो है मै दूषदेजको कौ
रूपसकलममदेषूं ताकूं आपु आपु
कूं कुरीजे ॥ आपनो अहित आपकूं
कीजै ॥ ८६ ॥ पातन मै मैही दूषपाजो अ
रुतनहै मैंकूं उपजाऊं ॥ रतन भूलि
जो भिकरीजे तो फिर कहा तिन हूं
मदीजै ॥ ८७ ॥ रतन अरुजी मैं दूषदेई
॥ सो तो सकल आप करिलेई ॥ इन्द्रे
अधिरूप देवता जेते जो दूषदाता हो
हि सबते ते ॥ ८८ ॥ तो है आपे कोप को
कीजै ॥ फिर उपाधि को सिर करिली
जै ॥ कारिहां जै मुषमाहि आसन सौं
सौं मुष कौ टैकर हि दासन सौं ॥ ८९ ॥
तो पालक अरु वासन जानो ॥ रागदो
ष भाव है त्योंह नो ॥ ९० ॥ सब ईद्रिपन के
सब देवा ॥ करे आप महि दोष रु सेवा
९१ ॥ तातै सबजानो तप करै ॥ आपनो
आप मै मन नही धरै ॥ अरु जो सुष दूष
दाता आप ॥ दूजै को कछु नाही पाप ॥
९२ ॥ तो पर सब आपुनो सुभाव कौ
है कौ आनो प भाव भाव ॥ अरु

अ

आतमभैसुषदूषनांही जैसैग्यानस
कालमिटिजांहि १२ आ. पमूलेसु
पदूषकारिलीने सबमिटिजांहि आ
पुकैचीरै तातै रोषकौ नकौ धरिपु
जोआपनो मनवसनहीकारिपे १
आगिरुजो गरसुषदूषकेदाता लो
कर्मेदूकाहिपत बिधाता तो आपुन
कीकौधनहीकीजै परिकोदूष आप
कोकीजै १४ गुरुआसमभाहिहै जे
तै घारमरासबसेमवतैते रागाद
पआपुनिमैकारै तिनकौसुषदूष
नहीपूरै १५ तातै सांस जनमें जनम
जेपावै तिनकी संगति सुषदूष आ
वै तातै आतमसदा अैन्मो बारबा
रदेहतिकोमन्मो १६ तातै सुषदू
षदेहही पावै आतमकै कहेनिके
नआवै जैसेसाधुपिसंगति दूषरै
आपक्रोधतौकासूं करै १७ कर्म
हारतेगुरहीजानै रागद्वेषभावेतू
ठानै ऐसे दूषदानिहोहि जोकर्म
तैतौसबकारआपुहीमनै १८ पे

हेजउ देह के मितामाही आतम नि
कट देह कोऊ नाही आतम चेतन
गणन सरूप परे सकल तैपमै अन
प॰ ९ ॥ ताते कोध कौन सु करे को
को दोष है मै धसे अरु जो दूषक
ल तै कहा ये ॥ ताते आपन को दैन
रहाय ॥ १० ॥ जनही काल है ते दूषपा
वै तो आतम कै निकट न आवै का
न आतमा ब्रह्म सरूप देह बिलछ
न सकल आनप ॥ ११ ॥ तैतो काल
है ते दूष नाही ॥ काल भयानक देह
नि माही ॥ जूले अगिन अगिन माहि उ
है ॥ सो वहे अगिन अगिन सी जारै ॥ १२
अरु जो पाला को वान लीजे नेब
है तै पाला मै दीजे ॥ तोता पाला की भे
प नाही जद्यपि रहै सदा ता माही
॥ १३ ॥ पोती पेक आतमा काल सुष
दुषादि देहनि के ष्याल ॥ आतम सव
तै सदा अतीत ॥ ई छा रहित अनीह
अभीत ॥ १४ ॥ अरु आतमा परे तै परे
द जहा लौ तै सब वरै ॥ ॥ आतम
नाही जाने सुष दूष न

कौं तौने १०५ सुषग्ररुद्मनहोला
जैते येकप्रकृतिहीकेसेवतेते सो
प्रकृतिपेत्र्राप्तुजउरूप चेतनग्रात
मनुमरूसरूप १०६ केवलमानली
नोसंसार सुषद्भतनमनसकल
त्र्रासार मोहनिसातेजागेजेते नि
रषुजपेततछिनतेते १०७ तातेत्र्र
वैसेभपन आनो त्र्रापहीपैरसक
लैजानो हरि चरननकीसेवाक
रो त्र्रैसोविधिभवसागरतिरो १०
८ जैसेंजेत्र्रपहरि चरना तिनहीं
तिनपापहरि चरना तातैमैहरिच
रननिभजौ मनक्रमवचनत्र्रोरस
बतजौ १०९ ठवरूपो विजमपोवी
र स्रातनहेमैनरयोत्र्रौरबहुत
त्र्रसाधनवहुतडिगापो पुसोके
कुनमनमेभायो ११० पेरभाषे
रसग्रह सोरलोक करिविचारि
मेदेौ भयेसोक ताते ठवसुषद
षदापव त्र्रानमकेकोपतेहला
पक १११ सुषद्भरातानोहीकोई
जोतोवहहै तकछूहोइ सुषद

षटघमतेजोनैसकल ॥ आतमपेक
अंजनमात्रअकल ॥ ११३ ॥ भरमछेदै ॥ जाकोना
हिं भेदोसरूपमिलौसोमाहिं ॥ जनसुषदुषमि
थ्याकरिजानै ॥ मानअमानहिदैनहीआनै
११४ ॥ धीरजधरिमनचरनननभजै ॥ देहादिक
कीआसातजै ॥ तबभवसागरकौतरिजावै
गैरैनिजानन्दपदपावै ॥ ११४ ॥ तातैउधवम
नवचनकर्मनि ॥ कलैकूं ॥ तोजानैभमि सवतैम
नकौनिग्रहकरौ ॥ निश्चलकरिमनचरनन
निधरौ ॥ ११५ ॥ याहीकौकहीयतुहैजोग ॥ जा
करिहोवैमनसंजोग ॥ असेजेयागाथकौधा
रैं ॥ श्रुनैसुनावैसदाविचारै ॥ ११६ ॥ तिनकैनि
कटदुंदनहीआवै ॥ अंतकालमनचरननमि
पावै ॥ तातैयाकौसदाविचारौ ॥ मेरोबलअ
तरगतधारौ ॥ ११७ ॥ दोहा ॥ यहउधवतासोक
सौ ॥ मनसजमहउपान ॥ अवभाषतहेसांष्य
कौं ॥ सुनमिटैजोआन ॥ ११८ ॥ इति श्री भग
वते म हापुराणे एकादस स्कंधे श्री भग
वान उधव संवादे भाषायां मिथ
कागाथाकथनो नाम त्रियोविंसोध्याय ॥
श्रीभगवानोवाच ॥
कहौं ॥ द्वैतभ्रमम

कोहानि॥१५॥सुषग्रहदूसरोहोसो
जैतेएकप्रकृतिहीकेसेवतेते॥सो
प्रकृतिपेआपुजउरूप॥चेतनग्रात
मबुमहसरूप॥१६॥केवलमानली
नौससार॥सुषद्धचेतनमनसकल
ग्रासार॥मोहनिसातेजागेजेते॥नि
रषुरूपतेतछिनतेते॥१७॥तातेअ
बेमेभपनमानो॥आपहीपेरेसक
लेजानो॥हरिचरननकीसेवाक
रौ॥ऐसीबिधिभवसागरतिरो॥१
८॥जैसेआयेहरिचरना॥तिनहीं
तिनपायहरिचरना॥तातेमैहरिच
रननिभजौ॥मनक्रमबचनअरस
बतजौ॥१९॥ऊरूपौ॥धिजमपोबी
रकातनहेमैनरहोअरुबहुत
असाधनबकृतडगायौपूसोक
छूनमनमेआयौ॥२०॥पेरुभाये
रसगप्रछसौरलोकहकरिविचारि
मेद्यौभयेसेक॥ताते॥उवसुषद
षद्वापकालमकेकोपतेहिला
पकाल॥२१॥सुषद्धरालानाहीकोई
॥जीतोकहेंहै॥नकछुहोइ॥सुषद

सुन भिते उपजौ पदम जामै सक
ल भुवन को सद्म । पर हेते तब वु
न्हां भयो ब्रह्म सो जग निरमया
राजस गुणपति भयो विरंचि
ताते पश्चात सकल प्रपंच लोक
पाल लोक नि सो कैसे तिनो लोक
त्रिविध बिस्तरै ॥११॥ स्वरगलोक देव
न कीयो सो त्रय भूतल नर किया
भूमि लोक मैं मान न राखे असुर
अहीनु को नीचै माखे ॥१२॥ महर्लो
क जन तप सत लोका चारो मैं सि
धनि के ओक जे तिरगुणा कर्म निवृ
त्ति करैं ते ती सो लोक नि मे फिरैं ॥१२
तप अरु जोगत पास न्यासा इति
तिन चारौ मै बासा भक्ति हेते जावे
बैकुंठ सो सब ही नु करि सदा अ
बैकुंठ ॥१३॥ प्रबल काल रुप है म
हो सकल जगत जे हनन ते हिको
सत लोक है मैं जो जावे काल तहां
न ता कू पावे ॥१४॥ भावे कह जाये क

नतहीकछुहैकछुत दैसे येक ब्रह्म मै द्वैत । १ अथ
महीमहाप्रलयजो भये तें यह इस प्रगट के
रिगये मुक्ति साक्ष्य ज्ञान तहीं होइ ता बिना
नहीं छूटै कोइ । २ कोई सांख्य कहो मैं तो तौं लि
ख्यौ मन है सुनिश्चै सोसो । ३ छुव अब्रथ मह
तो मै ये हो मो बिन कछू न हते अनेक । ३
तब मै प्रकृति आपुते करी जड़ चेत
न है विधि बिसारी । तिन है नौ ते उप
जो पुनि महातत्व सो कही पेसत्रे
४ पेक प्रकृति को त्रिपे गुन कीन्हे
लोकिनस मति । नहें कोरी है सुत्र
है तै तिर विधि अहंकार भरमावन
कौं बड़ो विकार । ५ पंच भूत जे पृथवी
आदि ग्रस पंच सूक्ष्म सब्दादि ता
मस अहंकार ते प्रगटे राजस तें इन्द्रिय स
बते तें । ६ सात का तें मन अरु सब देवा
जिनकी जाम भये वहें मे वा तब सब
तिनकौं प्रेरि मिलायो तिन सब ही नि
मिलि ब्रह्मंड उपजायो । ७ ब्रह्मंड स वि
लसमो है फिर कस्यो तामै मैं निज श्री
सदी धस्यो आदिपुरुष सो मेरो रूप
त्रिगुणनि परता ज्ञानस्वरूप । ८ ता

सुनभितै उपज्यौ पदम ॥ जामैं सक
ल भुवन कौ सदम ॥ पद्म ही तै तब तू
म्हां भयो ॥ ब्रह्म लैमो सो जग निरमपा
॥ राजस गुन अधिपति भयो बिरंचि ॥
तातै प्रगट्यौ सकल प्रपंचि ॥ लोक
पाल लोक नि सो करै ॥ तिनो लोक
त्रिविध बिस्तरै ॥ १० ॥ स्वर्ग लोक देव
न कीयो ॥ अंतर भूत न गन ह किये
॥ भूमि लोक मै मानव राषे ॥ असुर
अहीनु कौ नीचै भाषे ॥ ११ ॥ महर्लो
क जन तप सत लोका ॥ च्यारयो मै सि
धनि के ओको ॥ जे तिरगुण कर्मनि क्र
करैं ॥ ते तीनौ लोक नि मै फिरै ॥ १२
तप अरु जोगत धास न्यासाई ॥ तिदे
तिन च्यारौ मै बासा ॥ लोकि है जावै
वैकुंठा ॥ सो सबहीनु करि सदा अं
कूठा ॥ १३ ॥ प्रबल काल रूप ॥ है मे
रो ॥ सकल जगत भ दैन तै हिवैरो
सतलोक है मै जो जावै ॥ काल लहो
न ताकू पावै ॥ १४

प्रकार जैसैं ता कें बहु काल है होवै नीचै
ऐसी विधसव भरमतरहे जनमैमरै
बहैत दूषसहै [illegible] तमप्रभासनीचे
जैसैं छोडिबदे [illegible] संकेत जेकछु
जो दिसे आकार तेसबप्रकृतिपुरषवि
लासहै प्रकृतिपुरषविनओरनको
ईछियामनसोचरहेजो [illegible] प्रथमहि
निराकारसैएक ताते ऐआकारअने
क [illegible] अरुपुनिमैही रहिहैं अंत ना
हैं अबहुंमैंबरतंत ताकी आदिअंत
है जो [illegible] ताकैमध्य हे मैंपुनि सो १८
जैसे माटीतें बहु घट भये अंत फूटि
माटी मिलिजाये माटी आदि माटी पेअं
त तो माटि ए मध्यहु बरतंत १९ जो
कोंचन तैं बहु आभरना आदि रु अं
त पु कंचन तो मध्य हु और क
है केछु नाही नाम रूप मिथ्या है जा
ही २० जो जब देषैं तजे व्योहार तब मैं ही
हो सब बिस्तार आदि अं [illegible] अंत मध्य
मैं एक मिथ्या नामरूप अनेक २१
माया तैं महत्तत्व अहंकार तिनतै हो

पेसकलबिस्तार॥बहेरुयो नाससक
लको होइ॥महे आदिको रहे नहीं कोइ
२२॥प्रकृति मूल अरु पुरुष अधार॥अ
रुजो कालसकलकरतार॥तातेमेरी
[illegible]किनिजानो॥ओतें द्वैतकहेनमतम
[illegible]र ३॥याबिधि चल्योजाइ बिस्तार
नहीं पहुंच्यो संसार॥परमात्म कीइ
[illegible]जो [illegible] रहेसकल निरतरतोलो
२४॥बहे रुयो प्रलयसकलको होइ स
[illegible]पूनरहे नहीं कोइ॥महावलिष
[illegible]सकाल॥ताको सकलजगत
[illegible]काल बिनासे सबब्र
[illegible]कितहूक कहूनरावेघर
[illegible]होवे सतब [illegible] लातें दृह [illegible]
[illegible]छोडे बडे देह हें [illegible]
असनमें होवे तेतें असन [illegible]
[illegible]धमें [illegible]
गधलीन होवे जलमांहि [illegible]
रसमाहि समाहि [illegible]

नहिं तब सप्रप सगुन है। सप्रपसली
न हौ है तब ग्यान। ग्यानसब्द मैं होवै
म्यान। २९। सब्द मिलैताम सप्रेह
कार सो ग्रसई द्रिपद सप्रकार तेस
बमिलि विराज सप्रहंकार। मिलि कैवि
सकार लोहि संहार। ३०। ग्रहंकारम
हितत्व हि मिलैं। प्रकृत महतत्व रीमि तब
लै पुरुष मिलै कालमै होवै लीन। काल
पुरुष मिलि होइ छीन। ३१। पुरुष मि
लै पुरुषोतम माहिं। पुरुषोतम कूं हे
जावै नाहीं। भेद भेद रहित तत्व येक
नित्यानंद द्वैत ब्यतिरेक। ३२। चेतन
निरमल ग्यान स्वरूप। पुरन ग्रषंड इ
परम अनूप। तातें द्वैत मिथ्या द्वैत।
ग्रादि ग्रंत मध्य है ग्रद्वैत। ३३। जलबू
दबूद सब ग्राकार। तिम मधष्म वि
बेध प्रकार। ३४। ग्रैसे सदा विचारे
जोई। ता कै कौन भांति भ्रम होइ। रवि
ते द्यौतरहै तम कैसैं। नदी मध्य दाबा
नल तैसैं। ३५। परमै भाष्यौ सा षेप्र
कार। सकल द्वैत उतपति संहार। पा

कैग्यानन सेसयुर्है।। अहंकार दट गत
ग्रहि है।।३३।। कोई रूप अरूप समावै
जातैवहै।। निदुष कौ पावै।। तातै याको
सदा बिचारौ।। मो कौ जान आपु कौ ता
रौ।।३७।। दोहा।। ध्रुव पूछतौ सौ कहौ
साष्यां ग्यान विचार।। अव गुन वृतिन
कौ कहौ।। भिन भिन परकार।।३८।।इ
ती श्री भागवते महा पुराणे एका द
स स्कंधे श्री भगवान उद्धव संवादे
भाषा टीका याः सां ष्या निरुपण ना
म त्रतु बिसो धा्य।। श्री भगवान
वाच।। उद्धव अब भाषा गुन वृति
जिनु कौ जानें लहे निवृति।। जा गुन तें जो
लक्षन हो ई।। भिन्न भिन्न भाषू सो सो
ई।।१।। सम दम छिमा बिवेक स्वधर्म ल
जा मान निकरै बिकर्म।। सत्य दया नहि
भूलै सुधि।। उत्तम मारग मै थिर बुधि।।२
।। जस अरु सो भा धीरज व्रत पर उप
गारी सदा वरतंत।। बुधि आस्तिक आन
त निहु संग।। संतोषी अरु दान निरंग
३।। कोमल छिन प्रे दीन चतुराई।। सीत
ल हिये सकल सुषदाई

हिन संपति स्या तिनका गुन की जानै वृति
आत्मग्यात मई जि सब हि नतै न्यारा चेतन
का रिझवार ता ग्यहारा भोगा सर्जि छिद्रै दैव
डै बभीमा अंन स्रिपिलाषा जस ग्रभिरा
मा अपदि स्वा हा सगर्व बलवंत रिपु मि
त्रादि कमे दवंनत कारिका मना भजै
बहु देवा भरमा धकोल है न भेव हा ब
हैयारे भन सैजुत सार सदावंत ठौरसद
अति काहा वहतिवृति राज की ऐसी
प्रभुमसै भावी मैते सी ॥७॥ हिंसा क्रोध
लोभ अधिकाई जन हित हरीन रुद्र मे
जूबाई ॥ भ्रम अरु बाल हसो क अरु मो
हा निद्रा आलस भय पर द्रोहा ॥ नि
सि दिन चिंता इंद्रियमहीन ॥ हिरदे अस
साह सं रहीन ॥ ऐसी वहै तामस की वृ
ति । जिनतै कदे नम्रहै निवृति ॥८॥ पक्षे
ममता ऊरी अहंकारता तैकेर विविधा
घ सार तेस्वभि लिगुननिकी वृति प्र
तिनतै बाढै बहुत प्रवृति ॥९॥ धर्म रु अ
र्थ काम अनुरक्ति ॥ भ्रधालो भत पाया
सक्ति ॥ धर्मि पुवृति यराये न जैते बहु
भांति बिसतारे ते ते ॥१०॥ बसै अपनै

आपनै धर्म प्रिये रहे अरु नहु सुष
कर्म पे सव मिलित गुननि की वृति
जिनतै वह विधि होयै प्रवृति १२ स
मद मत्रा दिनु कि नर जो है सातिकल
कुन कहीये सो है राजस कामादिक
आदि धिकार तामस जह क्रोध दि वि
कार १३ सव स्वधर्म सो मोकों भजे
दृजी सकल काम नातजै थिपपुरष
भावै सो लेहै सातिक प्रकति करीजै
सोहै १४ जव काम नाहि हिरदै धरि लेव
अपने कर्मनि मोको सेवे पद साभा
व राजस को कहीये मुक्ति हेत कवहू
नही गहिये १५ जव हिंसा हिरदै मे आ
नै भिन्न कर्म निमम से वाठानै सो व
हे तामस विरत कहावे ताते मम सुष
कैसे न पावे १६ सत रजत मती न गु
न जैसे जीव ही को व धनु संतेहे
ते गुन मेरी अग करै ताते माहि भजत
तिरे १७ चित हतै उपजे पसकलाई
न कोत जै आत मा अकल इन को छो
रहै मो माति वह वन से
नाहि १८ करि सि परि

है सातक ज्ञान की वृत्ति है नरै सा
त्विक सरज औ प्रकास अति सीतल
होत चंदप्रकास सो २० सब कल्यान मूल
सुषकारी मिथ्या लेकरन सु कोह दुष
हारी तातै धर्म ग्यान सुष लहे चिंता
सोक मोह भय दहै २१ जब सात्विक
नाँ प्रसन्न नही रहे राजस ग्राइ ब सेरा
गहै राजस रूप संगवल भेद तातै मा
नै कुमति भय षेद २२ जब सत अरु रज
छूटे दोई केवल एक तमो गुन होइ
तब बिबेक नास अरु बरन तु श्रम
है रता जडता करन २३ तातै सोक
मोह को बासा निंद्रा ग्रास निसि दि
न ग्रासा जब छूटै इंद्री नैन की वृत्ति
है देन नहीं है होत पति २४ चित प्रस
न सकल निहसंग सो सात्विक मर्म
नहि है अंग जब तन मन इंद्री पर अरु
बुधि फिर नही होय लहे नही सुधि
२५ ताते बिबध कर्म बिस्तार सो जा
नो राजस अधिकार जब विकार व
हे विधि मन गहै ग्रासा बंध निरंतर
है २६ सोक बिषाद चेतता हीन

सोतामसऽब्रमबल कीनजब ऽ
पजैसातिककोभाव।तबसबहोहै
देवसवभालारहै।राजसतैअसुरनै
कीवृतिकृतगनमि कीलमऽतप
ति।सातिककौनागरनोहो।।राजस
पावैसुषनासो।।२७।।तामसतैसु
षोपतिलहै।वृषतुरीपनिरतररहै
सातिकऽरधलोकनैजावै।राजस
नरआदिकतनपावै।२।तामसनी
चै।थावरआदिकयाविधिमैजीव
आनादिसातिकधरमानाजोहोइ।
तामेमरनलहैजोकोई।२८।सोदेवन
केलोकहीजावै।राजसमैमरिनर
तनपावै।तामसमैमरिनरकनिल
है तीनोगुनतजमोमै।रहै।३।मैरहै
तकमजोकरै।तामेक्षोपलनहीध
रै।सोवहसातिकक्रमकरावै।तातै
जीवमहासुषपावै।२९।फलनिमि
तमसकमनिदानै।ताकोराजसक्रम
सो

गान बालक मूरति [illegible] जो हो है नाम ६
समयान कही है सो है ॥ २१ ॥ ७
रहित जो येका सो है मेरो ग्यान बि
होपै बिरक्त तब सियो कातु साति
वासकहै सो संत ॥ ३ ॥ ग्यान हमे कहीपे
राजस बासना तामस रुप सूरा ७
स्यावर चहै मम मूरति जहां
न बास कहीं जै तहा ॥ ४ ॥ सातिक क
है जो नहीं संगी ॥ सो राजस फल के
मेघ संगी ॥ छिप्रिकर २ हित तामसी क
ती ॥ आस लागि कमै निबिस्तारता
२ है ग्रापही मे ॥ ३ ॥ हे ममतर ना ता
को सब निगुन आघरना ॥ सोजन
निरगुन कर ताको हिये ॥ ताते सगापर
मपद यहीपे ॥ ३९ ॥ जो निहकरम आ
तमा जानै सकल [illegible] ॥ ४ ॥ आवाबा
है सकल त्याग नि स्चय जो होई सा
तिक सरधा कहीपे सोई ॥ ३८ ॥ राजसु
अधा भिने क्रम तामस अधाक रे
बिको मैं निगुन अवा मेरी भक्ति जा
ते मिटे सकल ग्रासक्ति ॥ ३९ ॥ पवाप
बित बिना श्रम ग्रावे जामे अपनो

धर्मिनजानै जातै उपजैं नही बिकार॥
सो कहीए सातिक आहार ॥२५॥ षाटा
मीठा तीषा षारा । दूषदाए करि रजस
आहार । जो असुध हिंसा तै आवे । सो
तामस आहार कहावै ॥२६॥ मन मजन
अरु मेरो छो छि ॥ सो निर्गुन भोज
न अति ॥ इद्रिये सुष विस्या दिक ते
हैः तजि आरं भनि ॥ मेरे है ॥२८॥ आत
म ते उपजै सुष जो ई॥ सातिक सुष क
हिये तु है सो ई॥ इद्रिय सुष राजस न हि
गा हिये निद्रा आलस तामस क हिये
॥२९॥ मेरे प्रेम भक्ति सुष सो ई॥ निर्गुन
सुष कहीयतु है जो ई॥ ३० ॥ द्रव्य देस फल
लका । पुरुष गपन । कर्ता कर्म अवस्था
देन ॥३१॥ श्रद्धा निष्टा अरु आकार ।
निरगुन निमित सब बिस्तार ॥ लोक
कु कहे सुनो अरु देषो । मन अरु बु
द्धि जहा लगि लेषो ॥३२॥ सो सब प्र
कृति पुरुष बिस्तार ॥ तिरगुन निरमि
त सकल प सार ॥ ई न तैं जीव लहै संस
२ त्रिगुन कर्म मध्य बारंबार ॥३४॥ जो

है नतीन्योगुननिनौरो चित आयनतेंमे
में धोहे सोमेरो निरगुन पदयों है जोहस्योमा
सबमें नहीं आवें ४७ ताते यह ऐसोंतर
दर्सनाकरि मिटै सकलसंदेह होवै प्रगट
ग्यान बिग्यान आवे मोहि सोटे सब भ्रांत
पै यातालें यडि सकलनिवारि सोकुसई
आपुकोतारे याहि नसकल आपडितजा
नौ जाते आत्म घातीमानो ४९ सकल
लैलैहोवै निहसो सावधान पलयरेन भग
है द्वैयभान दर्सन जोती मम चरनादिन
रैनहद्यै ५० सकलैस्वोनि कोसंगतिकै
राजाल भैरहे तामस परिहरे देहादिकतें सु
लहोई आगे नि ईछयाकरे न कोई ५१ मो
मैं धोरे निम्र चैतबुधि तबयाके अंतरगति
ध्यावि धिसाति करौ छिद्रकोंवे तातें लिंग
सरीर मिटावे ५२ लिंगसरीर मिटै भवतैजे
निरमलरूप आपुनो भजे ऐसोई मोहि कोज
नै बाहिर भीतर द्वैत निमानै ५३ मोमे मि
लि मोही मैं रहै बहोरयों कालै अगिन न दहै

रहै निरंतर मेरे संग॥ तातें कहे नहीं विभाग यह
है॥ ते इ बाती सौ कहीती तौ गुनकी विरति
अरु ऐसौ ग्यान हीं कहे॥ जातें होइ निरवृति
यथा॥ इती श्री भागवते महापुराने एकाद
सस्कंधे श्री भगवान उधव संवादे भाग
वत का त्रयगुण वृत्ति निरूपणं नाम पंचविंसो
ध्याय॥ २५॥ श्री भगवान बोले॥ उधव
यह नर तन है ऐसो॥ सकल सिष्टि मैं नाही जैसो
यातन करि सम ग्यान ही पावै॥ जातें भगत जिसो
मोहि आवै॥ १॥ तातें ऐसो तन कौं पाई॥ सो मिलते
कौं करो उपाई॥ अंतर मो माही विचारे॥ और
सकल वासना टारे॥ २॥ मम भक्तिन के लछन
जाने॥ त्यौ त्यौ आपु आपु में गने॥ अनायास
तब सो कैं पावै॥ ३॥ काल॥ [illegible] तब हस्यौ नही
आवै॥ ४॥ माया गुन जब मिथ्या जाने॥ मेरो पान
याई करि माने॥ पूरे [illegible] रहे इह माही॥ तातें
रि लिये कहू नाही॥ ५॥ य जिदिय होवे ऐसो
रै कौं ऐसा धु संग नहीं सो तौ॥ सि स्नेह उदर
पराये॥ जातो॥ मन को सब वचन त्यागि पतते
कौरे ऐसा धु लोका कौ संग॥ तो ह ग्यान ध्यान
कौ भंग॥ ८

गनरकामैपरो ॥ ऐसेसे ग्रंथरत्र ॥ श्व
संग कृपभरे तौ वैसुषभग ताकी
गाथा भाषौ मैक तातै उर्मनै षमीबि
वेद्या ॥ जब उरवसी बिरहतन दहसो
॥ सोकमोह सागर मैं बह्यौ तबपुर
रवा भाषी जो ध्रुतो सो गाथा भाषौ
सो ॥ राजपुरुरवा चक्रवर्ती ॥ जाकी
ग्यानजहां लौं धर्ती ॥ आपहतै उतरी
उरवसी ॥ सो मितिकै नृपकै ग्रहब
सी ॥ ९ ॥ बहुरयो श्रापमुक्ति जब भई
तबतज नरपति उरवसी गई ॥ नृपति
बिलापकरै बहु रोवै ॥ न ॥ १ ॥ सो नृप
कोओरनजोवै ॥ १० ॥ राजा नग्नदेत
सुधि नांही ॥ नाना बिकलदीन तामां
ही ॥ लज्जा रहित मतमद जैसे ॥ चल्यो ॥
उरवसी पीछैतैसै ॥ ११ ॥ ग्रहा प्रियावु
मरही हो नो मेरी ओर कृपा करि
जोवो ॥ मो कौ मारै क ॥ है तुमजाबो
॥ क्रिपा करो मेरे ग्रह आवो ॥ १२ ॥ मि
लि उरवसी संग सुषपायो ॥ सो सो सं
कल हृदै आपो ॥ त्रिपति न मयो भो
ग ब्रत भोगा ॥ पाई उरवसी को संजो

गा॥१३॥ता उरबसी गोन आकै थौ
तातें भलौ मोनि कारि दुषौ ॥ तनम
पै दि देषवौ कछु नही आनें निसिदि
नु मास बषि नहीं जानें ॥१५॥ तबतानु
पकै पुरन भागा ॥ जातें प्रगट भयो बे
रागा ॥ तब नृप बचन बषानें जेइ ॥
तो सों मैं भाषत हौं तेइ ॥१६॥ पुरुरवा
उवाच ॥ आहो पैक देषो मम मोह
आपुहि किया आपुनो द्रोह ॥ गा ॥ पो
कै देव की माया जिनि मेरो सब ला
ग्यो ॥ पा॥१॥ हौं इन मोकौं उर वंची
बहु तेरो सर्बसु आपु लियो हरि मे
रो मै दिनु राति न जाने जात ॥ अ मत्त
करि मान्यौ विषात ॥१७॥ बर्ष समु
ह गये दिन बीत सकल बिकार नि
लीनो जीति देषो मैं कैसो उर कापो
॥ अस्त्री कै कर आप बिकायो ॥१८॥
जो मैं राज राज चक्रवर्ती जीति स
मस्त करि सब धरती सकल भूप
मम चरन निसेवें ॥
बमोकौ द्वै ॥१९॥

जो बातनीगरनाद २४
ग्रस्त्री कौ हाथु ॥ जो बातीगरनाद २४
ग्रस्त्रीमोहिनचापै
सा पु ॥ जौ सौ ग्रस्त्री मोहि नचापै
सो नौ तौ मैतु रिपु पपारो ॥ २० ॥ ताप
रिरान सहित तन मोहि ॥ तिन सम
नकरि छली बिछोहि ॥ नर भयो
जो मैपी के धापो ॥ जनमत आपु बिस
रा यो ॥ २१ ॥ कौन भांत ताकै सुख होई
तेजपुताय रहै नहीं कोई ॥ जो लोवै
ग्रस्त्री आधीन जैसे परी सेगाव दी
नसे तै ॥ २२ ॥ ब्यो मोनत प्रथातगी
बन मैं बसिवौ छिठ बैरागी ॥ सो समस्त
सी ॥ ला त्रियावस
जो कीनो ता कहु नारी ॥ २३ ॥ कैसेन बहीते पाई
सी मन माही ॥ २४ ॥ पहले ... नगाई परिपे
का मअपा प्रिवहै भांति ॥ आधिक अधि
के अग्निन ॥ सीतल भई ॥ २५ ॥ जैसे अग्नित्र
क वाधत नित गई ॥ २६ ॥ जैसे कोई सो
ज्वलित होई तामें ईधन डारे कोई ॥ सो
तौ तौ अधिक अधिक परजरै पलकै
नही सीतला करै ॥ २७ ॥ पै अपनो नजो
जो नो अरथ ॥ आपु आपु कौ कीपो अंथ
मूरख आपहि पंडित मानो ॥ परो मनु
मुष अवर जानो ॥ २८ ॥ जो मैई सकल
सा ॥

न केरो।सो कैर हो।त्रिस्ना को चेरो मै
मुरषता के अधिकार॥जिननि की सोक
छु ग्यान बिचार।२७।अरु जी करि जा को
चितह्यो।ग्यान बिचार सकल परि
हर्यो।ता को हरि जी नु कौन छुडावे।दू
जे आपुन कूट निपावै।२८।ताते मैं हरि
चरन निग हो।सकल तागि हरि को चे
रो।जग दृष्टि दे बी मोहि बुझायो।त्रिसा
प्रीति दूष कहि समझायो।२९।तो हू मै
मुरष नही जान्यो।काम अधई सुष क
रि मान्यो।ताते ता को नही अपराध।पैह
मेरो मन बड़ो असाध।३०।जो मै स्वर्ग न
रक मै देष्यौ।दूष माहि सुष करि ले
ष्यौ।गुन मै साप जोति दूष पावे।अ जिन
पतंग परे मरि जावै।३१।तो तिन को अ
पराध न कोई।आपु दूष करि लेवे सोई।
ताते इन को रहै स्वभाव।मै मन मैं को
धसो अभाव।३२।जो मै आपु अगिन मै
परो।तो अगर दोष कौन को धर्यो।देह मल
न महा दुरगंध।सो करि मानी बिमल
सुगंध।३३।सो आपनी अबिद्या कर्यो।
निजानंद मय आतम बीसर्यो।महत

नहीं कहत न कोऊ कहीपै तामें न सताए
हि कौ रहीपै ... मातपिता आपनो क
रि कहै आलीपै कमेक मिलि रहै के पह
तन कहीपै राजाकौ केमावका ... कोन
तावौ ... कौ कोके स्वात ... गाल
कै आपनो मित्र कै काल पहतन के
ही है छोडि दे जिनको प्रगट दीसतु
है तिन तिनको ... महाग्र सुभदेरूप
कैसो ... नरका घाति है जैसो
तिह कौ मन न ... तिमद ग्रखौना
महा कालको फंद ... विचारु थिरग्र
समासरूयेत ... नामैं रोमन घटेत
विप्रापुचरै किम हाउ ग्रखौ प्रगटन
कैवौ घाउ ... नातेग्र खौ ग्ररुता
सेगी तिनकै नहीं कैजै परसगा तिन
कै इस दान चितमन नहीं है ऐसे विना वि
कारनको ... तातें तिको दरसना
करके आपुही आपुनरके नहीउ शिप
सोपहई छिपग्र पै निवारै मनक मेव
वन ... सगा तिटारै ... तब पैहमनस
जौ थिर होई ... विकारन परसै को
ई तातें जे अक्षिनुकौ भजै ग्ररूप
न

तोजैजगतकूदैचै है तेहमसैकूसंगरी १५

स्त्री तिनकौ नूधातजै ॥१॥ दरसपरस
अरु स्रवननिवास ॥ सब भावनतेमु
मैंत्रास ॥ ईद्रियनकौ बिस्वासनकर
णनवंततिनहीपरिहरै ॥२॥ महापु
रुषजैजीवनमुक्ति ॥ तिनहूकौसब
संगअजुक्ति तातैमैसबसंगनिवारो
॥ श्रीपतिचरणकवलउरधारो ॥३॥
दीनबंधु करुनामयेस्वांमी ॥ कृपा
कीरायेरुअंतरजामी ॥४॥ श्रीजग
वानउवाचै ॥ याबिधिबैनकरैनररा
जा तजिउरबसीलोकसुषसंजा ॥ ग
नलहोसबसंसपटास्यो ॥ मननिश्च
लकरिमोमैधास्यो ॥५॥ तातेउरव
परपुरषारथ ॥ नरहीपापोतवहोस्वा
रथ ॥ तवसमस्तकी संगतितजै ॥ सत
संगतिगहिमोकौभजै ॥६॥ संतवता
वैहितउपदेस ॥ जिनतेसंसैरहैनलेस
मनकीसबआसक्तिनिवारैं ॥ संतम
हाभवसागरतारैं ॥७॥ निस्पृहनि
रारंभसमदरसैं ॥ संपरहरितवदन
हीपरसैं ॥ अहंकारममतानहीआनैं
८

है। जैसे लोक प्रामेरी नित तौवै। तैसे ग्रंथ
सेहु निपोवै। २६ मेरी कृपा सरवनु
जैसै तैसे सब पापन तैं निसतरै। सुनै
कोहेम्र यागतु अपांयै। त्रिति श्रोतां सुनी
तक धोवै। पथ। तें यह जिह तें हैम भगति।य
होगी है वैसे कर्त्रा बिरति मेरी भगति तें है
गुन बरै। पर नेका मभयो सोतब हो। ५१। ता
कोमहा जेकर लोई है। प्रपानांनंदक सम सल
है। सोतिनि सम कहै है वै कोई। तहां अमृपर
गोरसो ई। परा। ता तें तुमार भय सहजिहां जावे
त्यो सा धू सब देख मिटावै। पहुंच अपार सासु स
मम। जो मैं वृंडे नी वै जयारा। ५२। तिनकौ नो
कोकि डैये हा। भेतक्रृ थपरसादम मदेह। जो
प्रेनत्रिरायै आहार मेरी सरन हू पसहर
पम। जोपु लोक धर्म धनुत्रानो तो भव
तारक साधू मानो। जिनके हिरदै पुग राम
म चरन। तिन बिनु पाभव श्रीरन सर
नाय। ५३। जो बाह रहै सुर सपेक पोजरन
पन रे वार रैनेक। सत मात पिता हो का
री सत है ब बंधहीहू पहारी। पहुं। तातें
सत संग नित करनो। श्रो र्पामे न द्रिढध
रनो। तिनतें ग्रानापासमवतिरै। ग्रा

नाषासमोकैं अनुसरैं।५१। तबपुरुरवा
पेसोकरयो।सोउरबसीलोकपरिहरयो
सब्रतनिभयोआतमाराम।बिचरयो
मनमेंह्वैनिस्काम।५२।तातेंअरुसीस
गपरहरीपे।सोसाधुसंगनिरतरकरीपे
साधुजनसुषदाभवतरैं।सुषरामम
चरननचितधारैं।५४।दो०।श्रीमोसाध
या साधकौसुनिहरिजीसोसंग।तब
ऊधवमनपूछौ।पोकर्मजोगपरसंग
है।।इतीश्रीभागवतेमहापुराणेपं का
दसस्कंधेश्रीभगवानऊधवसंबादे
भाषाटीकायांपैंतालीतीबारवानेष
ट्विसोअध्याय।२६।ऊधवबोचा।हियमें
क्रियाकरोअवयैसी।भाषौक्रियाजोग
बिधिऐसीजाकोकरतहोयेसंतसंग
पावेग्यानहोयेनिहसंग।१।महजोतु
वप्रतिमाकीपूजा।सोतेअपेकरैनही
हूना।याकौकहैव्यासअरुनारद।गुरु
वृहस्पतिपरमबिसारद।२।औरुसब
लमुनीसुरजेते।परमश्रेपेपरभाषे
तेते।कोव्यासआदिबिधिसोंक्रमकह्यो
सोदटकरिनिधिहैगह्यौ।३।तिनि
भगवाद्विकसुतनसुनायो

तै सबनी पायो जेते सकल बरनग्रेसम
स्म सी स्र नन सु कौ धर्म ॥ पाविकुग्रे
र धरम है जेते पाही ... नकरै है तेते पा
बिन श्रीर धर्म जो करै सो नोति नतें ... फिर
बधन पै ॥ ६६ ॥ सर्व धर्मनि कौ धर्म
घारी तै कौ सर्व कर्म नातैं पूजा बि
धि बिस्तरे सो श्री पाकौ जीव निनि सत
श्री जिनमद याल सब कै हितकारी सु
नि रत सकल दूपंहारी ॥ नेमे पर
प्रकार बैन बोले है ॥ पिकै मल
तैन ॥ ९४ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ उद्धव
श्रेत न पार ॥ मम पूजा बहु विधि बिस्
रूप तो है सं क्षेप सुनो जी ॥ ता
सकल को भाजी ॥ पूजा बिधि
निपर कारी बेद कहूं त्रिका मिश्र
सार है समव श्रूर बेद कथ्यो ग
मियौ है कि कपरसमा ॥ ६ सो हात
मिश्रित मा नै ॥ भावेतासे पूजा
विपूरु छत्री वै स्याविवरण ॥ ६ नि
विधिपूजा बणी ॥ १० ॥ सो समस्त वि
महीसु ना जी ॥ नीवन कौ कल
जो प्रतिमा सुमि ॥ ११ ॥

तिनको मोमें ज्ञानै जथा जे गम सब पुजा गन
गुरुअरुमोसे भेद न राखे। मानुष बुधि
दूरिकरि नामे।१४। सुधि होपे जल माही
मगा अस्नानादि सकल ईश्रां।जे जप
तप वेद अरु ते ज्ञाने ते सकल पटै मम
मे ज्ञा।१५। आधो पासनादि जे कर्म प्रव
र्तिनिवृत्तिनिके धर्म।तिन तिन सौ नि
जमौ कोभजेजो होय ये निःषेध सकल स[illegible]
जोग्यजाही कुं शिम मसुमरन होई
है सब अमानि को सोई। सोई सोर[illegible]
म धर्म निम मसुमरण बिनु बंधन [illegible]
।१६। ईश्वर भाषो प्रतिमा को भेद से[illegible]
नहीं मिटे भव भेद पेकसी ला[illegible]

दिदैमेरे रेखैतननाँनै निततेते १९ यौ
र सनमिकोउ नाननाहं किन जानै
भित गोपाल लैप लिनी मैरैम नकोरै
ल्कोर विन्ग स्मान हि बिस्तरैं २० जैत
म स्याम जीसों सेरैं तनमन धनसब
सोवैरै देदै जो निहचौं मिकपटहो
ओकरै भाव सबसोकौ मोहं २१ जैत
म मल्ल निम कुरि स्यौरे प्रेमसहित
सबसों हि चढावै तैनम विधिग्रस्या
नवनरसौं मस्वनाम पाहि ल्यिप हिरावै
रसज्ञानि पूत छिकौ रहे हीकैरै ध
रणीर विन्ग्र सतिबि सुरै नलकूपु
मैं मधन थाम फूल जानैनो हि सकेल
मैं मूल पुरस्ना मानि [illegible] तिनसौं ग्ररपेंत
[illegible] तौ मोकों सुख होई तो धूपदी
पनैदै दीपमोकों [illegible] विधि करै नैवेद्य
[illegible] मानो ज्यौ
[illegible] नितप्रति
है ज्यौं मैरी पैं [illegible] नितौ मैं
[illegible] मानो प्रीति विहीन
[illegible] तो मैं सा
[illegible] होयेपवि
[illegible] मरोष्ठ

नारहैपूजासाजसूथमसबलै इ फिर
उठिबेकौरहतनहैं बैठे ॥ तरकौपर
बमुख ॥ निकुबलप्रतिमाकोबलसन
मुखार ॥ १२ ॥ रमनिसोनिजश्रीसन
कैआज्ञगनिकैनांसहिबिस्तारै ॥ न
सकारैममपूरितिश्रगातबठानेश्र
स्नानप्रसंगार ॥ ज्ञतमकलसतोइ
सोमनेरौहिजलकेपात्रहीकेसंजल
मेबस्तंसगंधमिलावेजासोमोहि
सनानकरावै ॥ २२ ॥ अर्घपाद्यरस
विशुकरै ॥ तीनपात्रतातेजलभरे ॥
गंधधूपथातिनमेबहुधरै ॥ गायत्रीश्र
भिमंत्रनकरै ॥ ३ ॥ तबअपनोकरैत
नसुद्ध काहेकारनहोयअसुध ॥
धमाहिममरूपहि धावै ॥ कारज
होतेयावै ॥ २४ ॥ जैसेग्रहमेदीपप्रका
सासोधावैतनमाहि ॥ जास पूजिये
मसौतनमयहोई ॥ पुनिमूरतिमेपा
थेसोसिद्ध ॥ सागोपागकरैतनपूजा
॥ कोइभावनउपजेदूजा ॥ देकैअर्घपाद्य
रवपादपैचमन ॥ २६ ॥ अग्रहस्तपेका
जमरुनाद ॥ २७ ॥ ताप

सकल सखि किलि किस सिस्यन्नो हि संघस
न के गाहा श्रिय सि हि स्त्रा भुनु के बाण
मुसल हू लस खा ऊपि प्रेम्या टे आठ द
सिखी नो सुति माल न ताडी ट्स नै मै
दसुन हु मलोनल बेड कूम्देखा
न देन्दू पुष्प बेड्रा पात्र प्रच्छ हि सापा
रघु हस सन्ना ना ठटे । गरेडु । गौ हि करि
श्रमान्नगाय्यो निरखि के सेनव्यासगड्दे
न । ा । ऐ पति हूत्र आस्व व सदेव ३ हि क
हि नौरे हरि सत्पुष्प धराटे हरि पिवदन
प्रेम श्रुति नाटे सब नको पजे ग्राधी
धि बिनभवन स्तोव दन आहि २१
है दन गंध कर्पूर औसी रा के कुम ग
गस सुगंध धा ते नीरा प्रथम हि कर
मधुपर्क चढावे हि रमल जल आच
मन करावे हि पुनि सुगंध जल देई
सनान मेन बेद मन कमन ही आन
पुंडरीक लोचन भरमा वन आदि
पुरुष सब के पुजावन २२ जपुन
म वाम सपक हु आधार न मोन मस्त
वारन पार जो सैतन मंत्र उचार सह
स्रसीर्षा स्रुति बिस्तारे ॥ वस्त्रन

नेऊँ अरु स्नान मरनो अंग अंग मैं तेल,
कादिक करना ऽतममाला बहुत सु
गंध प्रेम सहित मोसें मनु बंध ॥ १ ॥ बा
ल भोग आचमन करावे कुसुम सु
गंध रु धूप बनावे बहुत भांति आ
रती उतारै नाना बिधि नैवेद सवारे
॥ २ ॥ खीर षांड दधि घृत लापसी ॥
लाडू पुवा सुहार सुरसी व्यंजन करै
और बहुत तेरै बि भव लगावै बहु हि
तमैं ॥ ३ ॥ नित संतोंन ऽब स्नानो तेल
अंग स्नावै पंचामृत मेल अलेका
रद बिन आदर सो गीत नृत्य वादित्र
सपरस ॥ ४ ॥ बहुत भांति नैवेद्य सवा
रे नित नाही तीर्थ बन टारे बहुत ख
रै पावक मैं पूजा मो बिन नाहि न
जानै दूजा ॥ ५ ॥ अग्नि कुंड महि अगिन
ही धरै समध घृतादिक होम महीं करै हो
मक रै पढि पाठ मम मंत्र जिन को करै
वेद अरु तंत्र ॥ ६ ॥ करि होम मही अचम
न करावै ता को मेरो रूप मही ध्यावै त
प्त सुवर्ण तुल्य मम छवि अंग चार चारु भुज
आयुध संग ॥ ७ ॥ पीत वसन

निमाख्या श्रीसमू काटकरि सब बिसा
राजे रत्न गुणो श्रमहोमी श्याधि बह
विधि ध्यावे रूप श्रनन्याहि ।२८। पुनि नंद
हिपारस्पुद तेतेष्व लिखि मान सो पूजैते
तेजपेम्हत्यमंत्र हीन हवार ग्रा विधि
कंधे प्रेम श्रद्धि कार ।२९। पीछे तापर
सादर्दी चैवे चैका रिसब भक्तिनकौ
देवै श्रियणामाये ।३०। फलवपावै प्रीत
सहितजैतोजिय भावेया ।३१। पुनि ग्रग्रपै
सुं गंध श्रतांमूल्यार्ग तमसमात्याउ तमफू
लामेरे गुन ऊँचै सु न गावै नामन श्रा
सै प्रेमन ध्यावै ।३२। मेरेगुन श्ररु क्रमस
राहै पूरनपेम सिंधु श्रव गाहै कथा
नितमम सुनै सुनावै मोहिंन केहन
मनहरावै ।३३। चौरनप्रसो है मैन करा
ई मुखते नाम ।३४। लिनहीमाई प्राकृति
श्ररुसं सक्तालवेद्जोई जैस्तुति केहीमै
कौ ।३५। तिनसौं मम स्तुति करै बारबा
रचैनूनि मैं परै पीछे धारि जोरिकरद्दो
ई ।३६। करैदीनबीनती सोई ।३६। हे प्रभु भ
वसागरतै तारौ काल मृत्युभयसौ
केनिवारो तुम बिन मेरै श्रौरन कोइ पा
रे चरननि कीजै सोइ ।३७। पंद्रहे जाति

जोति मैं ध्यावै॥ मुरति मोंसजा थिरता रै॥
मौं ॐकार जहां जो दृषै॥ ते समस्त मम
मुरति लेषै॥ यह बिध करै जप॥ बिधि सब
मै पूजा॥ मो सौं कोउ न जानै दूजा॥ ध्या
न बिधि क्रिया जोग मन लावै सो नर भू
क्ति मुक्ति फल पावै॥ ७७॥ मोकों उत्तम
जन सम रावै॥ ता मैं मम पूजा पधरावै॥
मोकों करै नाम फूल बाई॥ जात म सो
छब वी अधिका॥ ७८॥ मम हित सद
बता दिक दैवै॥ बहोत भांति मम भक्ति
न सेवै॥ मम पूजा प्रवाह कै हेत॥ देइ गां
बपुर हार षेत॥ ७९॥ सो मम समि इसुर
तायाँ लै॥ तिहूं लोक कोई सक होवै जो
मम प्रभा पापन करै॥ सो सब भूपति
है अवतरै॥ ८०॥ तीन्यो कि पेलरै बैकुंठ
कालादिक सब है तै अकुंठ जो पौसे
वै कै निह कांम॥ सो मम भक्ति लहै सु
बधाम॥ ८१॥ जो मेरो मंदर समरावै॥ तिहूं
लोक प्रभूता पावै॥ पूजादि निब्रम्ह को
लोको जहान ही नाना भए सो क॥ ८२॥
निहकाम भावै तौ सेवै॥ जो तन मन ध
न मोकौं दैवै॥ सो पावै मेरो निज ग्यान

वहै मोहि सुहै सब ग्रान है ३ अतिसुर
निग्रकहियथ निकोरी ग्रस्मोनकरौहो
ये कछु मेरी कृष्ण औरको कियो ग्रापु
नावौं कहै कोउ सब माप है ४ सोही
ये छिनमें ... दरसको है हैनि
करै नाहीं ... ग्रौर रवन्त पासमहाई
ग्रानु मौलिक जिनको बिउपजाई ६५
सबहि नवै पूरनहो इसमान नावै ७त
समावैग्रान ६ हियौ ता। यविधिपूजा
कौनकरै नाकैरापर्जे ग्यान जातैमेरो
पददहै ताको कैरैवखान ६७ इती
श्री भागवतमहापुराणे एकादशस्कंधे
श्री भगवान् उद्धव संवादे भाषाटीका
यां महापुरुषार्थ जाविधिवर्णनं नाम सप्त
वैसौध्याय २७ श्री भगवानुवाच ६८
अबतौकों भाषौं ग्यान जातैलहै मोहि
तजिग्रान उत्तम मध्य मकरमसुभ
व जे सब जगमें नाना भाव है तिन
नकी निंदा नहीं करै ग्रस्तनहीं कछु
ति बिसरै प्रकृति पुरुष निर्मितस
जानै पेकजानि सब में हि भानै
म ग्रादि कीटप्रजंत पेकरुप देखेम
सवजनति
जानै एम छिन क्रमन करै सो बहतानि

संत जेजे वहे बिधि कर्मस्वभाव तिन
को जानै भाव अभाव ॥ [illegible] जो सो
होइ अपने मिथ्या माया मोहि चितआ
कष्ट मिथ्या माहि चित को धरै तातें
मूरख जन नै मरै ॥ आनीन सोहि नवई
छिपे देहा सव फल है न बख्यात मये हाज
हो भन लगे पोत हो नावे बहुत भाति
के दुष सुष पावै ॥ मानु नि सुष पलि मे
सोवै लीना मरनो कहीये अहं मम ही
ना पो सुष पूअरु देषत सुपना जन
म मरन बहु दुष सुष उपना है जो
लगि सोवै तो लगि पावै जागत ही कु
छु बैन रहावै ॥ त्यो पह सुष पाप रपुनि
जनम मरन सव जानै सुन ॥ ४ ॥ जो पे
ये ह सब हैत असत्य मो बिनु और क
छु नहीं सत्य देषन कहैन सुनन मै आ
वै जो मन अरु बुधि जहाँ लग जावै
ते सम स्त कछु वै नाही तो सुभ
असुभ कहो का माही जद्यपि है मि
थ्या संसारा ताके दुष को वार पारा
है जो लगि देह बुधि नहीं छुटै तो ल
गि भ्रम भव पल कन छूटै जैसे अप
ना धुनि की जाई अरु प्रति

ऐसा
[illegible] नामी सरूप जैसे [illegible] नारी
छकी नांही षि [illegible] मांहि [illegible] याहि है बि
पाञ्र स्थूल [illegible] तिन तै सूक्ष्म [illegible] ना
परिहै सो नांहै [illegible] गिनि [illegible] माही
छिमा नांहै [illegible] नर थूल [illegible] गिक
थूल तोहि [illegible] सकल [illegible] सार [illegible] रूप
ब्रह्म कयो है सबसे [illegible] ब्रह्म है सम ब्रह्म है ब्रह्मक
[illegible] कारण [illegible] सोवै ब्रह्म कोका
[illegible] ब्रह्म [illegible] ब्रह्म [illegible] माही
नै ब्रह्म प्रति पाल [illegible] दृग जल [illegible] तोहि
[illegible] ऐसे [illegible] दृग [illegible] नांही [illegible] वश्र
जल कों [illegible] डिबै तल कु [illegible] ऐसे जानो नि
ब्रह्म सब [illegible] ऐसे [illegible] सब जुग [illegible] फूल
नैका [illegible] हि [illegible] सब [illegible] मै [illegible]
रम्ल [illegible] जो मृगजल बारि गगन जानो ते
त्रिगुन रचित [illegible] सब जग [illegible] जो पा वि
नहै माया कौ मानो [illegible] ब्रह्म भावना त्रि
सब मिथ्या जानो [illegible] सो जग मै रहै
ग्यानो परिहरि [illegible] रहै पाज
रवि जग गुन दोषन गहै [illegible] थान
मै शुभ ग्रस भनत है जो पूरन छुघ
ब्रह्म करि लेयै [illegible] बिन सत मिथ्या
कहै जो उपजत [illegible] काल त्रिप

नामरूपतें सकलअसत्य॥ त्योंहीब्रु
ह्मसत्य निहचे॥ नामरूपमिथ्या
जैजाल॥ ८॥ व्रह्मसत्योंकरिहैअनु
मान॥ आइ परेजउतनमनप्रान॥ मति
कौनकी चेतनरहै॥ अपनेअपनेअ
वैनगहै॥ ९॥ जेनिराकारतैचेतनहोई
सवअकारजहांलौकोई॥ तातेसवमि
थ्याअकार॥ चेतनव्रह्मसकलआधा
र॥ १०॥ स्रुतिकोपरिनामविचारै॥
नेतिनेतिकहिसदापुकारै॥ अरुत्यों
ईथैअनुभोमाही॥ नामरूपकछूहैपै
नाही॥ ११॥ चेतनरहैहैतैनहीआदि॥
अतमनिहचलव्रह्मअनादि॥ ऐसे
वहुविधिकोविस्तार॥ मिथ्याजानि
वरनिआकार॥ १२॥ मनक्रमवचन
होईनिसंग॥ व्रह्मविचारहिकरैअ
भंग॥ ऐसेबचनकहैभगवान॥ त
बउधवपूछयोदूजोग्यान॥ १३॥ उध
वाचहेप्रभूपेहआतमअविनासी॥
चेतनरूपस्वपेपरकासी॥ निरगुण
निराकारनितसुध॥ सदाअनावृति
सदाप्रवुद्धि॥ १॥ अहंकाररहितसदाअ

सकलपू का प्रेक लिप
न के [illegible] सक्रिया रहीन
न हे वोकसपूर्ते हैं सलान रपाते तैत
नइ ग्रसु प कै नावूलान विसे मपरसप
नकों संगान हेश्रीनहो ग्रातमसमाही
रहोइ कोकु इ श्री नहो ग्रातमा रहै
ग्रारुतन सों कछु हौवे नाहाकरद ग्रा
ग्रातमको बंधन है कोई ग्रास हैसो
तम ग्रावितानहो ये है संसार सुध मौन
कोन ग्रातम सुध सदा सुध जाको
र प्रदेह करि रूपा मो छि सु सो जद्य
मेरो भ्रम संदेह मिटा वो कोइ सो पतिग
पूको ग्यांना निवदोहे सब ग्रातम
ताना रहे श्री भगवान नो वाच कोनही
कोनाही स सार ग्ररु तिन विवेक
ग्राकार तिन हु नो तैसो ग्रा इ
ताहा को सब कुछ ग्र नेकार ग्रातम
है ग्रातम नबंधा है निसो जो महा
बंधाताते ग्रा मासे संसार कोई नब
नाना परकार बंधो जो सगि ग्राबंध से
बंधा सो सत्त ग्रातम जानै ताहि
ग्यांन कह्यो सब जानो ३ चौपा
सकल कोर मानो

याहै संसार। परतोहै काहे बारनयां
रा सदा जीव दूषही मैरहै। बारबार
तन छोडि गहै परा जो सुपना कोय
है पै नाहीं। परि सब सा चैनि दा मात
जो जो सुषदूष मन मै धावै। सो सोस
कल स्वपन मै गावै। ३। अहै नाही पर
है जो जानै। नाना बिधि के सुषदूष
मानै। जागत ही कछू है पै नाही। सब
बोहार बथा है जाही। ३। ४। हरषसो
क भय मोह अरु लोभाइ। दा क्रोध
असो भासो आजनम रुमरन विका
र जहां लौ। अहंकार के सकल तहां
लौ। ६। प्रातम सदा पै करसरहे अ
हंकार संगति दूषसहै। ६। द्विपदे ह
बुधि मन प्रान। सत अरु महातत्व अ
भिमान। ३। ८। इनसो मिलिकरि आ
तमऐका माया के सुष गहै अनेक
। लिन तिन के हित कमन करै। कमी
न के वसजनमै मरै। ३। १। लिगानधी
देहन मै जावै। तिन के संग बहते दूः
षपावै। बुधि बचन मन प्रान सामी
रामसतत ६ द्विपै कमि सरीरदु

सुप्रेम रूप सम मता अरु क्षमा आदिक तिन कौ
नाना विधि से साधन सों जिन्ह के स
कै सदैव सोजो नेतरी साधिलै मो
भौ भूरि अभ्यास उपा भजि मोहि रूपा
कै दरि लै स्वान धरावै तासौं
भौ भूरि से वासो सोन विचरै सब है
काहि सोई सिद्धि संगादि पुरके वचन हि दे
भूत मन अनुभौ पुरके सौ दर हि ही
भै भूरि कया हि अनुलो जन दरत का ति जि
वारै जन मन सदस्यै यस्त सा धन ध
ज ग्यान नहीं सोवे है क्या साधन धरम वि
स मोहि प्रिति सोसाक्ष्या त स धरम दि रूप तं
वारै से सजो पान ग की प्रादि रूप
सोहि स धार्थ नारै संता हि ग्रादि ग्रं
रू नमि ध्यात्रै तासै देक नाम रूप मूं
रूप त्रै तेक है सपेवा स्यौ स दि रूप
नाम धार्मिक प्रेम्या भर न संते ना
नोवे कूहे स कोहि नहीं ग्यान जो
आर कोरि है सै ग्यान नाम सिपा सव
नाम त्रै आकार है सकाल त्रिपुक
विचार हि भजौ जो नगा ग्राहि से धा
रूप जौ नो हि स्वरूप वि सो है सत
रूप्रैत सै सेक त्रय रूप दा सो इस ध

यासबरूपा ॥४॥ जाग्रत स्वपन सुषु
प्ति अवस्था ॥ आदि अंत मध्य मासव
स्थाई न को नास भय जो रहै ॥ सक
लको दिता कैं बुधि गहै ॥५॥ इंद्रियग्र
हइंद्रियनको देवा ॥ इंद्रियबिषय मि
लैं बहु भेवा ॥ ते सब जाके कहि बिन ॥
नाहीं ॥ सत्यब्रह्म सो षोजो माहीं ॥६॥
जाहि परकासित सकलप्रकासै ॥ जा
की सत्ति सत से भासैं ॥ मुषको मुष
करननि को करना ॥ कर कें कर चरन
के चरना ॥७॥ नासा नासा नैन के नैन
॥ जिह्वा जीभ बैन के बैन ॥ या बिधि स
कलप्रकासक येक ॥ ता बिन मिथ्या
सकल अनेक ॥८॥ ये जे नामरूप बि स
स्तार ॥ तिन सौं पूरन संसार ॥ ते सब
आदि हि तैं कछू नाहीं ॥ अरु नहीं स्थि
है अंत हू माहीं ॥९॥ ताते अब हू मिथ्या
मानैं ॥ कारन ब्रह्म निरंजानैं ॥ नाम
धर्यौ सो सकल बिकार ॥ तिहि कल
मैं मांटी सार ॥१०॥ पह जो कछू सो बु
म्ह समस्त ॥ आदि मध्य अरु सबके
अस्त ॥ ऐसे बहुं बिधि बेद बषानैं ॥ बु
म्ह बताई द्वैत सब मानैं ॥ पर ॥ आदि

नो ही स्वप्न भासत
समस्त है तो कछु नोंहीं स्वरूप सकलप्रक
है सो मांहि भातै महै म स्वरूप सकल विलक्षणा मैत्रा
सकु स्मा पुरुष स्वरूप श्री सकल त्रिव नातैस
या सैंना ताकी सु सिद्धि प्रकासैना तैस
कारे कुरु है सो तो ति कै सुपत्र स्वरूप दो
पर्म है नै सो परै सु प्रति जानो सु स्वरूप सब
मम स्वरूप ही मानो ये तच्छो विलहचलहो
वे रहो ज्ञानरूप तो सूक्ष्म हीन हो पपयै
है सो नित कौ है विचारा मिथ्या जानै सब
आनंद सा गुरु सो बाकै ज्ञान बध्यावै
चैतन मो हि अखंड तस्यावै पहवरजो
तन सो आतमनाही तन घर स्वप विचा
रै मांही परई है तै दीप समान ईन्हप्र
कास का आतम ज्ञान प्रकास त्योंदे प
बन मन बुद्धि आतमकी नही जानै सु
छिति छिति जल तेज पवन आकास अहं
कार गुण चित प्रकास पच स्पोमप्रक्र
तितन मात्रा पंच ईन्हीको सब चेत पुप
चा ते जड आतमकौ नही जानै आतम स
कि ई हा सब को मैं पहे सकाल पुकासक
आतम ये काय जड जानि सकै अनेक
या विधि जो मम स्वरूप विचारै स कलप्र
कास उपाधि जे रको टारै ॥६॥ सो वनर

म
हैं॥६१॥द्रिपेनिषेभै॥कि॥वापर विषैनिश्चारमै
तो हैं ताकौं नहीं गुन दोष जीवतहीजिन
पावै मोष॥६१॥जैसैं घनर विश्चाडै आपे
तौ इन सौं कछूर विनही छाये अरु मेघ
दूरि ह्वै गये तौ कछूर विन प्रकास भये
॥६२॥रवि हैं परै नूरै घन वृंद जो नैलिप
तौ कमंति मंद जैसै प्रगट पवन घनतौ
इ॥धुमिधूलि अरु दौनैहो॥६३॥अरिसुवै
गुनसीतल जु स्मां छिजपनत विनसतर
हैं अंनो छिप्रनहीं लिपत अलिप्त आका
स॥त्यौं आतमा परम प्रकास॥६४॥प्रतो
हैं संग तिनकैं ज्ञा यागुन न ह्वै रिपुरै
जो लौं करि मेरी दृढ भक्ति छूटी नहीं
रजतमैं आसक्ति॥६५॥दैं है भेदन भूलै
जो लौं ममजन संग करैं नहीं तौ लौं जैसैं
रोग होपेतन मांही दृढ मूलज धारौं ना
हीं॥६६॥सोतजि अंग दृ अपथ्याहि करै॥
सो तौ रोग वहरि विस्तरै॥त्यौं अहंकारो
ग भयमूल॥सोजौ लगिन भयो निरमूल
॥६७॥सोल॥गि संग अपथ्याहि
हैं रुजगं प्रवतरै॥बघु
रे॥आवै सकल सुर
पै

॥नो गीकौ कहिन विस्त
तरायेबहिरकै ॥ कहे सौ कौ करै
रासौ तिन तैं याकैं अवतार ॥ पमै नहीं लैना
नाहिं विसतराहि ॥ कानिय ताबिधि पाप
सौ मैथुरकतावै जे रमाही ॥ आन
जानविप्यानाहि ऐसे मोहि मिटावै ॥ जैन देन जो
॥१०॥ तबताकौ करम निकरै ॥ करावै
जन बिसरै ॥ पूरबसंसाकौ रकरावै ॥११॥ सोमु
लिखि कोबिमोनमिथ्या जावै ॥ ताते करदै जाने
निमगानब्रह्मसुखमाही ॥ ताते करदै जाने
नाहीं ॥ जो बैठै अस्ठ ता हो ही ॥ आवै जाप
कहे तो मैं ही ऋग्न बापे जलपावै सोवै
॥ जो बिवहार है कैसो वै ॥ सो सो कछून
नावै जो ताकि प्रसर है ब्रह्मरस भोगी ॥१
३ ॥ जो कबहुं ऐसै संसार हि जिन गोचर बि
बिधिप्रकार तैसे कछु संतन ही जानै ॥
सपन बस्तु जो जागे मानै ॥१४॥ प्रथम
तमाहतो यब ब्राप्यही भयो पूकति
सो बंध ॥ बहि सो मोसौ बिद्या पावै ॥ तब
मनो निहिं पूकति छूटकावै ॥१५॥ तबब
है सौ ताकौ नहीं गहै ॥ मोहिं जानि मोहि
रहै परथम हीं जबतब मोकौ नहीं जा
॥ तब माया सूक्ष्म तम मान्यो ॥१६॥ ब

स्यौं जब मम चरणहि आवै। अमपूसा
द अगा न मिटा है। तब मासा को दूष
मय जो है। परमानंद रूप मोहि मानै।१
९ ताते आ यही गही उपाधि ताको त
जै नानि करि ब्याधि सदा निरंतर मो
मै रहै। बहस्यो भवसागर नंही बहै।१
०। ज्यौं रबि ग्रसस कलई अदापुर
वि बिनान लखै परत दौ रबि संजोग
बहे रिजन बहोई। तब समस्त देखै सो सो
ह्छा रबि बिन अधकार अति होवै ता
तै कोई नैनन जोवै। रबि संजोग प्रकास
हि पावै। तब सब देखै तम ही मिटावै।
२। परतै नैन त्रिकाल अलेपा अधकार
सो भये न लेपा ते सौ केतौ तम ही मा
ही परि रबि बिना कछू देखै नाही।२१
रबि तै तम उपाधि परिहरै। पाई प्रका
स प्रकास ही करै। तो पह आतम मेरो
रूप। स्वयं प्रकास कपरै अरूप।२२
जन मम रंजादार हित। काहू कारि क
बहूं नही गहित। दूजै रहत आपूही पेक
ताही करिये है अनेका।२३। महानु
भाव सकल अनुभाव। जामे कदेन

कुमिसु मा आ लिलिया नदनदा आतितु ॥ ६ ॥ मद
लीहस दा परकूं ॥ ७ ॥ जाकी इंद्रिये
नत्रमल प्रांजा वैतन है नरते लिखि नान
जौलौ मन औरे विखै न नजावै ॥ औरकौन
लिखि ताकौ पावै ॥ ८ ॥ परिजन नमो तेरही
नाभयो ॥ तनु ताकौ सब लैमिटि गयो ॥ अ
प्रकार अभ्यासो अमृत ॥ तातै हरि भयो मेमा
नो ॥ ९ ॥ जब कह्यौ ममसरा ॥ हि आवे
॥ तब मोगयान प्रकास ही पावै ॥ तातै छोडे स
कल ने पाछा ॥ जो मो बिनु कहिं लीन्हि वा
छि ॥ १० ॥ ताकौ अवहे परसो नाहि ॥ परि मोबि
ना तजी न हि तजा हि ॥ मोकुं पायसकल परि
है मै देखन नकुं अनत से ॥ ११ ॥ रवि प्रका
सा मिटे तम जैसे ममप्रकास है तैं भ्रम ऐसे
सोयुनि मोकौ नही बिसरावै ॥ मो हि मे ये मो
माहि समावै ॥ १२ ॥ जो मो मे है तै नु माया आवे
अह सो माय मे नहीं आवे ॥ तातै नित ही मो
मे रहै ॥ मो मिलि परमानंद ही लहै ॥ १३ ॥ ६
कछु इतनो ही अग्याना ॥ जो केवल मै जाने ना
ना ब्रह्म बिना कछु दूजो नाही ॥ जैसे तापज
व री माही ॥ १४ ॥ है तदेह जड मिथ्या जानै वै
तन्यक ब्रह्म थिर माने ॥ अह यह पचवैरा

विस्तार॥ ८५ जे बिनसै बारंबार॥ ८१॥ राजाकौ मिथ्याबेदबषाने॥ अरु त्रहीगुरु साधु मा नै॥ अरु आनभवतत्व सीदे है॥ जागे स्वपन जगत त्यों लेहै॥ ८३॥ ऐसो जगत सत्य जो जानै॥ पुष्पितबानी बेद बषानै॥ अतन श्रुति के बचन बिचारै॥ तुरैक है तेइ नरधारै॥ ८४॥ तातेकमकाम हौक है॥ ते मरम् यामव मव सुक मबिचापत तिनकी बुधि॥ तातेकदे नषा बेस कि॥ ८५॥ तातेतिनकै बलीन ग्यान म रम आपही जाने जान॥ ताते बिषइजीव सम स्त॥ तिनहि भ्रमाई करै तें अस्त॥ ८६॥ ताते ३६ बयहई ग्यान॥ व्रम मनिकरि छोड़े आ न मेरो भजन निरंतर करै॥ जाप्रकास है तेह प्रहरै॥ ८७॥ अरु ३६ व जो जोगकहावे॥ अष्ट अंगको बेद बतावे॥ सो ज्यो औरै बिधि त्यो जानो॥ भवमोचक कबह मति मानो॥ ८८॥ जबयाकेतनपरनलबिकार॥ करिनहीस कै भक्ति अधिकार॥ ताते बहो बिधिबिस तरै॥ समविस्वास पाई परिहरै॥ ८९॥ प्रथ जोगधारनाकरै॥ सीतरै

॥१०॥ भोज

सो रोग सो तन न जतन पै कहै जोग काम
दिक मान सिबेकार जीतै मम सुमरन
अधार १९ मम भक्तिन की सेवा करै त
करि दंभादिक परिहरै पाबिधि
समस्त निवारै मेरो भजन हिदै बिस्ता
रै १-२ अरु पेकै मृदन के राजा साधै
जोग देह के काज जो पै देह मिटाई च
हिये देह मिटै मेरो सुषलहिये १-३ मे
रो अस आतमा पेह पाकौ दृष दाता सो
देह नाहि देह जो राष्यौ चहै ते आपुही पा
भव मैं रहै १-४ तन के रोग जरादिक टा
रै स्वास जीत करि मति निवारै अंत म
तु होवै कल्पंत वह सो पावै देह अन
त १-५ तातै वषा करै श्रम मूढ मेरो
भजन न पावै गूढ तातै मैं अरु संतनि
मोहि तिन कौं वहै आदर नाहि १-६ अ
रूप पम हि जोग ही करै विघन निवा
रि भक्ति बिसरै ताकौ मन जो निरदरि
सोई ताहु आदर करै न सोई १-७ छोडै
जोग समाधि समेत गहि मम सरन
बढावै हेत जोग माहि बाटै अंदकार
तातै नहीं कहै संसार १-८ तातै सब
तातै नहीं कछु भजै मम आधीन है के आ
नति मो कौं भजे

पातजै॥ममप्रसादतैंमोकौपावे॥बहुरि सौ
नमवदृषमैनहीश्रावे॥९॥जो होवे
मेरैश्राधीन॥श्रापहीमानेसबतैं दी
न॥मेश्राधीनहोउताजनकैजोश्रा
धीनदेहमहमनको॥१०॥केवलजोम
मसरणाहिश्रावे॥ताहीकौसबदेवा
जावे॥तातैंबिघननश्रावेकोईबिघ
नतहांईदाजहहोइ॥११॥ममश्रा
नररहैश्राइता॥सबदेवनकौहोवेब
दित॥तातैंउधवप्रेहहकरणो॥मेरोभ
जनछिदेमैधरणो॥१२॥जगश्ररुश्रापु
ब्रह्ममयजानै॥द्वैतभावकबहुनही
श्रानैं॥ब्रह्मभावतैंब्रह्महीपावे॥जन्म
जन्मकेदृषबिसरावे॥१३॥दोहा॥
श्रैसोसुनिश्रीकृस्नसो॥श्रतिहीदुःक
रग्यांन॥पूछ्योसुगमउपायतब॥उ
धवपरमसुजांन॥१४॥इतीश्रीभगव
तेमहापुराणेएकादसस्कधे श्रीभग
वानउधवसमादेभाषाटीकायांपर
मारथनिर्णयोनमाऊणबिंसोध्याय२
८॥उधववाच॥हेप्रभूश्ररुकृमगा
नबमानोसोतोमैश्रतिदुकरजानो
बसनाहीइद्रिमनजनकैकैसेका

जसोई प्रभु तिनकैं ॥१॥ ऐसे परमहंस सोइ
उचित ॥ तिनकैं ब्रम्हरुद्र छूटे है नित्य ॥ और
जे परग्यान बिचारैं ॥ बेचियै विपामनकूं
धारैं ॥२॥ तिनको मन बसि होइ न ज्यौं ज्यौं महा
कलेस लेहै ते त्यौं त्यौं ॥ तिनको मन बास होइ
न कैसेंही ॥ श्रम करि जन्म गमावैं पूही ॥३॥ तु
व पद परमानंद समुद्र ॥ ताको भेद न जानैं रुद्र
करैं जोग जग्यादिक कर्म ॥ तिनतैं कैद न छू
टै भरम ॥४॥ तातैं गारभ वधे जो करें ॥ जातैं जु
ग जुग जतन मैं मरैं ॥ केवल भक्ति तुम्हारे जेते
परमानंद लहैं सब तेते ॥५॥ जब ही तैं तुव च
रन नि आवै ॥ तब ही तैं पूरण सुख पावै ॥ माप
निकट न आवै तिनकैं ॥ तुम्हरे चरन हिदै मे
जिनकैं ॥६॥ तातैं सहज हि जगत मिटावै ॥
तुव चरननि मैं सहज समावै ॥ तुम्ह ब्रम्हादि
सकल के नायक ॥ सबहीनकूं प्रभुता के दा
क ॥७॥ तिनके चरन गहे हू दीन ॥ तुम ताके ह
वौ आधीन ॥ अरू यह कहा अचंभौ स्वामी ॥
तुम प्रभु सबके अंतरजामी ॥८॥ तिनकौं सब
जिसे वैसो इ ॥ करैं आयु बसि तुम कूं सोई ॥ सी
धारी है जेते ॥ तुम पद मुकति ॥ जा रते

॥राम रूप तुम अ है मुरारी॥ तिनकी निरवांन
र अधिकारी॥ नांनर सकल समा तुम कारे सब
हिनकी सब हित आधारे॥ १ जा तें जो तुव कृत
बिचारैं॥ सो कोय लत तुव भजन निवारैं॥ तुम
हीन सम सदेह सवारी॥ चेतन सक्ति तुम्हैं यु
निधारी॥ ११ सदा रहैं तुम रे आधार॥ तुम ही
निति अतियालन हार॥ तापरि जीव तुम्ह हीन
हीजांनें॥ कारला भरता और निसांनें॥ १२ तो
ह तुम औगुनत हीजो न्हैं॥ बहु बिधि गहि ताहि
र दाखांनें॥ पुनि जब ही तुव सरणाही आवे
तब तुम सें च्यासौ फल पावें॥ १३ पुनि तिथा पि
सो अति अग्यान॥ तुम को सई लखै ईंगो आंन॥
ब्यापि यदारथ सेव कतांकें॥ तुम्हरी भक्ति बिर
जे जाकें॥ १४ तिकन जहां न ही तुव भजनों॥ नर
क जांनि सो ही सो लजनों॥ तो तें जो होवै सरवगय
तुमरे ठेयकार निको तग्य॥ १५ अरु बिधि स
मि आरबल यावें॥ बहु बिधि रूप कारबन
वें॥ तो हूं तुव हिग्रें नतस हि हो ई॥ ब्रह्मा आदि
हा लो गोई॥ १६ जे तुम्ह बाह
भी तरि चेतन सक्ति अनोय॥ प्रा
[illegible]

षोभजनाने २ सहजमिलैतुवहुटपाव
पे श्रुतिप्रियै ग्रबवकेबेन बौलै क्रिसु
क्रिपकेश्रैन १८ ग्रश्री भगवानोवाच
धनाधन्य ग्रबवममभक्ति सबजीवन
के हितश्रनुरक्ति तोसोकहेश्रापुनो
धर्म जोतेमिटै सहज सबकर्म १९ क
रतैसुषश्रागेसुषपावे छोरै भवभय
मोमेश्रावे ग्रबवक्रमकरैनरजेते
मेरैहेत करै सबतेते २० कर्मनमेभाषे
ममनाम मेरैकरिराषेधनधाम मोमे
श्ररपैमनकीवृति ताकेसबश्राचर
ण निवृति २१ मेरीपीतकरैजोकरै मे
रीप्रीतिरहैतपरहै जिनदेसनमेमेर
भक्ति तिनकरिवाससहोईश्रनुरक्ति
२२ श्रुरश्रसश्रसुरनरनिमेजेते मेरे
भक्तिभयहैकेते तिनतिनके श्राचर
ननिजानै तोरी तोश्रापुहठानै २३
मैजगमहोछौ करै परबनमेमिला
परबिसतरै मेरीजहांजातराहोईतहा
तहांचलिजावैसोई २४ जीतनृतबा
छित्रकरावै छत्रचवरश्रादिकसेधि
कावे श्रुतग्रदारतकरिसबठानै मम
हितलगैभलोसोजानै २५ सबमूल

मेरी कोदेषे अंतर बाहर पेके लेषो अ
पुत्रादि जगमे मैं जाने ज्यो अकासु
आनो बरतमानो ॥२४॥ यो सबमे जाने
मम भावा त्यागे सकल बरतस्व भाव
सबतीन के सतका हिवैरे ॥ ज्ञानदृष्टि
भेदही परिहरै ॥२५॥ पेके बिप्र बेद आ
धिकारी ॥ पेके अंत्यज महा बिकारी
पेके बिप्र निके धन हरता ॥ अरु पेके
धन के बिसतारा ॥२६॥ पेके तेजहीन ब
ले देषे तेजवंत बल पेके पेषे ॥ पेके क्रूर
सकल कृपदाई ॥ पेके सांतक सकल
सहाई ॥२७॥ ताहि कना ना बिधि देषे
॥ मेरी दृष्टि
परजो भेद कहु नही लेषो ॥ पंडित ताहि ब
सबनमे आनो ॥ मम जनप ... ताहि ब
बाने ॥२८॥ बिधि सबमे मो को जाने
॥ देह भेद कछु नही आनो ॥ पेरे काल म
हि ता जन को सब बिकार मिटिजा वे
मन को ॥२९॥ सर्व तिरस्का अहंकार ॥
सकल मिटे कछु लोग नबार ताते
र दृष्टि नही धरो ॥ लोक कछु टबला जम
रिहरे ॥३०॥ हासी करे सकल इलोका
परि सो आने हरष न सोच
मनमे नही आनो ॥ सबजीवा ॥

जानै ३३ परषखर चेअलनिश्चंत ज
हालौमेरी सिद्धि अनंत निमस्कारतिन
तिनकौ करै ३४ समानधरणीमेपरै ग
सनिमित्या व्रजंगममांही मेरोभावहोइ
परमांही जहांलगाममवचकायसमे
तपौसबमेठानै ममहेत ३५ पाविभि
करतरहैनरजोइ जाकौसकलब्रह्म
पसोइ मिटैअविद्याविद्याआवै त
तैबंधनसकलमिटावै ३६ ७ ब्रह्म
कलमतेहैजेते बेदमेधामेभायेत
तिनमेंतोपरम मसार जातेबेग
हैसंसार ३७ मनक्रमवचनजे
जेते ममरूपहीजानहीतेते ७ धव
सोधर्महैमेरो नतोप्रभावकहै
केरो ३८ अनुरूप ७ प्रगटजोहै
किंहीवहे ४० मिटैनहीसोई जहां
तानिर्मलवस्तु तहांलगैसब
स्तु ४१ पैनिरगुणसबगुणपू
तामैममधर्मोअवनासी मे
कदैनहीकाही ममधर्मोयो
हीऽ अरु ७ दवपरकेसव
मेरोधर्मकदैनहीछीजै ७ ध
राजसतामे

धप्रकारं सांप्रिनते केवलहो हिअन
पिपूरति लैको सबमेटै अथी नरके
नि मोहै अरि निहार कामक्रोधपा
दि बिकार राजोते ते मोमै करै तो
लैलो हिलतै भवतिरै जैसे कै समर
नमू यकस्यो मेरो धर्म नहीं आचे
स्यो आपरिसो भयंकर मोमा
हीं अमपद पलैस्यो मनमैं नाही अ
रु गो पिसुन की पो बिभचार लघे
वेद तजे भरतार रूपरि बिभचारो
मो मैं कस्यो तो हि तिन भवजल परि
सों कि जो द्वेषकी पो सिसुपाल
॥नातें जीव निरासो काल पारि
सो मो मैं करि द्वेष भवजल तजिक
रि पल्यो मोमा पो बिषरूप बिकारो
जेते मोमे आये अमतते तेहाताते
पर बिन कवतुराई है बुधि हीन
हीं कारि जो झूठै सो साच ही लीजे प
र काज आपुन कीजे पेहरूठी
[illegible] भगुर देह सकल बिकार नहीं
कौ गेह ताकारि पापहरि अबिनासी
॥निरबिकारपूरन

प्र॰ सबब्रम्हग्यानकोसार जोतानिहो
हजसेसार मैसंछेपमाहि सबकह्यो
यातैसारनकहि वोरत्यो ॥५९॥ प्र॰ नर
तनअरुपहमम ग्यान देवु निहकौद
लभजान जद्यापिदेहलहैनरदेह
तोहिग्याननिपावैप्रह ॥५॥ तातेमैभा
ष्योनिजग्यान जातैमोहिलहैतजिअ
न ॥६॥ प्रवपूसकरीतुम्हतेता ॥६॥ तर
सहितकहीमैतेती ॥५१॥ तेसबतत्वब
दकेजानो ॥ मेरुपरमरुपकरिमानो
॥ परतुमरोमेरोसंबादु अधातमप्र
रमातमबाद ॥५२॥ ताकोसुनिह्रिदैमे
धरै पावैमोहिआपुकौ त्यारै ॥ जोप्र
हमेरोपूरनग्यान ॥ मुरैजगतिनदेवै
दान ॥५३॥ सोकहीतुहमेरो दाता जहा
तहाहोवैबिख्याता ॥ जोदेपैलहैसोसो
ई ॥ लोकवेद भाषतुहै दोई ॥ ५४॥ तातै
यानदेई जोमेरो मैआधानहो ॥६॥ तहि
केरो मोहिदेईसोमोकौपावै तिन
कौलैमोमाहिसमावै ॥५५॥ जेनरपा
कौनितहीपढैहितासजनसोमोसोहित
बढै सोजनमेरोअतिप्रीपहोईताकै

समिंद्धजोनही कोहोपहिजोयह सुनै नि
त्य करि आदरअरु सकल कौं करै अ
नादर।सोकर्मनसो लिपतन होई मेरी।।
भक्तिलहै दृढसोई मैयहपरमग्यान कैवा
स्यो।६६।तुमकछूक्ल्हि है।। घासुंको सोक
मोहभयभयोनिवृत।निह्चलभयो हु
है आवतौ प। अरु इहव यह जो मेरो ग्यान
नासोमतिजानौ मोतै आन तातै दंभ
सहत है सो अरु ना सति काउ हकू
ना होई।। वह प्रीत न जानै नहीं मम भक्ति
।दृढ बनी तिबिषयनि अरु सति कृतिनकू
ग्यानन दैनो यह जो कालरु भूलीज
रु मेहा।६६।।निदोषमन करि सोई बिहीन।।
मेरो भक्तिप्रीत दृढ दीना अस्त्री सुद्र अ
सो होइ ताहि तै अंतर नही कोई।६९।अैसी
बिधि सौ कृष्ण ग्यानजू कहीये तौ तिन।।
संहत परमपद लही पै।जो महजानै मेरो
ग्यान ताहि जानिवै रहै न आन।।६२।।जो
कोई पीवै पीयूष ताकै रहै न दूजी भूख
।।ग्यान रु कर्म जोग अरु अंग।।कृषि बाणि
ज्यौ नीति सब अंग।।६३।।अर्थ अरु धर्म
मोक्ष अरु कामा।।इन सबन कौ मो मै
धाम।।तातै मोमें आवै जोई।।इन सबलीन
कृपावै सोई।।६४।।परमेरे जन का कूनत

नै सकल तागि करि मो को सेवु ताहि
मो धारु साधुनजैतै ममजन देषै मोहि
तेते ६५ सबतजिजब ममचरननि तै
नै आपुनवेद कछु नहीलेवै ताकै मम
दूजो प्रियनाहीं मोनित मोमै मै तामाहि
६६ तबसुनिग्रैसे हरि के बैन ७ ववग्र
सुकलाकुलनैन आगै ठाढै गंजलिवं
घै प्रेममगनतनमननिठसबै ६७ वै
नहै तै बोलोनही जावै कंठ है वै गद्ग
द स्वर आवै तातै ७ वचपकरिरहै क
छूबेर कछू बैननकहै ६८ वहसोचि
तमनन करि धीरज फरनप्रेम अपारी
बकीशत भिक्षालन आपु करतार पमा
सब संदेहहर्दिै तेमा ६९ हरि के
चरननिमापौ धारस्यो ७ ववहुनव
नरचास्यो जिनतै हरिसौ बाढै प्रेम ७०
जनकौ कहि सुनिपै यछेम
व नावगत मात्र रत्र बहुना
परमानंद परम परगासी तिनकौ र
निधानजवव आयो तवही सबगु
नप्रपायो ७१ सो निधान पावकौ
जावै आरतताम रहुम परम दयाल
सो निजजनन पूरन हक पावै ७२

हविग्यांनदीपमोहिदीन्हो॥जातेंस
कलखभ्रमखमचीन्हो॥तुमरेचरन
सरनभैनाहीं॥दूजीठौरकहूंसुषना
हीं॥७३॥जोकोईतुवकंतकौंजानै॥
अरुतापरभवकौदुषमानै॥सोतु
वचरनसरननहीआवै॥तौदूजौका
तैंसुषपावै॥७४॥प्रभूजीतुमअतिक
रुनाकरी॥भ्रमभायापासीपरिहरी॥ मे
सकलजीवनिअग्यानेहा॥अरुजुवती
सुतवित्तग्रहदेहा॥७५॥यासेसबमेरेमन
तैंटारे॥अपनेचरनकंवलसरनउर
धारे॥तुमविस्तारीआपनीमाया॥जे
नमुहे॥जिनयहसकलजगतभरमा
या॥७६॥सोतुमग्यानषडूगसौंछेदी
॥द्वैकृपालभितप्रीतनवेदी॥नमो
नमस्तेग्यानप्रकासी॥जोगेस्वरईस
रअविनासी॥७७॥दीजैमोहियेकवर
देवा॥निहचैदृढ़दैयनिरंतसेवा॥तुम व
हीछोडिदूजौनहीजानौ॥परसेवककीपै
सेवाठानौं॥७८॥वामोहिप्रसाददीजीयै
यहा॥तुम्हसौंनिहचबटैसंनेहा॥करि
विनतीनैधवभक्ति॥बोलेहरिजीवै
अनुरक्त॥७९॥श्रीभगवानोवाच

वै सकल त्यागि करि मो कौं सेवै तातै
साधन रु साधन जेते मम जन दे षै मो मै
तेते ६५ सब तजि जब मम चरन नि सै
वै आपुन वे द कछू नही लेवै ताके मम
दूजो प्रिय नाही सो नित मो मै मै ता माहि
६६ तब सुनि ग्रैसे हरि के बैन उ द्धव आ
सु कला कूल नैन आगै ठाढे अंजलि बं
धै प्रेम मगन तन मन द्रिढ संधै ६७ बै
न हि तै बोल्यो न ही जावै कंठ ही तै गद ग
द स्वर आवै तातै उ द्धव चूप करि रहै क
छू बेर कछू बैन न कहै ६८ बहु सोचि
त पुनि करि धीरज पर न प्रेम भ यो ग्र
न की रज निश्चल आपु क तार पमान्यो
सब संदेह ह्रिदै ते भान्यो ६९ हरि को
चरन नि मायो माथो उ द्धव जु नव च
न उचार्यो जिन तै हरि सौं बाढै प्रेम
जिन कौं कहि सुनि पै यत छेम ७० उ
व नच नाथ अज न मायह रुज बनासि
परमानंद परम परगासी तिन कौ सं
निधान जब आयो तब ही सब अज्ञा
न मिटायो ७१ सं निधान पावन कैं के
जावै अरु ता पर तुम परम दयालं
मो निज जन प्रभु मय क पालं ७२ प

है॥ बिग्यांन दीप मोहि दीन्हौ॥ जातैं स
कल खुभा सुभ चीन्हौ॥ तुमरे चरन
सरन मैं नाहीं॥ दूजी ठौर कहूं सुष नां
हीं॥७३॥ जो कोई तुव कृत कौं जानैं॥
अरु तापर भव कौ दुष मानैं॥ सो तु
व चरन सरन नहीं आवै॥ तौ दूजौ का
तैं सुष पावै॥७४॥ मूजी तुम अति क
रुनाकरी॥ मम माया सी पर हरी॥
सकल जीव निग्रह नेंहा॥ अरु जुवती मे
सुत बित ग्रह देहा॥७५॥ ऐसे सब मेरे मन
तैं टारे॥ अपने चरन कवल सरन मैं
धारे॥ तुम बिस्तारी आपनी माया॥ जि
न मोहि जिन यह सकल जगत भरमा
या॥७६॥ सो तुम ग्यांन षड्गासी है दी
॥है कृपाल मित प्रीत न बैरी॥ नमो
नमस्तै ग्यान प्रकासी॥ जोगेस्वर ईस
र अबिनासी॥७७॥ दीजै मोहि ऐक बर
देवा॥ निहचल द्रिढ़ै प्रनिरंतर सेवा॥ तुम न
ही हो इं दूजौ नहीं जानौं॥ पर सेवक कै
सेवा ठानौं॥७८॥ मोहि प्रसाद दीजीयै
यह॥ तुम्ह सौं निरचंवटै सनेह॥ करी
बिनती ऐह भक्ति बोले हरि जी कै
अनुरक्त॥७९॥ श्री भगवानोवाच

तथा अस्तु उद्धव मम भक्ति मम चे
रननि निहचल आसक्ति अब तुम उद्ध
ऐसी करौ लोकन सौं हेता बिस्तरौ कु
॥२॥ बदरी षंड आश्रम मेरो अति पु
नित दरस जिह केरो तरु नीर षमम
चरन को जल ॥३॥ सपरस अरु स्ना
न हरै मल ॥४॥ नाम अलकनंदा सो
गंगा निरमल करै दरस सब अंगा
जहां जाय तुम बासा करो फल भा
खन तन बलकल धरो ॥५॥ दंद सी
त उस्न आदिक सहौ बिन पारिक अ
मल कुन गहौ इंद्रिपनु के अरु पानि
परहरो पह बिग्यान ग्यान उर धरो
॥६॥ मो तै सिषो ग्यान तुम जोई बै
ठे कत बिचारो सोई वचन चित सब
मो मै धरो मेरो धर्म सदा बिस्तारो ॥७॥
तब तात्पो गुन कौ पार हौ रहो मम
८ निरगुन पद कौ अनुसरिहो पद उद्ध
व प्रति ग्यो मेरा फिरि उतपति न वैहै
तेरी ॥९॥ पा बिछिक सुबचन उद्धा
रै तै उद्धव लै मस्तक धारे चरननि
पारि परदछिना दीन्ही तिन तब वे ल
बे की इछा कीन्ही ॥१०॥ जदपि छंब

हैहै नहीं आवैं लो उ हैं नील जिनही
जावै। आसु कें व ग्रीति आरहु ख्वुधि।।
।।तनमय मु मौन तन की सुधि।। ९
।।कृस्न बिन गनन को ही सहै। बारवा
र चलि फिर फिरि रहै। तब ग्रेत्र जामि
गोपाल जन कों ज्ञानि प्रेम बेहाल।।
।।श्री निकट बुलाये मिले दै अंग। गया
न रूप। कीन्हें सर्व गात बस्त्र पनीप
बरा दीन्हीं। ते उ ब्रजजन मांझे लीन्ही
२५ तौ ले प्रथम हि कृस्न पधारे। जा
द्र लै प्रभा सँ लसै। तब ही तहां उद्ध
व चलि आये। कृस्न देव ये कहे बैठ पाये
।।१०।।पुनि मै ये पधारे तहां। कृस्न देव बै
ठे जहां। सह की प्रीति कौप रनाम
दरस पायो अति अभिरामा। ११। ठाढे
भये जोरि कर रिझायो। प्रेम मगन कछू
कहै न कोई। तब तिन कौं हरि भाख्यौ
ग्यान जैसे ग्रंथ कार को ज्ञान। १२।।
मैं अैंको दीन्हें। आ देसो। बिदुर हि क
हि यो पर उपदेसो। आगा दीन्हीं उ
ब्रजजन कौ। अपनि सुक्ति कि पोषि
र मन कौ। १३। तब उ हे हरि वस नि ध
परो। हरि हि है निहचल करि धरे। पु
नि उ ब्रजजन पुहे चैत तहां। नर नारी

यन प्रगटे जहां ॥ ९४ ॥ तहां जाय की ने आच
रनां ॥ जे जे हरि भाषे ते करन ॥ बल कंद अंब
र फल अहार ॥ प्रेम मगन नित ब्रह्म बिचा
र ॥ ९५ ॥ तब ते गुन बिस्तार मिटायो ॥ नेह
वे ब्रह्म निरंजन पायो ॥ यह हरि नेहु व को सं
बाद ॥ हरि जी को है प्रेम प्रसाद ॥ ९६ ॥ जा को
कृपा करै सो पावे ॥ ते जि भवसिंधु ब्रह्म में जा
वे ॥ जब ते या को भाषै सुने ॥ प्रेम सहित हिरदे मे
भने ॥ ९७ ॥ तब ते पावे प्रेमानंद ॥ अंमही बि
ना मिटे दुष द्वंद ॥ यह स्वयं मेव आप हरि के
ह्यो ॥ जा मे कछु संदेह न रह्यो ॥ ९८ ॥ या मे
असो कृस्न प्रभाव ॥ मिटै जगत उपजे हरि भा
व ॥ जिन हरि प्रगट अंमृत है करे ॥ भक्ति न पा
य सकल दुष हरे ॥ ९९ ॥ यक जलधि ते अं
मृत पायो ॥ निजाधीन देवन को प्यायो ॥ जरा
रोग आदिक दुष हरे ॥ बल उपजाये बिगत भ
य करे ॥ १०० ॥ असहू जो प्यह अमृत येक ॥
बेदसिंधु ते ब्रह्म बिवेक ॥ सो आपने जन को
प्यायो ॥ जन्म मरन भव भय हि मिटायो ॥ १०१ ॥
असो आदि पुरष अबिनासी ॥ सुमरत जि
हि मिटहि भव पासी ॥ कृस्न नाम लीन्हों अव
तारा ॥ तिन को बंदन बारंबारा ॥ १०२ ॥
असो सुनि सुषदेव सु ॥ परम तत्व उपदेस ॥
कृस्न कथा के प्रेम सो ॥ कीन्हीं प्रस्न नरेस ॥ १०३ ॥

इती श्री भागवते महापुराणे एकादसस्कंधे श्री
भगवान उधव संबादे भाषाटीकायां नंदद्व
मुक्ति निरूपणी नाम मे को नत्रिंसो अध्याय
२९॥ श्री राजा उवाच: रूप्रभु हरिकी कथा
सुनाओ॥ कारन मुर नियुत्म तप्रावो ॥ हरि
नृपदेस उधव हीदीन्हे॥ पीछे आप कहा तिन
कीन्हे॥ १॥ जादव कुल कौ प्रगटनो श्राप
हरिजी कहा कार्यो तब आप॥ ईश्वर कोबा
धा नही कोई॥ असत्ति जआपन मिथ्या होई॥
२॥ सनकोतन मन मोहन देहा परमानंद स
आक्रो गेह॥ जे नारी हरि दरसन पावे॥ तिन सं
गे न नपैचे जावे॥ ३॥ जे हरि के रूप दी गावे॥
बानी सहत मन श्रुति पावे॥ अरु जे सुनि क
हिरि देखारे॥ ते पल को न ही छोडे पारे॥ ४॥ भा
रथ मे अर्जुन रथ माही॥ बेठे दरस लहे जात
ही॥ तिन तिन हरि की समता पाई॥ सब संग्र
तिन तत काल गवाई॥ ५॥ ऐसे तन हरि त्यागे
के से कोई हरे ना गम नि जैसे॥ ऐसो बचन क
हे न देव॥ उतरदीन्हो श्री सुकदेव॥ ६॥ श्री सु
क देवो बाच॥ द्वारावती नीके तयात॥ तिन
को देखि कही हरि बात॥ गन सेन आदिक स
बलोका स भास धर्मि उपन ही सोक ७॥ तिन

सोकृस्नबचन६ चारै॥ह२ कोमतो
लखैनबिचारै॥निजमायासोंमोहनक
रै॥ग्यांनबिबेकसबनेंहरे॥श्रीभ
गवानोबाच॥हेजादवेंसुनोममबा
ता द्वारावतीबहुत६ तपातापृगत
पातमतृनीसानी॥तातेंतनीपय
हेग्रस्नान१ जुवतीबालवृद्धिस
बजेते संपोधारपठपतेतें ग्रौरेस
कलप्रभासहिजेपृ तहांपवित्रमस
रस्वतीचन्हेपृ॥१॥कर स्नानतन
निरमलकरीये सुचिहितीरप
बरतधरीये॥भजीयेबहुतपितरग्रे
रुदेवा तिनकीकरीयेपूजासेवा
११॥ग्ररुविप्रनकीपूजाकीजे॥गा
कारिग्रसनानदानबहुदीजे॥हैंसापी
पभूमिसोनोवस्त्रादि॥१२॥ग्रासौरबा
रपग्रनग्रहादि॥जाईतैंबिघ्नन
छिधिननकेलीजे॥देवरुबिप्रगायेकीप
कलक्षीजे॥पापहरनछिछमी॥नदु
जा॥१४॥कैसीसुनिहरिजोकीबा
सवजादवनमनीवारिमान
पवनवैठिसिंधुउतरे॥चठि

रिषपनिषपाणे करे १४ जो हरि ति
न कौ अगपादनी। त्यो त्यों सब निस
वै बिधि कीनी। करिअ्यान धर्म ब
हु ठानें। भंधुप्रभास अपमाने। १५
तब तिन की मो कासू नैमान जा
ते भूलगये सब ग्यान। तबतें मंत स
गलै ई भये। हरि माया वै वै करि ले
ये। १६। तिनमें कलह भयो ऽतये
न सब में हरिये रिक पर छिन तब
तिन कीतो स भाम झरी। सातिका
बी रिगिरा ऽ ध्यारी। १७। कृतक मी
को करि अपमाना। सातिक छौडे बा
णीबाना। भाई जो क्षत्री तनधारी। अ
रु बहु रसै कहीपे अधिकारी। १८।
औसी औसी की करे। सोवतबाल नि
केसिर हरे। पहप्र घूम नबचन सत
कासो। कृतक मी कौं अतिधिकासो
१९। तब क्रतकर्मा कीन्हो क्रोध। बी
ति बाणप्रकास्यो जुधा। अरे करे
कौ औसी। व्याध क्रूरतकीनीजैसी
२०। भूरि श्रवा निरामुध भयो। जाको
बाहु जुगलकटिगयो। ताको बुधत
कीन्हो औसे। व्याधकसा

।२१। तवसातिक गठि बोलै बांनी
सुनोसुनोहो सारंगपांणी ।। इनको
तुसग्रुरुत्रापुसिरापो ।। तातैइसोम
तोधैचापो ।।२१।। पुकहीबचनषउग
तनिकाद्यो ।। कृतकमी कोमस्तकु
वाद्योज ।। यापिसबमिलिबहतनि
वास्यो ।। तोहसातिकक्रोधनटासो
।२३। तातैसकलभयतेक्रुधु ।। साति
कसेहातैठानोज ध तबतैसकल
भोधैगोर ।। जुधरचोसापरतट्वो
२२म ।। कुंइधनुषभाठसोलरै ।। कोइप
३गगहेसहैं ।। कोइफरसीगदाकु
गर कोइलैसोहपापुहार ।।२५।। कोइ
गुरुनगोफणाकोइ ।। बदों (द्विकनि
लरैतेहे ।। हथितसबैकारैसंग्राम
बैठैदेषैकस्मरुराम ।।२६।। हैस
पहेहापीसोहापी ।। र पसैरपसोष
सोसाथी ।। परसीघरउ २७ टिनि
महिषरुमहिषबैलबैलनसों ।।
।७। पचुरसोंचक्रेरमिलिलैरैं ।। नर
नरमिलिनधिहीकेरै ।। महामत
कलपैननैसे ।। जुधिकरैबनमे
।। सावधमनगानमे

घात्यो अक्रूर भोज अति क्रुध तहां से
ग्रामजीतरु सुभद्रा कैरेंजुध बीरनके
जदुरखेण द सैनाम कस्सको भ्राता
नामु सुचारु पुत्र बिख्याता त्यो साति
क सौं मिलि अनिरुधा सुरथ स मित्र
करै मिलि जुध॥२०॥ लक्ष्मकनि सठस
हस सतजित भानु आदिदै जो अपरि
मित आपु आपु मैं जुध ही ठानै॥ सरि
करि मोहित कछू न जानै॥२१॥ कृ
ष्णबंस सदा सारप्य बस॥ सो तत्व क्षत्र
धक भोजवतस॥ अरु नृद सुरसेनम
धु माथुर देस बिसर्जनकृति रु कुकु
रपुर आपु आपु मिलि जुध ही ठानौ
॥ सबनि परस्पर सो कै है भान्यो॥ पुत्र
पिता भाई अरु भाई मामा अरु भान
जे लरराई॥२२॥ काका भतीजे नाती ना
ना॥ मित्र मित्र मिलि जुध ही ठांना॥ सु
हृद सुहृद गणा तिन सौं गणाती॥ सब मि
लि भये परस्पर घाती॥२३॥ तब सरभ
दीता भये सब हीनको॥ हू है त पाधनु
ष तिन तिनके आयुध सकल कीन
जब भये॥ तब तिनि करनि औ रकाम

२१ तबसातिकगठिबोलैवांनी
सुनोसुनोहोसारंगपांणी इनको
जुसग्रुरुआपुसिरापो तातेंइसोम
तोधैथापो २२ पुकहीवचनपउग
तिभिकाढ्यो कृतकमीकोमस्तकु
वाद्योजुध्यापिसबमिलिवहतभि
वास्यो तोहसातिकक्रोधनटास्यो
२३ तातेंसकलभयतेक्रुधु साति
कसेहातेंठान्योजुध तबतेंसकल
भयेधैथोर जुधरच्योसापरतट्वो
२४ केईधनुषभालसौलरैं केईप
उगगहेसमहरैं केईफरसीगदाकु
गर केईबेसोहपापुहार २५ केई
गुरजगोफणाकेई बंदो दिकनि
लैरैं तेतें हर्षितसबै करैंसंग्राम
बैठेदेपेकस्मरुराम २६ हेंसे
पहहापीसौंहापीर पसैंरपसांध
सोंसाथी घरसौंघर २७ टिनि
महिपरुमहिप बैलनबैलन सों
रथरसोंचब्रेरामिलिलैंनर
पचचरसौंचढीकरैं महामत
नरमिलिनधिहीकरैंबनमें
कलपैननेसौं जुधिकनठानें
मावछ

घात्यो अक्रूर भोज अति क्रोध तहा स
त्रामजीत रु सुभद्रा कौ जु ध वीरन कै
त्रछूरहेण हसेनाम क स्म को भ्राता
नाम सुचारु पुत्र बिष्याता। त्यो साति
क सौ मिलि अनिरुध। सुरथ स मित्र
करै मिलि जु ध।१५।६ क्रु कानि सठस
हससत जित भानु आदि है जो अपरि
मित। आपु आपु मै जु धही ठानै। स्रि
करि मोहित का छून जानै।३१। कृ
स्म बेस सदा सारथ्य बसा। सो तलै अ
धक भोजवतस। अरु बृंद सुरसेनम
धुमापुर देस बिसर्जन कै तिरु कृकु
रपुर। आपु आपु मिलि जु धही ठानै।
सब नि परस्पर सो कहै भान्यो। पुत्र
पिता भाइ अरु भाई मामा। अरु भान
जे लराई।३३। काका भतीजे नाती ना
ना। मित्र मित्र मिलि जु धही ठाना। सु
हृद सुहृद गण तिन सौं गणती। सब मि
लि भये परस पैर घाती।३४। तब सर
दीणा भये सब हीन को। हटैत पाधनु
ष तिन तिन कै आयुध सकल कीन
जब भये। तब तिनि कर निर्भै रका

लीये ४७ भौमसुरलचूरनतेंजेते बज्र
समौ तिन्हें चूंतरटते ते ते तैसकलकरनक
रि लीन्हे हरिसोउ जहांक्षु धहीकोन्हे ३८
रामकृष्नबलभौतितिवारि पतितसूमिकनक
छून विचारे रामकृष्नकौ रिपुकरिजाने जु
हुबूषनतरंगतिन्त्रौनें तब आयुहाथकोपति
नकोय कन्हैयौचहेंसबहीनकोंलोय तबपै
रकोकरनकरलीयौ थोरमांहिप्रलैसब
कीयौ ३८ विप्रआयआछादितकीयौ हरि
माया विचारसबहरे पावकओधप्रगटन
भयो बांसबिपनकुलजरिमरिगयो ३९
तबकुलसकलनिष्टहरिदेख्यो भूकोभार
उतार्यौलेख्यौ जाकाजनितलीनौ औतार
सोग्रहस्योधरनिकोभार ४० तबसमुद्रतट
मेंबलभद्र कीन्हो ब्रह्मध्यानअतिभद्र आ
पुही ब्रह्महिलेराख्यो मानवदेहहरिकोरि
नाख्यौ ४१ रामप्रयाणलख्योहरिजबही लघु
पीपलतलबैठे तबही निरमलरूपचतुरभु
जधार्यो दसहुदिसकोतिमरनिवार्यो ४२
जूं धूंमपावकप्रकास ऐसोप्रगटभयोतिंजा
स पीतबसनहेंहितनघनस्याम तप्तस्वर्ण

सोभा अभिरांम॥७३॥सुंदर त्रासिसौ हितमु
षकमल किसलैन सोभाके सदन कर॥दू
कुंडल मकराकार॥सीस मुकुट की सोभा अधि
कार॥७४॥चिबुक लील सिर केस छिबि ला
गै भ्रू लता मनि बनमाला॥कंठ सूत कटि
सूत बिराजै॥छुद्र घंटिका नूपुर बाजै॥७५॥
ऐसे अभूषन भूषन अंग॥देषत मोहे
अमित अनंग॥अपूरब मूरति मंत्र स
मस्त॥सुमति जन होहि समस अस्त भ
गत म चरनकमल आ का॥जिन
कौ उर ध्यावै नित भक्ता॥दूहा॥ज
धानी के कस्यौ॥नाम चरनता उप
रिआस्यौ॥७६॥सो निहचल है बैठे क
स्यौ॥सुमरत जिनही मिटै भवत्रस॥अ
तिल घु मूसल पेड और हो॥जल मेड
स्यौ में कीनो॥७७॥सो बहमंड जा
लमें आयो॥ताकै दुलोह सोभा प्र
जरास्या धु मल कौ सौ कीनो॥ले
करि सर के आगे दीनो॥७८॥सो नर
बाध हतो बनमाही॥हरि को पद जि
न जानो नाही॥हरि को दिष्टि चरन
बपरयौ॥मृग मुष जानि घात तिन

मन आयुध आो मरति वंति ओनि अ
ति दै वै मग वैति हि तब दारक धीर जनही
के ल्यो तमु यौहि दय नैन जल छायो प्रभ
मगन मप वैन आयो ६५ तब कछि
र जन्म मूनिवारे के सैनास हि तब वच
न चार ६६ प्रभु मैन वचनन दै वै तै पल
को वपक रि लेवै ६७ तब तेन हट्रि ६८ मे
भयो सव ड्रुवयक वार अनुभयो भै ली
दै सान कहि पुछयो ६९ सो ने ड्रिपति निस
मा हि हि कु पायो ६७ तुम बिन जूमे तन बिन
प्रान जैसे मैन यन अंध बिन भान ७० ऐसे वच
न कहत ही सुत देख्यो यकव रित अदभुत
७१ गगन हते ते तम रथ आयो ७२ यनि स
ही तन अरु गह दृ सुहायो सुरति मय ही अ
नुभ जैते रथ मै जाय वैदे सब तेते ७३ य
वीरति दारक जब देख्यो बिसमय भयो
अ वै भो लेख्यो तब हरि सुतही बेन सुनायो
करि सनमान दुष बिसरायो ७४ म
वा न बा सुत द्वारिका को तुम जावो स
मा चार सब जाय सुनावो सब को मन सुम
निज जान अरु मो कौ अब कर तपु याने
७५ द्वारामती रहै मति कोइ तम को धरैं जन
लै जो ई यह न रहो तजौं मे जब ही सिंधु द्वा
के

हैकाबेरीतनहीं॥१२॥हमसरमातापी
तौदिकजेतिनैअपनैलोकनतेते
हदिहीजैयेअरजुसंगरहैंचारका
कैहैंलगा॥७३॥तिनकोपहसदेहसु
नायो॥अरुतुमममधर्मीहिमनलाय
॥ममंमायाहरचनायहजानो॥नाम
रूपसवमिथ्यामानो॥१४॥भक्तिनम
रूपसवनानारूपा॥निह्चलजानोमो
हिअरूपाजहांतहांवापकमोकौ
जानो॥नामरूपममभायामानो॥
१५॥मेरेचरननिरंतरभजो॥दूजीस
कलवासनातजो॥ऐसैकैआवौ
मोमाही॥जातेफिरिदुषपावोनाहीं॥७६॥परमसुनीसतकरसकोगया
ना॥आओसोकमोहभयआनान
मस्कारकरिवारंवार॥पुदछिना
है[illegible]विधप्रकार॥७७॥हरिविजोगतै
बहुदूषपायोध्याानविचाररचि
तठहरायो॥हरिकेचरनकवल
उरधारे॥तवदारुकद्वारकापग
धारे॥७८॥दोहा॥पहनिर्पतमसोक
स्योजदकुलकोसंहार॥अवमा

प्रोहरिकोगवन ग्ररु हरिजनको
धारे १९९ इती श्री नामकेतेमहात्म श्रीसुकाचार्य
रावोमवादे सखाहे देवदेव
का सेनादे भामी दे कापरोबिदे श्री
निरुनाको नाम किसको भाषा
गुरुजी का तबब्रह्मासनकादिकलि
ए मृगवादिक निव पासंग किए सह
तनवानी संकर देव हृद्दि बिक सुरत्र
रुउपदेव १ विद्याधर किंनरगंध
बै पितर महोगर चारन सबै गरुड़
लोकप छी ग्ररु सिध रुरि कादरस
कामना बिध र सबमिलि हरि रुग्रा
कौं ग्राए सबहीन हरिके दरसन पाए सवामि
हरिके जनम कमगुन गावै ३ सकल
लिजए जप सबद सुनावे बरषे पुष
बिमानन छाए गगन बारबार करे पुन
प्रेमकरि मगन हरिको नाम ५ ब्र
म मुषते भाषे हरि त कसूहि
द्दिकसब कस बिभूत ते समस्त देषे
तिनकी ग्रदभूत मनै ध्यान प
वान मैन मुदि सब करि ध्यायो वैत
मरुत्रापु एक करि निजतनुलो
... हरि बहापो

नि कों अभिरामा ध्यांन धारना मंग
लधामा हिताकें अगिन धारना ध
रा अग्नि रुपई मस्तसो करी तब
हरिजी नैं कृष्ण सि धारे या विधि सब
कें कारज सारे ॥ तब छदे बीबाजे
सुरलोक छपन मोहरष मिटो भय
सोक सत्यपुरु कीरत धीरज धर्म सो
भाजे गुरु गुत मकर्मा ॥ ते सब गये
संगजगदीस ॥ ताते हरि सब हिन कैं
ईस ॥ ताते महा कया हरिजी की आप
नो ध्यान धारना नी की ॥ तहा सम
स्त रहै तें ईतो सत्यादिक विधि सब जे
ईजो ब्रह्म आदि सकल सुर जेते ॥ ह
रि की गति हि न जाने ते ते ॥१॥ हरि बैकुं
ठ पधार्यो कसो ॥ सो किन हु न जान
न पर्यो कैसे ॥ नहीं तिन हरि कूं देखौ
बडो अचंभो सब हिन पेख्यो ॥२॥ जैसे
मेघ होहि आकास ॥ अरु दामनि प्र
गटै घन पास ॥ कैक रि प्रगट्यु प्रहोय
जाहि ॥ ताको षोज न कोई पावै ॥३॥

देषे गुपत अपुकिन हू नहीपेषै १३
हे नृपपद अच भानाही सक्ति अने
त सदा हरि माही जदकुलमै हरिको
ओवतार अरु करिहै नाना बौ
सार १४ सो समस्त माया करि जानो
हरिकी सक्ति होत सब मानो हरिपै
के सदा सिर है कु मि करै जन्म न
दीगहे १५ औरै कर्म करत सब जो
ने जन्मलीयो हरिजी को मानो ऐस
बुद्धि निके ओसार हरिजाइन सब
दिनके पार १६ अैसे नरवाजी बिस्ता
रै बहु स्यौ आपही सकल निवारै बा
जीगर सबही न ते न्यारा यो हरिके क
मै ओवतारा १७ जिन हरि च्यो त्रि
गुन संसार नाना भांति प्रगट आ
कार आपु प्रवेस कीयो तिन तन मै
सब बरताइ बिनासै छिन मै १८
अंत आपु के आपही रहै त्यो ही इन अ
वतारन गहे गुरको मृतक पुत्र जिन
आन्यो कालमृत्यु के गर्ब ही भान्यो
१९ ब्रह्म सस्त्र ते तुम्ह ही बचायो ब
धिक हि स्वर्ग सदेह पठायो तै न्यो

अपनीरी छया करतें।तोतिनकैं काहेप
रहेंतो।।सब जगकी प्रतपाल।नास
करैजनकोबलकलि।ऐसैसकति
सकतिमैं देवाब्रम्हादिकरै जासेवा।।
२१।। हरिवै कंकरनीको भार।धस्योह
तो भाम गयाकारण।।सो भू को भारजे
ताखों।।पीछें है दूरिकरिडास्यो।।२२।।
ज्यों काटा भागें पग मांही।।सो काटे
बिन निकसै नांही।।काटै काटो का
ढाजबही।।२३।।जे डारिदी सो पुनि जब
ही।।२३।।त्यों हरि मृतक देह कों राषै।।
निजानंद पद सौ कौं नापै।।अरु पे
कै अतिही अग्यान।।तिनकों प्रगट दि
षायौ ग्यान।।२४।।मनो गसाधिकरिरा
षे देह प्रत्यारत कार मानै यहा सकल
बिकारनको आगारा।ताकौं राषित जे
सुष सारा।।२५।।तातै तिनकों मोह मिट
यो।।हि सतजैं ब्रम्ह बतायो।।ऐसै तनको
कियो अनादर।।जातैं कोई करै न आ
दर।।२६।।तातैं हरि वैकुंठ पधारे।।बाजी
जो देता।।निवारी।।ब्रम्हरिषर्इ।।जु
दिकजेते।।दिषिप्रपानो कौंतेता।।२७।।

भ्रमतभये कृष्णगुनगावे आपनेग्र
बिस्मृतभये कृष्णगुनगावे आपनेग्र पठे १७
पनैलोक भिजावै जोपहि चत्र पठे १८ सो
प्रात कृष्णस्वरूप की गतमजात १८ सो
१६ भक्ति कृष्णकी पावे जाते कृष्ण
लोकमेजावे १९ दारुक घर कापठ
पो सोसुबदेवस्व नृपपे आयो २० कृ
स्नबिजोगबिकलअति बीत जैसे कृ
पनगयेते बित तिन है नाके चरण
पर तब सारथी बचन उचारे ३ अ
सुप्रवहि चले भैनते अतिब्याकुल
आवैवनते सबजन है कुलको नासं
नायो अरु बलकों निनज्ञान नापो
१ पोसुनिसोकतपत सब भये बा
त बिलापपु भासहि गये नरहजा
रनसहै तबवे कृष्णपे कहि
३ तबदेवकी रोहिनी वसुदेव
सेनराजा नरदेव २ बिजोगते
सोक जातेचित जो नरलोक
रामकृष्णकोई सो बिजोग जाते
देहसंजोग बलजुवती सबले
२ आनिपवैस कीयो अति नि
वसुदेवदलबो सनारि

सहगमनहितासेवां।रोप्रद्युम्नादि
नहोलौजेतो।तिनकीत्रियनिलापेस
बतेतौ।३५।सबहीनिकैअतिकृसब
योग।तातैकस्यौअनिसंजोग।हरि
कीबंधजहोलौजेतौ।रुकमनिआदि
सकलमिलितेनी।३६।हरिकोस्यपु
दैमैधास्यौ।अनिप्रवसमसबनमिलि
कस्यौ।अर्जुनपरमसषाहरिजीको।
।कृस्नबिजोगप्रहारकनीको।३७।
तातै[illegible]अर्जुनबहुतदुषपायौ।कृ
स्नध्यानहिर्दैमैआपौ।जातामांहिक
ह्यौहरिग्यान।मिथ्यादेहसत्यजग
थान।३८।जैसौबहुविधिग्यानबि
चास्यौ।कृस्नविजोगसोकसबटा
स्यौ।अपुत्रापुमैमारेजेते।अपनेव
बंधुघातप्रयतेतो।३९।तिनकोजो
पिंडादिकदाना।मृतकक्रियाजेती।
विधिनानो।सोसीसोअर्जुनसबक
री।कर्मप्रीततैनहीपरहरी।४०।सब
द्वारका
लकमैलई।केवलह

तबिहारतहोहरिजीको सुमरतमुन
त२ धारनजीको मंगलसकलमंग
लिलिकरै त्रिभुवनसुषदेवैनित
चरै ॥२२॥ सत्री बालवृधिसबजेते
परतमरतऊबरेतेकेते तेअर्जुनदि
षीलेआपे समाचारपंडवनसुना
ये ॥२३॥ तुम्हरेसकलपिताद्रुमजेते
कृस्नपापानहीसुनिकरितेते तुम्ह
रिवसधरराजाकीपो मथुरातिल
कवजिकोदीपो ॥२४॥ तेसबतजिउत
रकौगये कृस्नहिमेएकसमये अ
ये जोपहरिजीको अवतार नामैकु
मकुगुणबिस्तार ॥२५॥ तिनकोकहै
सुनैनरजोई सबपापनितेछूटैसो
इ पाबिधिहरिकेजेअवतारा बाल
पनातेकमित्रपारा ॥२६॥ लोकवेदमे
परगटजेते गावैसुनैबिचारैतेते त
बतेलहैपरमआनंद मिलेकसछं
दै द्रुमवृंद हो ॥ परहरिको
वतारमै तुमसौकह्योसुनाये पाको
कहै निसो नरनापनपेपाप ॥२८॥
ब्रह्मनिरीहनिरंजनस्वामी
चौ ॥

सकललोककेअंतरजामी॥जिनने
तधरैअवतारनानाभांतिकेरैउधा
र॥तिनमैकेस्वरूपभगवानगुण
नक्रियासबसक्तिप्रधानजिनकेगुन
निकहोसुषदेवासुनततिन्होपरीक्षि
तनरेसपापनहींजिनकोनामलियेभव
नाही॥लेकहियेनिजपदमाही॥असेकिस्त
सततिकोबितनिकरूपतिनप्रभुकोनित
यशतेअबसतदाससेनामदेहवसतनके
कासकृपानिधानभक्तिकरवावेअपनी
सकिहिरदेमेलावे॥यस॥असीविधिभवदु
षमिटावेअपनोपरमहृदयचावे॥के प
स्मरसतिनग्यानसुनायो॥लेउवेजननिज
पदयहुचायो॥यस॥सोलेकसोसमझकतबा
सतोतेहोईनअरथप्रकास॥जोयडिलजा
हजोकदेनजानेको॥यव॥ताते
ही॥सोसेवगकोअ
धारी॥
याकोबाचेस
ध्यानकरेकेथेस्वरगावे॥तेतेलरै
कादे ॥

है ऐसे के कोई भ्रम समावे तजि ग्यांनं

गात नही आवे ५७ कबहू केरकोनता

ई याते लहे सकल सोसोई ताते जेहे

सकाम ग्रहे बडभागी निहकाम

८ तिन सबहि मकोभाषा

हि मुक्ति मुक्ति तिग्यांको गढ तातेया

सोकोजि प्रीति यहे सकल संतनकी रीती

५८ संबत सोलाहे सेयबाणा वा जेठ ५

बलपक्ष श्री कुजदीवा संतदास गुरु श्री

दीनी चतुरदास यह भाषा कीनी ६०

ग्यांन परगट कर्यो समरथ

के जिन देव तेमेरे निरंतर सो संतदास

गुरुदेव ६१ ॥ इति श्री [illegible]

[illegible]

अघलीबतेगरघानलकोधकीरमैनी
बलकसदरघकोदेअनूपा॥जहांसुलतां स
नीगांनसरूपा॥पातिसाँसाहनसिरदारा॥ पे ह
सा॥ईप्रितिमनमांहिबिचारा॥१॥घटघटस्प
कोबूझेमाही॥अलहरूपतुमदेहो॰बताई
दोईदीबपेकोमबनांई॥कोनरांमओरके
नपुदाई॥२॥येतीबातकहो अरथाई॥ई
हांतेजबहीजांनजोपाई॥केतुमसबहो॰
कहोदिवांनां॥नांतुमदूरिकरोकुफरांनां
२ येतीबातकासीसुनिपाई॥तबरठिधा
ओआपगुसांई॥जिंदाकारूपगुसांईकीओ
न्हौ॥आपसाहकंदरसनदीन्हौ॥धानेवैत
न्धत आपसुलतांना॥जिंदेकी याद वासल
मो॥दवाहमारीरौनिनहीमानां॥मायाकेम
दगारबदीवांनां॥५॥सुलतांनईबाचे॥कै
हैसुलतांनसुनोदरबेसा॥जिंदारूपाकौंन
कोभेसा॥कहां॰सोआयेकहांतुमजांई
कोनकाजिहमेरे घरआईहो॥साखी॥कहां
संआयेजिंदाजी॥फेरिकहांतुमजाय
हिंदूतुरकयेकोनेहे॥मोहिकहोसमझाय
॥जिंदाईबाचे॥कहेदवेससुनोचि

लाई ॥ जिंदारूपधुदायकाभाई ॥ अल्ह
पसकलघटमांही ॥ हिंदू तुरकदोन्यं
चलांही ॥ ४ ॥ हमदोजिगन्वाडि भीस्तके
॥ सोपनलोहिचीजयेआई ॥ तुमहो
नडूनीकेसुलातांनी ॥ मीयांराविहेसूं
ईसह दांनां ॥ ७ ॥ जबतुम आवो भिस्तके
मांही ॥ तबहमसूंलेनेतुमपाई ॥ येहोक
जितुमरेघरिआई ॥ मीयांसूंइधरोतुम
ांई ॥ १० ॥ इसिकेसाहसूंइकरलीन्हां ॥ स
असूंइकाकोलजोदीन्हां ॥ जावोभिस्ति
मांनोविसवासा ॥ सहसूंइलीजोहमप
सा ॥ ११ ॥ साखी ॥ इतनीकहेहमउठिचले
साहकोंतरकलगाय ॥ तिमांसाहकीब
यलमेंजुरीअदालतआय ॥ १२ ॥ चौपई ॥
तबमिलिआयेदरीयांनां ॥ बैठेतखत
आपसुलतांनां ॥ साहकेहाथिसूंइज
बदेयां तबईजोरमनकीयावेवेका ॥ १३
दस्तजोरिकेविनतीलाई ॥ केसेसूंइहा
यमेंसांई ॥ साहकहेतुमसुनोदीवांना
बंदेअल्हकेदीयासहदांनां ॥ १४ ॥ ईवेस
येकआयेसमुझाई ॥ सूंइयेकधरीतुम

गई॥जैनतु स ग्यानी निस्तवेसो है॥ तब
हमसूंइ नैनैनु सुपा है॥१५॥ येकसूंइ
हमउं नसों लौन्हां॥ सहसस्रूइकाकौन
जोदीन्हा॥ तबदीवानकही अरथाइ॥
सूंइ संग चलेनहीसांई॥१६॥ मातमुलक
दीयै ठकुराई॥ सोसब धस्यार है यादीगई
इतनालसकरसंगलेजाई॥ हस्ती च्यारि सू
इ औरि घुडाई॥१७॥ तबदीवानकहीअरथाइ
हस्तीसंगचलेनहीसांई॥ बैठिसुषपालनि
स्तिहमजाई॥ लै हैवासमैसूंइभराई॥१८॥
यांसुषपालकबरतकजाई॥ आगैकैसेक
रिहोसांई॥ आगैहमचौरेचटिजाई॥ लेहे
जीनमैसूंइभराई॥१९॥ चोरासंगीचलेनही
माई॥ चोराहस्तीडहैरहैजाई॥ गांवमु
लकराजसुषहोई॥ ऐसबसंगिचलेनही
कोई॥२०॥ साषी॥ इतनामैसंगिनाचले सु
नौस्याहचितलाई॥ येह औजूदेदिन च्या
रिहैं सो भीसंगिनजाय २१ परगैली॥ तब
हीस्याहमनचकितभये औ कूं गैराजपाट
ठकुराई॥२२॥ सहसस्रूइहमकीयापसंगा
सूइयेकचलेनहीसंगा॥
निवालाजबहोमा
[illegible]

हौतुमकौनकहौतेंश्रा रा कौनकाजघर

पुर्निकस्त्रहितानापानस्याह २१

जिंदहसमेसुरतिलगावा ।२२बरा

त्रधमतिहिनामा राजमाहि

होंगमंरिम्नासनवहीस्याद २३

बिचारी तबहमदीलमैंसुरतिस

तबहमश्रोतहापगधारा स्याह

लनवहिगोहरावा २४ सुन

रधनम बंधावा कौनहमारेमह

तिश्रवातबहमकहोउंटयेक

ठतानिरिश्रापमोर्ईटा २६

८ धीमउकोचाकु ब्राजतउटमह

सुनिकेस्याहतबेहसिदीन्हा

तेनेहलेपरिचे चीन्हा स्याहे

मामेहेनाइ कैसउंटमेह

कौहेकबोरतूजोतुमगाना

ठाश्रलाहीकिनजाना २७

बेकोपहचाना जिनयासिर

जिहांना महलमश्रापोनही

तमनउपरिनहीश्रलानिहा

महलपरिनाही कैसे

ओतुम अ्रप नैपीरा॥२॥ कोई मोनगुमानरे
लाई। अलष स्पतु सही मिलि जाई॥ सुनत
नसी हतत बैठि धाये॥ षोजत षोजत मह
हलपरि आये॥३॥ येती सु॥ तस्या हसुष
पये॥ ये जिंद्रासौ बैचन सुनाये कौन हं
प कौन नाम तुमहारा॥ कैसे पाई अपरम
पारा॥४॥ कहै कबीर सो जे सो पावे षोज
त षोजत अलष लषावे॥ छ्रसाषी॥ प्रेमप्री
त करि षोजीये हिरदे आवे ग्यान॥ अलष
अलौकि षोजमें॥ जागरत भये सुलतान
सुधारस सरी॥ बहोरि ये कदिन बलक मझ
री॥ स्याह के महलन परिपग धारी॥ नवरो
ना बैसे सुलतानां॥ भिलसबि कायेत कोरि
समानां॥१॥ महलें मांही पहूंचे जाई॥ दि
सत फिर तमहल चहूपाई॥ ६ बराई मस्रा
ये सुलतानां॥ हमक्ं देषिके बहोत रिसांनं
न षाके दे कूबो स्याह तुम को हो [illegible] नाई॥
कहि का रनमे हलन परआई॥ हम परदेसी
देषीसा ढुंढत फिरें सराय बसेरा॥२॥ स्या
ह कहै ये हम हल हमारा॥ कहां सराय जो
करो बिचारा॥ मित बि
म

वारा॥ जामें हीरा जड़े अपारा॥ [illegible] जाय कै
सें धूंनी बारा॥ तातें जाविसहर बजारा॥ के
है दरवेस सुनौ तुम नाहि॥ करि [illegible] बिचार प
रयौ दिन माहीं॥ ४४॥ महल तुमहारा तुम
कांहं पावा॥ करो मौज ये कौन बनावा॥ म
हल तुमहारा हो युं नांहि॥ तुम बी मुस
फर बसो सराहि॥ ४०॥ सुनु हो स्याह तुम च
तुर सयानां॥ सुरति निरति ले बूझो ग्यां
नां॥ पातस्याह के तेते हो य गये॥ महल क
हू के संगि न गये॥ ४१॥ चा चा बांप तुम
हारा हो य गये॥ महल काहू के संगि न ये
जो तुम पायो महल तुम्हारा॥ अंत काल ले
डो दरबारा॥ ४२॥ माता पिता नां जीब हो तेरा
या में नाही काहू केरा॥ जहां को तहां बूटि
हैं धांमा॥ यासराय दिन चारि मुकांमा॥ ४
४३॥ वा हर दम साहेब कौं यह चीनो॥ मह
ल सरा ये यक करि जानौ॥ ग्यान द्रिष्टि दि
ल में जब आइ॥ छाडौ राज पाट पतिसाही॥
४४॥ [illegible] ग्यांन द्रिष्टि दिल आवही स
ब तजि भये फकीर॥ कहै कबीर इ [illegible]
[illegible] के तेग ग्यान के तीरा॥ ४५ [illegible]

नांमति आवेन जाई लौ दरबेस कुतबदी नां
ह ऐसा खिरतकौ आदरबेसा ...ह कै मन
में भया ऐसा पनु ... येकदि
नां साह चले सिकार ॥ गोरह नलाव येक ग्र
सवार ॥ मुगासं भिसुलतांन अकेला ॥ न
ही कोई सैं रान ही कोई चेला ॥ ४६ ॥ लगी प्या
स साह कौं भारी ॥ महा भयांन कवन मैं जा
इ ॥ बंट का बिरछ येक तहां भारी ॥ सीतल
ल ब्राह्म बहोत ॥ अधिकारी ॥ ४७ ॥ मिले फ
कीर येक दरबेसा ॥ कुतबदी ये रहें तेन पा
स ॥ सो तन कस पानी ॥ ते भरीया ॥ जा परि
ठीलिया माटी की धरिया ॥ ४८ ॥ पी तनोर
साह चले आये ॥ देखा सुलतान करि बैठाये ॥
कहै सुलतान प्यास मोहि भारी ॥ जाचे जांन
मोहि लेहो हैं बारी ॥ ४९ ॥ हम फकीर दरबेस
कहा ही सुरति हो ये भरि ये वो जो ये जल
पी वो साह ली यो बिस्वास ॥ जिन दे की या अ
जवत मांसा ॥ ५० ॥ साषी ॥ आगा कडि काढी
अगनि सों ॥ मिश्री घिरत मिलाय ॥ नांमति
धरी तवा कौं ॥ कुतासों करै षाय ॥ ५१ ॥
नौरे दरबेसों को हैठ यो ॥ ५२ ॥ सैनी ॥ कुतान ॥

मति आय न जाइ ॥ मारे दरबेस कुता केतो
इ ॥ ऐसा चिरतकी याद रखेसा ॥ स्या हूं के मन
मैं आया ऐं देखा ॥ ५२ ॥ कहे है सुलतान सुनो गं
नी दिवाना ॥ येपस वाना मतिक हाजाना ॥
कहे है दरबेस सुनूं नादानं ॥ जे साधी या ते स
ही मांनां ॥ ५३ ॥ सो ही करै करतूति कमाइ
जो ही देह धरि भूगते आयी ॥ तुम तो सही
अला हू के बंदा मैं का हाजा नूं आदमदा
॥ ५४ ॥ आगम बांनी कहो सुनाइ ॥ आगे के
ही कोन घासाइ ॥ तब दरबेस कही समझा
जाइ ॥ सुनो हो स्या हू तुम सुरति लगायी
॥ ५५ ॥ बलक सहर है येक देसा ॥ तहां के है
यु दो ईनरेसा ॥ इब रहै मअबद है येक राजा
मेक बामहू जो वाको आजा ॥ ५६ ॥ दोयूं देखे
यस्थान बैठाइ ॥ तीजा सूवा ॥ जो ना रार
हाइ ॥ कहे है सुलतान सुं ॥ नूं तुम सो इ ये
पू ताम पोलीकै सा होइ ॥ ५७ ॥ इब राइम नां
मता हिहो ऐही ॥ बलक सहर को राजा
सो इ ॥ मांन गुमांन राज सुख करहो ॥
बिना बंदगी बोहै देही ॥ ५८ ॥ सो तेजन
म आसनि को ले है इ मेमे जदिदै ईनके

ता है॥ अब ऐती नौ रहे येक गुहै॥ सुनि सुन
तां न अचंभे भये॥५९॥ तब दरबेस को पूछि
जो तै है ये ही जो निकेसे छूटे गा है॥ सो दरबेस
कहे समझा है॥ जो तै मेरी सिखे जाहै॥६०॥ छोडै
सा जस काल सुख सो है॥ करै न कि मन प्रेम समो
है॥ दया सील चित साच सु है॥ छूटै जो निसंव
निगति आदि है॥६१॥ स्याह के कहै मो दि लेद बंचा
है॥ सो ह दरबेस स सिते है॥६२॥ बारबार मो दि आ
नि चिंता है॥ सो दरबेस मोहि ले ये बंचा है॥६३॥
है तनां स्याह मन की या आदेसा॥ नहीं तेह कुं
ता नहीं दरबेसा॥ तबही स्याह मन की यतिन
चारा॥ निहचै है वो सिरजन हारा॥६४॥ सासी
कहे स्याह अब के मिले पुर वे मन की आसा॥ क
द मूसीसि निय वा ये कारि॥ पल नहीं छाड़ पा
सा॥६५॥ रमैनी॥ तब ही स्याह मन ग्यान समा
नां॥ राज पाट सुपनां करि जांनां॥६६॥ दो ये दिन मे
फिरि पहले चे आ है॥ राज न छाडे तो न को ध्या॥
है॥६७॥ तब हम कीन्हा सूप बवासा॥ जां ते छा
डै तन की आस प जैसा जीव तेसा तेन धारा॥
की स सिनिधि जीव
रहें ती सूप
धिक पियारी है

फूलत्यायसूं चितसे जबि क्षाइ ॥ ६७ ॥ तहां
जायस्या हूं पोटे जाइ ॥ येक दिवस चित्ते
ऐसी आइ ॥ ता ॥ हीसे जहमे पोटे जाइ ॥ म
ता येक की न्हात हराइ ॥ ६८ ॥ ऐ पज्यासुष
घरी येक मन देषा ॥ जीवन जनमसु फल
करि लेषा ॥ पोटे पिलंग नीद जब आई ॥ स्या
ह सो वन को पहूंचे जाइ ॥ ६९ ॥ स्याह केहे
कैसे पोटे मारा ॥ क्रोध चढत व मारी मारा
ब होन क्रोध करि मारे जब • ही ॥ ब होत
कहसो सहेली तब ही ॥ ७० ॥ ब होत क्रोध
स्या हत न घारा ॥ जूं जूं हसी सहेली नारी ॥
त व सुलतांन अचंभौ कीन्हा ॥ अचर
ज बात बूझि जब लीन्हां ॥ ७१ ॥ निकटि बुला
ये आप सुलतांनां ॥ बकसूं चूक करूं जीव
दांनां ॥ ये मोहि बात कहो समुझाइ ॥ मारत
तन कूं हांसी आइ ॥ ७२ ॥ ये ही बात कहो हे
ये निसंका ॥ तुम जिन मानो मेरी संका ॥ त
ब ही सहेली कहे बषांनां ॥ अब तुम सुनो सु
स्यांह सुलतांनां ॥ घरी येक हम हू सुष ली
न्हों ॥ ता कारनि इतनां दुष दीन्हों ॥ सदा सु
ब दा सो सुष कर ही ॥ ता परि मार केती येक
पर ही ॥ ७३ ॥ कहा कैरीं मोहि सहेली नां जाइ

जासें बनी हासी मोहि आधीराज केरे न होते
सुख पावे ॥ तन छूटे चौरासी जोवे ॥ पांच
रासीमें कष्ट अपार बिना नाम नहीं होय
ई बारा ॥ सतगुर मिले तो भेद बतावे ॥ तब
ही जीव कोरे अनंदा ॥ जनम जनम का मिटि जा
य फंदा ॥ तब ही स्याह मन कीन्हे बिचारी ॥
है कोइ पुरस नहीं या नारी ॥७७॥ बो बार मो
हि आशिचिता शी है कोइ प्रथम पुरख यह भा
शी जो यह कहे सो ही में अहों ॥ ताते फेरि अ
ज्ञान ही धरि हां ॥७८॥ तब ही स्याह मन प्रेम
समोइ ॥ दोन्यो जोरि बीनती कीनी रोइ ॥ धनि
भाग मोहि दरसन दीन्हों ॥ पतत जीव पाव
न करि लीन्हों ॥७९॥ नारि सरूप तुम देहो दि
खाइ ॥ पुरस सरूप होय देहो दीखाइ ॥ जब ही
लगनि स्याह घट चीन्हां ॥ पुरस सरूप होय
दरसन दीन्हां ॥८०॥ आभा जहां अगम होइ
होइ ॥ जगमग जोति बिराजे सोइ ॥ बहोत
ज्योति दीसे उजियारा ॥ है पिस्याह भयो दु
र अपारा ॥८१॥ तब ही स्याह मन बिनती ली
इ ॥ अब मोहे भेद कहो समझाइ ॥ कहे कबीर
सुनो चितला

४

आइ ॥ २४ ॥ जो कोइ मानै सबद हमारा ॥ सो
जीव तरै भव जल पारा ॥ तब ही साह
गये आधीनां ॥ चरन पखालि चरनां
म्रित लीन्हों ॥ अब सतगुर मोहि दर
सन दीन्हा ॥ अब साहेब कीजै मम का
जा ॥ जातैं नहीं छेकै जमराजा ॥ २ ॥ सो ही
नांम मोहि देहौ बुताइ ॥ जातैं जीव अमर
घर जाइ ॥ क० ॥ है कबीर सुनौ चित ला
इ ॥ सुरति निरति लै सबद समाइ ॥ २५ ॥
जै न मुनी ध्यान रहै लो लाइ ॥ गुर प्रताप
अमर घर जाइ ॥ ताहि घरि हंसा करै
अनंदा ॥ जन्म जन्म का मिटि जाइ फंदा
॥ २६ ॥ बहो बिधि सो भाख्यौ अनूपा
परम धांम आनंद सरूपा ॥ कीयो चाहो
जो आपनो काजू ॥ तो तुम राज छो
डि देहो आजू ॥ २७ ॥ सतगुर नाम गहो
बिसवासा ॥ जासू मिटै काल की त्रासा ॥
ये ॥ सुनि साहे तखत को छाडा ॥ प्रग
टे नाम देगुन बाढा ॥ २८ ॥ जब सतगुर
मैं अतबल पाया ॥ करि परतीति प्रेम पद पा
या ॥ २९ ॥ साखी ॥ कबीर सोला सहस है

त्री थ॥ तुरी अगरा त्रय॥ सांई तेरे का
रने॥ छा झा सहर बलष॥ ७४॥ कबीर
गुर डोरी लागी रहे॥ सीस करै बूकसी॥
साये कगुनांको व्याच्य त्नी॥ कोटि
गुनां बकसी साए॥ ७५॥ बलक बोधकी
कीरमैनी संपूर ण॥ सत नाम कबीर
सतनांवकबीर साहिब की दया लीषते ग्रंथ
कासी छिन सिकं सिकंदर बोध॥ कासी बैसे
कबीर जोये कूं॥ हरि भगतन की पक रीटे
कूं॥ बिधनां बनी बनी लेये है॥ बिसनू बिनान
बुसनदे है॥ जो तुम माला तिलक बनावो॥ तो
तुम हमारे ईमान पावो॥ मुसलमान हे हमा
री जाती॥ माला तिलक पहरां किह भाती॥ बो
हरि बांनी बोले ये है॥ रांमानंद पे दिक्या ले
है॥ रामानंद मो हिकहा जानें कौन कहै
कै सेप हचांनें॥ तां तिरस्यो मारग मे जाई॥
वो सेवक कूं सिकसे आई॥ रदे कबीर पंदे
जाई॥ रामानंद असनांन कू आई॥ तोकर
लागी नास सरी रा॥ रांम नांम ले तु कुम
रे बीरा॥ रांम कहत घर आपने आये॥ त
व कबीर माला तिलक बनाये॥ तो
कैसे सो माय न आ॥

तें आइवे। सजनकुटमनारामितीरा
वे। बिकतनअयेकाहेपरसोवे। कहो।
कबीरतुमकोकिननरमाये। येपावं
ड कहोतेल्याये। मकामदीनाहमारा
साजा। रो जाकहममावंगनिवाजा। हि
हूतुरकबूझिलेहे। येइ। अपनोरा
हचलेगतिहोइ। अचरजअयोन
ग्रमंझारा। रामानंदपैगयेपुकारा
मुसलमानजुलाहायेक। जिनहि
दिजगतनकोपहस्योभेष। कीर
तनकेरेजगतकूंधावे। बूझेनावतु
माराबतावे। तबरामानंदनैतुरति
बुलाया। आगेपारदातहादेवा
या। श्रीरामानंदजी बालौ। कबहम
तोकहीनदिक्षादीन्हा। तेजुगहिनां
महमारानोनहो। कबीरजी बोलि
स्वामीरातिरहेमारगमेंजाइ। तुम
सेवाकेनिकसेआइ। तुमरीगेकरला
गीमोरेगात। हमतबतेमानेगुरुविधा
ता। तबतुममोपैरामकहाये। हमरामं
कहतघरअपनेआये। रामानंदजी
नौ। ऐसेरामकहेसबकोइ। इनबात

ननांहरिजनहोइ॥जबकबीरकैहैसुन
गुरमेरा॥गुरमैटैसोजमकाचेरा॥गुरमै ।२८
सोजैसोदीचंडारा॥जूनीजनमभरमै।
संसारा॥ऐसीबातकबीरकीचीन्ही॥
रामानंदमनसंसोकीन्हो॥सेवापूजाकी
न्हबिस्तरा॥मालामुकटमांहिश्ररजा
रा॥तबअंतरगतिकीन्हबिचारा॥कैसेव
कीजैसेवार्थपचारा॥कबीर [illegible]॥क
हैंकबीरसुनौंबातहमारी॥मालागालि
हूनिरवारी॥ऐसेपूजाकरोगुसांइ॥माल
फूलडागलमांही॥निरमलदिष्टिकबीर
कीचीन्ही तबआडोपरदोदूरकरिदी
न्हो॥तबरामानंदअपनोकरिलीन्हों
माथेहाथअटलकरिदीन्हों॥दोहरा॥
रामानंदगुरपाइया॥चीन्हेब्रिम्हगियान
नउपजीभक्तिनिहकेवल॥पायेपदनि
रबांन॥रामनंदकोसिषहै॥कबीरन्मत
कोसंत॥जगतिदिढावोपंथश्री [illegible]
गावैदासअनंत॥चौपई॥ [illegible]
गतिचितलाइ॥छाडीमाया [illegible]
पहलेतोदासतनकीनहीं [illegible]
ससंतनकंदीन्हों॥कपर [illegible]

ण | वै बध हो ऐसो आये मुलावे | ये कदिनं
हर अंतरलीया | दरसन आये चोरदे
दीया | सुनोकबीरतुम्हारे नांकू
तातें आये तुमहारे नंकू जगत कोस्ट
स्यो ग्रे तिसीनू | बसतर मागे बहोत ग्रधानं
आधीपाररिंदीनजबलागो | सगलदेह
जगुहूनागो | दहूर तिबारनांलाई त
बकबीर मंड नांजाई | हाटिबाटमेंरहे
लु काइ | घरकेकाहूयबरनपाई दि
नांतीनकेमांनमसूषे | बालकरेवेब
होतबिडुये | सबहरिअसोकीनहीद
या | बालदितेघरवेगिगया | बहोतसे
जले आयेडारी लेबलधा | बामरिमें
टारी | जितरथरे कबीरं की मातादी
नहीरांम तुम्हारे दास | केसोरामकहं
कोदाता | सुनेकबीरकरे अपघात |
कोहै बिरकतें ले आया | काकोधनकि
नने देपगया | कबीरक बहुतेनहीमा
गे | लाषटका जोमले है आगे | सुनिरी
माता बात हमारी | कासी बसे नांचक्रू
धिकारी | ताके इसनराजा ऐक आयो
जिनबहोतेरे दरबिचठायो | दरीबं

लेनहीबेटातेरा।तबराजाईगिक्रियानि
होरा॥मांलिराजाबिनतीतेरा॥सोजमगा
हमहोत्ताकेरी॥तबराजासबसोजमगा
ह सोकबीरघरदीन्हपगई॥घरीयेक
भैबेआवे।लोगजात्राइसनपावे।तबके
सोअंतरहैयेगये।भेदआपनांकहूना
कहे्यो।जनेचारिकबीरकोधाये।जैसे
तैसेघरलेआये।स्वामीतुमकोनेटकछु
आहीकैबरचोकेधरोईगई।देखीजाये
आपनैनेनां।तबपातियानेसबकेबेना
कौनदईकहातेआवई।तबमातासब
यासुनाई।मनहीमनकबीरतबजांनी
क्रिपाकरीहैसारगपांनी।साहिबमेरे
ऐसीकरीहै।अबजोवरातुमकाडारि
है।दोहा॥तबनांबुननांबाडिकेरहे
रनचितलाय।अबतोरांमदयाकरी
चिपचिमरेबलाये।लितकबुलायमहो
कीनहां [illegible] नराखोसगलोदीन्है
पेखामहनऔरसिन्यासी॥करनेच
कबीरकीहांसी॥राजायाहीतें
गयोदरबू॥देखालोसुदरनकोसर
घाटिहैन
नामहनकेहो

आसब कोइ मांनी ॥ हिन कछू ना राषी का
निह मारी ॥ नग्र मा जो ले देहू निकारी ॥ ये
क कहै नीके धरि काटी ॥ तो तें मिटै हमा
रा त्राटी ॥ येक कहै हम ता परि मरिहैं ॥ जो
कबीर को ऊपर करिहैं ॥ ऐसो रास मन क
रि करि आये ॥ हो तें नग्र में सबनें हि धाये
गुपत चक्र ले आप सिंन्यासी ॥ कौतग
देषन ऊमगी कासी ॥ चौहू दिस बाहरि
घेरी आइ ॥ तब कबीर मिले सनमुष ज
इ ॥ आदर करि नीके बैगरे ॥ दया करी के
से पंग धारे ॥ ब्राम्हन कि रोध करै ऊरक
री निकरिं नगर तें मांहीं तो ॥ हमारी ॥ क
बीर कीना च्या ॥ कौन चूक तें मारो मो
ही ॥ मैं रांम नांव चित राषौ पोइ ॥ के मैं ब
टपराई मारी ॥ कि मैं तकी पराई नारी ॥ के
मैं घर कहूं को फोस्यो ॥ मांन समास्यो के
धन चोस्यो ॥ नगति करी तें हमन बुला
ये ॥ सुंदर लोग लें आंनि जिमाये ॥ अब तु
म हेमें सोइ दैरै ॥ नातो हम तुम लागन
हारै ॥ ही गाग गी ॥ गी होती देषी ॥ कछूना
बोले कबीर बबेषी ॥ अब तो अंन नही
घर मांही ॥ मैं ले आउं तुम बेगो बांहीं ॥ तब

कहिकबीरसंग्रिगाय॥१॥ केसोकेमनसं
सैनधरेई तबहरिकी कबीरकीकला॥
साधेदरबेगबकाधरा॥ सोहिदरबबनीया॥
केदीन्हा॥ जातिजातिकासीधालीन्हा॥ भेद
चावलमांडबहूकती॥ सकलरसोइघी
तसंजुगती॥ जनन्यारिमजूरतहाघाले
साइसोजलैकबीरघरिचाले॥ ब्राम्हनदे
खिनंघासुखभारी॥ कोइनजानेचिरतर
मुरारी॥ जनकीमहमाअधकबटाइ॥ ज
नेजनेकोसेरअटाइ॥ येककहैजुअं
हैधनपाइ॥ सारा जासौंकहीयेजाइ॥
अककहैनीकोरेनीको॥ अतीर्इदार॥
देखोहैजीवको॥ दिखनापानदेतसुख
पायो॥ नबकबीरसबकेमनआयो॥ ध
गयोकिरेधजबस्वारथनूये॥ दो
निधनिकरतअपनेघरिगये॥ कासीप्रग
रा॥ साचोनतकबीरहै॥ सो
आये जोसाधनकीनिंदाकरै॥ जहांकबीर
रकोभेजाग्यो॥ चौपई॥ अनपहचानेब्राम
हाहरिगये॥ कहतहेनाइ॥ क
अये॥ बैगकहा सबकाहि
नकेघरकाहैनाजाइ॥

तरसा है जो पैपला वोटै को है ॥ बाम्हन और संन्यासी ती न्हो ये देषो मो कू दीन्हों में यू चावल से रै आठ है ॥ धि रत मृ जुगति और षांड मिगह ॥ इतनी सुनी न यो सुष न्यारी ॥ कै मोराषी बात हे मारी ॥ तब कबीर अपने घरि आये ॥ हरि कै चिरतर नाका हू पाये ॥ बस्तु तेसा ज देषी घर मांही ॥ आज है बाम्हन ले लेजाइ ॥ धनिधनि बोले सब कोइ ॥ तब कबीर राषो मुषगोइ ॥ धनिधनि बोले सब मरथ होत तामेरा ॥ मैं तो सदा रांम का चेरा ॥ हरि बिन कौन बडाइ देही ॥ हरि बिन कौन अपनो करि लेही ॥ तब कबीर की तारी लागी ॥ जइ प्रतीति नरम गयो न्यागी ॥ प्रेम सहत हरि केगुनगा वै लोग हइरते इइ मन पावै ॥ सो नास्ब पाक परादे है ॥ दास कबीर कू नाले है ॥ भोजन भाजन इतनाले है ॥ भाव सहत जो हरिजन देहो ॥ राजा प्रजा के पत्यागे ॥ ताते अधिक जात रालागे ॥ निस दिन भीर होत अधिकाइ ॥ सुमरन कतांचित चलि चलि जाइ ॥ तब क

बीरयेकछु धिबिचारी॥लोकबडाईधरीउ
तारी॥प्रातसमैगनिकाकेगयेऊ॥लीन्ही
संगअरुचेलाजयेऊ॥गलेबांहगनिकाके
घाली॥गनिकाऊठिकबीरसंगचाली॥
भरिकरख्वाचरनौंदिकलीया॥मदकेघो
मैंजरिजरिपीया॥लैगनिकाबजारमैंनि
करे॥लोगनजांनीग्यांनसबबिसरे॥हांसी
करेंनग्रकेलोग॥भक्तनकेमनउपजोसो
ग॥बाम्हनबनीयांअधिकबिगोवे॥हरि
जनदेखिदेखिमुखगोवे॥भक्तिकियेचा
हेसबकोई॥नीचजांतिपैभगतनिदेई॥
दिनदसभक्तिकबीरकीन्ही॥येदेहखो
गनिकासंगेलीन्ही॥चलेकबीरगयेहैत
हां॥नगरकौराजाबैठौजहां॥औरदिना
आदरकछूनरलेते॥सिंघासनसूंउठिबैठ
नदेते॥तादिनआदरकछूनकीन्हां॥
सभाकेबाहरबैठनांदीन्हां॥सबहीके
मनसंसेभयेऊ॥ऐसोभक्तिबिगरेक्युंगा
येऊ॥दोहा॥भयोअचंभोनगरमैं॥
सबकोईकरैबिचार॥निंदाबिंदासबक
रै॥सिरपरिसिरजनहार॥तबकबीरपा

नीपगटारा॥ हरिकोपंडो जरैनतईबारा
जबसंसैपूछैराजापती॥ कहोकबीरतुम
अपनीगती॥ कहांचिरतरकरिदिमला
वा॥ ताकोमरम कछूमोहिबतावा॥ क
हैंकबीरसुनौहोराइ॥ कहेसुनतेकोपति
याइ॥ जगननाथकोपंडोजरीया॥ अटका
फूटिपावपरिपरीया॥ सोजलसींचिलीयो
हैराम॥ सकलसभादेषहैआंषी॥ तबरा
जासबकोमुषचाहै॥ साचीकहैकये
बौराहै॥ तबहरषे [illegible] भक्तकहैसमझाइ
राजाप्रजासबकेमनआइ॥ ताकेअनभ
केहीडोलै॥ दासकबीरमिथ्यानहीबोलै
राजापतरीतुरतितिमाइ॥ घरीमूकिरथ
बिसरनिजाइ॥ जगननाथकेहूतपठ
इ॥ कबीरकैगिअपनेघरिआइ॥ दिनदस
मेंसोपहुचीआइ॥ दाज्योपंडोलियोबु
लाइ॥ कहोपंडाआपनोसतभावो॥ कैसे
जस्यौतुमहारोपाउ॥ पंडेकहीपसावत
जरीया॥ अटकाफूटिपावपरिपरीया॥
तबकबीरपानीलेधायो॥ कृपाकरीप
गआगिबुझायो॥ इतनीसुनतहिबूझेसं

सा॥कोलकबीरहोतांसोहेकेसा॥जातिजु
लाहाकासीबासा॥सबकोईजानेहरिकोद।
सा॥जगननाथकेडेसनआवे॥हरिखहर
रषिहरकेगुनगावे॥अबकबीरकीदेमूक।
या॥इतनोकहतअचानकआया॥सबसं
तनमिलिडेसनपाया॥इतनकेमनआनं
दआया॥सोकबीरहेमदेषोतबहीं॥
पावनरतजलडासोजबहीं॥तबहीइत।
मनआनंदकी...॥उलटिपयानोघरको
दीन्हां॥दिनदसमेंकासीचलिआये॥लो
गनगरकोबूझनधाये॥इतकह्योराजा
सोंभेद॥हहेंसपडासूकियोनिवेद॥पंडेहम
सूंकहोजोसाची॥सोहमतुमसूंबूनराषी॥ क
तबराजामनसंसोभयो॥सुनतसंदेसअचं
भोभयो॥अबकबीरसूमिलियेजाई॥ना
तरकबूनाहोतभलाई॥वैसाहिबहेंम।
अंतनजांनै॥सबसोहैजोलीलागांनै॥राज।
कहीरांनीसूंजाई॥मईकघासबकहि।
समझाई॥रांनीकहैबिलमजनकरीये॥
जायेकबीरकपावेंनपरीये॥राजाकहै
मैंडरपूमारी॥दैईसरापकोलेई

ंगे रिसांई॥ दोहा॥ गलेकुं डोरी बांधि करि
सिर परि तिनको न्यार॥ कुटंम सहत राजा
चल्यौ॥ सब जग कौतिग हार॥ बीरसिंघ
देव बघेलो राजा॥ कबीर के कारनसों ई
ऊ लेला जा॥ देषि कबीर दूरतें उठि धाये
राजा देषि बहो॥ सुष पाये॥ डारो राजा सि
को भारा॥ हमारे जीव नांहि ग्रहे कारा॥ रा
जा जाय ईडोवतकी न्हें॥ ग्रे कमाल कबी
रतबकी न्हें॥ येक पाव राजा गहे रहे उं॥
दूजा पावा कुटंम सबपरे ऊ॥ बकसो स्वा
मी चूक हमारी॥ तुम बिन कोन करे रष
वारी॥ हम कूं पीठि जिन देहो गुसांई॥ ब
कुरि बात का हांक कि बंनांई॥ कहे कबीर
भलो तुम कीन्हें॥ हम कं आनि बडाई दीनूं॥
बडे सो ग्रौरें देह बडाई॥ बडे सो बांटि बांटि
धन षाई॥ बडे सो सांच झूठ पहचांने॥ मू
रष का हा बडाई जांने॥ तब राजा मन आ
नंद भयउ॥ पावलागि आपने घरि गये॥
कबीर आपनूं नांम डुराई॥ जू कुं लवती
गर बंछि पाई॥ दिन दिन प्रगट होते हे सो
ई॥ करनी के से छानी होई॥ जो को ई आप
नो कर तबडाई॥ सुष नांहि पावे जरि जरि

जाइ। आपनो कुचे आपही मरे है। कैसे भि
टै कांम नीदर है। औसे सब संसार जुलांनी
हरि सुमरो। जिन मारग जांनां। न होरि
कबीर की चटी नडाइ। दरसन देषन ड
लीयां धाइ। बिगरे कांम जो रांम सुधा
रे। औ जल बूडत रांम उबारे। काजी मुल
नां करै उपाधी। बामहन जनीया नहोत
बकबादी। बैर करै और मारन कहै है। देषि
देषि के सब ही जुले है। औसी जाति नहोत
दिन बीते। निरभै जे कबीर की निचिंते
और कबीर की माता मोटी। जति नां मा
नै पकरै चोटी। घर मै नारि करै नितरारी
घनि कबीर जो रहै संसारी। बाहरि बैर
और घर मांही। कबीरा उबरे हरि की बां
ही। जाति को बैरी सब संसारा। आदि औ
त हरि राष नहारा। येक समै औसो जयौ
आइ। बिधि संजोग मिटै न ही जाइ। साह
सिकंदर कासी आयो। काजी मुलनां के मन भा
यो। चले फिराद बारनां लाइ। ब्राम्हन ब
नीया लिमिया जाइ। और कबीर की माता
दी वरी। समझि नां दिल मै मत बौरी। सब मि

नास बहोत्तो है हमतो भक्ति मुक्ति मैं त्रा
ये गुरप्रसाद राम गुन गाये राम भरोसे मि
नून काहू जो परजा रंक रिसा है दोहरा
राम नहारा राम है मार न सके कोये पाति
सा हसूं नाड करता करे सहोये क
टिकातेब दिखावे काजी बिचि बिचि बा
मन पोरे भाती माला तिलक हूर करिडो
रे तापी बिपाच रस्त मारी जब है बानक
है सब कोइ मुस जमान कूं का फर होई
कहै कबीर समझि देखो भाई तुम ही का
फर दोजग जाइ कोनका तेबे भेंगले क
टाई बकरी मुरगी किनि फुरमाई वि
जितने देखे आतमघाती जिनकी गोगम
तो रे छाती कीजी ब्राम्हन नार केजा ही
राम कहे है जिनकूं भैना ही सुनत सिकं
दर ऐते रिसाई जानूं धून बे सुदर नाई
जानूं काले की पूछ मरोरी जानूं सोवत
सिंघ कोरी मानूं बे सुदर मैं ना ही होती
मानूं चीता की आंखे बोली गाफिल स
का ना मानी मेरी अब देखूं कराभांति मे

तेरी बांधपगमें मेल्हीजंजारा॥लेबी स्यागं
गाकेतीरा॥कुंकमकरतकबीरगहतीन्हं
माजधारगंगामेंदीन्हां॥हूटेजंजीरपरेजल
माही त्यागतीरबूडेक्रुनाही॥किरोधअय
असुरतबजामें॥जलमेंरह्योतोअबकों
रामें॥बहुरिबांधिमंदरमेंडारा॥आसपास
पावकप्रजारा॥पहोपहेतासनअोरसीत
लनीरा॥हरिहरिसुमरेदासकबीरा॥कबी
रकीकारनांहरिकरिलीन्हा॥पहोपवास
पावकक्रिदीन्हा॥जरिगयोमंदरयेहज्ञडं
नी॥सहीकरामातिसबकहेजांनी॥अधि
कद्यपप्रेमेसुरदीन्हा॥देहवोबटनाजन
कीन्हां॥जेजेकारजयोजगमाहीं॥काजी
ब्राम्हणबहोतरिसांही॥नांटकचेटकाजुरु
हाजांनें॥स्पाहासिकंदरतुमनमांनें॥इत
नीसुनिमनअपजोरोस॥अबकबीरतोहि
कोनअरोस॥मानाहाथीतुरतिबुलाया॥
अपनीछांहबेधताआया॥सिकनाकरेम
हावतकेरा॥बडेबडेरावतरनमेंमारा॥
सोनेंकीसाकलबांध्योरोष॥दोनोंघासप

हूरतेनांपै ॥ सो नेकाआक सदां तमत
ये ॥ निचिबिचिही रामोतीलालजराये ॥ नं
गरमाऊजोलूटनपावे ॥ मांनसमारेकोट
टहोवे ॥ रंनभेरवतमारेखांके ॥ नाटकिा
बतगावतहेताके ॥ नेस्तकालनमहारयच
पो ॥ तेलसिंदूरपूजनाठापो ॥ पूनीबदीत
नांमरनजीतू ॥ पंच चेलेतबमावेगीतूस
वसिंगारघंटचोरासी ॥ ईडलोकमेनो
ऊपजासी ॥ सोकबीरकोंआंनिरूकायो
पीछेचेलेआगेजबआयो ॥ दोहरा ॥ का
लरूपजबआईया ॥ सबकोईचालेना
गि ॥ दासकबीरानांडिगे ॥ रेहेरांमलैला
गि ॥ चोपई ॥ सिंघरूपकेसोडरपावे ॥ ता
तैहाथीनिकटनआवे ॥ पीलवांनकोंद
रसनदीन्हां ॥ मोडेगयंदप्रराजबकीन्हा
पीछेस्याहाकसिंदरदीग ॥ कबीरकेआंगे
सिंघयेकबेग ॥ पीलवांनहसतीकरिना
रा ॥ सहीकरमांतिहेदासकबीरा ॥ सांचारां
मकबीरतुमहारा ॥ अबकेरामोप्रांनहमा
रा ॥ काजीबामहनमरमनजांने ॥ सिरज

न्हारत म्हारमांनै। दिषिद्दी नतादासक
बीरा। अब जिनडर पोर बेरघूबीरा। जो
नसिकंदर अबकेडरते तोहरि निहचेप्र
तेकरते। दासकबीरकै इगनहीआशा।
तातैं असुर सजांनहीपाइ। जो कोइ आ
ये आगनगंनै। ताकू दास मली करिमा
नै। जो जन देषै हरि को किया। सोतो हरि अ
पनूं करिलीया। तबकैसो अंतरहै इजाइ।
जब असर गयकबीर पाइ। मांगो सो नां मा
गो रूपा। मांगो कूपरा अधक अनूपा। मां
गो गाव प्रगनां घोरा। तुम को दीजे सो सबघोर।
रा। कहै कबीर नां मांगू मांइ। राजा रंक सबै
जिनषाइ। जो मांगू तौ भक्ति नहीं। मन दि
ढ राषै हरि जन सोइ। हाथ जोरि कै माथ टि
वाइ। दास कबीर अपुने घरि आइ। जहां
जु हां कस्यात हां हरि हूवा। काजी ब्राम्हन
होय गये मूवा। अपने घरि आय दासकबी
रा। गुरप्रताप भयो अभर सरीरा। बकुरिक
बीर की लागी जाता। मिले संतजन बूझी बाता।
हसि हसि बोले दास कबीरा। चरन सरन
राषे रघुबीरा। पातिस्याह तब कसनी दीन
ही। जब मैं रे जी व सं कन कीन्ही

भगतकोनहींबलहोइ तिनकोंपारि
नसकैकोइ ॥ कोटिपापजोभक्तिनसावै
भक्तिकेपीछेहरिचलिआवै ॥ जोभगत
नसूरहैंनिनारा ॥ जिनकेनाहिरांमरख
वारा ॥ जोभगताकीनिंदाकरही ॥ बहुत
पापहोइनरकैपरइ ॥ जोभगतनकीकरत
हैहासी ॥ तिनकेगलेदेइजमफासी ॥ सब
जीवनमैंयेकेरांमू ॥ हरिभक्तिनाबिनस
रैनकांमू ॥ गुरगोबिंदभक्तिमेचीन्हां
तातैमेराकछूनाकीन्हां ॥ दोहरा ॥ जल
बोरापावकजरा ॥ बिनसोनाहिसरीर ॥
गजतोरतहरिराषीया ॥ निरभैभयेकबीर
ऐसीभातिहरिकीयोगबारा ॥ गहांतहोह
रिभयेरखवारा ॥ औरभयेब्राम्हनमत
कीन्हा ॥ अपचयेककीन्हा ॥ जलहोह
मैबहोतदुषदीन्हां ॥ प्रपंचयेककीन्हा
श्रेनहोता ॥ छलबलकीन्हांमता बहोत
ठादसब्रम्हनमुडमुडाइ ॥ मालातिल
कसांगपहराइ ॥ जिनकूसीसदगुपतचे
लाइ ॥ येहोदेसकेसाधबुलाइ ॥ दीन्हो
दलकबीरकेनांउ ॥ ऐसीकोसजहांल

बा जीवनजनमसुफलकरिलेया । र
मकबारसदाबिनिश्राइ ब्राम्हनबनीयं
रहेषिसियाइ । बरसयेकबीत्यौहेजबही
हरिश्रपछरापगइजबही । जायेदेषो-तु
मदासकबीरा बसेबनारसमतहमारा
छतिबति । जो श्रंगलगाइ । बाबारहि
कहसमझाइ । श्राइश्रपछरादीन्हदिषा
इ । मांनूंसुषदेवरंश्राइ । जाकेरूपनापू
जैकोइ । मधुरबचनसुनावेसोइ । चेचल
चपलद्रिष्टिकराइ । जांनूंबनबिछरेम्रि
गफिराइ । चितवतचितसबहीकोहेरे
मांनसकहांबिरछहटेरे । । पांचू
इंद्री बसिकरी । चिन्हिलियोनिजतत क
बीरहरिकाभावता । गावेदासश्रनंत सु
नोंकबीरतुमश्रोकंराषो । हरिकेचरनक
वलरसचाषो । कांमचेसटाउलेबोले क
बीरकोमनकबहूनाडोले । हमसतुमसू
कोनसंगाता । पांनीश्रगनिनांनामेमा
ता । तुमहांरेपासिरघुनाचपगइ । ह
श्रदेनमहातमतुमकोंश्राइ । मधिमजा
तकमीनहमारी । तुमज

।मलमलक्पूराफुलेतजोत्रा।

शांगा

फरितीरघ्रल्हाहि।यकजोधूमांघोटि
ग्रेकजोजयेहिवालेसोजे॥ग्रन।

हमारा॥तबलगफीकाजनमलम्हारा
रा।
।तबकबीरबोलेसमझाई
सुरगलोकमें।
ही ढिग
नाजेमरिहो॥नीचदेषमनसंका

हाथ जो लाउ माई ॥ साहिब मेरो बहोत। रिसाई ॥ कांम बांन नां लागे तुम्हारे ॥ हरि सू लागे प्रांन हमारे ॥ जिन जिन करी तुम्हारी आसा ॥ तिन कूं निहचै नरक निवासा ॥ जो नर तुम सूं प्रीति बढावे ॥ सो जीव कबहू नां रांम मिलावे ॥ घरि बालक कूं आप निहारी ॥ निवस्यो न चल्यो सरप कूं मा ॥ सिर जिवं र उपरि ता हिंदा ॥ इनु तो मेरो बलक मारा ॥ श्रैसो मन पछता होइ ॥ तेरो संग करे जो कोई ॥ होत पिटारो गीत रिकारा ॥ मूसो जानि मीगे अहरा ॥ काटि पिटारो जो नर गये ॥ पाई जु जाग मैं न होये रहे कै ॥ श्रैसी गति ता ही की होइ ॥ तेरो संग करे जो कोई ॥ छाडो माता आस हमारी ॥ सुरग लोक कहा पत्र घ्यो उ जारी ॥ दोहरा ॥ बहोत जतन कि या अपछरा ॥ नयो कबीर अडोल ॥ गई अपछरा घर आपने ॥ रहेयो कबीर को बोल ॥ हरि सू कैयो अपछरा जाइ ॥ कबीर के आगे कछू न बसाई ॥ सकल अंग हम मोहन चाहे ॥ अति अडोल नां पायो थाह ॥ जोर बिप छिमनै दे कराई ॥ प्रबत फेर फार जो

धरही॥ जो धू दृढ लदेत पयांनां॥ तौ हु कबी
रनां होत अयांनां॥ आया सुष त्रिनसा देषा
जोग जुगति कबीरु निसेषा॥ जब केसौ
अप अपनां कारितीया॥ दरसन आयो चै
हटे दीया॥ सेष च कागदा पद मभिराजे॥
कोसतमनेषी ता भरकौ गै॥ ६ अभिगलत्या
ग हूढ आसनसोहे॥ मांषे म कटदेषि जग
मोहे॥ ७ श्रवनकुंडलनैनविसाला॥ मु
जाच्यारि नेजंती माला॥ नष सष सुइ स्यां
मसरीरा॥ गूंजमले दस नो वलहीरा॥ गज
मोती हीनकी डलारी कंगा॥ ऐसी भांति ८
आयेगोदबिंदा॥ देषत सीतल भयो सर
रीरा॥ चरनकवल गहरहे कबीरा॥ रुरि
संपतिकी रूचिउपजावे॥ तीनलोककौ
सुषदिषावे॥ मांगु मांगु भैदहे सोई॥ र
जौ तेरे मन इछ्या होई॥ … कहे तौ पा
होमीको पतिकरूं॥ मांथे छत्र अटलक
रि धरूं॥ कहौ तौ इंद्रलोक लेराषूं॥ राषू च
अटलैसति करिभाषूं॥ कहौ तौ कामा
ति देह च्यारी॥ गडंत जंत ऊंतनुकारी
कौ हो तो सा
हैनि

अडारा नारदसहत श्रुतिबोधे रंगा सन
कादिकप्रलिबेगसंगा कहें कहां लगे
कादिकप्रलिबेगसंगा
संबसुखफीका अैसमापति देह समीप
हरिआपने गुन आपहीगवे जनको जस
देंप्रितिबठावे भक्तिन के संगलो गपोडो
लौ भक्तन के घट बठे बोले दोहा दास
अनंतकथा कही हरिकीकथाअपार
कछूयेककहीकबीरने सतगुरके उपा
चार इती श्री कासीरचिरतरसिकंदरबो
संपूरणासमापता राम [illegible]
[illegible] श्री राधे श्यामसुन्दराय नमः श्री [illegible]
[illegible] जयजयसनानु
कुमारि जयराधा असरनसरन अ
पनो विरद विचारि प्यारी पालन दी
नजन की रतिललीतनंदारा करू
णानिधजसरावरी छांयेजगतअ
पार बंसीअलिकीस्वामिनी गोरीरू
पनिधान प्रीतमकोप्रानेस्वरी तुम
होपरमसुजान करियकानजनकी
[illegible] निकृपाकोर मि जयति

निकुंज बिहारी॥ कौ मैं निज पद
दासि॥ कुंवरि कि मो त्रिअली को॥ स्वा
मिनि श्रुत सप्रकासा॥ स्याम रहौ निज
लोकमे॥ अवश्रौ धनको बासा॥ लली
अलीकौ दीनै या॥ जय वृंदावन धाम
जय जमुने र बिन ढिंनौ॥ सब बिधि
पूरन॥ को मा कर नहु रन बाधा सव
नाजय॥ नित नित स्वकृपा॥ जय वैसी
गुरु रूप॥॥ मैं जो अरनिंद॥ हा हा
ह मिन्य पराधको॥ सरनागत पीन पा
राध गाय रसिक जनां॥ दृथा जा नयह
कालाद रस दो जिय कै॥ मैं हि पा
ए नीलि मंत ती नृ पाल र सरनामै॥ तिन
को खत सम नमन लत दपि जथा मति
गाय हो॥ ७॥ चौपई॥ श्री गुरु चरन
कमल सरनो क्षौ॥ मेटन को महिमा
कलू गाऊं॥ कलि मै नाम कौरतन स
गातिहि मुमेर गहो यत धारा क्रम
मजन कै सब अधिकारी॥ बरणाश्र
म सब ही नर नारी॥ हरि ही नजे तेम

लपुतना श्रुति पुरान म्हलि गावत
ताा । कमत जोति जिय लरवै चोरा
ी कटीना हिं कैब ऊँ जम फांसी
वाहिरवा लिम धिमंतत फिर हौ सहौ
सकट जनमे मे जम्म मरहौ । नरक
नकैबहो नेगत तोगा । के मे मिटे कै
मे मयगोगा । मृगत्रिस्ना जग को बि
वहारा ना होमे तियलु मोच्च पारा
मैस ऊँ उयमछि मामस नहो क
रूनासिंधु दीत नर देहौ । नरथ रवउ
पुतिजमुना तोगा । मैसी कृपा करी
बलबीरा । देवादिक ऊँजा चत मै
स यह नर तन हम पावै केसं क
सतसमान तिहरिनामा । तब प
विस्वे बिस्रामा । मै मार्तत मन र
न पायो । नृत्यो मेद बिषै रस स्त्री
माहर जनी सावत तेजा गि अ
चरतकवल मै नुरागि । सामतसमा
पतिको चै कैजे पायू सामत नन
[illegible]

सलस॥॥ताहो सो हियरंग्यो ज्ञैरा॥
॥सतसमा तिन्ज धारससारा॥यहोन्ह
हतक्रु तिस्रा मन्हो रा॥ ताते सतस
मा ग सको सो॥ निष्प्र मा तिला नयुद्द
लो जो॥सलसरा को सुनो मह्वोलमा॥
नाते मिटे सकजलससेलमा॥सहि
मा न्न्या मित सकेको॥ ग्रा॥ मति ग्रमा
लबरनो चिललाई॥ लि हिबे सन
ज पुरा तलसा घी॥ सो बिस्यारिके चि
तन्न तिला षी॥ बरनी मुनि तपुरा
नतिमाहि॥ कहो रच जनो कजानी
जाहो॥ कवि बिजिप्रि॥ यः प्रमाद
मलको म ज्ञोल्ह नमालन्यो युयधार
धरा॥ प्रो क्लि प्रो हि बिरानमानश्य
लापा प्रो श्च्रि बध्या लानाना केल
कला कलापबिहसन्यारिन्पा बि
रव्या पत मी द्दुमो पिन्न ना स्त्र॥
ब लि सिर मात द्दोजन्नो यकः॥
वलि सिरमात द्दो ज न्नो ब सपत्तहे
लौ पई॥ ब्रालना क्षत्रौ
... निश्नति जप

॥ विप्राद्विषड्गुणायुता
दरविंदनाभपादरविंद बिमुखात्स्व
पचं बरिष्टं मन्ये तदर्पितमनोबचे
हितार्थप्राणं पुनाति सकलं न तु भूरि
मान: ॥ ५ ॥ चौपई ॥ सूद्र भील स्वपचा ध
मज्ञोई ॥ भगवद्भक्तिपरायण होई ॥
ति नि द्विजाति क द्विकै रजु तरका ॥ मे
द बुधि ते तो गोन्हका ॥
॥ सद्रवा भगवद्भक्ते निसाद
स्वपचस्तथा ॥ वीक्षते जाति समान्या ॥
स जाति नरकं ध्रुवं ॥ ६ ॥ चौपई ॥ कि
रात्रांध्र पुलिंद किराता ॥ आभीरकं
कजवन खसजाता ॥ हरिदासन के
मैं आवै ॥ सोय पुनीत भागवत गा
कै अनन्य हरिभक्ति हो धारै ॥ स
प्रमानकौ नत छिन तारै ॥ द्वितीय
॥ किरातहूणा
ध्रपुलिंदपुक्कसा आभीरकंकायव
ना: खसादय: ये न्ये च पापा यदुपा
श्रया: तस्मै प्रभविष्णु

वेनमः॥७॥चौपई॥कहत नब्रु चतुरौ
पकंजनेमा॥प्रभुजिन्हदुतनमुमेरेजैन
मेरेनमकेचवैजहां॥आछो॥चल्योजा
इमैतिनकेयाछो॥तिनकोपदरज
मोवपुलागो॥नवमेरो॥जितन्हतिन्ह
नुरागो॥नितनकेपायनमोलागो॥वि
धिमुक्तिगतनतगामगो॥८॥आदि
पुराणेश्लोक॥मङ्गलायत्रगच्छेति॥
तत्रगच्छामिपार्थिव शतानामन्
गच्छेति॥मुक्तयोमुक्तिभिःसह॥८॥
॥चौपई॥पुन्यरूपसागरनेहलहौ॥
तमअज्ञानविनाससिपुलहो॥जद
ताकोसतसमाविरतो॥आत्मपप
व्रतिहिमासोपरविरतिकवली
तिहिसोहोप्रेमफलताकेमनमो
हो॥घनआनंदकोवरखाबरसे॥र
सवरखायरसिकजनसरसो॥प्रेय
ईस्फुईहितितिमिकोचलना॥अतिर
मारतुवनविवाता॥अमहरिन

वटेवनत्यागी ७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ पुन्यात्मनोभिन्नवा
नमोविघ्नघ्निनीमत्सगम्नृत्तेतमाश्र
१ श्रापत्नविनीबिरक्तिलतिकाप्रेमस्
नेजला सोज्ञानदरसावनाचपरमै
धेयाविभृतिःपरा सेयाश्रीहरिभ
क्तिकल्पलतिकाभूयात्सतांप्रीतये
चौपई॥ कवलपत्रपरजलकननै
से ठहरतनहीयकपलजैसे ताज
तेजीवनचंचलअति नाहिलयतहै
कोकेबिमलमति छिनकुसजन
सगतिकरई नितहिनोकाचढिभव
निधितरई मतसगतिमहिमायह
सही सोही हरिभक्तिलनामधिक
हो १० श्लोक॥ नलिनीदलगतजल
वत्तरलं तद्वज्जीवनमतिसचप
लं क्षणमपिसज्जनसंगतिरेका
भवतिभवार्णवतरणोनौका १०
चौपई॥ श्रीगोबिंदपदपूजन
करई भावसहितश्रधा[illegible]

ऊसेननकोपूजनकरेही॥हरिके
पापानतेनोहो॥दोलिखगातेंकहे
तेसोऊझजगतितिनकोकेसेहो
ऊनातैसन्नपूजनअमिलोवे॥श्री
रामश्राइबचलयहस्लावे॥श्री
मश्लोक॥अचेपन्नानुगोबिंदात
दीयान्नादैयतियोलैबिष्णुप्रसा
दष्पा॥भातनदालिकातना:॥१॥चौ
पई॥सुनकजलयानीहननहमारे
सारबिचारयहेतिनधारोसकल
दवभाराधजोनरा॥हरिसेवनना
लैनत्रोपर॥हरिसेवाहरतैयहसत
मा॥बैलबसवाननभतनमा॥श्री
रामसत्तासुद्धवनयहलहोसोति
नपारखनीभुक्तिकेयो॥२॥श्री
मपुरकनोपुनिजिननाकंपश्लोक॥श्री
राधेनांसबैसा॥बिष्णोराराधनंप
रंनस्मात्परनरंदेवितानदीयन
समर्चनं॥२॥चौ
गद्ज्ञारहि

पूजनलैवे ॥ कोटि विप्र पूजे सनमा
नी ॥ एकसाधुसेवासमजानी ॥ संतन
कोप्रसादयहजानत ॥ महिमाप
द्मपुरानबखानत ॥ १२ ॥ श्लोक
॥ शिवलिंगसहस्रांणांसालिग्रा
मसतस्यच ॥ तुल्यःस्यात्कोटिवि
प्राणां ॥ मेकोविचवैष्णव ॥ १२ ॥
॥ चौपई ॥ बुलामैनैवेद्यजुहोइ ॥ द
छिवारसबहीकोग्रहो ॥ स्वादले
नपरतछिवतातें ॥ संतनकोरस
नासूपाकें ॥ यहकहीहरिश्रीमुख
बानी ॥ मैयहसोहोसाखिबखानी
१४ ॥ प्रसंगांतरं श्लोक ॥ नैवेद्यपु
रन्तं ॥ दृष्ट्वावस्तोकृतंमया ॥ र
वैष्णवजिह्वाग्रे ॥ भस्मामिकम
ह्व ॥ १८ ॥ चौपई ॥ प्रातकालतें
गीकीर्तनकरई ॥ संतनकोमहि
मांतेचरई ॥ तेभागवतहेकलस
मानो ॥ यामेकछूसंदेहनआनो ॥
यहदुर्लभसमतनहीयधगिसो ॥

पूजनलेवे कोटिविप्र पूजैसनमा
नी एकसाधुसेवासमजानी॥ संतन
कोप्रतापयहजानत॥ महिमाप
रमपुरानबखानत॥१२॥ श्लो
क॥ सिवलिंगसहस्त्राणिसालिग्रा
मसतस्यच॥ तुल्यःस्यात्कोटिवि
प्राणि॥ सकोविचवैस्नव॥१३॥
॥चौपई॥ बृंदामेंनवैचजेहोइ॥ इ
छिवारसवहींकोग्रहो॥ स्वादले
नपरतछिवताते॥ संतनकोरस
नासूपाको॥ यहकहीहरिश्रीमुख
बानी॥ मैयहसौहौंसाखिबखानी
१४॥ प्रहलादवाक्यं श्लोक॥ नैवेद्यपु
रोन्यस्तं॥ दृष्टेवस्वीकृतंमया॥ र
सैस्नवजिह्वाग्रे॥ मश्नामिकम
द्भव॥१५॥ चौपई॥ प्रातकालउ
ठीकीर्तनकरई॥ सेतनकोमहि
मातेहुरई॥ तेभागवतहैकमल
मानौयामेकछुसंदेहनको
पुहुनसमझतहीयधरि

९१॥ सगानि केवल क्रतु बनकौं पुन
ति करत है तहां श्री नामदेव प्रमान॥
श्लोक॥ या या इन्द्रादयो नैव यान्ति
रस तत्री श्रीमद्विठ्ठल विठ्ठल विल
जंत जायन्ति नृत्यन्ति मद्भक्ता यत्र
भुवनं पुनाति॥४९॥ चौपई॥ संतन
कौ निंदारत जे नर रहिही ग्राम
के सूकर ग्राम सकी विस्वा खाई
॥ ग्राम सकी छिति नित्य करांही साधु की
निंदा अघ तैसौ॥ तिनके पाप अघ पुं
हलैही॥ निंद्या विश्वासघाति नित रहै
साधुन कौं नित मल निति करई॥ संतन
कौ निंदा वदो बुरी॥ अस्म पुरान सा
खि यह धरी॥५०॥ साधु निंदा बुरी है न
हो जस पुरान भाष्यौ॥ श्लोक॥ निंद
कः सूकरः प्रोक्तो विष्ठा सकला निर्मला दु
रः साधवं निंदन शूकरा ग्रामसानां साधुनः सो
धं निति निंदकौ॥५०॥ चौपई॥ कीट
पतंग आदि सब कोई॥ मुक्ति होय
निश्चय ही॥ निंदा ही॥ निंदक कौं

दसप्रभ्लोतिछूजा बछपदतेमृति
कानिकोरे तामेंयेकचलजलझरि
त्रिहिर्लेयतऊंलगेनबारा त्रैलो
भवनिधितेरेअपारा परमभुक्ति
वेकछिहिपावे ओपतिपदसेसा
रनसावे दसममधिष्णुकमुखकी
वानीमोईलिरिवीसरमगुखदानी
॥१७॥ दिसमासेचालैतेयोछ्रीयेत्र्युवत्सा
नपक्षोत्र समाप्तितायेपदपल्लव
पूवेमहत्वदपुन्ययसोमुरारे भवा
बुधिबेत्सपदपरा पदपदय
हिपदानतेसा॥१८॥ दोहा ॥दग
दकेठकबऊदोयआवे चितइ
बितनपुलिकितनावे कबूऊहसे
बकंपुलिरावे के बिलजगावे
रसमोवे प्रेममगनकेकबऊनाचे
औमेसनजेहरिरंगराचे मेरोमक्के
उनीनचरित्रा पकोलवनमोके
पवित्रा मतनकीमहिमामनहर
ली केप्रमहरिलिसप

१।।जगमांनि केवलज्ञानकौं प्रग
ति करत है जहां श्री नाभनंदन प्रभात।
श्लोक।। बाणाजन्दाज्ञनेयश्चिंतं
दंस। नरोश्चामदतिक्ष्विद्रबिन्
जंजनायतिनृपनेव मइंक्तियुक्ता
सुवनपुनातिः।।४५।। चौपई।। सकल
कौ निंदा रतजनरातिहोप्राइग्राम
कैसूकरग्रामसकौ बिष्टाखाई
।।ग्रामसेवितनित्यकरावैसाधुकौ
निंदाउपजैसो।।तिनकेपापश्रापत्र
हलेहो।।निंदात्रिपदर्पणतिनरई
साधुनकौंतिमलतिलकरेसेनन
कौंनिंदालरोबुरोंवरसपुराणसा
प्रियस्वधर्म।।५०।।साधुनिंदावरोहैत
त्रत्रसपुराणोक्तप्य।। श्लोक।। निंद
का: शूकराश्चैवासकलातिर्पनाढ्
रा:श्वेधनिस्सूकराग्रामानासाधुनयो
।धे निनिंदकाः।५०।। चौपई।। कौट
पतंगाश्वादिसबकोईमुक्तिकेन
जिनकीगतिहोई।।

तङ्गराजकोकोनचलावे तोलेसवे
तूलामतिमांही लवमतमगतिसम
पेनाहीयहसहिमामहामगलकस
प्रगटपुराणनागावतबरनी
तुलयामलवेना
पि नस्वर्गनापुनर्भवं भगवतस
गिसंगस्य मर्त्यानांकिमुताशिष
बिचरतसंतमहीइहित
तीर्थनिकपावनकरिदेता सव
लयदेखितीवत्तेउर हरिआपतिचि
तचाहतमरे तुम्हरे नक्तनसेहित
गंते तिनसोरुचिकेमनहोमाने ह
रिसोंहरिकोदासमिलावे यहसुज
सागवितगावतगावे २५
तेसोबिचरतपञ्जां तीर्थानापाव
नकुर्यातीनस्थांकिनराचेत तावं
कानासमागमः २५ मह
नपुरसव्याग्रमहेंआइदीनगृही
गृहधारेपाइ तिनकोकरनबिपु

ज्यांनो॥ व्रजराजन को यह बानी॥
कही गर्गरिषि सो सुखदानी॥ ५६॥ श्री
भागवत को व्रजराज वाक्य श्लोक॥
महद्विधस्तनंय॥ ॥ दोहा॥ ॥ दीनद्ये
नमो॥ निःश्रीयसाय जगवंत कल्य
नेनानुथ्याकृविन॥ ५६॥ चौपई॥
दोयचगोइकथमी मुना श्री वैसें जसो
हरिकेसबजग्यो॥ नीर्थसकृष्ण
सोहोसो नो॥ सेसजन निजहोकियो हि
कीनो॥ वही नपो व्रजमें लय श्रामो॥
कृष्णजन्कसबको करें निवासा॥ जही
हरिजनमोई उनमसमही॥ त्यागम
माहिमा विधयह कहो॥ ६०॥ श्लो
श्लोक॥ मुज्ञानेवा मुज्ञनो श्रीयन
लिश्रु लिवेस्मनः॥ नतेवमवेतो घा
मिलदवचनपावनो॥ ६१॥ चौपई॥
॥ हे श्री शुक मुनिराज कृपाला॥
दीनजे धारन विरद दयाला॥ तुमर
महानुभाव सुदन रहै॥ तिनको सु
...पात्र हो करहै॥

पहोइ॥ मत्तान्नधर्मविजतोनेमाई
मेत्तायणातिक्किकरियनहीताहोक
बेकछोवोतितच्छोहोमासूनको
तिकिकेकोरायेपद्मपुराणवच
नयहतातवे॥२४॥ अथश्लोकः॥ गे
बेलबास्तुयविप्रा तवेहोनाधमा
स्तिता:॥ तेसांमेत्तायणस्पर्शे इरतःप
रिवजीयत॥२८॥ चौपई॥ हमरेम
वेजणपंथइकारा॥ धृकहमारेब्रतब
धिविचारा॥ धृकविद्यापढिवोसब
मतो॥ धृकह मारीयहगणतापनो
॥ धृकहमारेबरतमबडोकरेथ
ककुलमदञ्जतिमानतिन्हरे॥ धृक
तिपुनतारत्तोगुणच्छये॥ तायकम
तेमुखबिमुखवनुतम्य॥ कलमक्तिमहि
माजबजानो॥ निजमुखधृकताहि
जनिबखानो॥ धनायेपतनीहरि
मनजानवना॥ डैनहिपरसिदमके
पावन॥ ४०॥ श्रीनारायणेवेतेहप्रति
मेत्तायणपत्नीकोप्रतिनित्यवत्मकी

भक्तान [illegible] त्रिहरि यां॥ धिकह
धिकनकहत लो॥ धिकत [illegible] हिकरि
सादान्या॥ [illegible] सुरनायेन्यग्रो कहै॥४०
॥चोपई॥ हरि कै लिख [illegible] लो
यातिनको सुख करन [illegible] ग॥
दयतसो हि ह नैनै [illegible] माहि
जिने [illegible] [illegible] सिरिलो प्र
वानी॥ ताको मन [illegible] गुरानो॥४१
॥पदमपरागप्रसोको॥ [illegible] ग्यागो लि
हरणा॥ [illegible] सुख [illegible] ललालो
कन [illegible] हरि कै बिस्मृति:
४१॥ चोपई॥ [illegible] सांपि
लीयो त्रै सो [illegible] सुखकरजि
लियो त्रै पति [illegible] देवाधक॥
नानादेवन के आराधक॥ तिनसो
मिलनो [illegible] त्रिस्वेजा
नो मनमांही॥४३॥
[illegible] लिगनबा मनोन्याल
लोक सालनसत:
[illegible] कमन नो॥

क ॥ यत्रयत्रचमङ्गलं ॥ तत्रतत्रसुख
मेव ॥ गंगादिसब तीर्थानि ॥ तत्रैवा
यान्तिसर्वदा ॥ ५२ ॥ चौपई ॥ मेरे भक्तज
गतहि प्यारे ॥ मोहि मेरे प्राणपियारे
॥ तासमममोहि कोउ बल्लभनाही ॥ भ
क्तनसमकोउ नाहिपाहि ॥ ५३ ॥ श्लो
क ॥ मद्भक्तो वल्लभस्तोयस्य ॥ सत्यंमम
वल्लभः ॥ तस्मात्परोवल्लभस्तो नास्ति सत्यं
सत्यंममार्जुन ॥ ५४ ॥ चौपई ॥ विष
ई नभक्तहोयजोकोई ॥ उराचार तामे
कछुहोई ॥ मेरे भक्तपवित्रहैंजानो
॥ श्रीगुनताकनमनमें आनो ॥ भक्त
दोषजोमनमेंलावे ॥ सोनरनर्कमाहि
दुखपावे ॥ सोआपनोचाहेकल्यानं
सुनोसखियह आदिपुरांना ॥ ५५ ॥
श्लोक ॥ विषयांतष्यकारीच मद्भक्तः
सर्वदाशुचिः ॥ तद्दोषंदर्शनेलोकास्ते
वैनरकगामिनः ॥ ५६ ॥ चौपई ॥ तेई
हैंसपावनत्रिलोकमें ॥ जहांहरिकेप
रजनवसें ॥ देवजेहि भक्तनहोई ॥

तासमांन श्रपित्रनकोश्रीमहप्रुनी
दसतेरजो॥जससहरिआरसतविराजे
५५॥सोरठा॥तहंसपविलंग्रसोयत्रा
नालिहरिप्रियः॥नहंसमफलग्रन्यो॥
यत्रामेहरिप्रियायप५॥चौपई॥केछ
दसविश्वेहलदा॥म्रययाहेरामविन
होइनहो॥जसोबसतमप्रजनसुव
दानी॥जोसनतोलकेनवसंजानी॥वि
जनलकनकोयहप्रनाम॥कलनव
गहधरनिसोश्राप्र॥५६॥वारगहप्रु
रागश्रीवारहदेवनाकेकोका॥या
जेनानितपात्री॥तामपदेतेवसु
धेरा॥लवुहेमहूजेवापि॥मडलो
यनतिहृती॥५६॥चौपई॥नलकेद
मारबोधवनीको॥सकीनकेसमव
धूमसोकेयेहनगुरवेपरीमिरु
रतलकसदामप्रवरामलकेनकोम
हिमायहना॥श्रीश्रीमुखव्याद्विपुरा
नलपाई॥५७॥व्यासद्विपुराणमेंतव
[illegible]

वांबेयच्छस्कांकेगुरवोनकांनकां
नांगुरवोवंयश्च ५७ महिमा
नहाप्रसादजितेकांगोविंदनाम
प्रनापतितेकांप्रस्नजानेनेनिप
स्वरापू वेस्यवमहिमानक्रिप्रत
पू न्यमपुन्यचेचपजिहिंपांमति
नकेकबकेनहोयबिमासातोते
इनमेंदृष्टकरिनामबरनोपदलु
रागोतेपांवां ५८
महाप्रसादगोबिंदनामब्रसत
बेसवस्वत्यपुण्यबतांराजन बि
स्वामनेवजायेते ५८ जो
कदिविदरिनकेनमांहीवानाट
कजुहोयदरसांहीवथादेहक
नहमाणदरसेहरिनकेनकोकब
केनपरसेनकेहोयप्राकृतनमा
नीयानकेनकोबाधकजानीये
औरनकोपुनीतकरतअर्थीसक
लन्तातितेमहासमर्थांताकोयह

हनिवारोगाामघिब्रह्वुंमुह
गाााा [illegible] चे [illegible] ।
हेखनुदा [illegible] ।
प्रनावमिमोबोाव्रलअवनाजय।
मगनजसोहीाह्रिगनव्रमेहम्पाछि
नमाहोनिसे ह्रिसनव्रिगाब्रिदपियु।
गमव्हसेपनकोयजनहागाजामे
कैकपदेहरहेनाामेहापमहकेय
बेनाथ्युणाम्पोकाादेहः दुजावज।
मितेबेपुमानुबोमेनेमाक्तेलवामि
हिनेकैसननमपुएपुनोगाानमोन
बिलनुद दुदफेनपकेर्श्यवनय
मपगाविव्हिनोरधमेःमाटे।चोपड्
नाणिमगानुवेपुनगाबोाश्वबनिने
पुतमतिसागोबोःहसवचनसे
वानिनहोाामसाकवुमनकोवनम
छिरहोामनमुमराानितनकोगेतिहा
गोसंनहुमहिगेनयननिहोगोमुत
कुबेरकेबुडभगीदोमेहरमुसो
यहमािगोः६०।। श्री नागाबुनेहसप्र।

ष्मते पेको॥ लिलस्तुदमा॥ गञ्छे
परमेपद॥२८॥ चौपई॥ महादुरा
चारीजुहोई॥ जेअनन्यहरिन
जेजुसोई॥ तोवेकौंसाधुहीजानो
॥निश्चैताहिपवित्रहिमानो॥ याबु
धिकोहैअरुनसाखौ॥ कृष्णचैउ
गीतामेंधिताखौ॥ ततछिनधर्मा
त्मावहहोई॥ परमसांतिकौंपावै
सोई॥ बिजयसप्रकरितकहिपढ़ै
॥कृष्णभक्तकोनासनसही॥ पापीउ
जोभक्तनहिंकरई॥ मेरेचरणसर
णअनुसरई॥ शूद्रबैसस्त्रीअथवा
कोईनारी॥ होईमुक्तिपदकेअधि
कारी॥ बिप्रराजर्षिजुकरैसनेह॥ ते
नवनरैकछुनसंदेह॥२९॥ श्लोक॥
॥अपिचेत्सुदुराचारो॥ भजते
मामनन्यभाक॥ साधुरेवसमंतव्यः
सम्यग्व्यवसितोहिसः॥१॥ क्षिप्रंभ
वतिधर्मात्मा॥ शश्वच्छांतिंनिगच्छति
कौंतेयप्रतिजानीहि॥ नमेभक्तःप्र
णश्यति॥२॥ मांहिपार्थव्यपाश्रित्य

येपिसुःपादयोर्नमः॥ स्त्रियेःषेगाह
श्रामूरुद्धान्तेपियांत्रियगात्रिस्त्रीपु
नश्रीहरणःपुयां॥ हकारातूंदेखन
श्रा॥२४॥ चौपई॥ नरहरिपुरासा
दियहगाडेगनदनिरहरनत्रिलोकी
सिरवाडोह्मकवडप्रनुपाडनदा
सामोहिरूपालदियोकृपाकाग
नहरिगुनतेत्रिभुवनमदाई॥ तिन
कोदरदहहमराडे॥ जिहहरिगुरप
दवंदनकरडे॥ तिनकोदरमतगामु
ज्ञनुसरडे॥२५॥ न्हपिंडपरागा.पं
राजबोर्धश्लोका॥ कृष्णसमरागा
चैतेनघात्रायः॥ सडत्रिलोकहिल
हितेनयुक्तः॥ हरिगुरश्रिपुरखान
प्रणाम्यस्यानन्या॥ हरिश्चरणगुण
तानसमस्करोमि॥२५॥ चौपई॥
जेहहरितन्तेअनन्या॥ तिनपेद
महोयकरहुअन्या॥ जोमहानि
नकोदोसमडुरवावे॥ तानप्रणाव
नेनिकटनआवे॥ सपिमेंजददि

ष्तेयेकोंतिनसुपुरुषपावैंति
परमपद ॥ २७ ॥ श्रीपडी ॥ महादुरा
चारीजकहोई ॥ केअनन्यहरिभ
जेतुसोई ॥ तोउकौंसाधुहीजानो
निस्चैताहिपवित्रहिमानो ॥ याबि
धिकौहैअउतेनसाखौ ॥ रूसबेद
गीताभषिसाखौ ॥ ततछिनधर्मा
त्मावहहोई ॥ परमसांतिकोंपावै
सोई ॥ विजयसत्रुकरितुकहिपढौ
कूलनकोनामनसहौ ॥ पापीज
जोमतनहिकरई ॥ मेरेचरणसर
णअनुसरई ॥ सूदवैस्यअरुबा
कुईनारी ॥ होईमुक्तिपदकेअधि
कारी ॥ विप्रराजरिषजुकरैंसनेहा ॥ ति
नकतैंकछुनसंदेहा ॥ २८ ॥ श्लो
॥ अपिचेत्सुदुराचारो ॥ भजते
मामनन्यभाक ॥ साधुरेवसमंतव्यः
सम्यग्व्यवसितोहिसः ॥ १ ॥ क्षिप्रंभ
वतिधर्मात्मा ॥ सश्वछांतिनिगच्छति
कौंतेयप्रतिजानाहि ॥ नमेभक्तःप्र
णश्यति ॥ २ ॥ मांहिपार्थव्यपाश्रित्य

ये विष्णुः पादयोर्नमः॥ क्षितौ ये हृत
याश्च स्नात्वा पिबन्ति गंगां तीर्थं
नर्ब्रह्महणः पुण्यं विष्णोः नयनं शृणु मन
था॥ २४॥ चतुर्वर्गं ॥ नरस्त्रिपुरमश्र
स्त्रियः स्नात्वा कामं मनसा स्मरन्ती
मिरवाक्यैः पूजयन्ति भुवं सुरमन्दि
रा मोहितचित्ताः शिवं प्रियं कामं
तारविन्दके विष्णुकमलाद्वा निव
कोटिरद्वैतमनसोऽपि दत्तं परिय
दर्वरनकरश्च निर्मलोऽद्य मध्यमाप्र
मनुसरन्॥ २५॥ नृसिंहपरागः प्रपं
राजप्रोक्तं श्लोकं॥ श्रीमदमरगण
विहीनधर्मायः॥ पूजितोऽपि दिव
हितेन युक्तः॥ हरिगुरु विष्णुर्वान
प्रशान्तिं सर्वान्वहरिश्चरणान्
तान् समस्तान्॥ २६॥ चतुर्मणं॥
जेहेहरिमतीं स्मरन्या॥ विनये दे
मलोयकेऽन्यान्या॥ कोऽकर्तालि
नकोदेशमर्कसबोधनं यत्राव
तेदिकरनमस्तोऽपि सिसिंजदपि

कलंकलखावै ।। तौकल्हाचेजहिति
मिरदबावै ।। यहनरहरिपुराणकौम
न्वी ।। सोमुनिचातिकिगावन्मतिलखौ
।। ८६ ।। श्लोक ।। नगावतिचहरावन
न्पचेत्य ।। न्पशामलिनौपिविराज
तेमनख्य: ।। नहिशशाकलुयच्छवि:
कदाचि ।। तिमिरपरानवचामुपे
तिचेद: ।। ८६ ।। चौपई ।। मनकैम
बचननकारमोपांही ।। बेलवप
रानवकियेनजांही ।। चकैयकहि
मरछ्याकरई ।। इकदिमगरुडन
कबजैटरई ।। तौकन्नोरतेहिपा
यसदरौरै ।। हरिरछ्याताकेचजे
औरै ।। बेलवपीराकरैजुकोई
हमरोसामथ्यीनहोई ।। तमहत
नप्रतिबचनसुनावत ।। यहनरह
रिपुराणविष्णुगावत ।। ८७ ।। श्लोक
।। करामिकर्मणाबाचामनस
नविप्रियं ।। बेलवानामहात्मा
नुदरौनत्यादपिशरणकत्तो।

भावतेधोख्या।सेकनोहरिवाहन:
॥एकतोविश्रुहतोष्ठो॥विस्रवेचा
हितेमया॥८६॥चौपई॥जेसंहन
महजानमहमारो॥मतिबहरगा
कोतेबप्रधारो॥भ्रमदेहधरेमन
मोको॥अथवापसुपंछीनतयोर्म
॥कृमहोसयहतो॥मृकोठेजो॥पह
पहवसेजेगुनगावै॥८७॥दशमे
गुहसुतोष्णोक॥तहसुमेनाथह
रिस्रा॥सोवेनेबाम्यनेत्रवातिरस्त
॥थानाहेमेको।पिनवतानाजो॥वे
त्वानिमवेतबयारपहचा॥८८॥
चौपई॥संतनकीमहिमाकोपारा
॥सबमहिमाकोकरैबिचारा॥स्व
पितथाबुद्धिमनदीयो॥अपनीनि
मलताकोयोसोमहिमाकछुगा
हकरी॥सोहोसमानाँइस्वरी॥सो
ताकोजोप्यावांसोसतसंग
तहेनतेपावै॥८९॥तत्रवाक्य॥
श्लोक॥

को

ज्ञा

नानासंगतिः सदा कार्या सर्वैः प्र
यत्नेन वेदोक्तो वृत्तिगो मुक्तिः
८९ ॥ भाषा ॥ हरि के संत प्रभाव
अनंता संत संगति महिमा नहीं अं
ता संतन की पाउ कछु तिरामा
तिन कौ बारंबार प्रणामा संतन
को संत संग प्रधानो साधन सुई
अखिल कल्याणो संत समागम
सब सुख दानो महिमा पुराण ब
खानो ॥ ९० ॥ श्लोकः ॥ भगवद्भक्त पा
दाब्जु पाउ केस्यो नमो नमः यत्सं
गमः साधनं च साध्यं चाखिल सुत्त
मः ॥ ९१ ॥ भाषा ॥ वैष्णव संगति के
रसु कोई ताके पाप नास सब होई
॥ हरि भक्तन की संगति पाई अति
पातकी ऊ मुक्ति को जाई तहां को
यहि विधि लिख्यो प्रमानो बृहन्
नारदी बृहत्पुराना ॥ ९२ ॥ बृहन्ना
रदीय पुराणे श्लोकः ॥ हरिभक्ति परा
यणानां संगिनां संगमात्रेण मुक्तेस

वे पापेभ्यो।। महापातकवानपि।। एवं
।।चौपई।। नरकप्रसंगन्मन श्री सिवे
।। अर्थ प्राप्ति सत संग करावे।। अप
न सकोसत संग निसावे।। निर्मल बु
द्धि प्रतिष्ठा पावे।। ले सब दूर सकल
सफल हानां।। पद्म पुराण सांच वि
ख्याना।।२२।। पद्मपुराणे श्लोक।। वि
नापापत्पय प्राप्ता बुद्धि विप्रादय
ल विोप्रतिष्टा पयलप्राय्यो नराणां
सवद प्रीनीः।।२३।। चौपई।। जे सब सं
ग सकल सुख दानी।। सर्व तीर्थ जन जे ब
द्धि को जानी।। गंगा स्नान सकल फल
बिधि को सासना तन सब लेन बि
को यह महिमा सब सुनु जानी।।
ट रिकहते हे पद्म पुराना।।२४।। पा
द्मश्लोक।। गंगा दिपु लपच्चो पि प्राय
नरः स्नातु मिच्छतिचयः करोति सत्तां
संगानया मत्संगमो वरः।।२५।। चौ
पई।। सत संग परम धरम मय रही
सत संगति करि पावे सिद्धी जे जे

संसारे सार सैन स्वात्मन ज नाव जंत
संतोहि हरि नक्किं समिछुना ५८
संतसंग समय अमृत कहो
हो सागर तेतो निकस्यो नाही यह ज्ञ
लोकिक ज्ञ न गायो नाम हि माको
पार न पायो सागर ते यह ज्ञ स्वत नि
कास्यो महाकष्ट ताको बिस्तार कैसो
बिबेक को कहत बधु कहावे संत
संसार ताज्य नाहि मिटावै ता तें
ज्ञ मृतन यह ज्ञानो संतप्रभाव न हो
कहु ज्ञानो प्रति संतसंगार साइन
रूपा सबै रसाइन को यह रूपा
महाकष्ट सो बनै रसायन ति नवस
यरोग सकै मिटाय नि सुलछि मिलै
संतसंग रसाइन साव नक्ति सुरह
रिपद्वांड नि पर मान हरूप संत
संगा समाको रंग सो चकी यगा ज
गत संगासब सोक कपठै संतसंग
सुभव सकल त रूपहै बाघो पदसप्र
राणसंसगा यह सुनिके कहियो

तसमा॥९९॥पद्मपुराणेश्लोक
अमारोप्यपीयुषाः मद्भवाख्यस
लायधारद्धश्लोकपर्यंतः सं
कितहसमाप्तः॥९९॥चौपई॥ह
लकथामहतपानजुथाहेसास
तसमानिहितवेसाचेतोवक्ताकोपु
सगासनतकोहिसुनतहोईकछ
बालासनतकोश्लोकतिकथारस
ईनकथा सतसमानिकैकहैश्चन
यापद्मपुराणमाहियहबानी।न
रदकहबरनीप्रगटबखानी॥१००॥प
द्मपुराणेनारदोक्तंश्लोक॥प्रस
मपुराणनारदोक्तंश्लोक:श्रुतिरसाय
ननसहात्मामोमितःकीर्तनीयसु कथा
नाःस्मरंतिकीर्तनीयसुपई॥क
कृष्णप्रभाः॥१००॥चौपई॥कायम
क्तिलानहोयसतसमागमे॥हायम
तिसतसमारगहोसोप्राचीनसुध
नसोमिलाई॥तबयहमनकोआन
दसमिलै ई॥जुहदनारदी
हनप्रमाना सुहीबचनचित

गमो हिलास्यफनौ सेतसमाग
मडपेस्मानौ जनफूलादहिधर
णीकोकडै महिमांसकिसुष्मेदपुष
है १०६ [illegible]
[illegible]
मैचौः फलत्वादसदपेन हितव
फलत्वादपगात्रसमाः जिकाफल
त्वादपाकीतनहि सुडलेनानाव
ताहिलोके १०७ [illegible] छिणास्पु
रडलेनयह नरतन डलनहरिन
नेनकौवरसन नृपतिबिदेहवंस
नयहनीको नवजोगनप्रतिष्ठतम
बकौको १०८ [illegible]
[illegible] डजेनोमानुषोहौ दे
खिकोहरणान्तर तनापिडलेनमनो
बकरगप्रियपदपेन १०४ [illegible]
हेहरिजे नृननपनुम्हरजन कपट
रहित निर्मल जिनकेमन तिन
कोसरानाथमोहिदीजे हिलमिलि
तिनहिलास्यफनौजे कथासुधा

रसपानकरैगो॥त्रमायासजव
सिधुतेगो॥चतुरथमैध्रुवज
रसन्नौ॥धन्नसोयहजाचनावै
गौ॥१०५॥चतुर्थस्कंधेश्रीध्रुवबान
श्लोक॥जन्मिमुत्कंडुवस्ताव्धयि
मधुमगा॥त्र्यःसनमहेनामस्य
श्रयानां॥येनांत्रयोन्वाग्यपुसव्यास
नान्वा(च्छिनमवत्तुगाकथामृ
तपानमत्ताः॥१०५॥चौपई॥हरि
तुमायाअमृजो॥कोमलिनस्यो
नमनहो॥गो॥मनकीसतस
गतिदीजे॥यहकृपानदेवनकी
जो॥जन्मसन्यसगतिसुखकारी॥य
हीकृपामोहिकिराबिहारी॥भक्त
समागममोमतिराचीयहीप्रचेत
नप्रसमोसाची॥१०६॥चतुरथस्कं
धप्रचेतासोशिवकोश्लोक॥यावत
मायुमपृहा॥त्रमामईहकमेवि:
नावत्रवत्परसंगानां॥भगः स्यान्नो
मवेन्नवे॥१०६॥चौपई॥ईत्या

येऊन अनंत अति अपार महि
माति थिमंता नर देही कोलाहेय
हुई हरि नक्षन की मया तिल हुई
कुल बिमुख बते कहै असंता ति
नको मान करे बुधिवंता बिमु
ख सेवा करिये न अजानी होई
सकल पुरषारथ हानी नके तात
नावक बिबिकरइ असे लोक
मैं नैन रपरहु १०७
अथ श्लोकः सत्संगात्सु
नको नैव: कदाचन यस्मात्सर्व
थेहानि स्या दधःपातस्य जायते
१०७ अग्नि ज्वाल वज्र
स्नरावे पीडा सहतो सहन मे आवे
कुल बिमुखन तेऊ बिमुख ज
न तिनके निकट न बैठि मुठम
न निकट बास को ज्वालन चावे
पीडा तासु सहन ही जावे १०८
बे
रकत बहु ज्वाला पंजरा नव्वेव

पति:॥नमो रिछिं नाविस्नु बजन
ासबैणम॥१०८॥चौपई॥ छिनु
्रहेनसम्रथ याड़ौ॥बिसबनाम
चिनही आड़ौ॥ता ता नियनी च
नछिर मोरा॥तिन सो मैनायणा नति
बोरा॥जो बंदा चितन मैना सनही
ड़॥ता समपरस कौ जो पति कोई॥
जो समपरस कदाचित के गाड़ौ॥ति
हिकौ अनंकै ऊं नहि होड़ौ॥प
यपुरान माहि यह बानी॥सिय
गाराजा प्रति मैं तु बाबानी॥११०॥
॥पद्मपुराणे अंबरखिपाख्याने
सकाविंश त्या क्यौ ख्यानं॥ अबै सब
स्नुपबिप्रा॥चौडाला रथमा स्न
ना:॥तियां प्रैसाथ णा स्नु पौणास
याना दिबर्जेयन्ता॥११॥चौपई॥
कै स्नु तिकीनौ नहि चाडूना
नासिभोदर मां हिपरां ड़न तिन
को सगाक बर्जं कौ नंकर ड़ौन
क अंधन समैलेतिरड़ौ तैसें

कं धगहिबाथा फलनकपमैरो
कैसाथा पद्दएकादसकीहैसाखी
यहीबिचारिहियेधरिराखौ॥११
समनकपाद
सतामिलोदरनृपांकचित्तजथा
नुगतमसाधु पतनपधानुगाधव
न॥११ कमलनत्रिनेरह
नैहेसोई मुख्यमसननजानियमई
सदाचारनितकरनबिचारय
पनपकमतिहिंकरतनिवारियतो
कैतनकीनिष्ठासोई कमलचंडमे
कबकैनहोई॥१२ श्लो कमल
नत्रिबिहीनायप्रायासननलख
हि तथानिष्ठामुनाकापिनमान्न
कमलन चरित्रप॥१४ कमलन
हिबिहीनजुकोई बेदशास्त्रब
जानतहोई कहाहोयकैतो
रथबासा कहानयेनपककरि
नत्रासा कहानयेकैजपबि
धाना बृहदनारदीकहनपुरा

नो॥ ११३॥ बृहन्नारदीपुराणे श्लोक
॥ किं वेदैः किमु वा शास्त्रैः किं ती
र्थनिषेवणैः॥ किं मन्त्रैः किं विधा
नो॥ किं तपोभिः किं मखैरस्य॥
चौपई॥ सकल वेद नंश्त हि जान
सकल शास्त्र कम्र्ष वारवानो॥
जोपर बहरि जन्म लहो सो तो वर
पुरसत्रथ मरैसो ई॥ क हो क योय
ह बिधाना॥ अगन्नश्च दान तगस
पुराणो॥ ११४॥ गरुडपुराणे श्लोक
॥ अंतगा नो पिवेदानां सर्वशास्त्र
यं बेद यपि॥ यानसवेश्वरसकसो॥
विघातपुरुषाधम॥ ११५॥ चौप
ई॥ कृसब मुख कै प्राश्चित कर
ई॥ प्राश्चित तिनके पाप न हरई॥
महिराकुम्भपुनीननहोई॥ बरस
हजार गंगामें धोई॥ गंगा पुनतन
होकरई॥ त्य बहो पाप प्राश्चित
हरई॥ कहो यह बिधि कहो कहो
हो॥ अजामेलने पराचीन जहोहे॥

प्रायश्चितानि चीर्णानि नारा
यणपरांमुखं ॥ न निःपुनंति राजेंद्र
सुराकुंभमिवापगाः ॥ ११५ ॥
जैसें पापछांन कै क्वाचै
जैनके मैगालल है नत्पोहो ॥ जिन
के मन मैं मंगालरूपा जो जोवमन
कुसुम्बरूपा ॥ विष्णुधर्मोत्तरे ग्रंथ
कौ बानी मै यह लिखो सुरमालव्ही
नी ॥ ११६ ॥ कु
तः पापस्य प्रसेवा कृतस्तेषां चमे
गले येषां तेव्हदि स्थो यमंगला
यतनो हरिः ॥ ११६ ॥ कल
वराणै विमुखसुकोड कथाप्र
वन जिते करै न होई नरकपाई
वेको मराग्रुहा ताही मै जिति क
सोमनहा ॥ जिकाहरि गुरामहो
रैवुरडे क्रितनह कमलपदखुम
राकरडु कमलचंडकेचरननि
मांही कवडजप्रणामकस्यो जि

किन्हो॥सेरेलोकतिनहिसेन्नुआवे।
।देवैंग्रासमनरकंतुगानावो॥स्कंधे
स्कंधेनागावंगाडी॥धर्मराजाहरनन
समाजाई॥१७॥सप्तस्कंधेहरनन
प्रतिधर्मराजनाक्येष्लोका॥नाना
यध्रुमसतोविमुखानाप्रुकंद
पादारविंदमकोदरमाहजसु
॥निष्किंचनैःपर्महंसकुलोरसज्ञ
गुणानाप्रहृतियकृष्णनिकुम्भ
हृष्मानां॥१॥जिकानकिन्तिनाव
गुणानामध्येचैतन्यभवरति
नच्छरणाविंदकृष्णयनोनमति
यक्रिरणकदापिनामानयध्रुम
सतोक्तनविष्णुकृष्णानां॥१७॥चौ
पर्इ॥नन्दनन्दनकीस्वामी गंनो॥क
रिकृतिमानतिन वीक्षपमा
नो॥आर्थधर्मजसकृष्णनजा
को॥यतीसकलविनासेनाको॥
करहिमहजवेलवनिंदा॥जा
नियतेनरक्षतिमतिसदो॥पिन

कृपतैश्चफाल्गेते सुत होयँ
णामनेः निद्रांकवे तियपापा
श्वयानामस्मात्मनाथ पूजितो
गवान बिमत्रैन्मातरघुनेराय
अमीदतिन विपात्मा बैसवचा
पमानैत ॥१२१॥ बैसवको
निद्राभुतिमुन ३ हर निद्रासु
निसीयनअनडे महापापवाको
वहनाग तिनकेभगरागनहेपा
गो निद्रांसुनतजोनगेगेजाडे सु
कनपुन्यसवनासुनसाड श्रीप्र
कयहमहिमाजेवृंगी मीयदेज
नमंगलकारी ॥१२२॥
निद्रांनगावतःश्रावनतत्
रस्यजनमपावा ततोनापत्तियःसा
पि पात्प्रधःसुकृताच्युतः ॥१२३॥
कृष्णतक केहरिसपीवे
ना चारिदिन जगजीवितावै
तीवनसफलमहीहै महिमासे
दपुरानकहीहै नकि बिनोजीवे

गमोंही॥जोंवोकम्मैकजारहथं।
ो॥१५२॥बिसुधमीनरफ्ाका॥सोहि
नबिसुरलकम्या॥बरपंचबढ़्नाबि
लानपुकम्मैमरख्याग्या॥लकिरे
नसुकेशवे॥चोपई॥नातेसोहरि
पटक्मैतरगो॥ब्लेसुरक्वाकोमग
हिनिस्पन्पामोसिनवसिा॥तिसोगति
मरसावेक्रुसवनकेहोसनकोहोवे
कोरगपानीकोरकैसोध्यिसनसग
तिकेनहोमसोक्ष्तष्वासवासहे
सना॥हियमस्रुतिरायिकोकेनाहि
तेपटसमसकेजप्रसहरे॥क्रुसवे
जसोसनमुवकोसिननकीसा
हिसामनहरनो॥श्री॥हरिनै
वजलिवरनो॥१५७॥॥कोहहपी॥
सुतंसनाक्लोकों॥ननोडःसगः
नस्पा॥सनमुखजोनबक्रिसान
सेततोवासपक्रिदनिसनावा॥
गसुक्रिलिः॥१५८॥चोपई॥
ननकोगगलधारी॥

कियें मुदकारी ॥ लखत डरियै हि
त चित्त धरियै ॥ निकट जाइ पद
वंदन करियै ॥ १२५ ॥ दोहा ॥ श्रीम
श्री भागवत कृष्ण को मंगल रूप बिस
ष्टतान ॥ गान्धातान नहरतो दृष्ट्वा
दैरवत प्राण मेन्नुया ॥ १२५ ॥ चौप
ई ॥ बैस्नव को बैस्नव जो दैवे कौ
न प्राणनि हित यह विसेस्व हरि
भौनन के बीच विराजे ॥ तिनहि
देखत तुव परिस्या जे ॥ भौन न मे
ञ्जलिलेऊ बिधाना ॥ होत नहीं हि
रि को रूप प्रमाना ॥ तिजोड विराग
पच रति को लियौ बचन इहि
भांति को ॥ १२६ ॥ निजोऽपि कृष्णा प्रिय
ता विद्या ॥ बैस्नवो बैस्नवं दृष्ट्वा ॥
दैरवत प्राण मेत्र हि नन्यार रत्य
विस्नुः ॥ शारत्र चक्र गदा धरः ॥ १२६ ॥
चौपाई ॥ हरिजन आवै हरि हि
त सो मन मुख जाये पायन ही
परसौ ॥ ताट्सवरारव गुप्ता कि

॥निहिन्नमीह्क्नकरमनहो
सतमहानमन्मांजदमारी॥
सो स्कंदपुराणजे चारी॥१
॥स्कंदेश्लोक॥इहलोकामावन
॥सन्मुखेयानयातिहि
नगृह्णातिहरिस्तस्यपूजा च
शवचिकी॥२६॥चौपई॥जा
सदनसत पग धरहीं तिहि स
मान ग्रह स्मसानकर जीनायर्द
घरको पिना॥ जाइन सोति
वित्ता॥ ताको ग्रह सम स
मोनम मानो॥ जो निज धनकन
मुजानो॥स्कंदपुराणवचन
॥मारकंडे रिषि कहत
बखानो॥१२८॥स्कंदपुराणेमार
कंडेयनाक्यश्लोक॥ येनगृहात
निरूपालो बिसनवग्रहमागत॥
नकुहेपितृनि:स्वा सो॥श्मसा
नवत्तीषणा॥१२८॥चौपई॥जा
ग्रहसनजनत्रावे

॥ मूलश्लोक ॥ ब्या
लालयतु मैहं ते प्परिक्षितम
पदः। यत्कृपास्तौ थेपादोप पादौ
तौ थे विवर्जिताः ॥१२३॥ चौपई ॥
सतन कृपा करि तब न पधारे। हाथ
जोरि तिहि बिनती चारे। आजु ध
न्य मो हि कियो कृपाला। आजु भयो
कृतकृत्य दयाला। मेरे घर प्रभु च
रन पधारे। अति उजले हैं दरस तुम
ग॥ तैसो है ... हरि को पद परसन
तैसो ही है तुम्हरो दर्शन। जैसी
ता ति बीन लोक रई। यह महिमा
संत दरस चरई ॥१२४॥ मूलश्लोक
धन्यो हं कृतकृत्योहं यत्तयूं यग्र
हमागताः। ज्ञैन्मदर्शनं नृतं बे
लवा नाय था हरेः ॥१२५॥ चौपई
अधनी जे वे धनी बखाने। जिहि
गृह संत हि आदर गाने। आमन
तल बि छिवत मन माने। अधनी
जे वे धनी प्रमाने। संतनकी म

हिमा मनन हरनी॥ पुष्पराज पुत
छमे बरनी॥ १४॥ बनुरस्यस्को
रनका दीन प्रति पृष्ट बाद पढा
को॥ अथ नामप्रियहै छन्या॥ हा
बागह मशेन॥ यह कहा है ब
योबु॥ है यान मोक्ष गङ्ग रा॥१३॥
॥ चौपई॥ बेदब्यास को सकल सुर
जाई॥ दरसन के रसीम पदनाई॥
॥ पैर पैर फल होइ जगु सस॥ क
हत से कट पुरा॥ सकल सम॥ ऐसे
॥ सकट होका॥ सम्पु रंग त सा
नम॥ बेदब्यासनाम गछिपि पद
पद जङ फल॥ आज्ञा पोगनिको
बिजा॥ १२६॥ चौपई॥ प्रतछि
परा छिन क्रिमन साई॥ बेदब
जनकौ करन बराई॥ महापापी
जो नर होई॥ घोर पाप पतैष्ठ
रमाई॥ कृपा बासु टक को पा
ई॥ सो भवसागर कौ नहि जाई॥
नन की महिमा मन नाई॥ ८

प्रपावै ॥ जहद नारदी पुनि यह न
पै ॥ सुनि यह सार विहि यधारिरावै
१४१ ॥ [illegible] ॥ यो विष्णु सत्क्षान नि
ष्कामान ॥ नोत्तयेत्र श्रयधापान्वितः ॥
त्रिः सप्तकुलसंयुक्तः ॥ सयाति हरि
मंदिरं १४१ ॥ [illegible] ॥ ताको सकल
सकृत नतो ॥ श्री हरिता हि श्राप
श्रारोरो ॥ लिंग पुरान माहि यह दरव
॥ बचन लिख्यो मैं ताव बिसरयो ॥ १४
[illegible] ॥ नारायण परो बिहा
न ॥ यस्यान्तं त्रीति मानसः ॥ श्वपाति
न स्त्रैरेगसंपु ॥ गतमनं सपणायः ॥ १४२
[illegible] ॥ नक्ति हीन ताहोइ कुली
नो ॥ पंडित जप तप माहि प्रवीना
वाके सब पुन ज्ञानो ऐसे ॥ सृतक
हे ताको मंडन ज्ञिम ॥ १४३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ तपवक्त
क्ति हीनस्य ॥ जाति शास्त्र जपस्तपः ॥
॥ अप्राणस्येव देहस्य ॥ मंडनं लो
कं रंजनं १४३ ॥ [illegible] ॥ ताते

प्रयत्न न करिकै । बैस्नव सेवा
करि हित न करि कै । बैस्नव सेवा जो
तन करि है । सो नरक कूं समुद्र नै
न रहैं ॥ १४४ ॥ श्लोक ॥ न
प्रयत्नेन । बैस्नवान्पूजयन्त्यहो ॥
सर्वतः लिङ्ग वो ह्यासम्य काण्णा बैस्न
वैनाच ॥ १४४ ॥ चौपई ॥ परिचर्या
मे आदर राखे ॥ सब अंगन वंदन
अभिलाखै ॥ सब गम मोको सब का
रि जाने ॥ मिरे जन कूं मो हित जाने ॥
॥ तिन्ह को लिखि चे बूस्ता को न्ह
लच्च निज मुखते कहै ॥ सो ही
बानी द्रष्ट मेरा है ॥ १४५ ॥ श्लो
आदरः परिचर्यायां ॥ सर्वांगैरभि
वंदनं ॥ मद्भक्तपूजाभ्यधिका ॥ स
र्वभूतेषु मन्मतिः ॥ १४५ ॥ चौपई
॥ नारी को पति सुख लागनि दीको ॥ अथ
वा को कै बिधि वाहै सो कौ ॥ तिनमें
जो बैस्नव नाथ्योरा ॥ कुल इक्कीस नर
सो नारी ॥ ताको जनम सुफल जग
...रि स्मरन पावै

जोनै ॥ मधि मांव स्वपरांप्राबरवा
नै ॥१४६॥ बृहन्नारदीये ॥ श्लोक ॥ मत्त
त्कावा विधिवा ॥ विल्पभक्तिक
रोत्तिया मस्तुद्धरत्तिचात्मामानं ॥ कु
लमेकोत्तरं शतं ॥१४६॥ चौपाई ॥ कम
लक्तिरसमगनजुकोई ॥ सबजगमां
हिनरोतमसोई ॥ उराचारकजोक
छंकरई ॥ अथवासदाचारचितध
रई ॥ तिनकोबारबारप्रणांमा ॥ क
मलनकसनतप्रवधांमा ॥ बृहद
नारदीकीयहसारवी ॥ निश्चैमालि
क्रियेधारिराखो ॥१४७॥ बृहन्नारदीये
श्लोक ॥ हरिभक्तिरसास्वाद ॥ मु
दितायेनरोत्तमाः ॥ उबतावामुव
नावातेषांनित्यंनमोनमः ॥१४७॥
चौपाई ॥ सबजलजीवहिबकगिलि
जाई ॥ मिडुकहिकबउंनहिखाई
॥ त्योजमदंडसबनकोकरई ॥ कम
लनकेकोदेखतडरई ॥ यो प्रहलादस
हिताकहई ॥ हरिभक्तिनकोकाल

नगहडी॥१४८॥ प्रल्हादसहिताया।
श्लोक॥ बकोसलुचरानुलन्हानला॥ म
डकादीनवर्सेयेलं॥ नथ्रायमः स
बेहना॥ बिर्सयेनक्रम्मोसवृकाना॥
१४८॥ चौपई॥ यहिजगमाहिकन्हा
न्मति मिस्रा॥ प्रलुम्ररिनसुमसने
छिम्रा॥ ताक्रेतेम्मतिमिस्नुकोहारे
॥ हरिनामावलीमधुरमहाहोई
हितेमधुरमुक्रोरुबरियाहरिदा
मनकोदमिजकरिया॥ यानेमिस्रके।
रकहिद्दसा॥ मनकोचरनामृत
लेक्रा॥ इहिसमांनमीगोकवृक्रो
ग॥ कुलनतकोजुठलिकोरा॥
याकोमा॥ विकहोकहागाडी॥ श्रीध
रस्वामीवरनिम्रुनाडी॥१४९॥ श्लो॥ ६९
स्वामीकृतश्लोक॥ किंमिस्रं मधुवे
रि॥ मधरमुधामिस्रं स्वनन्नापेन
॥ नस्मान्मिसृतमेच किं [redacted]
[redacted] मुरारिपौनामावलीकीर्तनं
नस्मान्मिसृतमेकिंनगावतानन्ते॥

प्रसाद शेष ॥ तस्माद्विस्नुत संचवि
पदस्मुधातत्त्वं शेषामृतं ॥ १४९ ॥
चौपई ॥ जाकी बैस्नव संपा होइ
बैस्नव अन्न प्रीति करि सोइ ॥ प्रा
र्थना करि जो जतन करइ ॥ यहि वि
धि महाप्रसाद मन धरइ ॥ जो कोउ
बैस्नव नाम कहावै ॥ अन्न अबैस्न
व को नहि पावै ॥ अंगीकार सु त्यागन
न करइ ॥ कूर्म पुराण बचन उचर
इ ॥ १५० ॥ कौर्म श्लोक ॥ बैस्नवानांहि
भोक्तव्यं ॥ प्रार्थ्यान्नं बैस्नवैः सदा
अबैस्नवानामन्नं तु ॥ परिवर्ज्यम
मेध्यवत् ॥ १५० ॥ चौपई ॥ बैस्नव
अन्न अंगीकृत कीजे ॥ प्रार्थना
करिकै जो लीजै ॥ सब अपराध ह
रि करि देइ ॥ बैस्नव अन्न जो न क्वि
नतेइ ॥ अन्न न मिलय तो अबैस्नव की
से जल हो न्हा मांगि के पीजै ॥ बै
स्नव अन्न पूजा न अपारा ॥ पद्म
पुरान बखानत सारा ॥ १५१ ॥ पाद्मे

दैवहतलिकुरलासम्बाधेश्लोक॥
प्राथ्येयंवश्रवादंतं॥प्रयश्चोनब्रि
चक्षणाः॥सर्वपापविशुद्धाध्यान
दत्तावजलपिबेत्॥१५१॥चौपई॥
महापातककोजोनरहोई॥तेहप्र
थमजाइकेसोई॥बैक्षवृक्षजल
अमृततेसिरे॥तिहिजाईजाचन
करे॥जलमिलेनोहिनकेरिलेई
॥परमपवित्रमानिकैसोई॥जल
जहातोनाहिनमिलही॥लहामागि
केपीजलजही॥सकलपापतैछु
टैतेही॥नारदरिषियहबिधिक
हिदेई॥१५२॥नारदीयश्लोक॥म
हापातकसंयुक्तो॥वृजेवैक्षवम
दिरं॥याचयेदन्नमभ्रतान्नदत्ताव
जलपिबेत॥१५२॥चौपई॥सागव
तनकोअन्नपवित्रा॥तैसेपुनीत
गाविदचत्रा॥गंगाजूकोबारिपु
नीता॥जैसेगिरवरधरकीगीता
परमसुद्धचिनपज्ञमे

केहैतमोहमहत्पापपो। यकादशी
सुकृतनयहहै। याकौनरगनिश्चैके
रिगहहै। गचाम्मौ बिधिरिषिसुमनी
वी। मारकंडेय भागीरथ भाखी ॥१५२
[illegible]
[illegible] भागवतमा
सुकृ [illegible]
नै सुकृतभागीरथीजलै सुकृतबिष्णु
पूजिनै सुकृतमेकादशीव्रतै ॥१५३
[illegible] वैष्णवहोयकैपरतजोजि
ने करहिंवैष्णवकेगुरुतौजनपा
वैतहोसफलहिबिनुजानै तातैकौ
प्रायश्चितनबावोनै चांद्रायणव्रत
कैरजुमोई। तिहिंपापतैंसुकृतवै
ई। ईछापूर्तिपुन्यसबवाकै। कियै
क्योंनिष्फलनिःफलता कोयहस्कंद
महिमातिप्रदीनी। मार्कंडेजूबने
नेकीनी ॥१५४ [illegible] ॥ श्रीवैष्णवगु
हतुक्यापी च्यावाडोनतापिवा
सुकृतिक्रांजायरोओफोडेक्षापूर्ते
बृथाताता ॥१५५ [illegible] कोई

बचनमनकरिरतजेहैं॥कृष्णचंद्र
केसेवकतेहैं॥तिनकीआज्ञाप्रमा
णियत्रेसो॥कह्यो॥कृष्णकोकोतिय
जेसो॥कृष्णसोंहिप्रभुनंदलालसाहि
रेचकरेदमानीयेंमोहि॥स्कंदपु
राण॥प्रभावबढावो॥यहजानिसो
ईसबजानो॥१५५॥स्कंदश्लोक॥क
र्मणामनसावाचायेचेष्टंतिसदा
हरिं॥तेषांवाक्यंनरैःकार्यंतेहि
विष्णुसमानराः॥१५५॥चौपई॥कृ
ष्णनाविप्रनहिक्षत्रिसदेहो॥वैस्य
नाहिहमसूद्रनहीहैं॥नहिहमब
ब्रह्मचेजेबनमारो॥नाहिग्रहस्था
श्रमअनुसारी॥वानप्रस्थहमन
हिनउदासी॥हमपुनिनाहिकब
प ऊंनपासी॥पूरणपरमानंदअनु
पा॥श्रीपतिसमुद्रमधुररसरूपा
जोगोपीजनबल्लभप्यारो॥कोहि
कमनमथमोहनहारो॥तिनको
चरनकमलकेदासा॥लावनकि

हियसरसनिवासा तिनकोदास
निदासकहाकै जन्मजन्मसेयह
गतिपाऊं पद्यावलियाकहोबडहा
गी यहमोमनतिहितदेजुकिमोरी
दोहा बरोहमारोनाहिकछू
आप्रभजनसुहाय जगमेतिनय
अबतयेदासनिदासकहाई १
पद ॥ [illegible] ॥ नाहविप्रो
नचनरपतिर्नापिवैस्योनसूद्रोनो
वावर्णीनचगृहपतिर्नोवनस्थोय
तिर्वा किंतुप्रोद्यन्निखिलपरमान
न्दपूर्णामृताब्धेर्गोपीभर्तुःपदकम
लयोर्दासदासानुदासः १५६ चौ
पई कितेकापानऊबलवनकर
हीकोऊकर्मनहीकोअनुसरही
हमसोजोकोउपूछैआई तासो
यहहमकहैसुनाई हमनकौग्यान
कर्मकोजानेसाधनओरकछून
हिमानैपादत्राणहरिदासनकेर
साधनसिद्धियईहैमेर दोहा

ग्यांन कर्म कौं तें गहि रहे॥ अपनी
रुचि अनुसार॥ सो कौं नाहरि भ
क्त जो तिन को अधिकार॥ १५७॥
श्लोक॥ ग्यानावलंबकाः केचित्
केचित् कर्मावलंबकाः॥ वयं तु
हरिदासानां पादत्राणावलंबकाः
१५७॥ चौपई॥ प्रतिमा माहि सिला
मति ज्यौ ठानै॥ श्रीगुरु तिन कौं नर क
रि जानै॥ जाति बुद्धि वैष्नव मैं कर
ई॥ हरिचरणोदक जल चित धर
ई॥ संतन को चरणोदक सार॥ ता
हि करै जल बुद्धि विचार॥ कल्मष
सब पातक हारी॥ मंत्र जा परह
रि को सुखकारी॥ तिन को साधार
करि मानै॥ अखिर बुद्धि जु तिनै
गनै॥ हरि सम सत देवन के स्वामि
॥ सर्वेश्वर प्रभु अंतरजामी॥ और
देव सम तिन को जानै॥ निश्चै
तिनारकी तिन जानि कि पुथा द
महिमा कही॥ यह विधि महिमा वि

लौजीयोसहो ॥१५८॥ [illegible]
[illegible] ॥ अर्चौ बिष्णो शिला
धीगुरुप्रनरमतिबैष्णवेजातेबु
द्धिबिंम्बावीबेक्षवानोकलिमल
मथेनेपादतीरथेबुबुद्धि: कमा
रनो म्रिमेनेसकलैलुपहेश बसा
मान्य बुद्धि बिलोमबैष्वरशे तदि
नरमसधीरयमपत्रानारकोसह: [illegible]
[illegible] ॥ संतनकोमहिमाजु बिसमा
बरनिसकतनहिसेसपहेमा ॥ महि
माजदपिजथामतिबरनो ॥ सधुरम
गुमुदमेकलकरनो ॥१५७॥ कैसेंब
रनोसकलमहातम ॥ अल्पबुद्धिम
तिमदडगतम ॥ खगाकीचेचुपुरी
मधिजलनिधि सबहीकहोसमाय
केसौबिधि ॥१५८॥ त्यूंहीसतप्रना
वन्नगाथा ॥ मेकछूगायोमेटनबा
धा ॥ संतकृपाबिनसदगतिनाही
प्रीतिनहोईजुगलपदमाही ॥१५९॥
नातेंसंतसमागमकीजे ॥ नरतन

नताहिसुफलकरिलीजे॥सतसं
गतिसबसुखकोसाराहैकह
तहैबासदबारा॥१६०॥सतसंगति
तैबुद्धिप्रकासा॥सतसंगतितैमव
भयनासा॥सतसंगतिसमञ्जोरय
होहै॥लेहैसिद्धिपदजोचाहै
॥१६१॥याहीतैंहरिनिजहिपावे॥
जाकोब्रह्मादिकललचावैंनिजि
समानपरमपुरपावै॥१६२॥सुहीजीव
कोसाचोस्वारथ॥१६३॥नरतनमेंसा
नसकलजगमाहीं॥सतसंगतिसमा
नज्ञानकछुनाहीं॥महागंभीरस
क्तिरससागर॥सक्तिनाकेवस
नाचतनरनागर॥१६४॥रससागर
गंभीरयहीहै॥याकोपारावारन
हीहै॥तदपिआपनोमनसमज
न॥बिंदुमात्रलिखिहौंअति
पावन॥१६५॥महानुभावनिब
जबिस्तारी॥स्वास्वादनकियो॥
हितहितधारी॥१६६॥संतनिको

इष्टगहिसरनौ प्रथमतक्ति उरौ
बसौ ॥१६५॥ इहिसंसार अनंतजी
वपन तरव चौरासीलक्ष मतष्ठ भेतन्म
न जीवस्वरूप प्राप्त जगचेहो ॥
न्मति सूक्ष्म अतै सूक्ष्म कहे ॥१६६॥
तिनजीवनके है बिधिभेदा ॥ थाव
रत्रास बरनत बेदा ॥ जे गमन के मे न
द घने ई ॥ न्मका सचारी कितने ई
॥१६७॥ पक्षी अन्तरिक्ष जाति अनंता
गमन तमा नतक जलस्थिर न्मता कि
तन ईक तिन मैं जलचारी ॥ तिनकी
न्म गिगि न जाति निकारी ॥१६८॥ ता
पोछे थलचारी कोहीये ॥ तिनके के
कछु पार नलहीय ॥ तिनके बीच
बिचारजु देखे ॥ मनुषिजाति थोरे
लेखे ॥१६९॥ और सरीरबजत जे
ताही ॥ मनुज देह थोरे जग माही ॥
और देह संभव जे पजा ही तेमें
मनुजन की कछु नाही ॥१७०॥ देखे
हि बिचार तिन माही ॥ बजत

कजा तिनी चवर मांही ॥ मले छुपुनि
दबो ह्म किनलेई ॥ तिको तैमो चस्र
रतितनेई ॥१७२॥ आधेतो इ हि सलि
निकार ॥ आधेरहे मुनिन हिविचा
र ॥ बिद निषुगि नमे बजलेरा बेद
पटे आस करे घनेरा ॥१७३॥ विधिव
नकसे करे कछु औरा ॥ बेद हि मु
खचलेकछु मुनि तैरा ॥ बेद निषेध
पाप जे करे ॥ तिन नहि पाप कसै
गहो रहो ॥१७३॥ बहे नकमे करन
ह जिनमे ॥ कर्म निषु बकलेर तिन ॥
मे ॥ कर्म निषु को टिनमख कोई ॥
बिखयय निन्याति मुमुछु हाई
॥१७४॥ कोटिमुमुछु होहिजिनका ॥
पान निषू तिनमे कोउ एका ॥ कोटि
क पान निषु म धिलहियें जी बन
मुक्त एक कोउ क हियो ॥१७५॥ को
टिक जीवन मुक्तन मांही ॥ हल
नक बिरले दरसांही ॥ हलनक
नेई हैलि: कोमां ॥ हलनकेसव

सुरवकैप्रेमा। याते कृस्नचरणस रति
वंता। जुगलमनके सोइ कहियेसता
सक्तैसुक्तिसिद्धिचाहिनचाहै केवल
प्रेमानंदहेमाहै॥१७७॥ सुक्तिसुक्तिसि
स्र हिकचाहै। जानो तिन हिंस्रमतम
तोहै। ताकौ साखि भागवतयेहो। स्र
कसैन्नुपति परीछितकही। साद
[illegible]
कोनाम धर्मिष्मानो नारायणपराय
णः सुडलैनःत्मा कोटिस्वपिम
हामुने॥१७८॥ नमनतनमत
उद्गारसुकोई वड़भागीसुजीवके
मोई। कृस्नकृपा तैकृपाकरहिगुर
नकिलताकोबीजलहैरे॥१७९॥ या
कोनाना बिचारहिकरई। श्रीगुरपद
पकजतैरघरई। कृस्नचंद्रअपनायो
चाहै। तवडियहियइहिनातिठमा
है। गुरसननसुरवकैवैकोबुद्धि पेरै
नवद्विसौत मति सुधी। तवमसतुरके
नरतेनाहै। तवैमदागुरकौन कहा

वै ॥१८०॥ जुगल माहि तिनको उदसा
वो ॥ सा चैनसौ हित चितचाव ॥ ति
स भावक सहचरनको ये निसमुर को
सरनों लहियो ॥१८१॥ निन्मुसेन कहि य
सैहितनटरई ॥ नखि बीजनसारो पप
करई ॥ सिरिकौ हृदय नन सितौ हि
तौ नै ॥ मानौ श्री गुरुदेव बखानै ॥१८
२॥ सब बानाकी रतन जनसौ चैन ब
नखि बीजनल है सिर विनैरतन ब॥
नखिल ताको अवकुरकट गो ॥ सि
रिबके हिय प्रेमसा बढई ॥१८४॥ त्रि
सौ टननालेहै बहुबारा ॥ नेदि वुधहर
होइ पारा ॥ बिरजा ब्रह्मलोक पर जा ॥
ई ॥ परमव्योम ताई सरसाई ॥१८५॥
इन लोकनि की चाहन जैनें ॥ यहई
सब सिरनै दिखो जानै ॥ परम व्योम उ
के तहां ऊपर ॥ पडै चैनखिल ता स
बौ पर ॥१८६॥ बृंदाबन गोलोक
जहां है ॥ कलमचरणत रुकल्पत
रो है ॥ तिनसौं जा पलनालपटाई

नदीफेलि विस्तागर्हि पाई मक्ति
लताग सक्कु समनि पाउ प्रेमतरु
पफलनाकेलाउ १८७ तिहि
[redacted]ली गुरसो चोकरई ख्यवृगाके
रतनरसजलेटरई इहि बिधिल
तालदेविस्तारा सजलहरितबा
टेबटवारा १८८ मत्तेडरदवेस
वक्षपगाक्ष सोई गजकरलता
कोवाधा वदहाथ्यो जोलताउरवा
ग मोरिसो हिधरतिपरडारे १८९
निर्हिसाघी सोलेई बचाई तोनि
रवि घनलतागहराई याकोनाव
यदेहियधरई १९० कापकबाचि
कमनकनध रिये बेसवदोयक
रतजियहरिये उपमा खोत्तबबटे
ञपारा नक्लिवनानलेहेबटवा
रा १९१ मुक्ति मुक्तिबाध्यातरम।
वेलानजष्टाचितललचावे जप।
हिकर्तपासारवाजाने नलिला।
बाधकलखिजाने १९२ येउप

ढि
मायाबंटन बिचारे। अरु शास्त्र
रिका छिनि लारे। लुकि मुकि सि
मन नवो सांमो। इनकी प्रहालच्चा
करिजाने ॥१५३॥ नवै मुलसा खाव
दिजाई। बृंदाबन सु जाय जलगई।
तिंहि लताके प्रेम समूपा। फलपरि
कमुवोई अनुपा॥१५४॥ सोइं फल प
कोन सिपहि गिरई। मालो लिहि आ
स्वादन करई। मालोसी गुरदेव प्रभु
नो। तिहि लताका अबगन बेकानो
१५५॥ कृस्न चरण सुरतरु सों जाई
॥तब सोई लत जाई लपटाई। कृस्न
चरण सुरतरु जिहि सेई। प्रेम सु
फल आस्वादन लेई॥१५६॥ यही पर
म फल महत पुरुषारथ। इहि सम
न कछू और स्वारथ॥ मुक्ति धर्म
पुनि अर्थ रु कामा। चारयो फल म
हो सुख धामा॥१५७॥ प्रेम सु फल
आस्वादन ओगो। त्यागि सकल सु ख्या
चारि फल लोगो। सुन्दान

फल न हिंदै। मुकुन्द कि कौन किमा
यन्हे १२८ अन्यवाक्याचित्तनहि
घरडु आनन्देवपूजानहि करड
प्पोतकर्मेमे चित्त नवेडु। विखवपा
नित्त म्मावसिकगिलडु १२९ है
चतुकल्पकलडुजियान कल
वेरापक्रापि नक्रियमन मुकुन्त
क्रिदेस्यित्ताडु प्रेमात क्रिउदय
नवरोडु १३० [illegible] म
त्रैपाषिविनमुक्ते नन्पत्यनति
मते हयोकेगाहयोक्रिया सेवनेम
क्रित्यने १ [illegible]
अहैतुक्यव्यवहिता या भक्तिः पु
रुषोत्तमे। सालोक्यसार्ष्टिसामीप्य
सारूप्यैकत्वमप्युत दीयमानं न
प्रत्तिचि बिना मत्सेवनं जनाः २
स एव भक्तियोगाख्य आत्यन्तिकउ
दाहृतः येनातिव्रज्य त्रिगुणं मद्भावा
यापपद्यते ३०१ [illegible] तुक्रिय
केडच्या हैजाया नक्तिउदयहि

यह्वोईजैतौलौ॥परम प्रेमाची ईछा
जोई॥बढतमनदेतनाक्तिमुखसोई
॥तनंजाकेप्योका॥नुक्तिमुक्तिसह
यावता॥पिशाची हृदैवनतोलावज्ञ
क्तिमुखस्यात्रा॥कथमस्त्यद्योजवत
१०२॥चौपई॥साधनजक्तिकरतनि
तसो॥प्रेमव लिहिहृदयसंदयरलि
होई॥रतिदीसाटहियेजलग्यावे॥
ताकोनामसुप्रेमकहावे॥१०३॥प्रे
मबढेलिहिजाममनेहा॥नेहबढे
कहोमानजुयेहा॥मानबढेतबप्र
णयकहीजे॥प्रणयबढेतबरागल
हीजे॥१०४॥रागाबढेतबकैअनुरा
गा॥कैअनुरागलहेवडैभागा॥बढि
अनुरागाजावसरसावे॥लावेबढेप
महाजावकहावै॥१०५॥त्रिजटिको
नेतहारतिजानो॥तिहितेआगोब
जरिवरखानो॥याईकेरसनाथुदि
कानो॥सोरसकेवलप्रममानो
१०६॥पुष्टिहितिकानेसदहिजानो

खोइ त्रिकोंनै मांन बखांनै ॥ गौरस र
करा प्राप्त बिनुगा ॥ मित्त त्रिकोंनै
ज्ञांनी गाजा ॥ १०७ ॥ मिश्री गोर कहों ज
तु रागा ॥ कंद गौर स्ताव हि रसपारा ॥ म
हास्ता वृक्षों लाकी गैर ॥ इ हित त्र छु
क कदूम हों आरा ॥ १०८ ॥ गुन नक्ति
रस स्वाद कहिये ॥ अमृत समान स्वा
द ब जलहिये ॥ जैसें दछि मिश्री पुष्प
वे ॥ घृत मधु मरिच कपूर मिलावे ॥ १०९
क हिये नाम रसाला सोइ ॥ परम मधुर
आस्वाद न होइ ॥ तैसें नक्ति तेद र तिज्ञा
नैं ॥ ताके पंच प्रकार बखांनै ॥ ११० ॥ न
क्ति सो त्रिरति प्रथम कहावै ॥ द्वितिय
दास्य रति अति मन भावे ॥ तृतिय सख्य
रति महिमा करनी ॥ बत्सल रति चौथी
मन हरनी ॥ १११ ॥ पंचम मधुर मधुर रति
कहिये ॥ सरब नक्ति मैं परम लहिये
अद्भुत हास्य बीर करुणा [illegible] ॥ रौ
द्र बिनत्स भयोर बरन्या न ये ॥ ११२ ॥ ऐ ते
सातौ रस गौणा के हैं ॥ रस कन नक्ति

तिनरानमांहेहै॥कहे पंचरसमुख्य
थापिको॥तन्मनकैमनरहै॥या विषै
॥१५३॥साखी रसरीत्याचैजाडी॥या
तेकनानेश्वरसांडी॥सोतत्तनमनव
जागोकहियै॥सोतत्तन्मनकाहि
कलहियै॥१५४॥याप्रतत्तन्मजगमा
हिअपंगा॥हरिपदसरनोजानोम
रा॥साखसानवहजमी॥सोमाहिके
पुरमैअर्जुनसख्यसुता॥विकाव॥
त्सतत्तन्मनेदहजतसमनि॥पुन
सावदहदहममो॥हिरतिं॥१५६॥पु
रसमोरिदेवकी॥गनो॥वत्सलडेसुर
तामने॥मधुरतन्मरसहजमेंगो॥पं
॥पनकरिप्रमधजाइटरायो॥१५७॥
पुरमेंमहियैमधुरउपासी॥हैवेकु
गरमायदासी फेरिकलरतिन
यपुकारा॥तिहिकौविरतनाअबवि
चारा॥१५८॥इकहृदयमधुररस
सोई॥अतियकेवलाकरनी॥सोई
वृजमेंकेवलमुक्त प्रकासमाने

स्वजे यों नको न मनतांसे ११९ म
छुरातथा चारिको माहो मित्रिन
व प्रकासनकांहो बकुरमत्रेस्वके
हियांते सदाचतुरमुजरूपविराजे
१२० श्रुवारतिको वहसुत्तावा जेसन
फुरत्यांघ्रजेष्ठुत्तावा ईस्वरतानद
नंदनकरई ताकोंहृजजहियमधे
धरई १२१ ईस्वरताकोनेकनगादृ
च्यपनत्याव माहिवहिकिसूमातदा
सरतिचारेतजन तिनहिस्वजा
हेवदीपन १२२ वात्सल्यसरवस
जेअनुरागो परमधुरस्तिहिके
त्यागो त्रेस्वजेताम्रकोचनहिपाई
जोतिनजायकितदवेरगाय १२३
वसुदेवदेवकीहियमाही श्रुवा
वात्सल्यहिकलकननाही ग्स्वजे
जेनवात्सल्यप्रकासे श्रुववात्सल्य
हियनहितासे १२४ मास्लोकेस
कृष्णसुवधमा मानुपितहितव
कियप्रमानें नवदोइनितैरसके

ग्रंथप्रसंगक्रमयदजा
ज्ञानी॥ग्रंथप्रसंगक्रमसकथा॥दूजा
॥२२४॥श्रीनागवनेदसमकथा॥विजाय
को॥देवकीवसुदेवकृष्ण॥विजाय॥स
जादीध्यरो कुलसंवदनोपुत्रा॥चौपई॥
खजानेनसंकिनो॥२२६॥चौपई॥नदप
यालनावकोर्तुनहिंछियेहो॥नदप
प्रावईक्षुर्जलियेहो॥विश्वकपन
विसकोमानी॥सरलनावसजिस
हिमावबोली॥गोनायप्रकाक॥स
ति लिसक्वाप्रसनयउक्तोहिक्रम
हियादवहिसरविदि॥क्वनजानलामप्रि
मानवबेदो॥ग्रयाप्रसादानप्राय
नवापि॥चौपई॥सकसमणिहियरलि
मुरलिवसो॥पिाम्पूर्जलियेरवि
सो॥क्षुकिताषहिद्रासनजानो॥
बिक्रुलनेईहियनयसमान्पी॥
वर्धक्रूप्रसजहोहोइ॥कक्ष
मुर्जगधननहिकोइ॥कर॥क
र्दि विक्षुजयप्रिकर॥२२५॥
सर्दि ॥प्रियवलेउ॥

मतिसुतसुखबिष्णुदेख्यो तव
पिकछनचै [illegible] सिविसेख्यो यही
बिचारकियो लखितांही अनुरागा
कछुसुतसुखमांही १२० कैसन्तम
मेदीमको कछु [illegible] जेनगन्यो ल
जनको कृष्णबिनासबत्रिसात्यो
कृष्णबिनांमतिध्रुट अनुरागा
१२१ सांतनतेकोलकृणायद क
सलहैसुखभोगनचहै स्वर्गमुक्ति
सुखबिबिधिबिधांना तजइहि
तिनरकसमाना १२२
नारायणपरा सर्वे नकुत
श्चनबिभ्यति स्वर्गापवर्गनरको
ष्वपितुल्या छंदशिन: पृ
राग्यप्रेजपृरणाणपाना होईदास
केलहैसुखाना भ्पानामेसत्वमगो
खकोई सेवाकेरे कृष्णपदसोई
१२४ दास्यरसमांहिदोयगुनजा
नो सोइबिधिलिखपरगटप्रमा
नो सरवसेद्रट बिस्वासललचावे

सखीकेंधपरचैटेचटावैं॥ रूपक्रि
ष्णचरणनिधावासुखपावैं॥ कृष्णलैसे
वामखाकुरावैं॥ ऐसेसखीसमका
कहौधर्मी॥ सखीजनकोनेजोप्रेम
मी॥२९३॥ प्रमना श्रुधिकजोविरे
हिरसहै॥ यातेकृष्णसखीरूपसोवसहै
॥ वात्सल्यश्रापहिप्राणकमीनो
॥ कृष्णहिप्राणपूज्यनिरजानी॥२९४
॥ यामेंचाफोरसगुणानिसईलैसै
लपरससुरवहियहिलनसदोद्वैम
नमयमधुररससखी॥ कृष्णकिस्मा
वारतिश्रलिसयै॥२९५ दोसमानभ
मेसकोचनश्रानै॥ कृष्णहिपरमप्रि
यजियजानैं॥ वात्सल्यधर्मियहदरसं
है॥ कृष्णसोहिममनामरमाई॥२९६
॥ कौननातवप्रियकोजियश्रपी॥ प्रेम
रंगनितऋंगमसपेंमिकैरसनेहश्रु
नुरागी॥ तासमश्रौरकौनवडभागी
२९७॥ जानैंजुकौंजेमधुररससमसो
योंचेरसकेयामेंधमोजिसैयकहि

गुणआकासा ॥ प्रघीमधिगुणप
व प्रकासा ॥२४१॥ न्योहीजानिमधुरर
साही ॥ पाचौरसतिहिमेदरसांही ॥ कै
से करतनावनार्जरमे ॥ कृस्नबसोति
हिकेउरपुरमे ॥२४२॥ कृस्नकृपाते
यहरससारि ॥ आस्वादनकरिहैजन
नागरि ॥ सकलरसनकोयहैनिकेता ॥ कौ
नोरसिकजननकेहेता ॥ रसिकनको
पदरजसिरधारी ॥ सोइहिरसकोहैअ
धिकारी ॥२४३॥ हेश्रीकृस्नतुमजुया
जियपर ॥ कीनीकृपातासुकोसरबर
जोर्नपकारकियोनंदनंदन ॥ ताकोब
दलोदैनयहजन ॥ बृत्तातुल्यआरब
उपाई ॥ तज्जनकौसौंदियोनजाई
तुमजंपकारजुकियअनंता ॥ तिहिउ
मराणकरिहुकिरहेसता ॥ बाहरिध
रआचारजरूपा ॥ करतकृपाघनस्या
मस्वरूपा ॥ मंत्रदेईअपनेकरिलेजा
छ्या दैतकरतअतिनेङा ॥ नकि
नदैजासबिस्तारो ॥ इहिबिधिप

रमत्रनुग्रह भारौ ॥ औरन रजा मी रूप
हि करिकै ॥ अपनैपा पति कु म्हि बि
लगिकै ॥ अ मननजन मनि रलिसरसा
औ ॥ निज परिकर मे निकट बसा औ
॥ एकादश स्कंध मी कृष्ण चन्द्र प्रति
उद्धव बाक्य औ कौ ॥ नैवोपयंत्यप चिति
कवयस्त वेश ॥ ब्रह्मायुषापि कृत
मृद्ध मुद: ॥ स्मरंत: योनवहि स्तनुत्व
नामग्रजो ॥ बिधुन्व न्नाचाय्य चैत्यव
पुषा स्वा गतिं व्यनक्ति ॥ २४४ ॥ चौप
ई ॥ गौनाम कृष्ण हरि मुरवबानी ॥
सौ पहले तिबोलन्ति निधि भदानी ॥ भैस
बु धिवैगै मे जानौ ॥ अनाया पसी हि
पावत नाही ॥ या विधि जानस्यो यह जा
निया ॥ मुरहि सो ज्ञान कुल मौ निय
॥ मीनायां श्लोक ॥ नैवाम्भसन्तयुकानो
॥ लक्षतोषो नि पूर्वं के इदयं मि बुधि
यो गतयेन भा मुपयाति तेन २४४ ॥ चौ
पई ॥ नाही करिय र सिकजन सगा
न बराचै ड हिस्स खकै रगा यहर

मनौ ज्ञानगजहि हनौ ॥ ग्रासनुप्रमानजु
थामतिबरनौ ॥१४६॥ मतहीनअति
होमतिअंधा तनितेजमकौनाहिन
रंधा यहरसिसिंधुअमृतकोसारा
ताकोकैसेंपाऊंपारा ॥१४७॥ जैसेंमम
कर्णदाईआकासू कबकोपारनु
पावेतासू तैसेंहीमेंमनहियलायो
तथाबुधिजसकछुकगायो ॥१४८॥
रसिकनकीरतिरससारा कहौ
जायकिमिअकथअपारा लिखौ
बखशतदिनअरुराती तौऊंमोपै
कहौनजाती ॥१४९॥ जोमहिमाक
छुतिहिंपियकेरा पवटैग्रथनहिय
बेडेरा तातेंईतिइकलिखीबनी
ई लीयोअपनोमनसमझाई ॥१५०॥
जेनकेनबिधिहियसमझोहा के
हेसेतगुणतजिजगईहा रसनापा
ईकछुगुनगाना नहींतेचोरतौवि
फलजिहाना ॥१५१॥ यहैअभिमान
बिश्राम हरिहियगायकेहरिके

दासा॥ याहि हितनैमें जियजानी॥ सा
रचाजिको कियसुखमानौ॥२५२॥
बारबार इहिं पटै बिचारी॥ है सब
दायक अघहारी॥ दोलसलोआदर
इहिं केरा॥ है है नाकुप्रताप घनेरा॥
२५३॥ जानि प्रिया तेन जिनकें होई
॥ औमें साधु होई से कोई॥ तिनकें म
नमें रुचि उपाजावै॥ कहरकुनें कि
नेकों नहिं लावै॥२५४॥ आदरप्र
नचिनवन याको॥ कहिं है सदाब
मलहियजाको॥ तिनकें सुक्तिबि
चार आनैका॥ जानन नाहिन सुभ
गबिबेका॥२५५॥ सबदप्रानहेन
कि(कि है)नो॥ औमें जनरकों उपकबि
षकों नो॥ सोजन आदरकहिं है इहिंके
रा॥ सम प्रमत छिव हित सों बजनेरा॥
२५६॥ गोमगामतें बन्धन निहारी॥ लि
खन कियउ मै हृदय बिचारी॥ यहग्र
न्थ है छिद्या करि मोपर॥ अब
न करिहै करणाकर॥२५७॥ औ

केजेअमदनजानो मुक्तिहैनहि
सुविदब्रखानो ऐसोनिधांकेरसके
के जाच्यो तिनहिंसोरिकरवेकु १५८
वैस्नवमहिमांबारहिबार देयजस
जानसुमतिर्वदारा १५९ सकलदे
खिनबहरवनदीजे इतनोबिनय
मानिमसलीजे १५ ९ गकैअधीनह
सम्रुतिगाय क्रिहिंसतसंगानिकृस्न
नपावै तब्कलनकैजोस्वागबनावै ता
जसकसमद्यन्नपुनावै १६० अति
कृपालतासर्जुअवतुहुहो कृस्नदेवकी
रतिम्रतिरूरी असेस्रिरवोमुच्चिरजु
यहताई यानकरनईक्याकस्नि
ई १६१ साईकेरोजमहा बिखनारी
पानकरावततक्षिननारी उदय
अधमहतनानारी जननोपतिदी
नीतिरक्षारी १६२ सक्तेस्य
केमात्रैतें दईपरमगतिनाहि ऐ
सोकौनकृपालजमा शरणाहेनर
जाहि १६३

अतिश्री तेजनवांकोप्लोका॥ म्हेहोब
कीयमनकालकटं॥ जिघाममा दग्ध
दय्यमा श्री॥ लेनेगतिश्चमुचिनां॥ तंलो
न्यकेवादयालुशरणांह्रजन॥ २६२॥
चौपई॥ जिन्हिलै शरणाहु सुनौ गहई
नरकल्यानसकलबनजलहैशौतिहि
नापत पिन ननधारी॥ सहस घोर सं
तिउखचारी॥ २६४॥ नामनाप वारन हि
तनी को॥ हरिपद जुगलजत्रस नहीं की॥
केवल नाप मात्रन हिहरडीण्मसलह
हिचजहि मिलेकरडी॥ यालेछत्ररूप
हरिचरणा॥ होडंशरणासुरबउदमप
हरणा॥ २६५॥ दोहा॥ छंद॥ मैअमति
श्रापदश्र निजुगलबरणांहिहैकरु
णाकरा॥ बजकालकौ रवपरखो मे
निजकर्मबसबजडरवजरा॥ सेचि
तश्रविद्यानाहिबसपरितप्यो मेंब
जविधिविजो॥ डहिहेनुकबजन
त्रिपिनयटश्रस्विहृग्रादिजप
पुनिकबजांकेसेंजसोतिकिंचित

नहिलहोनेदेनदेहे तुम्हो शामसो
कृपालुतनबपदरहितनयसुखकंद
हे गनशोकसमूहविशोकनबपद
केनशरणागतलह्यो बडऋरकेप
मीखलअपावननरेसबजिनजिन
पायो १६६ [illegible] मारचंडिकायव
तुमहाई अनंतवेदनइजिविक्षी
ई जाकोईजलपाईअकामा संठव
कोनिनयोऊजामा १६७ सुमतिकु
मादिनोजिहितविपरसे वैज्वलरस
मयकमतनबासे तिमिरविमुखता
मधुनमावे वेपतिरुपअनूपदिखा
वे १६८ सबनरनारिनकोसुखदाई
संतनकीमहिमासुनगाई कहोकि
शोरीयहबरदीजे संतसमागमको
सुखलीजे १६९ [illegible] जिनकेहि
यहरिचरितकीमहिमाकोहेपान
नहोकहिहेग्रंथकोमोदपाईमन
मानें १७० [illegible] कल्यादसशतति
हिंपरसेतौसजानिये सतहत्त
नसुखदानीयहेसबतनबखानिय

मार्गशीर्षसुक्लमासपक्षसुक्लासुष
षकरनी॥ मंगलमासबारसुनिछि
उतियामनहरनी॥ यहसारचंडिक
रसमई॥ बैष्णवसहितसासुनधरी॥
अलौकिकसोरीसुसकृपापायगाई
पूर्णकरी॥५७१॥ इतिश्रीसारचंडिका
किसोरीअलीकृतसंपूर्णसमापति
दोहा॥ अमलसाररसचंडिकाह
रिजनबिमलसनेहके॥ बिमदासके
आसयहसमलिष्योहोइनिसेक॥
रागबिहारी॥ जैश्रीरसिकनकी
बलिहारी॥ श्रीवृंदावननवनिकुंज
मंदिरकेलिबिहारी॥१॥ श्रीहरिबं
सश्रीहरिदासीसबीपरिचारी॥
बिठलबिपुलब्यासधुवनागरी
दासबिहारीनिंदासी॥२॥ श्रीनंदश्री
हरिब्यासदेवसुबसकरिषीतम॥
प्यारी॥ ज्ञानिनजीवनपरकसण॥
करकियमहानअधिकारी॥३॥ कि
सोरीदा सदा सोदरबलनरसि

करोसमैनौ नंददासश्रीरामराय
...वानगीतिसुविदेनौ ४ कमल
नैनसुखसखीसदानंदनंददास
...सायो सूरदासश्रीमदनमोहन
जुगलहितसलेलेगायो ५ माधोदा
सश्रीकिसोरसूरप्रभुसूरहिसलके
नाऊं नरसीमहतामोगदिकेजेति
नकोकृपासनाके ६ रूपसनातन
जुरससागरगारस्यामचितदीनो प्र
गटकरीग्रंथनकोरचनाबासबि
भुतिकोकीनौ ७ श्रीपरमानंददा
चतुर्भुजगोबिंदसखासनेहौ कृ
ष्णदासचीतस्वामीजुबृजरसगा
यकैयहौ ८ सियारामकोकिराम
उपासकतुलसीसोउदबूतकीनौ रा
मजसाटप्रसादपायकैप्रगटोसु
जसनबानौ ९ ललितकिसोरीस
परसिकबरसततरंगगावौ श्री
व [illegible] सीत्यागिजगगुरजीहौ य
भोसुजसरसीलौ १० जेजेरसिक
उपासकतिनकीपदरजसलक

धरौ॥ इनिकी कृपा सु दृष्टि किसा
र की तिन के लिन्हि यौ॥ सेई नि
र मिकन मोल लियौ॥ अपनो जन नि
दे के पायो निज पद स्याम कीयौ॥
वेचि दियो संसार हिं॥ धुव नौ भी बन
धाम दियो॥ अधन कौं धन्य करि डा
क्रि सौ रौ सुजस सहि गाई जियौ॥२॥
इती सार्थ टिका संपूर्ण॥ समाप्त
॥ सवत सतन सुं बीनती मिटी॥ इह ग्रं
थ लीयो पोथी॥ जो देख्यो लिख्यो सु मदो॥ से
मम दोस न दीजिये॥ मलसहौ॥ श्री पर्मात्माय
नमः॥ अथ छप्पय सवद लिख्यते॥ दोहा॥ सीस
नवांउ गुर चरन॥ तुलि बिन उ सब साध नि
रंकार की भक्ति में सो भेउ भिन्न गाथ॥१॥
॥ चौपई॥ निरंकार शरणागति तिन कीजे
रसनां राम नाम गुन लीजे॥ करजब द
इ प्रम टेरा॥ नांम कबीर करै हरि सेवा॥
गोरख जरथरी गोपी चंदा॥ धू प्रहलाद
सकल जन बंदा॥ पीपा धनां सैन रैदासा॥
मो जा सोम मुनौ हरदासा॥ सब करि

पाईहोजोपाता तौकोजेसुषकथा
वषानौ अपनामक्तिनाहिकुछुसे
सौ कहीजाइजैसेतैसौ उनकं
कोजोअगमाहोई जनककछुकार।
जैसोई सुषकोजनमपानकोसाथ।
कोबनकुतिझुमयनहाथा दितदेउ
नैं संतुस्त्रागा ऊनकमनामेतनस।
गा सुषकलेमजाहिदेमहरौ सुषको
कथासुनेसुषमहरौ दे उरसमहो
सुषको कहतजागमुषपाए येमगेम
तबहरिके सुनौसकलचितलाइ यो
मई हामपरजेतिजैसेनिमामामार।
उरकेबसकामा बुद्धबसदिढाउ
नसमार ब्यासपसिषिरानघनम्राग
र ८ चालेबेदसंपूरणबषानैं षटह
सास्त्रबटजनजानैं तेब्याकरनकहै
सुनिगतौ उरानत्पठारहकेपुरा
तौरै होमारषोरहैबदमासा ...
यपानसबतुरवेश्रासा सुमेरसोहै
मन्येन कहैऐवतारकैसनटीमाथंन

८॥ बुध सहस्र आवधरोनै॥ सुकृतनज
न्है कुरमानै॥ तयमी सुरगात जैन
सुरवासी तौ पै नहीं कास॥११॥ बाम
न बिनु धिसुखयनं॥ चिता अधिक
कविनां॥ रहै उदास रैनि दिन जासी॥ पवि
धरव कै हितकारी॥१२॥ सब बुन श्रेष्ठ
कबिधि सकाम॥ कोन भिंतैं रहो उला
॥ गहै कौ धर्म ऊ बिन कै सो॥ विया पुर
नेयहै श्री है सो॥१३॥ करौ तपाव जा दुबन
स॥ पावौ पुत्र जौ हरि भ्यास॥ सा भौक
शैतप थ्यांन॥ हे देह बिहूनर ऊ ऊ समान॥
१४॥ बुध बियोग दसय कही पाय॥ करौ कष्ट
पजे सुत आय॥ चले व्यास तप सुत के का
ज॥ उटासं करी आसन साधे॥१५॥ दोहा
पहीत हितव्यास मुनि॥ तप बैठे सुत हेत॥ वे
दनारद रिषि॥ परि सम मिलि कैहै सकेत
१६॥ चौपई॥ सौनक रिषि नारद कै सूक्षे॥
कूजन चत्र दसक्षुजे॥ सहं सत्रु ठा
वीनती करही॥ नौ भगन मतै हि
डिही॥१७॥ नारद मानि लीया शिव बैना॥
नौ मस्रि व पेखै नां॥ जन मागर है सिव
अरछुता॥ तहां जाकुछ मा के सुता॥१८॥ त

[illegible]
[illegible]
[illegible] १९ [illegible]
[illegible]
[illegible]
२० [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] २२ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] २३ [illegible]
[illegible]
[illegible] २४ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] २५ [illegible]
[illegible]
[illegible]

प्रश्नहोदिदेवूनकेदेरा॥

चौ॰२६॥जगीसंसाषिनैंनपटखोले॥कार
नकौंनमहादेवबोले॥मैरेंउरभ्रमसंक्यान।
री॥तुम्हकृपालप्रभतपमारी॥२७॥ह्वंतौम
दातुम्हारीचेरी॥निसदिनरहूंचरननते
नेरी॥मोसूंकहौसोलिकपाला॥तुमगलि
काहेकीयमाला॥२८॥श्रीमहादेवनबा
तबईस्वरबोलेप्रतिगोरा॥अवलोयक्
तुमलीयौनबौरा॥अबयहहौछिकहोंमैं
झाई॥क्यूंनकहोकौंनेसमझाई॥२९॥प
र्वतीउवाच॥तबगौरांजूंह्यात्यूंकहीर
षनारदसौंप्रापतिभई॥उनहूंजोहोंतुमपे
पेआईश्रातानेदकहौसमझाई॥३०॥म
महादेवउवाच॥तबैछिगासिकैबोलेईस
रेधारबतीतेरेसीस॥बारअगोतरमारिमर
गई॥ताकीयहरूंडमालाभई॥३१॥दंडसु
तामनेसंसेनयो॥यहजोईसअमरंगोकहो
कूअमुईसगोनरिबार॥तुम्हनिहचलअस
कौंनअधार॥३२॥श्रीईस्वरोवाच॥हेमनि
श्चलनिहचलअग्याधार॥सेवैंग्रबिनासीन
क्रिसार॥अमरभुनिमैमेरोध्यांन॥जोरांतुम्ह
गहौनग्यांन॥३३॥मननहिचलकरिलोम
सीलाई॥छिनसंसापिछिनसी॥फिरिआई

[illegible] स्वकरि षुजमन निहच
ले होई जुरसमाधिसमाजा वैसो ईश्व
र ज्ञानगहतनिटै जिहथ्यांना चपल
मोमोकहै गियाना उतुमस्तहैमको
हिसमजा वै यहदेवजनिहचैल मेल
वे [illegible] जैमनलागैरकमौ कै
हीनईलउतस्ताइ पांचपचीमोंसूरमामि
सहजसमाधिसमाय ४६ [illegible]
[illegible] पांचपाचीसूंथिरिक्रूकीजे
मसिहरसुरगहराग तिदीजे जगवतध
रसजोगकीधरनी सोमोहिकहोगुनी
करनी ४७ हिमतनये मेवरि दै बिचारी
उलहांसु बुफैनारी सहजये सजुबिस
कुकेनाथा याकैदैके समतिषिहाथा ४८
तेंहतनचितेष्रमतबिचारी बटत्रकैसम
कुसमारी तस्कैपघीदृष्टिमाई सुवा
श्रमरसी जटतार्है ४९ तौवूस्तापक्हे
सिवसांनी गोरख नैहरषतषांनी जोग
जुगतिसुमिरकैमागा देषीसुनौमोजुग
मागा ५० सतमवनमनसाकुविचार सुर
तिसनैतैसरवरसार कायाकोतजिथ्यो
नलगावै प्रमहुतिमैप्राणसमावै ५१

साधनकहीसकसदकेरो॥मगनमेसाधि
नजिघरहेरो॥जवरतुमतहांवसिहैमोग
देवीतहांनआयेजौंग॥२४३॥तहांआगैदै
घरअविनासी॥विसोविलेवौकालनम
सी॥अजपाजपोसरसपावो॥आवाग
वनमिटैनितजावौ॥२४४॥सूतनसहरिसु
मिरणजामंरहौजासहिजगजगकेपाप
गोरंजांनप्रमसमाता॥२४५ दोहा॥इहांप
गंनमेगरजई॥उहांअनहदोपोषः॥जदप
नहिचेतनतयोंनजनदोनसतोष॥२४६॥
चोपई॥पंथीसमरहसुनेहरिगाथा॥हंसम
नैमोंनकेसाथा॥तवसिवकहौकेनपहै
आंनां॥वसिलिपितोयोमेरोपांनां॥वचन
नयांनकवोलेसिव॥पंथीउनिलेजागौजी
व॥रूपसोवांनांकीयोईस॥जांननपावेव
सुवालीस॥२४७॥ईसजदेसुवाकेपीछेन
गोरसुवाकनईछै॥पीछेसिवआगैसुव
गोघननाआसतहांतनलागो॥२४८॥संक
रासतजोतनसुवा॥उहांआसतमहरणा
हुवा॥विसहदीयोवरमागीआस॥भुरच
हिकोवरदीआस॥२४९॥तपकेजो॥ शिलो
योसुतआस॥

सकहौ कौं ही सुत देषौ ॥ जीवनजनम
फलकै हित लैसुं ॥ ४९ ॥ ग्यांन बिग्यांत्रिवु
लहि सोने ॥ देहि यसो सुत न आसव मो
जो मनवंछित सो सुत ॥ पायो ॥ आगवं
सो फोता स्त्रु यो ॥ ५० ॥ चेरे बदिय हि श्रायो
बाम ॥ सुवा सांन वसे गन वाम ॥ पिम सुष
कै पिड स्सतो यो ॥ प्रांन निरंतरै रमपीयो ॥ ५१ ॥
नमसमसाज सवा स्यो देवा ॥ अपनो जांनि श्रु
नीसेवा ॥ गजके दिन दूरया कैश्राई ॥ हरमत
बहुत पिता ग्रकमाई ॥ ५२ ॥ श्राजिककात
हिग्रुनम सुत होई ॥ श्रा वमातिकीगतिल
षेनकोई ॥ श्रवधि ॥ ठनं घिवसेगअनंत ॥ वही
श्रचरजनयो मवनकौं तूही ॥ ५३ ॥ सुमग्र
मनौ मन हरि सूत्वायो ॥ ध्रुफागातमाताकै ॥
पायो ॥ सिवतपदेसममकिकरिलीयो ॥ मत
उरजांनिमनिवटनको • यो ॥ ५४ ॥ सुमलोल ॥
हरिकैचूरनो ॥ नरमैवडतजनमस्रम
ना ॥ तातेतैनिरहेतौमाही ॥ जोरासुरितसु
हैनाही ॥ ५५ ॥ श्रावैश्रादिजगतडमश्रा ॥
श्रवनहीछाडौहरिसुषसागर ॥ श्रातिज
श्रवतैश्रंगा ॥ यौं बिनमिटैनमवको ॥
गा ॥ ५६ ॥ नमसमसुमरैनमलनसारवादम

रवानीकरैरुकारै।। याखिषिसुषगुनकं
तेरधमवै।। मातारुषापितारुषगावै।।५७।
सवकौसोचयहैमनरहै।। गुनवोजमाता
कुसहै।। सुमृतकथासुनावैब्यास।।पिय
धरामित्रिवैठपास।।५८।।सीतापरदेपोगसु
गैसुषदेवश्रोता।।हिंकाजैनै कंचनजाल
केश्रदरजैसैं।।सुमृतेंगपांनलीयोसुषतेसें।
५९।। नलैबासमकंहैसुषग्यानी।। लवकहैं।
नरहैसवग्यांनी।। सुमिरनकथाप्रमरसलीना
रंकारसोंसुषलेलीना।।६०।।दोहा।। वषगाद
सवीतागई।। वसमंसाभिसमाई।। भिमगोमसुष
रसपावै।। रहैवसलौलाइ।।६१।।चोपई।। ब्राह
रिसुष निकसनकौनांही।। मातापिताजैसैं
तसपावैहि।। कौनउपाइदरसुतदैसैं।।६२।।पैंहि
सुयहजनमसुफलकहितेमैं।। चातेक्रारजविघ्नकेप
गौमयूसोचैब्यास।। विघ्नकायोक्रादरविषसेती।।५किंमर
स।। विघ्नकायोत्रादरविषमेती।। श्रगहैसुवहैउष
ञायेससकैयती।।६३।। महासंतघ
मैनकाहिरहौत्रकाई।। मनामावकहतेसो।।६४।।ब्र
रकैरो।। सुनौब्यासमनामावचनवंसव
विघ्नमहैस्वरञाये।। सुषमूरचनवेका। काहे
... ककत्माको निजसुषदेकें

बांनी झरैमैनष्ट ।। तनाऊरपांनी मु
नौतत्रबीन । तीहूंमारी ।। आक्रकलमात
डषीउम्हारा ।। २१ ।। रूदनबिनापकर
तज्ञैनमेतौ ।। बालकजननीकैसिंग
षेतौ सुनैषतजौमाताडषदीजै ।। धर्मे
नफलैश्रूरनिरकपरीजै ।। २२ ।।
।। मातापितातजेभैकेते
चौरासीमछिमायतेते ।। जिहजिहजोन
यमहूंआयौ ।। ताहीताकौउत्रकहाहौ
२३ ।। कौणकौणमाताआराधूं ।। किसकूं
तजौमोहकिसबांधूं ।। वारपारकहूंन
केवू ।। सुनौव्यासबोलैसुषदेव ।। २४ ।। आ
रिषांनिफिरतैंडषपायौ ।। जमैंत्रमतते
रैआयौ ।। तातेंतुम्रबकहैमतमेरौ ।। सुन
रुनचौरासीकौफेरौ ।। २५ ।। कीटजनम
दसबादरतीसा ।। नक्रलचतुदसजोनि
पईसा ।। पंषबारसतत्रमांझ्यायौ ।। स्या
करस्यांनसिंघतनपायौ ।। २६ ।। मगमज
स्यालकेईबाग ।। गोडरोझसाबरअव
।र ।। संषासेहदेहमेपाई ।। सैंडाजरष
वजसुरगाई ।। २७ ।। भरआस्वरैकंजर
नेजयौ ।। अजमेषावृषमहिषापयौ

अरु गैगरभ्रपडुमत्रथकाई ॥ जातजीवे
षालचरकहतनआई ॥ ९९ ॥ चोवरम
यो स्वांनकेकोंना ॥ स्तनोंमासडुमक
हीं बिषांनां ॥ कस्वांनकोंतहांमेपायो
ह जेस्वांनदानतरिदीयो ॥ ८९ ॥ नरसत
रसतनरसतेहिंतहिमुद्रो ॥ फुनिअवत
रलीप्रजे कुंद्री ॥ जोवलीकैतनदीयोव
सा ॥ सोडुमकहं अवडुमपासा ॥ ९० ॥
नयोमूधमछेलागो मानां ॥ तवलनमो
कोंपकरयो हाथा ॥ मीडतमीकतलोरे
हाडे ॥ अजंकु मोहिं मायगोराफा ॥ ९१ ॥ भी
तरिमारडुमतकरिमासो ॥ पीछेअस
लापरमासो ॥ जेरस [illegible] रनजेनदीप्र
नी ॥ दरिथडुमकामुंडीकहांनी ॥ ९२ ॥ न
नाजो निनटकतफिसो ॥ औरस्रनोजु
हिडुमकृपसो ॥ अभिवनसंकारनमे
पात ॥ जमडुतनषेंचोतहां गात ॥ ९३ ॥ दी
नी कोंवहतरंको भारा ॥ जमदारपडचो
केवारा ॥ तहांमासनांवडेविछिपाई
सोहं डुमभेंकहोंभ्रनांई ॥ ९४ ॥ जलते
यं जलगाहसटेसो ॥ अनअगाहसोमो
हिफिरयो ॥ तातेलिलपकडि जमपावे

देजेगञागनिञादिमोहिञावे ९५
कबहूसुरगलोकमैंपायो फुनिनरदे
कीतउगनकैञायो ॥ विविधिमोति
देखेउबजबपुल सुरगरसातलनमे
ल्तल ९६ कबहूसुरगनरकगयो
कबहू तेउबमोहिलामततेञबहू
नातैञबबंधनहीमोह तजौसामसु
नकोञबदेह ९७ दोहा छूकादीपाय
नउफिरयो नानाविधिञवतार मे
यूञनंतमातापिता नजौनसिरजन
हार ९८ [illegible] सि
रजनहारमजौसुबञावो घरहीबेग
धर्मवलावो ॥ सुखबंसतमकजपावो
जागबहेतुममरहञायो ९९ भावरबे
दबटसासबगानी नौनाकरनञग
रहेउगंन ॥ ञाश्रमधर्मसकलजानै
विद्यापावञनंतबषानै १०० [illegible]
[illegible] ञाश्रमधर्मकूर
मनहीछूटे बेदपुरानजगतबितछूटे
विद्यामकोकरैजेध्यास तुमकूंबंधो
मोहकीपास [illegible] ध्यास
कहैसुनिसुतबमदेव ॥ बटकमधर्मञा

आदिहैएह॥ हमउमसिलनजैजगनौ
था। मातापितानछिंडोहोसाथ्या॥२५॥
[illegible]॥सुनकैबासमंगकै।
गाती॥ कोआयोकोजीहैसाथ्या॥आदि
अंतजीरुएकापक॥ जैआयेसंगयेद्वै अ
रुबहुलाकूइपायसु॥२७॥ आगीछिम॥आग
हेनमरवाग्निगा॥गतलबसिहरुबिखाम
इ॥मटकैनसापिपलगयेअगनता॥२
नारवाजसेनगनोअरजन॥ छरबासा
जमदगनगयनत॥ सांडीलौबनिकल
बुलो॥ कहापबुलह्लोजातितनहीद्दहां॥
प॥कसिबगएगयेगदसंजोति॥सहैस
गसीगयेजहोत्ति रुजाथंधमारसेगये
बुधिउग्रकूरबहे॥२९॥ दमथरांमलव
मगजैसे॥नयछिनीपकीआगीर्थजैमे
गयेडगरावनीलहसारत॥गजभगाधि॥
अगदउअंनेता॥हरनकसिवरांवण
कुंभेणा॥यधीजीनकरावहुधेणा॥ अद
सकंपनकालहिसायै॥ ३०॥अनेतनर
अनेनबिलाय॥३०॥ असैपालढिगररर
३ जौधन॥ अगलौगयेकथकहार्भिनर
[illegible]कहेनयलेद्वनिवासा

हांपक्षेरे बिलषैबचनकर्णनडमारेबो।
लैध्यासमुनैसुरराई सुतउतपनसबक
थासुनाई २८ तुपदीरघटेकीयेत्याग
हो कछुजलीयो वैराग मोहीजायनटासै।
टेरे उग्रतपंकरीसोहै २९ दोहा ध्यास
कहीसुरपतसों सुसतपबिक्षबोहार
हंसुतउमपिरिराजके सोकछुकरैबि
चार ३० चौपई तबसुरपतिमनिचित।
नई अपछराबडीबुलायरतई सुषक
रथाकहीसैंध्यास जायकरोवाकोतपन।
स ३१ कहौंबसपतसुनिसुरराई सुष
कूमायालिपैनकाई उनमतहीकीयो
कौतलियोने तबरंभाकरिउगीमान।
३२ पाऊंरूपसबकाकोत तोरिषमे
हमानकौन कौरातपसीमोसूंरहै।
रहूंतोकमेरंभाकहै ३३ तबसंदरअत।
सूरमतभयौ बीराकूकमचलनकूदीयौ
तषियनसीमहितौटउचालै अपनौअ
नांरूपसंवारे ३४ चलयकमोहनीकायो
सिंगार तबकाकौमनरहैरार यकसि
रनीरूपाधरपहरी माइपंचपद्मनीहरि
मैनाओरउरवसीसची दमसहंसत

कैंमंगिकठी॥मानुघटाछीजहांकोंधे
षिरूपछबिस्वरूपतिचौंधे॥रुधिचेचल
ष्टिचपलत्रतिबांनी॥तिनछबिचित
कनस्रकमधिपांनी॥स्वरूपतिकोंमनमें
हनहारा॥तिनत्रागेनुकहांगिमारी॥नु
धा॥पांचबांनलेस्वरगसूधाई॥पडूपबं
मानाधूरपतिबेगाई॥वमसन्नजटिनब
मांनरिहाजै॥सूरजकांतिवडोरछुराजे
रधा॥चंदकांतिछिवमिनगांग्रांनां॥रंजा
जोतिमशिद्यादसभांन॥रथरंजामिलिजो
तिवाई॥देमतदछिपाबैचवैजाई॥२४॥
चलित्राउरत्राई,बनमंजा॥लालमंद
गवजावेतरंजा॥देवमिवेरिसंमधुनिनिक
सी॥घंटाघोरकगोधुकंसी॥४०॥रूतिवस
तसुगावैंजा॥मोहेममहगमारतशंजा॥
सुकेंहेंहेंतरहुकें॥सीझेप्रेमसविरहेकेंजे
के॥४१॥तिमगीयोवंनमयोतजासा॥हादस
नांनमंजिप्रकासा॥चक्रकंनयेसकलिवन
तपसी॥त्रसांस्रदगुलजोतिनदरसी॥४२॥
सेवनगईमोहंनीतरतरा॥दिपिकपतपस
गयेगनिगनि॥सुधकेंत्रासनसवचलित्र
॥धानमंमाधिरहेंलोलाई॥थेत्रा॥कंता
ब

लीनन जाइ हौं सुमदेव सबसुनौं नहीं ज्यु
और हीरा सौ क्षइ [illegible] स्वाद
न स्रमजो सुमती शिष्याको रूपनिहारि ची
र चोर कहे मे मता जौ दुखनकरनहारि दं
सगवनमृलोचनी कटिके हरसबनाम
केठकपोतसबद पिक बटरसाकभिव
स ६१ [illegible] एकपसुकं
नीदिये बटपसुपकेवोर उल्मकबहन
आदैरं नारवेसओर ६२ [illegible]
जेनरनीटै नारिकूं करहिनरंगरसरुथ
स्वादनसमझैभोगका तिनकोजनमअकं
थ [illegible] सुषकहेंनाम
नो लोपसपबाधनि ग्यांनमुक्तिमारगतजे
नरकरयो तिहिसंनि [illegible]
चोवचंदनमृगमद बमलेरसकपूर कवू
तलैनभरकनकछिब मधुकरमवेहदूर
६५ चंदवदनकुडलन्यूक्ने नकबेसलग
तार मोत्याजौंगहरै जानौबोमसिगार ६६
[illegible] सुषकहेंनासुनौ ब
सूयनकेतुमगांन तहानकछुतमहारेच
ले जहांजोगासिधग्यांन ६७ [illegible]
नहीं उद्धारे जोगीजती तपीरषीसुरकोई
पकरेकारेबसिपलकमे सुमतेमुनेनसो

रा॥६८॥ श्री सुषदेव उवाच ॥ सुष कहै मैं
तुनौ ॥ वेनति श्रवन राग ॥ हंस सौं तुम मन गौ
हि करत ॥ सैचा लौ वैराग ॥६९॥ राजा जनक उवा
॥ सुषस्त्रिष्टि उतपन जहां ॥ मांचै तत सषी च
र ॥ मीन्हा मैं मा कहै ॥ धरै कौई धीर ॥७०॥
श्री सुषदेव उवाच ॥ सुषस्त्रिष्टि मैं हंस मन
ही ॥ नां हंस तत बंधन ॥ न्ह मन ग्रागौ चरगा
मन ही ॥ तहां हंस मा राषां गा ॥७१॥ राजा जनक उ
सु निसु षमू लौ हरि लौं ॥ सौ मन कर करौ निज ॥
सा ॥ मंषीन है आकास दिस त्रं तिधर ती कौ
पास ॥७२॥ श्री सुषदेव उवाच ॥ सह कामी ॥
आवै सदा ॥ निहकामी निज नेरा ॥ कन दूषौ ॥
उद्धक्रम सन न षै ॥ वैरं मा कौ ईश्वरी ॥७३॥ राजा
मुत्रा चै ॥ करजौ रिता न ती कौ ॥ दै सुषदेव म
कं मां न ॥ नही तरपा छै जां नि हां ॥ जन धन
सायौ ग्यान ॥ मैरै दल आ मैं भ्रु है मु लिसुध मां
सर ॥ मत कजा रौं बजत मैं ॥ चैत रका धै मन
॥७४॥ बुधा बिस महै मते ॥ मान षूर जं
का ॥ सु चं कं धमं धीम हि वं दका ॥ बिन्ह
॥७५॥ श्री सुषदेव उवाच ॥ [illegible]
कुयर करौ नउ तन ... [illegible]
... ॥ नाहि कौ ... [illegible]

अधुमेतुंबितंमेतु ॥ बितेतुंमादबि
सदाराबितंतु ॥ धर्मेसु तुरीतव्यं ॥ १ ॥ सुध
राधोंबस्यंसः ॥ अधर्मोदसकेंधकं ॥ सेव
दतासितोकानां ॥ जतोधुमततोजयं ॥ य
रमसंबादधर्मकीवचो ॥ धर्मनधोमतस
र ॥ धेमदासन्नारंभकीयो ॥ सतगुरकैंमु
र ॥ ३ ॥ गुरगोबिंदप्रथपगक्षकें ॥ मतिश्रु
पांनध्यांनसश्रुपांक ॥ गुरप्रतापमनोहर
सा ॥ तिहिप्रतापध्यांनप्रकासा ॥ ४ ॥ सबसं
नकीअगममांगों ॥ करोदयाअबनमनल
गों ॥ सबतसत्रहसैसतहोत्र ॥ माघप्रथमपक्ष
है तिथिदिनोत्र ॥ ५ ॥ गुणप्रगटनभासमानाकें म
तिनमांनजीवसंजार्क ॥ कथाअगाधबु
श्री म्मंथोरा ॥ संपंधाज्ञाकामनकोरा ॥ ६ ॥ दाउ
रजतनिधिबिमातुजावें ॥ संत्रपतेजनतो
तनपावें ॥ संपटमैंपदुसीनसमावें ॥ कीराके
भुममेरनभ्रावें ॥ ७ ॥ सांवनछुंदधनैतरातांह
मनमुरिषकेसैगनेंगुसांई ॥ त्रैसामतिजोरा
हैमेरा ॥ वेभैकथंअगमगतितेरा ॥ ८ ॥ त्रमस्त्र
गाथेसीवक्रयांनां ॥ जनकीलकलितिजि
निधानं ॥ गुसकीमोरसिततहीकराये ॥ अंत
रकेहितहिरदेधरिये ॥ ९ ॥ साषी ॥ समझो

गुनतेमगुनछनेत्रतजांमीपा॥१४॥येभेद
समस्कृतिकहै॥ भुकतौंहुराजा॥१५
तापरसमैत्रतकीवा३॥पंकेहुतपांदूस
तसमही॥ इसलतांहुहीनगुत्रस्यांनं॥ भगट
परात्मवासतमांनें॥१४॥ जुतेराजत्रुयेष्टर
वारी॥ जोरसहैत्रगपाकारी॥ चापरमा
येआयकतिरीजेपदजाइहिवारैसीजे
२थोराजघ्राक्षतकू जवद्यो॥ कलिजुगत
हंपयांनोकायो॥ ताकेवंसमांहिरकपयांनी
जनमेदाराजाप्रवांनी॥१३॥ दयावंतत्रस्य
दातानीसकलसुखीसुधरमजीवकौ॥ त्र
सकारहैक्रुरसेती॥ कछाप्रकासकरकु
प्रभुयेती॥१४॥ यकलनरदेहजीवजोपावे कैं
तनधरमप्रमैसंचरजावै॥ याकलिमैंकैसैक
रिरहियै॥ दयावंतप्रह्लकैकहियै॥ तेसपाय
नेत्राच॥ मुनिराजानृकैतनकेमुन॥ यामैं
सुगतियामुनि॥ यामैक्रूरमधरमत्रनिया
मैं॥ यामैंत्रसथावरयामैंजांमैं॥१६॥ यामैपाप
निवोहरै॥ याहीमैचौरासीफिरै॥ याहीमेउ
पगारकमावै॥ याहीतनमैधर्मनसावै॥१८
चौरासीलषजीवजंतमैमै॥ मनवकैटोकेय
कमनमातन॥ जैसिमिलियामटैत्रुमनचेदनें

मन नपुंसक नन पीकै । ईश्वर तत समान ।
ई कछुं बरनन छू चाहिबताई । ईश्वर सी
कु थक मो मैं तो हूं । जो मन न मरन दे थके
सोहं । यकै जुगत तपांवन हारा । कौंन न
दीसै कौंहू विचारा । [illegible] सकल
लोक उतपतन कै तिन बहू दे षहू चितन घट घ
मन सों मन मरन । चाहिबरन कत ने दू
[illegible] करसो गंध बगो ।
छोगन स्वान सिंघ हंसो सम मिवा भृतल स
बकी पेखुतै नहीं कोई । जीवसीव ऐसें त
र होई । [illegible] ज्यू है जो मै
जलतें जलतरंगा । ज्यु टि को ब कदी से फेन
गा । उनि जल मिले अंतर नाही । जीवसी
व सम सो मन माही । ११ । जैसे हाटक के भू
षन कीजे । कंकन पाइल अगम धरीजे चं
दी हिकं गरे पुं वांनी । सब घट जीव समर वे वू
जानी । १२ । कर्म क्रिम सबको नांव धराये
कंचन मल र कौ नांउ आये । नौ वन्हम
वहांनै नहो । लोनतें तकों मोरे मयो
१२ । स्रुपा बिस्र यों अंतर नाही । सब सुमिरै
हरि मांहि समांही । छोडे कर मक्के रेहरि
जगती । नांव अतीत जातिन ही जगती ।

७३॥ जंत्र मंत्र ठगनि का जु निरजा॥ पार
सहि ति तिन कको डाजा॥ मंत्र तानकी
जाति न पाती॥ दया मोहि किति त्रं तरजू
ती॥७४॥ निंदा करै सुनै जे कोई॥ कूतघ
नी रुन सोगी होई॥ अंतर करत हस मस
मो ज्ञाती॥ रमत सकल को सुपच संघाती॥
७५॥ जैसे ज्या त्रस है द्वै रांनां॥ सुझत हो
न विप्र सो जानी॥ ब्याज बन जत्रम सो कस
कमांवै॥ सुपच नांम सो ई द्विज पावै॥७६॥
नंग नगै मैनू प ज्ञाण कारी॥ साधन को नि
दा तु रधारी॥ ज्ञान सुहार शिव गतन को
मेटै॥ सो द्विज सुपच सुपच हो मेटै॥७७॥
दान करे मन लेई महन सिस्या॥ अभ्सम टतक
यरि भोजन तरंस्या॥ सत्र धरै जीव दया न आ
वै॥ सो विप्र चांडाल कहावै॥७८॥ मांस न षे
श्रम मट स्हे तेला॥ बन मे करै ग्यानि का मे
ला॥ गऊ बछा कूं देइ विछोई॥ सो नर चांडा
ल जनि सो ई॥७९॥ गुर द्रोही गुरु निंदा
करै॥ गुरकी सेव विमुख है मरै॥ गुरका नि
दि सुनै अरु लाई॥ चंडाल सो नरक जाई॥
८०॥ कंनां की ज्ञाती लेई॥

ऊताई ॥ ११० ॥ धरमरत्नजिहसहितसहा
ई ॥ भगतिरत्नजिहमनलेषुताई ॥ सू
रवीरकोटदेखेदानं ॥ सूरिजिलंगसूजि
जैजान ॥ १११ ॥ जोघरिआदेहरिध्याना
हितआदरकोजैध्यानी ॥ भोजनमानुधी
तिसोयोमूजादश्रतीतनिरामादेह ॥ ११
२ ॥ साषी ॥ तीरथबरतअनेकविधि मन
नजानिआचार ॥ सतगुरनावश्रतीत
बनन्हफलसबसंसार ॥ ११३ ॥ चरचाम
निचांमानलको ॥ नृपरहीनचोकरामल
षमदासमुरतानये ॥ बाकगयोसबदूर
लि ॥ ११४ ॥ तोमूल्योबाकबृलीनताछ
केलाहरिकीयोलबराजा ॥ जितीक
नपजीमनआसं ॥ सं ॥ पूछनचालोस
बदनसंकु ॥ ११५ ॥ जाकोस
लतिनभोजन ॥ कथआरमजेकरि
सेवा ॥ जदिपश्रौरावाविश्रतीता ॥ के
सेश्राउरकोजैमीता ॥ श्र
रिनकाबिदरांमनवेरं ॥ कंदमूलफल
दलनेहरं ॥ तपानभोजनसीतलिनेदे ॥ र
ाश्रासनदमीठेबेनं ॥ ११६ ॥ श्रतीतोघ
रेतसंटत ॥ श्रायेभोजनकरैनिचेत ॥

६
रैकथीयेसुंसास्त्रांनि॥ श्रेनसासमोन
कैनजांनि॥९६॥ बिमुखनीनजाहि य
गृहवास॥ दृष्टापिसुरायानिहास॥ कि
टिसेवा बिनमेजदे॥ हत्याब्रह्मनगोघ
देपदे॥९७॥ देवाश्चानश्रूसजगकै
कोमनमैहसुरघरउकेमरे॥ जोरश्रू
नीतनतरयतैकोई॥ रचाग्रामसबन्
फलहोई॥१०३॥ चोरकंमानसतरपत
मानी॥ नयोश्रतीलस्यामनइरकानी॥
मदेवजंकोजेसेव॥ नांमश्रुतीनश्रो
गुरदेव॥१०४॥ गाडोरुक्तादे॥ कथन
नाधरमकसांई॥ किनसूरतनकाधे
रहिगांई॥ अस्थोपापाबाटेकिहसें
विनसेधरमतामि॥ किहिकरमा॥१०
धेमानतेरुवा॥ धरमसतितेतनबतिज म
मा प्रवरतानजनपालीदीया॥ किमा
नति अस्थोपाधरम॥ बिनसाता
गिन्नोधकरमा॥१०६॥ दयाबिहर
कष्टिरे ज्ञानं॥ जैसेसमततबिनीया
जांनं॥ दयाबिहूनासुमिरनकरे॥
सेधरमकरंमअग्रनसये॥१०७॥ अम
महारपांडकेपोथे॥ धरमकरं

नदीनीरज्यूंसमदसमायघ। पापहोमग
ताकोमायघ। जौरविज्ञासगरहकोई
मंत्रमहातेमुधरमोई ॥१५२॥ चक्रकी
कल्यांनदसजैसे। दसचक्रीरोकोधुत्र
तैसे। दसधुजबेल्यांसमीवरछांनी। दस
वल्यांराजासमिजांनी ॥१५३॥ त्रिवषाप
टलकीयोजबगरवही। संकामांनज्ञ
येनपतवही। इतनीसुनतगयेद्विजना
ठ। बिसरगयेसबदननेपाठ ॥१५४॥ साथै व
पाठबिसरिगयेसबदननके। गयेमट्ट
किदिजधनमबाकसुनेचंमांतके। दं
वकरहीनमांम ॥१५५॥ द्विप्रजाइस्नप
नेघरिवैसे। मांनमलीनराजाकोत्रास
चिंतामानजयेनपनारी। क्रोधवतहै
बातउचारी ॥१५६॥ जांगद्विधांनकोयेस
नयेता ऋबेद्विप्रगयेगृहजेता। सरबा
सरबगईद्विसमेरी। किहिपूजंद्विप्र
नमतिफेरी ॥१५७॥ मातंगोंज्ञायेमति
हीनो। वृथाजगद्विधसनकीनो। ज्ञा
नतनछितरोज्ञापी। कौनकौकरमध
मततिजिपापी ॥१५८॥ वेदमतज्ञसरजात
मैजाइ। ऋज्ञपसरबोलोबांनी तब

कष्टो गति मति नही जानी ॥१५०॥ पा
पसेती श्री धोम सहारै ॥ हत्या की नही ज
गवटारै ॥ हाटस वरस में जोगु सेवा सो
पल कमाहि न फल न कहि नासो [illegible]
॥ ज्ञान तोग लच ॥ हमन होपापे छे ज्ञान
प्रानी ॥ श्री रसनै कजगत मे जानी ॥ पंथ
बाट कै लाट वलावै ॥ निहचै सो पापेष्ट न
होवै ॥ १५१ ॥ पक्षी सों करै मने हा ॥ विर
थ्या वत मनावै देहा ॥ कोर कै मकै का
रज करै ॥ सो पापेष्ट नरक मे परै ॥ १५२ ॥
प्रथाती लेय रमे धरै ॥ कीन ना रिकें द
वहै लहै ॥ स्वारथ के ले जी वृषवाढ़ै न
हवै सो पापिष्ट कहावै ॥ १५३ ॥ जो कोऊ क
रिक सी कानी का ॥ सो श्रेणन फिरि प्रि
नवै जी का ॥ हातयनी सवही सनमोहै
सो पापिष्ट होउ विषवोवे ॥ १५४ वेन न
हेसाका रिजकोई ॥ वाकी जंतनि मा
रै लोई ॥ घातक विसासी मृहरिब प्रांन ॥ सो
पापेष्ट हरकती जांन १५५ ॥ अनरेतरे
नमृती उचारे ॥ अवनामाम नरको [illegible]
वारै ॥ ज्ञांति मृतावै कै रे ओरै ता ॥
पनष्टी पापल रेना ॥ १५६ ॥

सुकलपटंजन तेलतमोलतालकोम
जेन संग्रेहकैनकथ्याजूवती सोपा
पेषकहावैजती १५७ क्रमित्रराटयमोज
नकथनां ञ्रनछामाजनलीलरमथ
नां संग्रहकैञ्रतीमेरती सोपापेषक
हावैजती १५८ रूपनमाक्षेमघनबिच
रे बामीञ्रनमकैञ्रहारे संग्रहेकै
ञ्रनमेमासारे सोखर वकपापिष्टा
लार १५९ लोटतवरलञ्रनमठनपा
नी कारिजककछाकरतेञांनी रती
गोरहरियादिनकैरे सोपापेष्टलाल
प्रहरे १६० जेसादेघातैसाकहा खार
पतजिप्रमाथेगहा मतिबचनजोबोले
बोजा ताकूंदोसनदोजोराजा १६१ सा
धी जातिमातिबलराजको तजिहरहे
ञ्रभिमान बुरदयातबतमजी तनि
येञ्रात्मज्ञान १६२ उमनमेर
वटेवसुनिदेवा व्याजञलोउमसेवा
उमहरमनसुंसुफलउसांई निरनित
मगञ्रवेहहिसांई १६३ मेराम्नजाञ्रर
चाग्रांधे हीञ्रतीतहारन्नुमसाधे
किनांगहरगाबिहनहेस केवलान

रह गिबसैमं॥२६४॥धरम मतउबाच॥सतिक
रू सतिहीत मन नहीयो॥सात्र सरब छिमा
रदक हीयो॥अहं पिता तुम तत्र हंमारो॥तुध
रब्रगट जग साहै॥२६५॥साध साध तुम न
हाप्र संगी॥जहां जनम तुम्हारो धनि मंय
धेनि मात पिता कुल वंसं॥जा घर तुम रवि
रह वैसं॥२६६॥राजा ब्याच॥जनम सुफल
द वकों कौ आजं॥आजि सुफल कीं नयो
मम राजं॥पिता हमारो आयो गृह॥दरस नव
यो सुफल दिन ये हो॥२६७॥धरम मतउब्याच॥
साध साध सुत तुं चैरंजीव॥सति तुम्हारो स
जम सारा॥सति तुम्हारो अरथ तजहां तु
राज सतिन बोलहां॥२६८॥अ चरन देव
लोक में नईया॥सुनि करि वाक धरम की
दीया॥देव लोको धरम सिधारे॥मन वुत्र
चिरंजीव हंम्हारे॥२६९॥धरम सुहिने ते मा
सछिकां॥धरंम सुहिने ते गृह अमरां ध
रम सुहिने ते असे सत्रं॥धरम सुहिने ते रिप
केअत्रं॥२७०॥धरम संबाद सुने जे लोई॥
अठसठ तीरथ को फल होई॥धरम संबाद
सुने चित लाई॥छिन क निपाप स काया ते
जाई॥२७१॥धरमसं

ाकी सोनाम गिरिराजै धरमसबादसु
नि सुष होवै ब्रह्मिपापनीदनरिसोवै १७२
धरमसबादसुवसिकरितुनीये आत्त
सबाहिसुथिर्हिप्रतहनीये धरमसंबाद
तनिफलसारी जिसकीरतिकोजोकु
नकारी १७३ धरमसबादसुनिदेकानं
ताअजनमयाजगदांनं धरमसंबाद
तनिकरिप्रीतं मानौजेहिमत्रमीतं १
७४ यहुफलधरमसबादकौ मनबचक्र
नतरक्षार षकतासुरताजुगलनकी लै
बितामीबार १७५ मतिजानौसंष्यामई
नैषपराङ्गटल षेमदासबजोमै येहीन
ड़ीसुफल

साषी जै

कहागपमे तैसीचालेचालनरे
नकहैसुसालीजाषे नलाहोरततकाव

सतनामा। संपूरणमहातमैकी दया। कालीस साहिबकी
दया। सकलवसंतमहंतनकी दया। अथसमीहाप्रेम
लिषते। सालमीकोज्ञान। हे साध उहजो बचन है
सो परमपावन है इसकै व्याख्या के करते हैं इन
बिषै प्रीति श्रद्धा की तब उपजती है जब के

पुनरुक्त तेजस्वीओं के अज्ञानरूप कष्ट होते हैं। जैसे कल्प
तरब्रिछकों बहुत फल लगते हैं। तैसे जिसके पुनःक
र्म्यरूप कष्ट अज्ञान होते हैं। तिनकों प्रीती अज्ञान्यविषे
होती है। अरु जिसकों अज्ञान्यप्राप्ति होता है। अन
थ्यानहीं ऐसे होता। इहकथन श्रमबोधका कारण्य
है।१। एकसमै स्वपंडसे श्लोक कहे वैराग्य करण्याके।
हे रामराजस्म सकास नाईजो कह्या। तब विश्वा
मीत बोले।। विश्वामित्रउवाच।। हे रामनां मो विषे
श्रेष्ठ रामजी। जो कछु ज्ञान ते जो गयाथा सो तुमजानि
या है। अब इसते ज्ञान यान नहीं रह्या। पर तिसविषे वि
श्राम पावणे के निमित्त कछु मार्जन करया है। जै
से धनआदि मैं विषे कछु मल नाहीं है। उसकों दू
र करी है तो शुभ सम प्रमाण ताहै। तैसे कछु ज्ञा
न सकी उक्तकों अपेक्षा है। हे रामजी उक्त जैसा इस
भारद्वाज विश्वामित्रजी का पुत्र सुकजी होत भया है। तिस
नी बहुत बुधवान था। जो कछु ज्ञानणे जो गयाथा। सो ति
सने जानि लियाथा। पर विश्रामके निमित्त उसकों नी
अपेक्षा थी। ऐसी विश्रामकों पाय करी। सो तिहां न
हुवा।। रामोवाच।। हे भगवन् सुकजी के सानुध वान
अरु ज्ञान गयाथा। अरु कैसे विश्रामकों अपेक्षा
सकोंथी। अरु कैसे विश्रामकों पावत भया सो कृ
पाकरि कहो।। विश्वामित्रोवाच।। हे रामजी अंजन के

पर्बतकी कंदराजिसका आकार है ऐसे स्थानमें भगव
न ब्यासदेवजी स्वर्णके सिंघासन परि बिराजमा
न हैं राजा दसरथके पास बैठे हैं अरु सूरजकी नां
ई जिसका प्रकास जिसकी कांति है तिसका पुत्र सुक
जी था अरु सरबसास्त्रका बेत्ता था मतिकों
मतिजाण्यवां अरु अमतिकों अमतिजाणिये
था जो आत्मा सांतरूप है परमानंदरूप है अबि
द्यामें सन पावत भया तब उसकों बिकलप उठि
या जो जिसकों मैं जाण्या है सो न होवैगा काहेतें जो
सुखकों आनंद नहीं भासता है रामजी इस संसेकों
पाइकरिकै ककालेमों ब्यासजी सुमेरपरबतकी
कंदरा बिषे बैठे थे तिनके निकटि आया अरु कह
हे कहत भया हे भगवन इह संसार अडंबर कहांसे
उपज्या है अरु निरवृति कैसे होवैगा अरु आगे
किसका निरवृति हुवा है अरु कैसे निरवृते हो
वाहै सो कहो हे रामजी जब इसप्रकार सुकजी क
हा तब बिदतबेद जो ब्यासजी हैं सो ततका उपदे
सु करत भये तब सुकजी कहा हे भगवनजो कछु मैं
कहा सो तो मैं आगे ही जानता हूं इसकरि सुखकों
सांत नहीं प्राप्त होती हे रामजी इसप्रकार सुकजी
कहा तब सर्वग्य जो ब्यासदेवजी हैं सो बिचारतभ
याजी मेरे बचनों करिकै सांत न प्राप्त होवैगा काहे

जो घड़ा है तो घट ही रहै ऐसे जेष्टी वृत्तांत कह्या

ते जो इसकौं पिता उनकां सनबंध नासता है ऐसे
विचार करिके कहत भया। है पुत्र मैं भी तिस तत
तत्त्व नहीं जानता तातें तूं जा जनक के निकटि गइ वनक
रु बक्तम वितलतू है। ऐसे सुनि तब आमोंहो तिस
सौं तेरा मोह निवृत्त होजावैगा है रामजी जब इ
स प्रकार व्यासदेवजी कह्या तब शुकजी तहां सौं
चल्या तब विदेह नाम जो मिथिला नगर था राजा
जनक का तिस विषे आया। आइ करि राजा के उ
दास स्थित भया। तब जे सटी कौं जाइ करि कह
जो व्यासदेव का पुत्र शुकजी आया खडा है तब रा
जा जानत भया। जो जिज्ञासा लेइ सकौं तब कहा
तब सप्त दिन खडे रहे। बिदा तब भये तब राजे बकहि
हा जो शुकजी खडा है तब राजे कहा आवते आ
वौ तब आया ते आया। अरु ड्योढी विषे सप्त दिन रि
हे तब भये। तब फेरि राजे इष्टा शुकजी था जे सटी कह
खडा है तब राजे कहा अंतह पुर विषे ले जावह
अरु तिस कौं सुंदर भोग भोगावो। तब अंतहपुर के
इस्त्री प्रसंग विषे सप्त दिन रहा तब राजे इष्टा अरु
तिसकी क्या दिसा है। अरु स्थाये क्या दिसा थी। इनो
कहा न आया निरादर करि सोक दीन स्थाये अरु स
नमान करिके अमन होता है। इस अनिष्ट विषे प्र
सनमान है जैसे मंद पवन करि

अथवा आया है तब जे षीक सा खडा है

न नहीं होता ॥ तैसें ब्रह्म है सो जगत करि अरु मि
टर करि विकार मान नहीं होता ॥ जैसें पपीहे कौं
मेघ के जल बिन नदीयों के जल की इछा नहीं हो
ती ॥ तैसें उत्तम कौं अवर किसी पदार्थ की इछा
नहीं ॥ तब राजे कहा इहतौ आश्चर्य है ॥ जब सुक
जी आया ॥ तब राजा जनक उठि खडा हुआ अ
र्घ्य पूजन कीया अरु ऊंचे बैठाये ॥ तब राजे क
हा हे प्रभु मोक्ष रूप आप किस निमित्त आये हो तुम कौं
क्या मांगता है ॥ जो कछु मांग्या है सो कहो ॥ अ
रु तिस कौं प्राप्त जाऊं ॥ सुकजी कहा ॥ हे गुरो इह
संसार अरु चित्त कैसें उतपन्न भया है अरु कैसें सां
त होता है सो तुम कहो ॥ हे रामजी जब इस प्रकार
सुकजी कहा ॥ तब राजे जनक उपदेस कीया जैसा
सास्त्र जो कछु व्यासदेवजी कहा था सोई कहा ॥ त
ब बहुरि सुकजी कहा हे भगवन जो कछु तुमने
कहा है सोई पिताजी कहा था ॥ अरु सोई सास्त्र क
हते हैं अरु बिचार करि के मैं भी ऐसें जानता हों जो
इहि संसार चित्त के संकल्प बिषे उतपन्न होता है
अरु इसी सौं मुक्त कौं नहीं प्राप्त होता ॥ जनक उवाच ॥
हे मुनीस्वर जो कछु मैं कहा है अरु तूं जानता है इस
मतें उपरांत जानने जोग कछु नहीं ॥ अरु कहियाता ॥
अद्वैत कछु नहीं ॥ इह जगत चित्त के संवेदन करि

कैसा है जब चित फुरणे तें रहत होता है तब अम
नी मानि [illegible] द रत होजाता है अरु आत्मतत्त नि
त्य शुद्ध है अरु परमानंद स्वरूप है केवल चेतन
है तिस का अभ्यास करो तब तूं बिश्राम को पावेगा॥
अरु संपूर्ण स्वरूप है ता हेतें जो तेरा चित आत्म
की ओर है तिसका कोओर नहीं तातें तूं बनां उदार
आत्मा है हेतु नी अर अभ्यास तें अधिक आसिक
रिं मेरे पास आया है अरु तूं मेरे तें भी अधीक है
कै हेतें जो हमारी चेष्टा बाहज दृष्टि आवत है तुम
री बाहज चेष्टा भी नहीं दृष्टि आवती अरु अंतर
ई छप हमारी भी नहीं ट मारी भी नहीं है रामजी ज
ब इस प्रकार राजे जनक कहा तब सुकजी नि
मेक निरंजन अरु निर्मे हो करि चले सुमेरप
र्वत की कंदरा बिषे निरबिकल्प समाधि लगाई
दस हजार बर्ष निरबिकल्प समाधि स्थित रहे ब
हुडि निरबाण्य होगये जैसें स्नेह बिना दीपक
निरबाण्य होजाता है तैसें निरबाण्य होगये जैसें बुं
द बिषे बूंद लीन होजाती है तैसें लीन होगये जैसें
सूरज का प्रकास संध्याकाल में सूरज बिषे लीन हो
जाता है तैसें कलना रूपी कलंक कों त्याग करि
के ब्रह्मपद कों प्राप्त भये॥१॥ इति श्री मनो ब्रह्मप्रक
रणे सुक निर्बाण्य बरनन नाम म॥१॥ बिस्वा

हेराजासमर्थ॥जिसप्रकारशुकजीसुषबुधथेतैसे
रामजीहैं॥जैसेउसकौसंतकेनिमित्तकछुकमा
रजनकरतभिया॥तैसेरामजीकौबिश्रांमकेनि
मित्तकछुकमारजनकरतबहै॥काहेतेजोआ
वरनकरनेहारेभोगहैं॥सोतिनोंतेंईछादनकी
नरविरतभईहै॥अरुजोकछुजानत्योजोगथा
सोजानियाहै॥अबहमोंकरिकछुजुगतिकरी
हैतिसकरिकेउसकौबिश्रांमहोवैगा॥जैसेसुक
जीकोथोड़े·मारजनकरिकेसंतकीप्राप्तभईहै
तैसेउसकौभीप्राप्तहोवैगी॥हेराजनअबरामजी
कौंभोगोंकीईछासपर्सनहींकरती॥जैसेज्ञानवा
नकौंअध्यात्मआदिकदुषनहींस्पर्सकरते॥
तैसेरामजीकौंभोगोंकीईछानहींसपर्सकती॥भो
गोंकीईछासभकौदीनकरतीहै॥भोगोंकीईछाक
रणीइसीकानामबंधहै॥अरुभोगोंकीबासना
कोछेदकरणाइसीकानाममोक्षहै॥ज्योंज्योंभोगों
कीईछाक्षीताहैत्योंत्योंलघुहोताहै॥अरुज्योंज्यों
भोगोंकीबासनाछेदहोतीहै॥त्योंत्योंगरिष्टहोता
है॥जबलगहमकौंज्ञानप्रकासनहींहोता॥त
बलगबिषियोंकीबासनादूरनहींहोती॥जब
आत्मज्ञानप्राप्तहोताहै॥तबबिषैबासनाकोउ
नहींरहती॥जैसेमारुस्थलबिषैजलनहींउतपन्न
होती॥तैसेज्ञानवानकौंबिषैबासनानहींउतपति

होती॥ हे साधो ज्ञानवान जो बिषे भोगों का त्याग क
र्ता है सो किसी फल को धार कर नहीं कर्ता सुभाव
कही ज्ञानवान की बिषे वासना चलती रहती है॥
जैसे सूर्ज के उदे हुए से अंधकार का सुभाव ही अ
भाव हो जाता है सो रामजी को किसी भोग पदार्थ
की बांछा नहीं अरु बिदित बेद हुवा है परु बिश्र
म की अपेक्षा रहता है ताते मैं कहता हूं जो सो
ई कर्रहु जिस करि बिश्रामवान होवो हे राजन
रहु जो भगवान बसिष्ट हैं इनकी जुक्ति करि के सं
तवान होवेगा अरु आगे भी रघुबंस कुल के गु
रु हैं इनके उपदेस द्वारा आगे भी रघुबंसी ज्ञान
वान हुये हैं कैसे हैं भगवान बसिष्ठ जी जो सर्वग्य
हैं अरु साषी रूप हैं अरु त्रिकालज्ञ हैं अरु ज्ञान का सूर्य
हैं इनिका उपदेस करि रामजी आत्मपद को प्राप्ति होवे
गा हे बसिष्ठ जी जो हे ब्रह्माजी का उपदेस तुम्हारो स्मरण
बिषे कहो जो जब तुमारा हमारा बिरुध हुवा था
निषेद्ध अलप्रबृत बिषे॥ कैसे था निषेद्ध अलप्र
बृत जो है॥ सो सर्व कृष्ण स्वरो करि अरु भिक्षोक
रि पूरन था॥ निषेद्ध अलप्रबृत बिषे निराध पर्व
त है॥ निराधप्रबृत बिषे ब्रह्मा जी आइ करि संप
र बासना निरवृत के निमित उपदेस की याथा
अरु अबाद जे

देसको पाया ॥ अब दोही उपदेस रामजी कौं
उसकरहू ॥ एकतो अहनिरमलज्ञानकापात्र
है ॥ अरुज्ञानसौरहितहै ॥ बिगिज्ञानसौरहितहै
॥ अरुनीरमलसौरहितहै सुपात्रजो सुपात्रबि
षै अरु पश्च होवै ॥ अरु पात्र बिना नहीं सोभता
जिसबिषै सिषभावना होवै ॥ अरु बिर्कतता न
होवै ॥ ऐसा जो अपात्र उरप है तिसकौं उपदेस
करणा बिअरथ है ॥ अरु जो बिरक्त होवै ॥ अ
रु सिषभावना नहोवै ॥ तब मान करै दोनों क
रि संयुगति होवै तब करै ॥ पात्र बिना उपदेस बि
अर्थ है ॥ अरथ यह जो उपदेस भी अपवित्र होजा
ताहै ॥ जैसे गंगाका इस्थलं तपवित्र है ॥ परिश्वान
की उच्छा बिषै नारीये तो दूसमी अपवित्र होजाता
है ॥ तैसे अपात्र बिषै उपदेस करणा ॥ अपवित्र हो
ता है ॥ हे उत्तमीश्वर जो सिष बैराग करिके संपन
होता है ॥ अरु उदारता ताहै ॥ सो उसका उपदेस
कौजोगहै ॥ अरु उत्तम कैसे हो ॥ जो बीतरागहै अ
रु क्रोधतै रहित हो ॥ परमसांत रूप हो सो उसका उ
पदेसका इहपात्र है ॥ बाल्मीकजीबोले ॥ हे भारद्वा
ज जब इसप्रकार बिस्वामित्र कहा तब नारद अ
रु ब्यास आदिक कहते जो साधु साधु अरथ यह
जो भला कहा है ऐसे ही जथारथ है तब राजा दसर

रथ के पास बैठे प्रकास को॥ अरु जो बैठे थे ब्रह्माजी के
पुत्र वसिष्ठजी तिनों ने कहा। हे मुनीस्वर जो कछु तु
मों आग्या करी॥ सो हमों ने मानी ऐसा समर्थ कौन है
जो संतों की आग्या निवारन करे॥ हे साधो जेते राजा द
सरथ के पुत्र हैं तिन सभनों के रिदे विषै जो है तमरूपी
अग्यान सो मैं ग्यानरूपी सूरज करि निवारण करोंगा॥ जै
से सूरज के प्रकास करि अंधकार दूरि है जाता है॥ हे मु
नीस्वर जो कछु ब्रह्माजी ने उपदेस कीया था सो तुम्ह को
गुड तम स्मरण है सो ई उपदेस करोंगा॥ तिस करि रा
मजी निहसंसे पद कों प्राप्ति होवेंगे॥ बालमीक वाच
हे भारद्वाज जब इस प्रकार वसिष्ठ विस्वामित्र को ज
ब कहा तिसके अनंतर बड़ा माहात्मा सो बड़ उपाय संघत
कहा है कौ रामजी के मनरूप सो मोह अंधकार होत भय
॥इति श्री मनोछस्क करै ते विस्वामित्र वचन नाम सर
गह॥ हतियो॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी जो कछु कमल
जा ब्रह्माजी मुझ कों उपदेस कीया है जो लोकों के कल्या
ण निमित्त सो अब इस प्रकार करि मैं तुम्ह विषै आवता
हौं अरु तुम्ह कौं कहिता हौं॥ रामोवाच॥ हे भगवन
कछु कथन करणे का अभिप्राय है तिस संबं
सो बड़ उपाय जो संघता है सो तो तुम्ह
विषै

ञान बिषै सरवदेवजी सो सर्वज्ञ हैं। सो बिदेहमुक्ति कि
ंनरूपा। बिसिष्टोवाच। हे रांमजी जैसें सूर्ज की कि
र्णों बिषै त्रिसरेणु होती हैं। अर तिनकी संषा कछू
नही होती। तैसें परमसूरज की संवेदनरूप किर
णों बिषै जो त्रिलोकीरूपी त्रिसरेण्या हैं सो असंष हैं
तिनकी संषीभी कछू नही। अनंत ही होइ करि मि
टि गई हैं। अनंत नही हुइ हैं। अरु अनंत ही त्रिलोकी
यां ब्रह्मसमुद्र बिषै होवैंगी। यां तिनकी संषा कछु
नही। रांमोवाच। हे भगवन् आगे बितीत हुइ हैं। अ
रु जो आगे होवैंगी। यां तिनकी संषा केती है। अरु ब
र्तमानकी तौ जाणते हैं। बसिष्टोवाच। हे रांमजी अ
नंतकोटि त्रिलोकी अर्कके ज्यूं उपजते हैं। अरु ना
नहि ज्यों हैं। अरु कई होवैंगी यां कई हुइ यां हैं। ता
तिनकी संषा कछू नही काहेतें जो जीव असंष हैं। अ
रु जीव जीव प्रति आपणी आपणी सृष्टि हैं जब
हू जीव मृतक होता है तब उसी स्थान बिषै आपणी
सृष्टि बाहक में कल्परूपी छिद्र बिषै उसको बांध
ईमान सन्मावते हैं। अरु उसी स्थान बिषै परलो
कभी मान आवता है। अरु ब्रिथवी अपतेज बाई
अकास पांचौं भूत भी मान आवते हैं। अरु नानाप्र
कारकी सृष्टि पृथ्वी आपणी बासनां के अनु
सार भासन आवती है। बहुरि तहांते मृतक होता

हैतबवोहीत्रिसरांजडताभासआवतीहैं।नाम
रूपसंज्ञगतिवोहीजाग्रतभ्रांतहोकरिपिंडभा
सतीहै।वस्तुडिजबवाहंतेंमतीहै।तबवस्तुसंप
र्णमतकत्रिष्टकाअभावहोजाताहै।अवर
भासआवतीहैं।अरुतिन्होंकेजीवहोतेहैं।
तनकौंभीइसप्रकारअनभवहोताहै।इसप्रका
कारएकएकजीवकीसृष्टिहोतीहै।अरुमिलि
जातीहै।तिनकीसंख्याकछुनहीं।तोकुछभि
सृष्टिकीसंख्याकैसेहोवे।जैसेपुरषफेरीदेता
है।अरुतिसकौसर्वपदार्थ।नसैंतेदृष्टिआव
तेहैं।अरुजैसेनउकाविषैबैठेहुयेनदीतटकौं
भिन्नचलतेदृष्टिआवतेहैं।जैसेनेत्रोंकेदोष
करिकैआकाशविषैमोतियोंकीमालादिष्टआ
वतीहै।जैसेसुपनेविषैसिंहभा
सतीहै।तैसेजीवोंकौंपरलोकअरुइहलोकभ्र
करिकैभासताहैं।वासनवतेंजगतकछुउपज्या
नहीहै।कछुहैतप्रमात्मतत्त्वअपणीआपहीवि
षैस्थितिहै।तिसविषैहैतभर्म।अविद्याकरिकै
भासताहै।जैसेंबालककौंअपणीपरछाहींवि
षैबेतालभासताहै।अरुजैसैंकौंपावताहै।तैसेंअ
ज्ञानीकौंअपणीकल्पनाहीजगतरूपहोइभा
सतीहै।रामजीइहव्याससदेवकती:

वान विषामदेवजी सो सर्बज्ञ हैं सो बिदेह मुक्ति कि
अंनत काल। वसिष्ठ उवाच। हे रामजी जैसे सूर्ज की कि
रणें बिषे त्रिसरेनु होती हैं अरु तिनकी संषा कछू
नही होती तैसे परम सूरज की संवेदन रूप किरा
णौं बिषे जो त्रिलोकी रूपी त्रिसरेण्य हैं सो असंष हैं
तिनकी संषी सी ऊठ नही अरु नेते होइ करि मि
टि गई हैं अरु नेतही हुइ हैं अरु अरु नेतही त्रिलोकी
सांभ्र सम्मुद्र बिषे होइ हैं ॥ यां तिनकी संषा कछु
नही। रामोवाच। हे भगवन अरु जो बितीत हुइ हैं अरु
जो अरु होइ हैं ॥ यां तिनकी संषा केती हैं अरु व
र्तमान कों तो जाणते हैं। वसिष्ठ उवाच। हे रामजी अ
नंत कोटि त्रिलोकी अर्हेत के गणें उपजते हैं अरु सा
म्हि गये हैं अरु कई होवैगी ॥ यां कई हुइ यां हैं ॥ ग
णने की संषा कछू नही काहे ते जो जीव असंष हैं अरु
रूजी वजी वप तिन आपणीं आपणीं स्रिष्टि हैं जब इ
ह जीव मृतक होता है तब उसी सथान बिषे अपणें
अथवा हिक मंडल रूपी छिद्र बिषे उसकों आध
बभासभासते है अरु उसी सथान बिषे परलो
क भासभासता है अरु पिथवी अपतेज बाई
आकास पांचौं तत्व भासभासते हैं अरु नाना
कार की स्रिष्टि प्रतीत आपणी वासनां के अनु
सार भासभासती है बहुरि उहां ते मृतक होता

हैतबदेहीस्थितहोतांब्रजडभासआवतीहैं।नाम
रूपसंज्ञागतिहोहीजाग्रतजाग्रतहोकरिपिंडीभा
सतीहै।ब्रह्मांडजबहोताहैतबभासतीहैतबतत्त्वसंपू
र्णतककस्रिष्टकाआभासहोजाताहै।अवर
भासआवतीहैं।अरुतिनकेजीवहोतेहैं।
तिनकोंभीइसप्रकारअनुभवहोताहै।इसप्रका
रएकएकजीवकीस्रिष्टहोतीहै।अरुमिटि
जातीहै।तिनकीसंख्याकछुनहीं।तोब्रह्मविषै
स्रिष्टनकीसंख्याकैसेहोवै।जैसेपुरुषफेरीदेत
है।अरुतिसकोंसर्वपदार्थभ्रमतेदिष्टआव
तेहैं।अरुजैसेनउकाविषैबैठेहुयेंनदीतटको
त्रिच्छचलतेदिष्टआवतेहैं।जैसेनेत्रोंकेदोष
करिकैआकाशविषैमोतीउंकीमालादिष्टआ
[illegible] वतीहै।जैसेसुपनेविषैसिंघभा
सतीहै।तैसेजीवोंकोंपरलोकअरुइहलोकभ्रम
करिकैभासताहै।वासतवतेंजगतकछुउपजा
नहीं।है।कहाहैतबआत्मतत्त्वअपणेआपणेवि
षैस्थितहै।तिसविषैहैतरूपअविद्या [illegible]
भासताहै।जैसेबालककोंअपणी [illegible]
बैतालभासताहै।अरुजैसेकों [illegible]
मानीकोंअपणीकल्पनाहीआ [illegible]
सतीहै।रामजीइहव्यासदेव [illegible]

है जैसें जो पुरुष दिन कृ अन्तकी यां होवै है अगले
दिन कुक्रित करिये तब कुक्रित दूरि हो जाता
है जो अपराध करि दूर नाम भी नहीं होते म
कता अरु पुरुषार्थ करै तो दोनों ही सिध्यौ के प्र
षन करने को समर्थ होता है ॥ ५ ॥ इति श्री योगवासिष्ठे मु
मुक्षु प्रकरणे पुरुषार्थ उपक्रमो वर्णनं नाम सर्गः
॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो चित्तकर्तु बोध
करता है ॥ अरु शास्त्र के अनुसार पुरुषार्थ न
हीं करता सो सुख को न पावैगा ॥ उसको उ न
मत चेष्टा है ॥ अरु पुरुषार्थ सो दोय प्रकार का है
एक शास्त्र अनुसार है ॥ एक शास्त्र विरुद्ध है ॥ जो
शास्त्र अनुसार को त्याग करि अपनी इच्छा के
अनुसार विचरता है ॥ सो सिद्धता को न पावैगा ॥
अरु जो शास्त्र के अनुसार पुरुषार्थ करता है ॥
तिसकरि के सिद्धता को प्राप्त होवैगा ॥ अरु
षोला न होवैगा ॥ जो अनुभव ले सिमृत होती है
अरु सिमृत ते अनुभव होती है ॥ सो दोनों इस
करि होते हैं ॥ देवतो कछु नहीं ॥ हे रामजी अ
वर देव को कछु नहीं ॥ इसका कोई जो इसको प्राप्त
होता है अरु जो बलिष्ट होता है ॥ तिसके अनुसा
र विचरता है ॥ स्मृप्र अभ्यास संस्कार बली होता
है सो उसी को जे होता है ॥ अरु जो विद्यमान पुरु

थबलीहोताहै।तबउसकोजीतलेताहै।जैसे।।
कपुरषकेदोकूरेहोतेहैंअरुतिनकोलड़ावता
है।तोदोनोंविषेबलीहोताहैतिसीकोजेहोतीहै
तोदोनोंउसीकेहैं।तैसेदोनोंकमहैसीकेहैं जोपू
रबलासंस्काररबलीहोताहै।तोइसीकोजेहोती
है।अरुइहप्रजतनबलीहुआ।होतोइसकोजे
होतीहै।हेरामजीइहजोमनसंगकरताहैअरु
मतिमात्रविचारकरताहै।वजुउविषिरूकोबो
रदाव नाहै।तोपूरबलासंस्काररबलीहोताहै।
तिसकरिइसथिरनहीहोसकता।अैसेसंजा।।।क
रिफुरषप्रजतनकात्यागनहीकरणा।।जो
पूरबलेसंस्कारतेअनथानहीहोतानपूरब
लासंस्काररबलीमहोहै।मनसंगकरैअरुस
तसास्त्रोंकादिढअभ्यासहोवै।तोपूरबलेसं
स्कारकों।पुरषप्रजतनजीतलेताहै।जैसेपूरब
लेदिनविषेदुकृतकीयाहै।अरुआजलेदिन
सुकृतकीया।तोउसकाअभावहोजाताहै।
तैसेपुर्षप्रजतनतेहोताहै।सोपुरषार्थक्याहै।
अरुतिसकरिसिधक्याहोताहै।सोश्रवण।।क
रु ज्ञानवानजोसंतहै।अरुसतसास्त्रजोब्रह्म
विद्याहै।तिसकेअर्थअनुसारप्रजतनक

पावैगो जो अनात्मा है । जिसकरि संसारसमुद्रके
पार होवै हे रामजी जो कछु सिद्ध होवैगा सो है तुम
कौं अप्राप्त पुरुषार्थ करि जतन करि होवैगा है अ
रु दैव कौं ऊन ही अरु जो सास्त्र के अनुसार
पुरुषारथ कौं त्याग करि कहिते है जो कछु का
रण है सो दैव करैगा । सो मनमुखी बिमार्ग वर्ते है
तिनका संग मत करै । उनकी संगति करणेकु
सौं का कारण है । इस पुरुष कौं प्रथम तौ इहि क
र्तव्य है जो अपणे बरन आश्रम बिषै सुभ आ
चरण कौं ग्रहण करणा । अरु असुभ का त्या
ग करणा । बहुड संतों का संग अरु सत सास्त्रो
कौं बिचार करणा । तिनकौं बिचार करि अ
पणे गुण दोषों कौं बिचारणा । जो दिन अरु रा
त्रि बिषै मैं सुभ क्रिया करता हौं । अरु असुभ क्या
करता हौं । आगे दोष अरु गुणौं का साखीभूत
हो करि गुणों कौं जो संतोष धीरज बैराग बि
चार अभ्यास है । तिनकौं बधावणा । अरु दोष
जो बिघ्न हैं । तिनका त्याग करणा । जब ऐसे
पुरुषार्थ कौं अंगीकार करैगा । तब परमानंद
रूप आत्मतत्त कौं प्राप्त होवैगा । ताते हे राम
जी बन कै घाट लख्य मिर्ग की न्याई नहीं हो
णा । जो घास त्रिण कै पात कौं रसीला जाणि कर

पडाकुह्याताहै॥तैसेंइस्त्रीपुत्रधनादिकबिषेमग्न
नहोइरह्यो॥तैसानहीहोवणा॥ ऐंनतेंबिर्क्त
होवणा॥अरुदेनोंसाथदेनोंकोचबाइकरिसं
सारसमुद्रकोंपारहोवणा॥काजतनकरणा॥अ
रुबलतेंबंधनकोंतोरि॥करिनिकसिजाणा॥
जैसेंकेसरीसिंघबलकरिकेंपिंजरेसोंनिकसि
जाताहै॥तैसेंनिकसिजाणा॥पुरुषार्थकरिकें॥
हेरांमजी॥जिसकोंकछुसिधताकिसीकोंप्राप्त
हुईहैसोअपणेपुरुषार्थकरिहुईहै॥पुरुषार्थ
बिनांनहीहोती॥जैसेंप्रकासबिनांपदार्थका
ग्यांननहीहोता॥जिनोंपुरुषोंनेअपणेपुरुषार्थत्या
गियाहै॥अरुदेवकोंआश्रेहुयेहैं॥जोहमारा
कलियाणदेवकरैगा॥सोनहीहोवैगा॥जैसेंपथरों
तेंतेलनिकासियाचाहैतोनहीनिकसता॥तैसेंउन
काकल्याणनहीहोवैगा॥हेरांमजीतुंमतोदेव
काआश्रेत्यागिकरिअपणेपुरुषार्थकोंआ
श्रेकरो॥जिनोंअपणेपुरुषार्थतियागियाहै॥ति
नकोंसुखकांतलक्ष्मीतियागिकरिजातीहै॥उ
नकीकांतलघुहोजातीहै॥जैसेंबसंतरुतिकी
मंजरीबसंतरुतिकेगयेतेंबिरसहोजातीहै॥
तैसेंउनकीकांतहोजातीहै॥तिनोंपुरुषोंजैसें
निश्चेकीयाहै॥जेहमारेपालणेवालादेवहोते

जब इस प्रकार वशिष्ठजी कहा । तब संध्याकाल
का समा हुवा सब सभा इस्नान के निमित उठ
खडे हुये परस्पर नमस्कार करि के अपने घ
रो को गये । बहुरि सूर्ज की किरणों सहित आ
न स्थित हुये ॥ ॥ इति श्री मुमोक्ष प्रकरणे पुरु
षार्थ वर्णनं नाम सर्गः ॥ वशिष्ठ उवाच ॥ हे रामजी ।
इसका जो कोऊ पूर्वला का या पुरुषार्थ है सो ।
का नाम दैव है । अरु दैव कोऊ नहीं । जब इह
सत संग अरु सत शास्त्र विचार द्वारा पुरुषार्थ
करै तब पूर्वले संस्कार को जीत लेता है । जि
स जिस मार्ग द्वारा जिस इष्ट के पावने का इह
जतन करैगा । तैसा अरु स्वमेव पावैगा । अरु पुरु
पुरुषार्थ ते अन्यथा सिध कछु नहीं होता । न स्य
है न होवैगा पूर्व जन्म कोऊ पाप की या होता है । तिस
की प्राप्ति हुये ते जब मारे जाता है तब मूरख कह
ता है हा दैव हा दैव कोऊ कहता है हा इष्ट
हा इष्ट हे रामजी इसका जो पूर्वला पुरुषार्थ है ति
सही का नाम दैव है । अरु दैव कोऊ नहीं । जो
र जो कोऊ दैव कहते है । ते मूरख है पूर्वले जन
म सुकृत करि आया होता है । कोई सुकृत सुख हो
करि दिखाई देता है । जो पूर्वला संस्कार बली
होता है तो उस ही की जै होती है । जो पूर्वला उत्क

सलीहोताहै।।अरुइहांसुभकापुरसार्थक
ताहै।सतसंगाअरुसतसास्त्रोंकाविचारअव
करताहै।।तौपूरबलेसंसकारकोंजीतले
ताहै।जैसेंप्रथमदिनपापकीयाहोवैअरु
रेदिनबडापुन्यकरैतौपूरबलापापनिवृ
तहोजाताहै।।तैसेंइहांदिनपुरसार्थकरैतौपु
बलेकोंजीतलेताहै।तातेजोकछुसिधताहैसो
करिजतनकर्यां।।इसीकानांमपुरसार्थहै।।ति
मकाजतनइकात्रमादहोकरिकरैगा।।तिसके
अवसमेंदपावैगा।।जोपुरुषअरुदैवकोंजा।।।
करिअपर्या।।पुरसार्थतियागिबैठेहैंतेउमतेऽ
षकोंपावैगा।।सांतवानकबकूंनहोवैगा।।हिरांम
जीमिथ्यादैवकेअरथकोंत्यागकरिउभअप
गांपुरसार्थकोंअभ्यासकरो।।जोसंतजनअरु
सतसास्त्रोंकेबचनोंकरिअरुरउगतीसाथजत
नकरिकेआत्मपदकेअभ्यासकरिप्राप्तहो
वा।।।।इसीकानांमपुरसार्थहै।जैसेंप्रकासर
रिपदारथोंकाग्यांनहोताहै तैसेंपुरसार्थ
करिकेआत्मपदकोप्राप्तहोताहै।जोअ
पापहोताहैपूरबलाकोयाअरुइहांदि
रसार्थकरताहै।तोऊसमकोंजीतलेताहै।जैसे
नामिघहोताहैअरुतीसमकोपदननांसको

है ॥ अरु जैसें बरषा दिन का मेघ उपकार होता है अ
रु उष्णता तिस कौं नास करि छाया करता है तैसें हूं रव
ला संसार पुरुष अजतन करि नास करीता है
हे रांमजी स्रेष्ट पुरुष तेई हैं तिनौं सतसंग अरु स
तसास्त्र द्वारा बुधि कौं तीक्ष्ण करि कैं संसार
समुद्र तरबे कौं पुरुषार्थ कीया है ॥ अरु जिनौं
जिनौं सतसंग अरु सतसास्त्र द्वारा तीक्ष्ण बुधि
करि नहीं अरु पुरुषार्थ त्यागि बैठे हैं ते मूरष
नीच तैं नीच गति कौं प्राप्ति होवैंगे ॥ अरु जो श्रे
ष्ट पुरुष हैं ते अपणें पुरुषार्थ करि कैं परमानंद
अनंतपद कौं पावैंगे ॥ जिस कौं पाइ करि बहुड़ि
दुषी नहीं होवैंगे ताते अरु जो दैव ही करि दीन होते
थे अरु सतसंग अरु सास्त्र के अनुसार पुरुषा
र्थ जिन कीया है ते उतमपद कौं प्राप्ति होते हुए
आए हैं ॥ हे रांमजी जिनौं पुरुषौं पुरुषप्रजतन
कीया है ॥ तिन कौं समसंपदा आनंद प्राप्ति हुई
है अरु परमानंद करि पूरन होवते हैं जैसें र
तनौं करि समुद्र पूरन है तैसें वो परमानंद क
रि पूरन होते हैं ॥ तातें जो श्रेष्ट पुरुष हैं ते अपणें पु
रुषार्थ द्वारा संसार के बंधनौं तें निकसि जाते हैं
जैसें केसरी सिंघ अपणें बल करि पिंजरे सौं नि
कसि जाता है ॥ तैसें वो अपणें पुरुषार्थ करि संसा

रकेबंधनतेनिकसिजाताहै हेरांमजीजोइहि
रथऔरकछूनकरैतोइहकरैजोअपणेवरन
अरुआश्रमकेअनुसारबिचरैअरुसारपुरषारथ
रैजोसंतअरुसास्त्रोंकाआश्रेहोवै॥तिसकेअनु
रपुरषारथकरैजबऐसेकरैगातबसर्वबंधनोंते
मुक्तिहोवैगा॥अरुजिसपुरषअपणेपुरषारथक
त्यागकीयाहै॥अरुकिसीअवरदेवकोंमानि
रिकहताहै॥जोऊमेराकल्याणकरैगा॥सोजन्म
अरुमरनकोंप्राप्तिहोवैगा॥अरुसंतवोंननों
वैगा॥हेरामजीइहिजीवहैइसजीवकोंसंसारस
पीबिसूचकारोगहै॥तिसकेहरिकरिणेकाउ
पाइमैंकहताहोंसंतजनअरुसास्त्रोंकेअर्थि
येदिढभावनांकरणी॥जोकछूतिनोंनेसुणाहै
तिसकाबारंबारअभ्यासकरै॥अवरसभकोंप
नांकात्यागकरैइकत्रहोइकरिचितवनांक
रैतबइसकोंपरमपदकीप्राप्तिहोवै॥अरुवैत
मनिरबरतहोजावै॥अहैतरूपपदजामाहेस
कानांमपुरषार्थहै॥६॥इतिश्रीमहारूपतरु
अहपुरषारथवरननंनांमसरगः॥६॥श्रीवसि
वा॥हेरामजीअपणेपुरषारथकरिकेइसकोंअ
पातमआदिकरोगआंनप्राप्तिहोतेहैं॥तिसकरि
केइसकूसांतकोंनहीपावता॥उसमेंजेरोगीन

ही होय॥ अपर्याप्त पुरुषार्थ द्वारा॥ जन्म मरन तु
के बंधन तें मुक्ति होय॥ अपर्याप्त पुरुषार्थ द्वारा सं
सार के बंधन तें मुक्ति होय॥ जिन पुरुषों अप
र्याप्त पुरुषार्थ त्याग कीया है॥ अरु और किसी देव
कौं मान करि॥ तिस परायण हुवा है॥ तिनकौं ध
र्म अर्थ काम नष्ट होजाता है॥ अरु धर्म तें अर्थ
गति कौं प्राप्ति होते हहीं॥ हे रामजी सुध चेतन जो इस
कौ अपणा आप है॥ अरु आतम तत्व रूप है तिस आ
गे जो आदि चित संवेदन फुरती है॥ जो अहं अस्मि
तब मन होय करि फुरणे लागता है॥ बहुरि इस फु
रती है॥ जब इह फुरणा संत अरु शास्त्र के अनु
सार होवै॥ तब पुरुष परम सिधता कौं प्राप्ति होता है
अरु जो संत शास्त्र के अनुसार न होवै॥ तब वास
ना के अनुसार भाव अभाव रूप जो भ्रम जाल है॥ ति
स विषे पड़ा भटकता है॥ घटी जन्त्र की निआई॥ सां
तवांन कबहूं न होवै॥ हे रामजी जिस किसे कौं सिध
ता प्राप्ति भई है सो अपणे पुरुषार्थ करि हूई है पुरुषा
र्थ बिनां सिधता कौं न प्राप्ति होवै॥ जो किसी पद
र्थ कौं वांछा करता होता है॥ अरु किसी देस कौं
जाता होया होता है॥ जब भुजा पसारीहि तब बड
ड़ा होता है॥ अरु किसी देस कौं प्राप्ति होया चा
ता है॥ तब चलि करि जाई ऐतो पंक्ति॥ अनथ

नहीहोताजोकोऊकहताहैदैवकरैगासोहोवै
गासोमूरखहै॥हेरामजीऔरदैवकोऊनही॥इ
सकेपुरषारथकानामुदैवहै॥इहदैवसबद
मूरखजंकापरचावाहै॥जैसेकिसीकउसाधिदुख
पायातिसकोकहियेदैवकाकीयाहै॥औरदैव
कोऊनही॥हेरामजंजेजोअपणापुरषारथत्या
गकरिदैवकेआश्रेहोरहेहै॥तौसिधताकोनपा
वैगा॥काहेतेजोअपणेपुरषारथबिनासिधता
किसीकोप्राप्तिनहीहोती॥अरुब्रहस्पतिजी
जोइनिपुरषारथकीयाहै॥तबसंपूरणदेवति
आंकेराजेइंद्रकागुरूहूआहै॥अरुसुक्रजीअ
पणेपुरषारथहारासबैदैतोंकागुरूहूआहै॥अ
रुअवरजोसमानजीवहै॥जिनपुरषअजतन
कीयाहै॥सोपुरषकलमकूढाहै॥तातेंजिसकोसि
धताबिभूतप्राप्तिभईहै॥सोअपणेपुरषारथक
रिभईहै॥अरुजिनोंपुरषउजेनेसंतजुअरुसास्त्रों
केअनुसारपुरषारथत्यागाहै॥तिमरेदेषतेदेषतें
बनेराजअरुप्रजाअरुधनतेअरुबिभूतितिनेंस्त्री
गाहोगयेहै॥अरुनरकोबिषेपडेजलतेहै॥जि
सकरिकैऊठअरथसिधहोवैतिसकानामपुर
षोहै॥अरुजिसकरिअनरथकोप्राप्तिहोवैति
सकानामअप्पापुरषार्थहै॥हेरामजी

करत विचरही है॥ जो सतमात्र अरहंततौं कौ सं
करि बुधकौं ती मुख्य करै अरहंत गुणगणादिककौं पु
षकरै॥ दयाधीरज अरहंतं॥ तोप अस्सबेगा॥ के
अभ्यासकरिकै बुधकौं ती मुख्य करै अरहंती
मुख्य बुधकरिकै [illegible] इनकौं तुच्छ करै जे सब हेता
लतै सम्यक् तुच्छ होते है॥ बहुरि बारबार करिकै जस
कौं तुच्छ करतै है॥ तैसे गुणगणादिककरि बुधि पु
ष्ट होती है॥ अरहंत तुच्छ बुधिकरि गुणगणादि तुच्छ हो
तै है॥ हे रामजी जो बालक अवस्थातै लेकरि
अभ्यास कीया होता है॥ तब कर्मकौं मुख्यताप्रा
प्ति होती है॥ अरु स्वजो [illegible] अभ्यासकरिकै
मुख्यताप्राप्ति होती है अरु लिख्या नहीं होती॥ ज्यों
कसी दे सत्य अर्थवातीथिजा [illegible] होवै॥ इस तब भा
ग करि निरन्तर सहो इस लाजावै तौ जाइ पंडु
[illegible]॥ अरु बुधि तब निवर्त होवैगी॥ जब मे जनु
करैगा [illegible] निवर्तन होवैगी॥ अरु पावत तब सपा
ष होवैगा॥ जो मुख बिखै जिह्वा मुख होवैगी॥ तू
सं पाव नहीं होता॥ तातें जो कछू कारजु सिध
होता है॥ सो पुरषार्थ अपणे करि सिध होता है
उसनी होर रहते कारजु सिध कोऊ नहीं होता॥
अरु समपुरही [illegible] इन ते पूछि दे [illegible]
गजो तेरी इच्छा है सो करु॥ अरु जो तुम सो पूछो

तौसर्बसास्त्रौंका॥सिद्धांतकहताहै।जिसकरिसि
धताकौंप्राप्तिहोवै।हेरांमजीसंतजौंहैंगयानवां
नपुरषअरुसत्तसास्त्रजौहैं।बुध्विबिदयातिन
केअनुसारसबेदनअरुमनअरुइंद्रिकां।
बश्यांहोवै।अरुइनतेंबिरुधहोवै।तिसतेंब
रजितहोवह्यां॥तिसकरिकैतुझकौंसंसारकारा
गहेंससपरसनकरैगा।अरुतेंनिरलेपहोरहैगा॥
जैसेंजलतेंकमलनिरलेपरहताहै।तैसेंनिरले
परहैगा।हेरांमजीजिनोंमहांपुरषौंतेंसांतप्राप्ति
होवै।तिसकौंभलीप्रकारसेवनांकरीयेकांहेतें
जोउनकाबडाउपकारहै।जोसंसारसमुद्रतेंनिका
सलेतेहैं।हेरांमजीसंतजनभीवोहीहै।जिसकौं
बिचारअरुसांति करिसंसारतेंचित्तउपरतहो
वैसुषकाउपाईयहीहै।अरुसबकल्पनांकौं
तियागकरिअपणेंपुरषारथकौंअंगीकारक
रै।तबजन्मअरुमरणकानिवरतहोजावै
हेरांमजीजिसकौंमुक्तिकीइंछाकरताहै।अरुति
सकेनिमतिदिढपुरषारथकरताहै।तबअव
सेवतिसकौंपावताहै।अरुजोबडेतेजअरु
बिभूतकरिकैसंपनउझकौंदिष्टआवतेहैंअ
रुसुषीतेहैंसोअपणेपुरषारथकरिहूयेहैं॥

द्रिष्टि आवते हैं॥ तिन अपने पुरुषार्थ तियागु
कीया है॥ तब अग्रे मैं कह्या है हे रामजी अपने पुरुषा
र्थ को अंगीकार करो नही तो सरप अरु कीट आदि
क नीच जोनी को प्राप्ति होवैंगे॥ जिनो पुरुषों अप
ने पुरुषार्थ त्याग कीया है अरु वैसी अवस्थे
व का आसरा धारा है ते महा मूरख है॥ काहे ते जो इ
ह बारता विवहार विषे भी प्रसिध है॥ जो अप
ने हसत को पै बिनां किसी पदारथ को प्राप्त न
ही होती॥ तौ परमारथ की कैसे प्राप्ति होवै॥ ताते
दैव को त्याग करिके सत जन अरु सत सास्त्रों के
अनुसार जतन करो॥ परम पद कूं पावहुगे काहे
ते मुक्ति होवत है रामजी जनारदन जो बिस्न
जी है॥ सो औतार धारि करि दैतों को मारता है
अरु अवर रक्षेपणा करता है पर पाप का सपर
स तिस को नही होता काहे ते जो अपने पुरुषार
थ करिके अक्रिय पद को प्राप्ति हुवा है॥ उस नी
पुरुषार्थ का आसरा करो अरु संसार समुद्र के
तरि जावो॥ ७॥ इति श्री म मोक्ष प्रकाशे पुरुषार्थ
रूप प्रभाव बरननं नाम सरगः॥ [illegible]॥
हे रामजी जिह जो दैव सबद है॥ सो मूरखों ने कल्पि
या है॥ जो दैव हमारी रछ्या करता है॥ हम को तो दै
व का आकार द्रिष्ट नही आवता॥ न कोऊ दैव

काकालनहीहैनदैवकछुकरताहीहैपुरषार्थलोक
दैवपदकहतेहैंअवरदैवकोऊनहीइसका
पूरबलाकरमहीदैवहै।हेरांमजीजिनेंपुरुष
उनेंपराक्रमपुरषारथत्यागकीयाअरुदैवपरा
इणहुवेहैं।जोदैवहमाराकल्याणकरैगातेमूर
रखहै।काहेतेंजोअगिनिविषेजायपडैअरुदै
वइसकोंआनिनिकासलेवै।तबजानियेकोऊ
दैवभीहैसोतोनहीअरुजोदैवकरताहैतोइह
इसनांनदांनभोजनआदिककोंत्यागकरिरहै।
होइबैठे।आपेदैवकरिजावैगासोभीनहीहोता
इसकेकीयेबिनांतातेंअवरदैवकोऊनहीअप
णांपुरषारथहीकल्याणकरताहै।हेरांमजीजो
इसकाकीयाकछुनहोतातोअवरदैवकरणेहा
राहोता।तबऊसास्त्रअरुगुरोंकाउपदेसभीनहो
ता।अरुसंतसास्त्रकेउपदेसकरिकेअरुआप
णेपुरषारथकरिइसकोंवांछितपदकीप्राप्तिहो
तीहै।तातेंऔरजोकोऊदैवसब्दहैसोबिरथाहै।
इसभरमकोंत्यागिकरिकेसंतअरुसास्त्रकेअनुसार
अपणांपुरषारथकरै।तबहीदुखांतेंमुकतिहोवैगा।
हेरांमजीअवरदैवकोऊनहीइसकापुरषारथजो
हैइसकापदसोईनांमुदैवहै।हेरांमजीजोअवरको
ऊकरणेहाराहोता।तोइहजब

अरु सरीर सब होजाता है। इया सरीर सौं कछु है
तो नहीं। काहे तें जो चेष्टा करणहारा त्याग जाता है
तो सब सरीर सो चेष्टा करावता सो चेष्टा कछु नही
होती तातें जाणीता है जो दैव सब्द बिरथ है। हे
रामजी पुरषारथ की तौ बारता अगियानी जीव
कौ भी प्रतष है। जो अपणे पुरषारथ बिना होता
कछु नही सो पाल भी जाणता है। मैगता कौ चर
बौ नही तौ भूखौ मरहिं। तातें और दैव के आसै
तौ बैठे नही रहता आपही चवाइ खावता है। हे
रामजी और दैव की कलपना भरम करि कै पड
करते हैं। अरु दैव तौ हम कौ द्रिष्टि कोऊ नही
आवता हस्तपाद सरीर दैव का कोऊ द्रिष्टि नही
आवता। अपणे पुरषारथ करि सिध होता द्रिष्टि आ
वता है अरु ज्यों कोऊ कातर तें रहत दैव सब्द
कली पीठ। तो नही बणता काहे तें जो निराकार
अरु साकार को संजोग कैसे होवे। हे रामजी अव
र दैव कोई नही। अपणा पुरषारथ ही दैव रूप
है जो राजे भासते हैं। अरु सिध जो सिधी मंजुग
भासते हैं सो भी अपणे पुरषारथ करि हुए हैं
रामजी ऽ हि जो बिस्वामित्र है। इन दैव सब दूर
कै काल्याण कीया है। पुरषारथ करि कै षत्री तें
ण हूआ है। सो अपणे ही पुरषारथ करि हूआ है।

रुऔरबभैरुहैबिनतवानहूयेहै। सोअपणेपुर
षारथकरिदिषिआवतेहैं। हेरामजीजोदेवकिसी
कोपटैबिनापंडितकरैतोमजाण्यौयैदेवकीपु
सोपटैबिनापंडितकहुंनहीहोताअरुजोअरु
जांनीजांनवांनहोतेहैंसोभीअपणेपुरषारथक
रिहोतेहैंअवरकरिनहीहोते। तातेंऔरदेवको
ऊनहीमिथ्याभ्रमकोत्यागकरिसंतजनअरुसा
स्त्रोकेअनुसारसंसारसमुद्रतेतरणेकाजतन
नकरौ। तेरेपुरषारथबिनांऔरदेवकोऊनही
अरुदेवहोतांबिवहारक्यावालेती। आपणी
क्रियाकोत्यागकरिसोऽरहतेंआपदैवहीपडाक
रतासोअैसेतोकोनहीकतीतातेंआपणेपुरषारथ
बिनांसिधिकछुनहीहोता। अरुजोइस्काकीया
कछुनहोतातौपापकरणेहारानरकिनजाता।
अरुपुंन्यकरणेहारास्वरगनजातासोपापकरणै
हारेनरककोजातेहैं। अरुपुंनकरणेहारेस्वरगको
जातेहैं। तातेंजोकछुप्रापतिहोतीहैसोअपणेपुर
षारथकरिहोतीहै। हेरामजीजोकोऊऔरदेव
कहतेहैंतोइस्कासिरकाटिये। अरुदेवकोआ
श्रेजीवताहैसोतोजीवताकोऊनही। तातेंदे
वसबदकोमिथ्याभरमजांणिकरिसंतजनअ
रुसतसास्त्रोंकेअनुसारअपणापुरषारथकरि

आत्मापदविषैस्थितहोहौ ॥८॥ इतिश्रीमु
मुक्षुप्रकरणेपुरुषार्थदेवनिरूपणंनामसप्तमः
सर्गः ॥ हेभगवनसर्वधर्मोंकेवेत्तातुमक
हतेहो औरदेवकोऊनहीं अरुदेवजोहैसोआ
पणापुरुषार्थहै॥ औरलोगभीकहतेहैं जोदेवका
कीयासफलकछुहोताहै॥ अरुपुरुषप्रयत्नका
नारादेवहै॥ इहलोकविषैप्रसिद्धहै॥ वशिष्ठ
बो॥ हेरामजीप्रश्नकोअैसेकहताहौं जोतेरा
संशैनिवृत्तहोजावै इसदेहकाउद्यम अथवा अरु
नकर्मकीयाहुवाहै॥ तिसकाफलअवश्यमे
पाताहै॥ सोदेवकहीता पुरुषार्थकहीता अरुदे
देवकोऊनहीं अरुकर्ताकर्मआदिकोविष
तौदेवकोऊनहीं औरकोऊदेवकाअस्थान
नहींरूपनहींतौ औरदेवक्याकहीये॥ हेरामज
पुरुषकेपरवशतानहींतातैदेवशब्दकहाहै
जैसेआकाशशून्यहैतैसेदेवशून्यहै॥ रामोवा
च॥ हेभगवनसर्वधर्मोंकेवेत्तातुमकहतेहोजो
देवकोऊनहीं अरुआकाशकीन्याईशून्यहै॥ सोतु
म्हारेकहेतैकरिसोदेवसिद्धहोताहै॥ जोतुम
कहतेहो इहीपुरुषार्थकानामदेवहै॥ अरु
जगतविषैसोदेवशब्दप्रसिद्धहै॥ वशिष्ठ
वाच॥ हेरामजीप्रश्नकोकहताहौं॥

जिसकरि दैव सबद तें रहित है सो उपजा है। जो अदृ-
ष्ट न होता तो दैव नाम अपने पुरुषार्थ का है
अरु पुरुषार्थ नाम कर्म का है। अरु कर्म नाम बा-
सनां का है। अरु बासनां मन तें होती है। अरु मन
रूपी पुरुष है। जैसी बासनां करता है सो तिसकौं प्रा-
प्ति होता है। जो परांत कौं प्राप्त होने की बासनां
करता है तौ तिरांत कौं प्राप्ति होता है। अरु जो ध-
नकी बासनां करता है तौ धन कौं प्राप्ति होता
है। ता तें और दैव कोई नहीं पूरबला जो कौ कदि-
ष्ट पुरुषार्थ की मा है। हे अनघ अब अनुमति का
प्राप्ति सुख अरु दुख जो अब महोदय है। तिस
ही का नाम दैव है हे रामजी तें बिचारि करि देखु॥
जो अपने पुरुषार्थ करम हूं तें तिन तौ सुख दुख दे-
णे हारा अरु लेपणे हारा दैव तौ कोऊ नहीं द्वारा कू रदे
जो पाप की बासनां करता है। अरु सास्त्र बिरुध कर्म करता
है सो किसकिस करती है। इरब जो इसका दृढ पाप कर्म
है तिसकरि यह पाप कर्म करता है। अरु जो पूरबला पु-
न्य कर्म कौं याहौ ता तौ इह सुन मार्गा बिषे बिरता है रा-
मोवाच॥ हे मुनीश्वर जो पूरबली दृढ बासनां के अनु-
सार इह बिचरता है तौ मैं क्या करों मुझ कौं पूरबली
इह बासनां ने दीन कीया है। अब मुझकौं क्या करतव्य
है

स्यांदि न होरही है तिसके अनुसार शुद्ध विचारमा
है अरु जो ऐसे मनुष्य हैं सो अपने पुरुषार्थ क
रिके दुर्बले मलीन संसकार कौं शुध करते हैं
तिसकी मैलु दूरि होजाती है मतसास्त्रों अरु ग्या
नवांनों के वचनों अनुसार दृढ पुरुषार्थ क
रै तब मलीन वासना दूरि होजावैगी हे रामजी शु
रव ले मलीन पाप कैसे जानिये हैं अरु सुध कैसे
जानिये हैं सो श्रवण करु जो चित्त विषै ज
की दौड धावै है अरु सास्त्र विरुध मारग कौ गरज
है अरु शुभ की ओर न धावै है तब जानिये जो दुर्ब
ला करन को समलीन है अरु जो मतजनों अरु
मत सास्त्रों के अनुसार चेष्टा करै अरु संसार मा
ग विरक्त होवै है तब जानिये जो दुर्बला करम सुध
है तातें हे रामजी तुम कौ दोनों करिकै सिधता है
जो दुर्बला संसकार शुध होवै है तौ तेरा चित्त सो शु
ही मत संग अरु मत सास्त्रों के बचनों कौ ग्रहण
करि लेवैगा अरु सीघ्रही तुम कौं आतमपद की
प्राप्ति होवैगी अरु जो तेरा चित्त दृढ सुभ मारग वि
षै नहीं स्थिर होसका तातें दृढ पुरुषार्थ करै
जो संसार समुद्र तें पार होवै हे रामजी तू चेतन
है जड तौ नहीं अपने पुरुषार्थ का आश्रा करो
मेरा भी इही आसीरवाद है जो तुमारा चित्त सीघ्र

दीसुभ आचरण विषे इस्थित होवै अरु सुभ वि
द्या का जो सिद्धांत सार है। तिस विषे इस्थित होव
णा है। रामजी श्रेष्ठ पुरष भी वो ही है जिस का पूरब
ला संसकार। करम जड़ रूप मलीन नहीं था। पर संत अ
रु सास्त्रौं अनुसार द्रिड़ पुरषारथ का अभ्यास की
या है। अरु सिधता कौं प्राप्ति हूये हैं। अरु जो मूर
ख है तिनौं ने अपणा पुरषारथ त्याग कीया है। ता
तें संसार तें मुक्ति नहीं होते। पूरबला जो कोऊ पाप
करम होता है। तिस मलीनता करि कै पाप कौं भ्र
मते हैं। अरु अपणे पुरषारथ के त्यागणे तें विष
य करी भ्रमते हैं। जो श्रेष्ठ पुरष है तिन कौं इह क
रतव्य है। प्रथम तौ अपणी पांचौं इंद्री बसि कर
णी। सास्त्र के अनुसार तिन कौं बरतावणा। जो सु
भ बासना द्रिड़ करणी। अरु विरुध का त्याग कर
णा। जदपि त्यागणी दोनौं बासना है। पर प्रथ
मे सुभ बासना कौं इकठा करणा। अरु असुभ
का त्याग कौं करणा। जब सुभ बासना करि कै कष
य रूप होवैगा। अरु इह अंतह करण जो सुध होवै
गा। तिस विचार द्वारा रिदे विषे संतौं अरु सास्त्रौं
का जो है सिद्धांत तिस का विचार उतपति होवैगा।
तिस विचार द्वारा करि तुझ कौं आतमग्यान की प्रा

गी॥ वसिष्ठ उवाच॥ ज्ञानकामीत्यागुहोतेहैं॥ जेकर
सुधअष्टहेतरूप॥ अपयाअपसेप्रगासेताता
ते हे रामजी अवरूकल्पनांसमकौं त्यागकरि
संतजन अरुसास्त्रोंकेअनुसारपुरुषारथकरि
॥६॥ इति श्री भागीवासिष्ठेअरण्यप्रकरणे मनपुरुषारथव
र्ननांमसर्ग॥ ॥ वसिष्ठउवाच॥ हे रामजी मेरे वचनों
कौं ग्रहण्यकरो॥ केसे वचन हैं जो बंधहै बांध
दकाहीअहिजोतेरेपरममित्रहोवेंगे॥ अरुतूंमोंते
तेरीरछाकरहिंगे॥ हे रामजी इहि जो मोछउपाइ
उसकौंकहताहौं तिसकेअनुसार तूपुरुषारथ
करि॥ तबपरमअर्थतेरासिधहोवेगा॥ इह चित्त
संसारकेभोगोंकीओरधावताहै॥ तिसभोगोंरूपी
गरतविषेचितकौं गिरनेमतिदेउ॥ आतमतुकौं
विरसजाण्याकरि त्यागौ॥ त्यागतेरापरममित्रहो
वेगा॥ अरुत्यागभीऐसा अरु जो वडुडिभोगु
केका ग्रहण्यनहोइ॥ हे रामजी इहि [illegible] इ
कैसा है संघताहै॥ चित्तइकाग्रकरिइसकौं श्र
वण्यकरु॥ तिसकरिपरमानंदकीप्राप्तिहोवेगी॥
प्रथमेसमअरुदमकौंधारु॥ समअरुथइहिजो
संपूर्नसंसारकीबासनांकात्यागकरि॥ अरुउ
दारताकरिकेत्रिपतिरहण्या॥ अरुदमअरथ
इहजोबाहरजइंद्रीऔंकौंबसिकरण्या॥ जबइस

...थमधिरह्यातौपरमतत्तकाबिचारक
उतपत्तिहोवैगा तिसबिचारकरबेकहांगप
दकीप्राप्तिहोवैगी जिसपदकौपाइकरिब
उसीकदाचित्तनहोवैगा अबिनासीसुषअ
उझकौप्राप्तिहोवैगा तातेंजोकछुइहमोहूं
इसघताहै तिसकेअनुसारपुरषारथकरु
आत्मपदकौप्राप्तिहोवैगा पूरबजोउक्तअ
जोहमकौ उपदेसकीयाहैसोमैंउझकौकहत
।।रामोवाच।। हेमुनीश्वरतुमकौजोबूस्ताजो
पदसकौसाधा सोकिसप्रकारह्याकरिकौसाधो
अरुकैसेतुमनेंधारा सोमुझकौकहो।।वशिष्ठो
वाच।।रामजीसुधचिदाकासयोकहै अनंतहै
अरुअबिनासीहै परमानंदसरूपहैचिदा
नंदसरूपहैब्रह्महैतिसबिषेजोसंबेदनरस
पदरूपफुरणाहै सोबिसनरूपहोकरिस्थि
तहुईहै सोबिष्णुजीकैसाहै जोइसिपदअ
रुअसपदबिषेएकरसहैकदाचितअनथ
भावकौनहींप्राप्तिहुवा जैसेसमुद्रतेंतरंग
उपजताहै तैसेसुधचिदाकासतेंइसिपदक
केबिसनउत्पतिहुवा तिसबिस्नजीकेप्र
वताकिनेंकौनामकहतेहैब्रह्माजीप्रगट
या तिसब्रह्माजीकेषमुनीस्वरसहैतस्याथ

रजंगमसृष्टजोत्पति करी ॥ जैसें मनोराज करिके
कछु रचि लेहै ॥ तैसें मनोराज करि ब्रह्माजी ॥ ज
गत्कों उत्पति की या ति मजगकौ कोऊ छिद्र सो
जल्हदीपन रथपंनहै ॥ तिसविषें मनुष्यों कों उप
करि स्नातर देखा ॥ देख करि ब्रह्माजी कों करुणा
उपजत भई जै पुत्रों कों उपदेस करि पिता कौ
करुणा उपजती है ॥ तब तिनके सुषके निमित
ब्रह्माजी तपकों उत्पत्ति कीया ॥ जो सुषी होवेंगे
तिन्हसैं आज्ञा करी जो तपु करो ॥ तब जीव तप करते भये
तिस तप करि स्वर्गादिक कों जाइ प्राप्त होने
लागे ॥ तिन सुषों कों भोग करि फिरि गिरें तो सु
षी हीन रहै ॥ ऐसें ब्रह्माजी देष करि मतबाकेध
र्म कों उत्पादन करत भये ॥ तिन कों सुषके न
मित्त आज्ञा करी तिस धर्म कौ उत्पादन करी
सु धर्म तौ कछु कौं प्राप्ति होय लागे ॥ तहां के तौ कु
काल सुष भोग करि बहुड़ि गिरे बहुड़ि दुषी के
री रहे ॥ बहुड़ि ब्रह्माजी ने दान तीर्थ आदि
क पुन्य उत्पति करिकै तिन कों आज्ञा करी
जो इन के सेवने करि तुम सुषी होवोगे ॥ तब
जीव तिन कों सेवने लागे ॥ तिस सेवने करि
पुन्य लोकों कौं प्राप्त होय ॥ तहां तिनके सुष
भोगने लागे केतेक काल पर्यंत भोगके

अनुसारभोगकरिबडे।।तबतिन्होंकरि
कैबडेदुषदुषहूये।।अरुदुषकरिकरिआतुर
हूये।।तबब्रह्माजीदेषतभया।।जन्मअरुमनैके
दुषकरिदीनहोतेहैं।तातेंसोईउपाइकरिये।।जिस
करिइनकादुषनिवृत्तहोवै।।हेरामजीब्रह्माज
बिचारतभया।।जोइनकादुषआत्मज्ञानबिनां
नकरतनहीहोतातातेंआत्मज्ञानकौउत्पतिक
रिये।।जोइहसुषीहोवहि।।इसप्रकारिबिचारकरि
कै।।ब्रह्माजीआत्मतत्वकाध्यानकरतेभया।।आ
त्मतत्वकेज्ञानकासंकल्पकीया।।तिसध्यानके
कर्याकरिकै।।उदज्ञानतबज्ञानदे।।तिसकौसूर
तिहोइकरिसेप्रगटभयाप्रापनेकेसाहे।।जोसैब्र
ह्मतीकेसमाननहो।।जैसाउनकेहाथबिषैकम
डलहै।।तैसाइसकेहाथबिषैकमंडलहै।।जैसेउन
केकंठबिषैरुद्राक्षकीमालाहै।।तैसेइसकेकंठबि
षैरुद्राक्षकीमालाहै।।जैसेउनकेउपरिमृगछा
ला।।तैसेइसकेउपरिमृगछालाहै।।इसप्रकारिब्रह्म
जीका।।अरुकछुभेदसमाननहीआकारहै।।अरुसर
पसेरामशुद्धज्ञानसरूपहै।।जातेंमुक्तिकाछूनमोसे
सुषपतिवतसुनकौंज्ञानतभासैथा।।तबब्रह्माजी
बिचारकीयाजीईसकौमैंजीवोंके।।कल्याणन
निमित्त्यतिकीयाहै।।अरुइहतौ

पढै।अरुज्ञानकौउपदेसमारयातबहोदै।जैव
सूक्ष्मअंतरहोदै।अरुतत्वमिथ्याकाबिचा
रहोदै।हेरांमजीजीवौंकेकल्याणनिमित्तसुप
कौंगोदबिषैबैठाया।अरुसीसपरिहाथफेर
तिसकरिसीतलहोगया।जैसैंचंद्रमाकीकि
रण्यांकरिसीतलहोजाताहै।तैसैंमैंसीतल
भया।तबब्रह्माजीमुझकौंकह्या।जैसैंहंसकौ
हंसकहै।हेपुत्रजीवौंकेकल्याणनिमित्ति
कमलसूरतपरजंतहै।अज्ञानकौअंगीकार
करु।श्रेष्ठमनुष्यहैकेनिमित्तअंगीकार
करतेआएहै।जैसैंचंद्रमाउजलनिरमलहै।
अरुस्यामताकौंअंगीकारकीयाहै।हेरामजी
इसप्रकारिमुझकौंकहिकरिब्रह्माजीआपद
या।जोतूअज्ञानीहोवैगा।तबमैंब्रह्माजीकी
आज्ञामानिकरिआपकौंअंगीकारकीया।
तबमेराजोसुद्धआत्मतत्वआपस्याआपथा
तिसतेमैंअन्नकीन्याईहोतभया।आपस्यांसु
द्धअवस्थामुझकौंबिसरणहोताई।तिसका
बिसरण्याहोवां।अरुमेरामनजातिआया
भावअभावरूपजगतमुझकौंभासनेलागा
अरुआपकौंमैंबसिष्टजाननाभया।अरुब्रु
ह्माजीकापुत्रआपकौंजाननाभया।अरुनांनां

कोपदेशयथार्थसहित। जगतकौजांनतभया॥
अरुतिनकीओरतेंउदासहोतभयातबमैंसंसारभ्र
मजालकौउपरूपजांनिकरि। ब्रह्माजीकेपासग
तभया। हे भगवन यह संसारकैसेउत्पतिहुवा
है। अरुकैसेलीनहोताहै। हेरांमजबइसप्रकारि
मैंपिताजीकौप्रश्नकीया॥ तबमनतेंअकारिमुझ
कौउपदेसकरतांभया॥ तिसकरिमेराअज्ञान
निवरतहोगया॥ जैसेसूरजकेउदैहूये। तमनि
वरतहोजाताहै। तैसेमेराअज्ञाननिवरतहोग
या। तबमैंसुक्ष्मताकौप्राप्तिभया। जैसेआदरश
कौमारजनकरिताहै। अरुसुक्ष्महोइआवताहै
तैसेमैंसुक्ष्महोगा हेरांमजीमैंकेसाहो। जोब्रह्मा
जीतेंभीअधिकहोतभया। तबमुझकौपरमेष्ट
ब्रह्माजीनेआज्ञाकरी। हेपुत्रतूंजंबूदीपभरथ
खंडबिषैजाइमुझकौसहपरजंत। अधिकअ
धकारहै। तहांजाइकरिजीवोकौउपदेसक
जोसंसारकेसुषकौंचाहतेहैं। अरुभीइछाजिनकौं
हैगी॥ तिनकौंकर्मसारकाउपदेसकरनां। तिस
करिस्वर्गादिकसुषभोगहिगे। अरुजोसंसार
तेंबिरक्तहोहैगो। जिनकौंआत्मपदकीइछ्या
होहैगी। तिनकौंग्यानउपदेसकरनां। तातेंहेव
त्सभूमिलोकबिषैजाहो। हेरांमजीइ

अरु धर्म की मरजादा थी सो सम नष्ट होगई १८

सेरां उपदेस दैनो ॥ अरु रूपजग्य कूं दाहै अरुउस
कारि सेरां अवग्य कूं दाहै ॥ इति श्री म मोक्षप्रका
सिस्रां मक ... मरणं ॥ १० ॥ बसिष्टो
वाच ॥ हे रांमजी मैं इसप्रकारि ॥ पृथ्वी बिषै अवद
समाहै ॥ जांनहीं बांछित है ॥ तिसकौ तिसकरि ॥ ब्र
ह्माजी सुक्ष कौ उत्पति करतभया ॥ रांमोवाच ॥ ह
भगवन तिसजांन कौ उपजाये करि ॥ अनंतरज
ग्यौं की स्रुष्टि कै मैं होतभई सो कहौ ॥ बसिष्टोवाच
हे रांमचं इसु धन्यात्मतत्व है ॥ तिसका सुभाव स्व
पसं बेदन फुरी है ॥ सो ब्रह्मा रूप है इ कारि कुस्थि
तभई है ॥ जैसें समुद्र अपणीं द्रवताकरि कै तरं
ग रूप हूवाहै ॥ तैसें ब्रह्माजी होतभये ॥ बहुरि संपू
रण्यजग तत्पति कीयाहै ॥ अरु तीनों काल उ
त्पतिकीये ॥ जब कं ... लब्ब दीत हुवा ॥ अरु
कलिजुग आयौ तिसकरि ॥ जीवौं की बुधि मलिन
होइगई ॥ अरु पापबिषै बिचरने लागे ॥ सास्त्र बे
द की अग्या कौ मानने तें रहि गये ॥ इसप्रकारि ध
रम की मरजादा छिपन होगई ॥ अरु पाप प्रगट
भये ॥ जेती कछु राज की मरजादा थी ॥ अरु अ
पणीं अपणीं इछा के अनुसार जीव बिचरणे ल
गे ॥ तब कष्ट पावणे लागे ॥ तिनकौ देषि करि ब्रह्मा
जी कौं करुणा उपजी ॥ तिस दया कौं धारि करि मृ

त्रिलोकविषै मुक्तकौं भेज्या॥ अरु कल्याणै पुत्र
जाइ करि तुम धर्मकी मरजादा सथापन करो
अरु जीवांकौं उपदेस करो॥ जिनकौं मो
गकी इछा होवै॥ तिसकौं कर्मकांडका उपदे
सकरि जप तप स्नानादिक जो कर्मकां
डका कथन है॥ सो उपदेस करणा॥ अरु जो संसा
रतें बिरक्त हुए हैं अरु मोक्षकौं चाहै परमपद
पावणेकी इछा है तिनकौं तिनकौं अध्यात्मबिद्या
का उपदेस करणा॥ ऐसा मनमें जिस प्रकार मुक्तकौं
आज्ञा करी इस लोकविषै भेजते भए तैसें ही सनत
कुमारादिककौं भी कहिते भये॥ अरु नारदादि
ककौं भी कहिते भये॥ तब हम सर्व ऋषीश्वर लोक
के लोकविषै बिचार करते भये॥ जो किसप्रकार जग
तकी मरजादा होवै॥ अरु जो वसुमती भारत विषै बि
चरै तब हम सर्वनें इह बिचार कीया॥ जो अथ रा
जोंकौं स्थापन करीये॥ जो जीव तिनकी आज्ञा अनु
सार बिचरहैं॥ प्रथम सर्वनें कर्ता राजे स्थापन क
रे हैं तब हम सर्वनें राजे स्थापन कीये देस देसके
मैं राजे भये तिनकौं राज दीन॥ अरु सब मैं तेजवान बडा
रआत्मा सो राजे होत भये॥ तिन राजोंकौं हम अ
स

परमपदकौप्राप्तिहोतभये ॥ जोपरमानंदरूपअ
बिनासीपदहै ॥ तिसकुंब्रह्मबिद्याकाउपदेसति
नकौंस्रयातौसुखीहूये ॥ इसकारणतैंब्रह्मबि
द्याकानामराजबिद्याहै ॥ तबहमहूंनैंबेदसा
स्त्रस्मृतीपुराणकरि ॥ धरमकीमरजादास्थाप
नकरी ॥ जोजपतपजग्य दाँनस्नानादिकक्रिया
कौप्रगटकीया ॥ जोऔरजीवकूउत्तमस्वरनरककेभैं
दायकरिकैसुषीहोवैंगे ॥ तबतिनकौंवैराग्यला
गे ॥ कैसैसेवैराग्यलागे ॥ जोफलकौंधारिकरितिन
बिषैकौंकबिरलानिदकौंमरिदेखुदकेनि
मितसीकरै ॥ हेरामजी जोस्वरच्छेद कौमनोफ
लहूकौकरीहै ॥ अरुसकेमजकौंमिलवेहै ॥ घट
जेत्रकौपाइकैनरककतैफिरतेहै ॥ अरुयेकौसोअ
रुकर्हेकोमे ॥ अरुजोनिस्कामकरिहै ॥ तिन
काहिदासुद्धहोवै ॥ तबउऊब्रह्मबिद्याकेअधिका
रीहोतहैं ॥ तबउनकौउपदेसकहारा ॥ आत्मपदकौ
प्राप्तिहोवै ॥ इसप्रकारकरिकैकईजीवमुक्तहू
ये ॥ कईराजाबेदबिदतहूये ॥ हेरामजीइसप्रका
रिराजऋहूंकौपरंपरांहमारेउपदेसकहारा ॥ ज्ञान
कौप्राप्तिहोतभये ॥ अरुदसरथराजादरथमी ॥ ज्ञान
वानहूवा ॥ अरुतैंभीराजकुमारअज्ञानिप्राप्ति

हूवाहै।सोतंसमतेंश्रेष्टहै।जैसाहूंबिरक्तआत्मा
है तैसाआत्माकोंउनहींहूवा।हेरामजीतूंसुभाव
कबिरक्तहूवाहै॥किसीकारणकरिनहींहूवा।सु
भावकरिदेसुधकरिहूवाहैइसकारणतेंतूंश्रेष्ट
है।जोकोंकष्टनिमित्तप्राप्तिहोताहै॥तिसकरि
बिरक्तताउपजतीहै।सोउत्तमकोंऐसेनहींउपजी
उत्तमकोंसमईश्वरकेबिषैबिद्यामानहैं॥तिन
कहोतेंजोवैराग्यउपज्याहै।उत्तमकोंतातेंतूंश्रेष्टहै
हेरामजीमसाणादिककष्टकेस्थानहैं॥तिनकों
देषीकरिमनकोंवैराग्यउपजताहै।जोकछूनहीं
रिजोणाहै।अवरजोमूरषहै।सोबिषयकूंबि
आप्तहोजातेहैं।तातेंजिनकोंअकारणवैर
ग्यउपजताहै।सोश्रेष्टनहीं।हेरामजीजोश्रेष्टपु
रषहै।सोअपणेवैराग्यअरुअभ्यासकेबलकरि
संसारकेबंधनतेंमुक्तहोजातेहैं।जैसेंहस्तीबंधा
तोरिकरिनिकसजातेहैं।अपणेबलसोंतबधसु
होताहै।तिसेंहीवैराग्यअरुअभ्यासकेबल
बंधनतेंमुक्तहोताहै।हेरामजीइहसंसारबंध
रथरूपीहै।जिनोंपुरषोंनेंअपणेपुरषारथक
इनकोंनहींतोरया॥तिनकोंरागअरुद्वेषरू
निपडीजलावतीहै।जैसेंसूकेतृणकोंअ
कोंरागअरुद्वेषरूपीअजलाव

अरु जिनौं पुरषौंने अपने पुरषारथ करिकै ॥ सास्त्र
रु गुरौंके प्रमांण्य करिकै ॥ ज्ञान साध्या है ॥ अरु उत्त
पद कूं कौं प्राप्ति हूये हैं ॥ तिनकौं अ[illegible]त्मक आ
दैवक अधिभूतक ताप जलाइ नहीं सकते ॥ जैसें
बरषाकाल बिषै जो बहुत बरषा के होते बनकी
अग्नि कौ लाट जलाइ नहीं सकती यां ॥ तैसें ज्ञांनी
अध्यात्म आदि कताप कष्ट नहीं दे सकती ॥ हे राम
जी जिनौं श्रेष्ट पुरषौंने संसार कौं बिरस जांण्य करि
ज्ञा है ॥ तिनकौं संसार के पदार्थ गिराइ नहीं सकै
॥ अरु जो मूरष है तिनकौं गिराइ देते हैं ॥ जैसें
पेरी जो है ॥ तौ क्या पवन का बेग सो अवर वृ
क्ष कौं गिरावता है ॥ पर कल्पवृक्ष कौं गिराव
ता कौं समर्थ न हो हो ता ॥ हे रामजी श्रेष्ट पुरष स
वही है ॥ जिस कौं संसार बिरस हो गया है ॥ केवल
आत्मतत्व कौं इछा करते है ॥ अरु तिस पर प्र
न हूआ है ॥ ब्रह्मबिद्या का अधिकारी भी तिन ही कौं
है ॥ अरु सो उत्तम पुरष सो ई ही है ॥ हे रामजी तुम भी तैसे
उजल पात्र है ॥ जैसे कोमल पृथ्वी बिषै बीज बोइता
है ॥ तैसे मैं अब तुझ कौं उपदेस करता हौं ॥ अरु जि
न कौं भोगौं की इछा है ॥ अरु संसार की ओर जतन क
रते है ॥ ते पसु कहते हैं ॥ श्रेष्ट पुरष ते ई है ॥ जिन कौं संस
र तरने का पुरषारथ हूवा है ॥ हे रामजी अस्म भी ति

नहीं तब तिससों प्रस्न न करिये अरु जो उत्तर देणेकों स

महीमोंकरीणै। जो जाणै मेरे प्रस्नके उत्तर देणै
कों समरथ है। अरु जो देषीये मेरे प्रस्नके उत्तर देणै
कों समरथ है देषिये। तिसके बचन बिषै आसक्तभाव
नान होवै। तब प्रस्न उस प्रति न करिये। काहेतें।
जो दंभ करि प्रस्न करणा पाप होता है। अरु
उरु जो उपदेस तिसही कों करै। जो संसार तें बिर
क्त होवै। अरु केवल आतम परायण॥ जिसकी श्र
द्धा होवै। अरु आस्तिक भाव होवै। ऐसे पात्र कों
देषि करि उपदेस करै। पात्र बिना उपदेस न करै
हे रामजी गुर सिष्य दोनों उत्तम होते है। तब बचन
सोभते है। सो तूं भी उपदेस का सुद्ध पात्र है। जितेक
सुद्ध सास्त्रों बिषै बरनन कीये हैं। सो सब ही सुभ
गुण तेरे बिषै पाईते हैं। अरु मैं भी कहिणै उपदेस
देणै को समरथ हों। तातें कारज सीघ्र ही होवैगा॥
हे रामजी सुनणै मां थी। तेरी बुधि निरमल हो रही
है। मेरे ज्ञान सिद्धांत का सार बचन हैं। सो तेरे हिरदे
बिषै प्रवेस करि जावैगा। जैसे उजल बस्त्र कों केस
र का रंग। सीघ्र ही चढि आवता है। तैसें तुझकों उ
पदेस लगि जावैगा॥ जैसे सूरज के उदै हूये सूरजमु
षी कवल षिड आवते हैं। तैसे तेरी बुधि कमल॥

सा॥

प्रवेस करि जावैगा। जैसे तैजसतेज विषै सूरजकी कांति प्रवे
जाती है तैसे तेरी बुद्ध
जैसे तेरी बुद्धभी आत्मतत्त्व विषै प्रवेस करजावैगी सु
न्दरता करिकै। हे रामजी मैं तुमारे आगै हाथ जोडि कै
प्रार्थना करता हौं। तिस विषै तुं आत्मतत्त्व की भाव
ना करि। जो इन बचनों करि मेरा कल्याण होवैगा।
अरु जो बुद्धकों धारणा न होवै तो अल्पही मतिक
जिस सिष्यकों गुरुके बचनों विषै आसक्ति भाव
ना होती है। तिसका भी मुहीं कल्याण होता है। ता
तें मेरे बचनों विषै आसक्ति भावना करौ। अरु
जब करि तुं आत्मपदकों प्राप्ति होवैगा। मोपें कहि
ता हौं प्रथम जो इच्छा करु जो अज्ञानीजीवों विषय
असक्त नाम ती का बुद्धीयां का संसार त्याग। अरु
मोक्षद्वारे के जो च्यारि द्वारपाल हैं। तिनकों मि
भावना करु। जब तिन सौं मीत्रभाव करैगा। तब
मोक्षद्वारे के अन्दर पहुचाइ दैवैगा। तब आत्मद
र्शन तुझको होवैगा। द्वारपालों का नाम अब सुन
शम अरु संतोष अरु बिचार संतों की संगति।
ह च्यारों द्वारपाल हैं। जिन पुरुषों इन कों बशि
कीया है। तिसकों ये दसी पुरुषही मोक्षरूपी द्वार के
न कै देते हैं। हे रामजी जो सम नही बसन होवै तो ति
होवै। अथवा दोही होवै। अथवा एकही होवै। ती
भी द्वारे आवैगे। इन चारों का परसपर सनेह है
जहां एक भी आवता है। तहां च्यारों उपस्थित होत

है॥ जिसनै येक साथ सनेह कीया है तिसु धीमये है
अरु जिनहूं इनकौ त्याग कीया है ते उधी है॥ हे राम
जी जद्यपि ग्याँनी का त्याग होवै तौ भी ईक तौ बल
करि कै बस करिये॥ ईकै कै बस हूं ये चारों बस ह्वै
है॥ अरु तेरी बुध बिषै सत्यग्यांनहूं आगनि वा
स कीया है जैसै सरज बिषै प्रकास आस्त्रू दया है तै
सैं सतसास्त्रौं अरु संतौं करि जो निरमलग्यांन कहै है
तैं मनहीं तेरे बिषै पाईते है॥ हे रामजी अब तूं मेरे बच
नौं कौ अधिकारी है॥ जैसै तंरी के स्वग्यांनै कौ अ...
डोरा अधिकारी होता है॥ अरु सुनग्यांनहूं करि तेरी
बुध पिंडआई है॥ जैसै चंद्रमा के उदै हूये चंद्रमुखी
कमल पिंडआवतै है॥ हे रामजी सतसास्त्र अरु संतौं
की संगति हारा बुध कौं तीक्ष्णता कीये तैसी ब्रह्म आ
त्म तत्व बिषै प्रवेस करती है॥ तातैं श्रेष्ट पुरुष तेई
हैं॥ जिनहूं संसार कौं बिरसजांन्य करि त्याग कीया
है॥ सतसास्त्र अरु संतौं के बचन द्वारा आत्मपद पावे
कौ जतन करते है॥ अरु अबिनासी पद कौं प्राप्ति
होते है॥ अरु जो सुभमार्ग कौं त्याग करि संसार की
ओर लागे है॥ ति महामूरख अरु जड है॥ जैसे जल जल
ता करि कै गाडरू होजाता है॥ तैसे उन अग्यांनी ह
मूरखता करि कै आत्म मारग कौं जड हो जाते है॥ है

मरयरहिताहैं। कदाचित मोतिकों नहीं प्राप्ति होत अरु अभ्यासा करि सदा सुकच्या रहिताहै। जैसे अग्नि बिषे मांस पाया सुकछि जाताहै। हेरामजी आत्मपदके साक्षात्कार बिषे बिसेष अभ्यासही आवर्ण है। जैसे सूरजके आगे मेघके आवर्ण होताहै। तैसे आत्मपदके आगे तृष्णा आवर्ण है। जब तृष्णारूपी आवर्ण निवृत्त होवै। तब आत्मपदका साक्षात्कार होवै। अभ्यास तब दृढ होवै। जो संतोंकी संगति अरु सतसास्त्रोंका बिचार होवै। हेरामजी संसाररूपी इक बड़ा वृक्ष है। तिसकों बोधरूपी खड्ग करिके छेदनु। जब सतसास्त्र अरु सतसंगत करि तीक्ष्ण बुद्धि होवै। तब संसाररूपी वृक्ष नष्ट होवै। जहां सुमनुष्य होते हैं। तहां आत्मज्ञान भी आनि बिराजता है। जैसे जहां कमलफूल होता है तहां भंवरे भी आनि स्थिति होते हैं। हेरामजी तृष्णारूपी पवन करिके जब इच्छारूपी मेघ निवृत्त होताहै। तब आत्मरूपी चंद्रमाका साक्षात्कार होताहै। जैसे चंद्रमाके उदे हुये आकास सोभताहै तैसे आत्माके सा- क्षात्कार ८। ऐसे तेरी बुद्धि सोभैगी॥ इति श्री [illegible] नां नाम सर्गः॥१४॥ वसिष्ठ उवाच॥ हेरामजी अब इन वचनोंका अधिकारी है। कहतें जो तप बैराग्य

बिचारसंतोषअरुदिकजोशुभगुणसोंअरुसं
तङ्गजोकहेहैं।सोमनहीतेरेबिषैपाइयतेहैं।ताते
मेरेबचनोंकोंसुण।पुरिकिसप्रकारिसुणजोरा
जअरुतमगुणकोंत्यागिकरि।सुद्धसांतभाव
होकरिसुण।।राजसजोहैतिसेंअरुतामसजोहैते
होजाय।निद्राबिषैं।तिनदोनोंकोंत्यागकरिकेसु
ण।जेतेकछूजगासीकेगुण।सास्त्रमेंबरननकीये
हैं।तिनकीसंपंनतातेरेबिषैपाईतीहै।अरुजेति
कछूगुणपुरोंकेसास्त्रबरननकीयेहैं।तिसञाब
लीपकतकरिमैंसंपन्नहो।तैसैंसमरत्तहूंकरिसमु
न्नसंपन्नहैं।तैसेसंपन्नहो।तातेमेरेबचनोंकाअधि
कारीहैत।अरुमूरषोंकोंइनबचनोंकाअधिका
रनहीं।हेरांमजीजैसेंचंद्रमांउदेहोताहै।तबचंद्र
कांतमणिद्रवीभूतहोतीहै।अरुपथरहैजोतिसतें
भूतअवताहै।अरुजोपत्थरकीसिलहैतिनतें
तेंनहींश्रवता।तैसेंजहांजगासीहोताहै।तिसकोंप
रमारथबचनलगतेहैं।अरुअज्ञांनीकोंनहींल
गते।हेरांमजीजोसिषसुपात्रहोवे।अरुतपद
सकरनेहारा।।ज्ञानवांननहोवे।तबभीतसमिष
कोंआत्माकासाक्षात्कारनहीहोता।जैसेंचंद्रमुष
षीकमलनीनिर्मलभीहोवेपरचंद्रमांनहोवे।तब
भीप्रफुल्लतनहीहोता।।तातेंमोक्षपात्रहै।अरु

ऐसेकरैजोतैसाभिदाउष्णहोवै। अर्थइहजोबला
इवकुंड संसारकेदुःखनिवृत्तिपैहलाइमा
नहोवे। हेरामजीजिनोपुरुषोंको। इसप्रकारि
त्मपदकीप्राप्तिभईहै। सोपरमआनंदीभयेहैं।
सोकछकरतेहैंनकछुजाचनांकरतेहैहेरामज
हैऐसेअरुजपादेयतैरहित। परमसांतरूपीआ
तकरिपूर्य्याहोरहेहै। हेरामजीउहपुरुषनांनां
प्रकारिकीचेष्टाकरते सोइछआवतेहैं। परक
छूनहीकरते। जहांउनकेमनकीवृत्तजातीहै। त
हांआत्मसत्ताहीभासतीहै। आनंदआरिपूर्य्यहो
रहीहैजेसेपूर्य्यमासीकाचंद्रमां। अमृतकरिपू
र्य्यहोताहै। तैसेज्ञानवांनपरमानंदकरिपूर्य्यहो
है। हेरामजीइहजोसंतुष्टकौंअमृतरूपीहैतब
हीहै। इसकौंतबजांणैगा। जबउसकौंआत्मत
त्ताकासाक्षात्कारहोवैगा। तबइसकौंआत्मज्ञानकी
प्राप्तिहोतीहै। तबसभउपद्रवनष्टहोजातेहैं। जैसेचं
द्रमाकेमंडलविषै। तपतनहीहोती। तैसेज्ञानीकौंअ
नहोना। अरुअज्ञानीकौंसांतिकबहूंनहीहोती
जोकछूक्रियाकरताहै। तिसविषैउष्णहीपावता
है सुखकौंनहीपावता। जैसेकीकरिकेहृदसोंके
कापडेउत्पतिहोतेहैं। तैसेंअज्ञानीसोउपद्रवउत्प
नहोतेहैं। हेरामजीइसकीजोमूरषताकरिकेबो

।उत्पति होती है। अरु सो उपजइ अन्त कर काली कौ

।होता। अरु दरसन अरु सो उपजै कौ नहीं।

६

अरु चंडाल के देह कौ मिलै पाई

हे रामजी इह सो उपाय परम बोध का

अरथ इह

अरु सो उन

जैसे

तैसा और त्रिलोक

नाना प्रकार के दृष्टांत संमहता:

तहा सकथा है। तिसकौ जब इह विचारै। तब

।अरु आत्म ज्ञान रूपी ति

रजहै। जैसे अंध

।तैसे अज्ञानी को इह मा

।हे रामजी तिस ब्रह्म का

।सो अदृष्ट करि। गुरु

ज्ञान दान है। सो मैं सब का उपदेस करि। अरु आप

अनुभवहोइ। जबगुरुअरुसास्त्रअरुअपनी
अनुभवतीनोंएकहोमिलैहै। तबइसकाकल्याण
होवै। जबलगअन्तरअनन्तअनंदकौंप्राप्तिभयान
ही। तबलगबाहरअभ्यासकरैहै। तिसअन्तरअनन्ता
नंदकेप्राप्तिकरणेवारेहमगुरुहैं इसजीवके
हममित्रहैं। ऐसामित्रऔरकोऊनहीं। जैसाहम
मित्रहैं। हमारीसंगतितैं इसजीवकौं। आनंदकार
णेहारीहोतीहै। तातैंजोकछूमैंकहिताहौंसोतूं
करु। हेरामजी यहजोसंसारकेभोगहैं। सोविषयां
कहैं। तातैंइनकात्यागकरिसुखपाइयेहै। अरुप्राणी
नविषैअनंतदुःखहैं। इनकौंविषरूपजानिका
त्याग। हमसारखेजोंज्ञानवांनोंकासंगकरि। अ
रुहमारेबचनोंकौंविचारेतैंतेरेदुःखनष्टहोजांवै
। हेरामजी जिसपुरुषहमारेसाथप्रीतकरीहै। ति
सकौंहमआनंदपदकीप्राप्तिकरिहै। तिसआनं
दकौंपाइकरिब्रह्मादिकआनंदीभयेहैं। अरुए
हरज्ञानवानभीआनंदीभयेहैं। तिसनिरदोष
पदकौंप्राप्तिहोताहै। जोहमारेसाथप्रीतिकरताहै
रामजीविष्णुपुरमतेईहैं। जिसनेसंतोंकासंगअ
सास्त्रकेविचारद्वाराहशाकौंअहंपताकौंप्र
कीयाहै। अरुनिरभयरूपभयेहैं। आत्माकाअभ्या
सकौंदीनकरताहै। अज्ञानीकास्वरूपीक

जबलगब्रह्मांर

हेरामजीजिनोपु
८ अरुससारको
नपानादिकाभोगोंविषैसयानरूपहै।तिनकोत्य

रूसास्त्रोंकाविचारकरिकै।तिसतेंअत्मघनहोताव
अरुपरमानंदकोप्राप्तिहोताहै।अरुजोससार
मुरुक्षसनमुखरूपहै।सोउस्यातेंरुषपदकोप्राप्ति

जाणेजोइहविषहै।अरुरसकोपानकरै।तोविष
उसकोनासकरताहै।जेसेजिनोपुरषोसमारकोअ
सतजाणाहै।अरुबडेडिससाकेपदार्थोंकोअ
रुगतनकरतेहैं।तिसृत्युकोप्राप्तिहोवेगा।हेरामजी
जीजोपुरुषआत्मपदतेंबेमुखहैं।अरुआपको
कल्याणरूपजाणतेहैं।अरुआत्मअस्याषको
त्यागकरिसंसारकीओरधावतेहैं।सोक्याक
रतेहैंजैसेकिसीकेगेहविषेअगिनिलागी।अरु
गृहमेंरसाहकाहोवे।अरु।..

हंकी मज्या कू रिकेमैं न करि रहै तौ नासकौ प्राप्ति
होवैगा। तैसें इह भी जन्म मृतकौं प्राप्ति होवैगा। ग्र
करि जिस संसार कुं के पदार्थोंकौं। देषि करि राग है
यवान होते हैं। सो सुष दुष रूप हैं। जैसें बिजली
चमतकार होता है। अरु मिट जाता है। इस्थिर न
ही रहिता तैं मैं संसार का सुष दुष रूप ग्यान माना है।
हे रामजी इह संसार अबिचार करि भासता है। अरु
चार की द्रिष्टि तें लीन हो जाता है। तौ तुम भी बिचार करो।
सो तौ बिचार की द्रिष्टि तें लीन हो जाता है। इसी तें पुरुषा
रथ करीता है। जैसें हाथ बिषै दीपक होवै। अरु
धूं कूप बिषै गिरै तौ मूरषता है। तैसें संसार आत्म नि
वृत होवै। सो आत्म बिद्या भी न होवै। अरु मति मकौ
प्त न जावै तौ मूरषता है। हे रामजी जिनों पुरुषों नें
संतों की संगत अरु सतसास्त्रों के बिचार द्वारा आत
पदकौं पायौ है। ते पुरुष केवल केवल भाव कौ प्राप्ति
ये हैं। अरु प्रथम जो सुषचेतन कौं प्राप्ति कुं ये हैं। अर
संसार भ्रम तिन का निवृत होगया है। हे रामजी इस
रमन के संसरणे तें उत्पति होवै है। तो इस का कल्या
बोधतौ करि नहीं होगा। अरु धन करि भी नहीं हो
प्रजा करि भी नहीं होगा। अरु तीरथ कुं जाकरि भी
करि भी नहीं होगा। अरु न अपणी यां सुजान अ
ऐश्वर्य करि होगा है। एक मन के जीतणे करि कै

हे रामजी तिसकौ ज्ञानी परमपद कहते

निरलेप रहिते है। तिसकौ संसार का भाव अभाव रू
प सपरस करि नही करता। जैसे आकाश सबि विषे सरज
उ है होता है। तउ अग्यान की क्रया होती है। अरु जो अ
हष्ट होजाता है। तब क्रया भी जरत की लीन होजाती
है। जैसे तिस क्रया के होवणे॥ अवर न होणे करि
आकाश कह्यो जाता है। तैसे ज्ञानवान सदा निरले
प है। तिस आत्म ज्ञान के उत्पति का उपाइ हम
रा मोक्ष उपाय है। हे रामजी जो पुरुष इस मोक्ष उ
पाय कौ अभ्यास करुगा तिस दिन पठने सुणने ल
गा। तिस दिन इसकौ मोक्ष भी जा पावै। अरु मो
क्ष के चार द्वारपाल मैं तुझकौ कहे हैं सो इन द्
वारिओं कनौ अपणा वसि आवै तब मोक्ष द्वार
विषे इसका सीघ्र ही प्रवेस होवै॥ ९

विस्तारअरुअज्ञाकरु॥ हेरामजीइसमनइसकों
मबिश्रामकाकारणहै॥ अरुइहसंसारजोदेषीतां
सोमारूसथलकीनदीवतहै॥ तिसकोंदेषिकरिमूर
षअज्ञानीरूपीजोमृगहै॥ सोसुषरूपीजलकोंजां
करिदौडतेहैं॥ परसांतकोंनहींप्राप्तिहोतेजबसम
रूपीमेघकीबरषाहोतीहै॥ तबसुषीहोतेहैंअरुअ
थासुषीनहींहोता॥ हेरामजीसमहीपरमांनंदहै॥ अ
रुसमहीपरमपदहै॥ अरुसमहीसत्तिपदहै॥ जि
सपुरषसमकोंपायाहै॥ सोसंसारसमुद्रतैंपारहूवा
है॥ अरुतिसकोंसत्रुभीमित्रहोजाताहै॥ हेरामजीज
हांचंद्रमाआनंदहोताहै॥ तहांअमृतकीकिर
णांपडीफुरतीहै॥ अरुसीतलताहोतीहै॥ तैसेंजिस
केरिदैबिषैसमरूपीचंद्रमाआनंदहोताहै॥ ति
सकोंसर्बतपतमिटजातीहै॥ अरुपरमसांतवांन
होताहै॥ काहेतेंजोसमरूपीअमृतकरितृप्तिहै॥ हे
रांमजीअमृतसमानहै॥ इंद्रदेवताकोंअमरक
रताहै॥ इहपरमअमृतहै॥ हेरामजीसमकरिकेइ
सकोंपरमसोभाहोतीहै॥ जैसेंपूर्णमासीकेचंद्रमाकी
कांतिपरमउजलहोतीहै॥ जैसेंसमकोंपाइकरि
इसकीउजलकांतहोतीहै॥ जैसेंबिष्णुकेहिरिदै
है॥ सोकअरुपापसरीरबिषैरहिताहै॥ इसरासतोबि
षरहिताहै॥ जैसेंइसकेहारिदैहोताहै॥ इसकसरी

रखिंगेहुसरासमसीइसकारिदाहोताहै।हेरांमज
ऐसाआनंद।अम्रतकेपांनकीयेनहीहोता॥
अरुस्त्रीकामीकेप्राप्तिहोयेभीनहीहोता।जैसाआ
नंदसमकरिहोताहै।हेरांमजीप्रांनइंतेभीकि
सीकोंअधिकप्याराहोवै॥अरुअंतरध्यांन
होकरिफेरिप्राप्तहोवै।तैसाउसमकोंआनंदनही
होता।जैसासमदांनकोंआनंदहोताहै।।तिसके
दरसनकरिकैआनंदहोताहै।अरुऐसाआनंद
राजाकोंभीनहीहोता।जोमांजुंजेष्मनीहोताहै॥
अरुअंतरपुरसस्वयंहोतीहै।जैसाआनंदसमस
पनपुरुषांकोंहोताहै।हेरांमजीजिसपुरषकोंस
मकीप्राप्तिभईहै।सोब्रह्मांकरनेकोंजोगहै।अ
रुजनोंपहै।तिसकोंसमताप्राप्तिभईहै।तिसतें
लोकअंदेसहीपावता।अरुलोगोंतेंभीउदेगान
हीपावता।उसकीक्रयाअम्रतरूपहै।अरुबचन
भीउसकेअम्रतकीन्याईकोमलहै।जैसेचंद्रमांकी
किरण्यां।सीतलअरुअम्रतरूपहै।अरुसमकों
हिरदैआरांमहै।तैसेसंतजनोंकेबचनहै।जिसपु
रुषकोंसमप्राप्तिभईहै।जबइसजीवकोंउसकी
संगतिप्राप्तिहोतीहै।तबपरमानंदहोताहै।हेरांम
जीजैसेबालकमाताकोंपाइकरिआनंदवांनहो

ताहै ॥ जिसकौसमकीप्राप्तिभईहै ॥ तिसकौसो जिस
कौप्राप्तिहोताहै ॥ सोबालतेभीआनंदवांनहोताहै ॥
जैसैकिसीकाबांधवमूवाहूवा ॥ फिरआवैउसकौं
आनंदप्राप्तिहोताहै ॥ तिसतैंभीअधिकआनंदसम
संपन्नकेसंगतैंउत्पन्नहोताहै ॥ हेरांमजीजैसाआनंद
चक्रवरतीराजाकेपासतैंनहीहोता ॥ अरुराजरिषे
ःकीकापासतैंभीनहीहोता ॥ जैसाआनंदसमकेपास
तैहोताहै ॥ जिसकौंसमकीप्राप्तिभईहै ॥ तिसकेसत्र
भीमित्रहोतेहै ॥ तिसकरिकैउसकौंभयनहीरहिता ॥
अरुसर्पकाभयभीनहीरहिता ॥ सीहकाभयभीनही
रहिता ॥ अवरभीकिसीकाभयनहीहोता ॥ सरबदा
सांतिरूपहै ॥ हेरांमजीजोकौउकष्टआंनप्राप्तिहोवै
अरुप्रलैकालकीअग्निआनिलागै ॥ तोभीचलाईमा
ननहीहोता ॥ सदासांतरूपरहताहै ॥ जैसैसीतलचं
द्रमाविषैस्थितहोताहै ॥ तैसैंजोकछुसुमत्याअस्लं
पहै ॥ सोसमहीसंपन्नउत्पन्नकेरिदैविषैआनिस्थि
तहोतेहै ॥ हेरांमजीजोपुरुषअध्यात्मआदिकतापकूं
करिपड़ाजलताहै ॥ अरुउसकेरिदैसमकीप्राप्तिहो
वै ॥ तबतापमिटजातिहै ॥ जैसैंतप्तपृथ्वीबरषाकरिसी
तलहोजांतीहै ॥ तैसेंउसकारिदासीतलहोजाताहै ॥
जिसकौंसमकीप्राप्तिभईहै ॥ सोसमरूपाविषैसोभा

स्वरूप है॥ तिस कौं उष्ण कौ स्पर्स नहीं करता॥ जैसे
अग्नि की सिखा कौं वायु नहीं बेध सकता॥ तैसे जिन पुरु
षों ने समरूपी का दृढ पकड्या है॥ तिन कौं अध्यात्म कष्ट
दे ताप दे नहीं सकते॥ वह सर्वदा सीतल स्वरूप रहि
ता है॥ हे रामजी तपीस्वर पे जित अरु जल कराइया वा
अरु अन्नदान उपजाय जाप ध्यान कर्या कौं जो फल है॥ पर जिस
कौं समता प्राप्ति भई सो सर्व तें उत्तम है॥ अरु सर्व जनों कौं पू
जने जो फल है॥ उस के मन की वृत्ति है सो आत्मतत्व कौं ग्र
हण करती है॥ अरु समता करि पूर्या है॥ अरु सुभ निश्चया
बंधमान ता है॥ जिस पुरष कौं सब्द स्पर्स रूप रस गं
ध इंद्रियों के इष्ट अनिष्ट विषे॥ राग द्वेष नहीं तिस कौं
सांति आत्मक कहिते है॥ हे रामजी जो संसार के रमणीक
पदार्थों विषै बंधमान नहीं होता॥ अरु आत्म आ
नंद करि पूर्या है॥ तिस कौं सांतिवान कहिते है॥ जो र
तवान है सो संसार के सुभ अरु असुभ करि मलिन नहीं
होता सदा निर्लेप रहिता है॥ जैसे आकास सर्व पदा
र्थों ते निर्लेप रहिता है॥ तैसे सांतवान पुरष निर्लेप
रहिता है॥ हे रामजी ऐसा जो पुरष है सो सम मन विषय
की प्राप्ति विषे संतुष्ट हरषवान नहीं इच्छावता है॥

देता नही ॥ अपने आप बिषै सदा परमानंद रूप है ॥ जै
से सूरज के उदै हुऐ अंधकार नष्ट होजाता है ॥ तैसे सांति
के पाऐ तें सब दुख नष्ट होजाते हैं ॥ अरु जो निरबिकार है
सो सांतिवान कहितें है ॥ हेरांमजी जे पुरुष सब चेष्टा
भी करते द्रष्ट आवते हैं ॥ पर सदा निरगुण रूप हैं ॥ कों
उ क्रिया उन्कों सपरस नही करती ॥ जैसे जल बिषै क
मल निरलेप रहिता है ॥ तैसे सांतिवान सदा निरलेप
रहता है ॥ हे रामजी जो पुरुष बडे राजसंपदा कों पाइ
करि ॥ अरु बडी आपदा कों पाइ करि ॥ दोनों बिषै ज्यों
का त्यों रहिता है ॥ अरु सांतिवान कहीता है ॥ हेरामजी
जो पुरुष सांति तें रहित है ॥ तिनका हित बिन बिषै ग
या है सपडा छोडीता है ॥ अरु जिसकों सांति की प्राप्ति
हुई है ॥ सो अंतर बाहर ते सीतल है ॥ अरु सम दृष्टि क
र से है ॥ जैसे हिमालापर बहुत सीतल होता है ॥ तैसे उह
पुरुष सीतल होता है ॥ अरु मुष की कांति भी बहुत
सुंदर होजाती है ॥ जैसे निहकलंक चंद्र मा होता है ॥
तैसे सांतिवान की निहकलंक कांति होती है ॥ हेराम
जी जिसकों सांति प्राप्ति हुई है ॥ सो परमआनंद है ॥ अ
रु परमग्यान तिस ही कों प्राप्ति भया है ॥ अरु जांनी तिस
कों परमपद कहितें है ॥ अरु पुरुषारथ कहिया है ॥
सो इही करया है ॥ जिस करि इसकों सांति की प्राप्ति

होवै॥ तातें हे रामजी जैसें मैं कहा है तिस क्रम क
रिकै सो तिसकौ ग्रहण करिऔ तब संसार समुद्र
के पार कौ प्राप्ति होवौ॥ इति श्री मुमोक्षउपकरणे
शमनिरूपणं नाम सर्गः॥ १३॥ वसिष्ठोवाच॥ हे राम
जी अब विचार का निरूपण सुण॥ जब रिदा शुद्ध
होता है तब इसकौं विचार उपजता है अरु सा
स्त्र के विचार द्वारा॥ जब बुधी तीक्षण होती है तब
सो बुद्धी आत्मपद कौ प्राप्ति होती है हे रामजी अ
विचार रूपी जो वन है॥ तिस विषे आपदा रूपी व
ल्ली उत्पति होती है॥ तिनकौ विचार रूपी खड्ग क
रिकै काटणा॥ तब सांत आत्मा होवैगा॥ अरु मो
ह रूपी हस्ती है॥ अरु जो तुम्हकौं रिदे रूपी कमल कौं
खंड खंड करता है॥ अरु थरहर जो इष्ट अनिष्ट प
दारथों विषे राग द्वेष करि खेद होता है॥ तब विचार
रूपी सिंघ जागै॥ तब मोह रूपी हस्ती कौं नाश करै॥ अ
रु हरख सों तिस आत्मा कौं हे रामजी जिसकौं सिद्धता प्रा
प्त भई है॥ सो विचार अरु उद्धारण करि भई है॥ अरु
जो राजा होता है॥ सो प्रथम विचार करिकै पुरुषार्थ करि
होता है॥ तिस करिकै राज कौं प्राप्ति होता है॥ अरु
बुध अरु तेज॥ अरु रूढ रथ जो पृथ्वी का श्रामन अरु
पंचम पदार्थ कौं प्राप्ति होती है सो इह पांचूं कौ भी विचार

तात्पर्य अरु फल है अर्थ रूप जो आत्मा को प्राप्ति
अरु कैसे जन्म रूप पदार्थ कूं कारण आत्मा अनन्त रूप प्राप्ति बिचा
र करि होता है ॥ हे रामजी जिनों ने बिचार का आश्र
लीया है सो इष्ट बिचार करिके जिसकी बांछा करते हैं
तिसको पावते हैं ॥ ताते बिचार इसका परममित्र है
जो बिचारवान पुरुष है ॥ सो आपदा बिषे मग्न नहीं
होता ॥ जैसे तूंबरा जल बिषे बूडता नहीं ॥ तैसे वह आ
पदा बिषे डूबता नहीं ॥ हे रामजी बिचार संयुक्त मति जो
कछु देता है लेता है क्रिया करता है सो परमसिद्धता
का कारण होता है ॥ धरम अरथ काम मोक्ष च्यारों पदा
रथ बिचार को हस्ता करिके सिद्ध होते हैं ॥ बिचार रू
पी कल्पवृक्ष है ॥ तिस बिषे जिसका अभ्यास करता
है सोई पदार्थ सिद्ध होता है ॥ हे रामजी शुद्ध बुद्धि का
बिचार प्रकाश करके ॥ आत्म ज्ञान को प्राप्त
होते हैं ॥ जैसे दीपक करि पदारथ का ज्ञान प्राप्त होता है
जिस पुरुष बिचार करिके ॥ सत असत को जान्या है
असत्य असत को त्याग करि ॥ सत की ओर जतन किया
है सो बिचारवान कहीता है ॥ हे रामजी संसार रूपी
समुद्र बिषे आपदा रूपी तरंग है ॥ जो बिचारवान पु
रुष है ॥ सो संसार के भाव अभाव बिषे कष्ट
वान नहीं होता ॥ जो कछु बिचार संयुक्त क्रिया होती
तिसका उत्तम सुख होता है ॥ अरु बिचार बिना जो
ति

होतीहै।।तिसकरिउमडाप्रिहोताहै।हेरांमजी
बिचाररूपीकंरंजेकाहूटाहै।।तिसतेंउपरूपीकं
कूपडेहोतेहैं।।अबिचाररूपीरात्रिहै।।तिसबिषेत्रि
ांरूपीपिशाचनीआंनीश्चरतीहै।।जबबिचार
रूपीसूरजउदेहोताहै।।अबिचाररूपीरात्रि।।अरु
तिस्नारूपीपिशाचनीनष्टहोजातीहै।हेरामजीति
राउहीआसारमनादहै।।तुम्हारेरिदेमेंअबिचाररू
पीरात्रिबिचाररूपीसूरजकरिनष्टहोवै।।अबिचारि
करिकेसंसारदुषउदेहोताहै।।अरुबिचारकीयेसे
संसारदुषनष्टहोताहै।जैसेबालकअबिचारकरि
कै।।अपणीपरछांहीबिषे।।बेतालकल्पकरिभय
कोंपावताहै।।अरुबिचारकीयेतेंभयनष्टहोताहै
तैसेंअबिचारकरिकै।।संसारदुषकोंभयदेताहै।।
अरुसतसास्त्रोंकीजुगतिकरिबिचारकीयेतें।।सं
रभयेनष्टहोताहै।।हेरामजीजहांबिचारहैतहांत
दुषनहीरहिताहै।।जैसेजहांजहांप्रकाशहोताहै
तहांतहांअंधकारनहीरहता।।तैसेंजहांबिचार
तहांसंसारभयेनहीरहता।।अरुजहांबिचारन
हांसंसारभयरहताहै।।अरुजहांआत्माबिचा
तिहोताहै।।तहांसुषकेदेनेहारसुभगुणआ
स्थितहोतेहैं।।जैसेंमानसरोवरबिषेकमलत

अरु जहां बिचार नहीं । तहां दुषों का आगमन होता है
हे रांमजी जो कछू अबिचार करिके कर्या करता है
सो दुषों का कारण है । जैसे कहां जो मूड कों देषता
अरु मृत का निकासता है । जहां एकठी करता है
तहां मृतका तें थली उत्पत्ति होती है । तैसे अबिचा
र करिके दुःखरूप अनर्थ का रूपी दुषों कों एकठां
करता है । तिसतें आपदा रूपी बेली निकसती है
अरु अबिचार रूपी पुण्य का माया सुकाल कहै । ति
स ते सुष रूपी फल चाहै तौ नहीं निकसते । अरु अबि
चार किस का नाम है । जिस करिके सुभ क्रिया नहीं
है । तिसका नाम अबिचार है । अरु जिस करिके स
ब्द के अनुसार क्रिया होवै । तिसका नाम बिचार है
हे रांमजी बबेक रूपी राजा है । अरु बिचार रूपी ध
जा है । जहां बबेक रूपी राजा आगमन करता है । त
हां बिचार रूपी धजा भी साथ है । अरु जहां बिचार
रूपी धजा आवती है । तहां बबेक रूपी राजा भी आ
वता है । जो पुरष बिचार करिके संपन्न है सो पूजने
जोग है । तिस कों सभ कों नमस्कार करता है जैसे
नीया के चंद्रमा कों सभ नमस्कार करते है हे रांमजी
हमारे देषतें । अल्पबुद्धी भी बिचार की दृढता तें सो
रूपद कों प्राप्ति हूये हैं । तातें बिचार इसका परमपि
त्र है । जो बिचारवांन पुरष है । तिसका अंतर बाहर सी

तलहोजाताहै। तैसेहिमालापरबसंतरतेंभीसीत
लहै। अरुबाहरतेंभीसीतलहै। तैसेंउहभीसीतल
होजाताहै। बिचारकरिकेऐसेपदकौंप्राप्तहोता
है। जोपदनित्यहैअरुसुद्धहै। अरुअनंतहैपरमा
नंदसरूपहै। तिसकौंपाइकरि। नकिसीकेत्याग
कीइछाहोतीहै। नकिसीकेग्रहणकीइछाहोती
है। इष्टअनिष्टबिषैसमानहोजाताहै। तैसाकेजैसें
ग्रहणबिषै। अरुलीनहोणेबिषै। समुद्रसमानरह
हिताहै। तैसेंबडेभीकौंइष्टअनिष्टबिषैसमताहो
तीहै। अरुसंसारभ्रममिटजाताहै। अवरक्षेपतेंर
हतकेवलअद्वैततत्वउसकौंभासहोताहै। हेरामच
जी। इहजगतअपणेमनकेमोहतेंउपजताहै। अरु
सुपनकौंबिचारकरिकेउपदाईभासताहै। जैसेंअ
बिचारकरिकेबालककौंबेतालभासताहै। तैसेंअ
सकौंसंसारभासताहै। तबउत्तमबिचारकौंप्राप्तहो
ताहै। तबजगतभ्रमनष्टहोजाताहै। हेरामजी। जिसघटबि
षे बिचारउपजताहै। तहांसमताआनिउपजतीहै।
जैसेबिजतेंअंकुरनिकसआवताहै। तैसेबिचारतें
समताउपजआवतीहै। अरुबिचारवानपुरषजिस
ओरदेखताहै। तिसीओरआनंदद्रिष्टआवताहै॥
दुषकहूंनहीद्रिष्टआवता॥ जैसेसूरजकौंअंधकार
नहीद्रिष्टआवता॥ तैसेबिचारवांनकौंदुषनहीद्र

आवती॥ अरु जबतांई अबिचार है तबतांई षेद है॥ अरु
जबतांई बिचार है तबतांई षेद नहीं॥ जैसें अंधकार बिषय
लेकको है ताके आसता है॥ अंधकार के अभाव हु
ए तें ताका जो अभाव होजाता है॥ अरु सूरज की न
हीं रहता है॥ तैसें बिचार कीये तें दुष का अभाव
होजाता है॥ हे रामजी संसार रूपी दीर्घ रोग है॥ तिस
के नास करने को बिचार बडा औषद है॥ जिस के
बिचार की प्राप्ति भई है॥ तिस के मुष की ज्योति
उजल होजाती है॥ जैसें पूरणमासी के चंद्रमा उ
जल ज्योति होती है॥ तैसें बिचारवान के मुष की उ
ज्जल ज्योति होजाती है॥ हे रामजी बिचार करिके
इस को परमपद की प्राप्ति होती है॥ जिस करि अ
र्थ सिद्ध होवे ऐसा बिचार करीये॥ अरु जिस करि अ
नर्थ की प्राप्ति होवे सो अबिचार है॥ अबिचार रू
पी मदरा है॥ जो इस को पान करता है सो उनमत हो
जाता है॥ तिस तें सुभ आचार कछु नहीं होआव
ना॥ सास्त्र के अनुसार जो कछु सुभ क्रिया है सो ति
स तें होइ नहीं आवती॥ तातें अबिचार करिके
र्थ सिद्ध नहीं होता॥ हे रामजी इछा रूपी रोग
॥ सो बिचार रूपी औषद करिके निरवरति हो
ता है॥ जिनों पुरुषों ने बिचार द्वारा परमार्थ सता
का आस्रा कीया है॥ सो परम सांत होजाता है॥ अरु

धेउपाधेप्रवृत्ति तिनकीजातीरहतीहै। अरुहेउप
कोसाक्षीभूतहोकरिदेखतेहैं। अरुसंसारकेग
तआगेदनिकेजोरहितेहैं। अरुजेअस्ततेरहित
नहसंशाकूपहै।जैसेसमुद्रजलकरिपूर्याहै।तै
सेबिचारहीनअनात्मतत्त्वकरिपूर्याहै।जैसेअंधेकू
पविषेगिड्याहूआ।हस्तीकेआश्रेनिकसताहै।जै
सेसंसाररूपीअंधेकूपविषे।गिड्याबिचारकेआश्रे
होकरि।बिचारहीननिकसवेकोंसमरथहोइसक
ताहै।हेरामजी।बिचारकोंआश्रेकरि।संसारसमुद्र
हूतेतिरै।जोकोऊरोगीहोताहै।सोऽऽताकूदंननहीं
करता।जेताकूदनबिचारतेंरहितपुरुषकरतीहै।अ
रुजिसकोंकोऊकष्टप्राप्तिहोताहै।सोभीताकूदन
नहीकरता।जेताकूदनबिचारतेरहतेपुरषकरतीहै
हेरामजी।जोपुरषबिचारतेंसून्यहै।समहींआपदा
तसकोंआनिप्राप्तहोतीहै।हेरामजीकोचक्काकीट
लीहोइजाऽऽऽमलाहैं। अरुअंधेरीबिलविषेसरपहोव
ऽऽऽजीश्रेष्ठहै।परबिचारतेंरहतहोइजाउत्तमहै।जो
पुरषबिचारतेंरहतहै।अरुसोगोंविषेपडाभ्रमता
है।हेरामजीबिचारतेंसून्यहैसोकष्टकोंप्राप्तहोताहै
तातेंएकनिमेषमात्रबिचारतेंरहितनहोइरह्णा।इष्टहो

इरूपकात्यागकरयाः ॥ हेरामजीजोपुरुषबिचारवांन
हैसोसंसारकेभोगोंबिषैनहींगिरता ॥ अरुमतबि
सेइस्थितहोताहै ॥ बिचारजबदृढहोताहै ॥ तबति
सतैतत्त्वज्ञानहोताहै ॥ अरुतत्त्वज्ञानतैबिश्रामहो
ताहै ॥ अरुबिश्रामकरिकै ॥ चित्तउपसमहोताहै
अरुचित्तकेउपसमहुयां ॥ समस्तदुःखोंकानासहोताहै
॥ इतिश्रीमनोक्षत्रकरयाबिचारनिरूपणंनामस
ः ॥ १४ ॥ बसिष्ठउवाच ॥ हेरामजीअबिचाररूपीसत्रु
केनासकरताजिसकोंसंतोषप्राप्तिहुवाहै ॥ सोपर
मानंदीहुवाहै ॥ अरुत्रिलोकीकाऐश्वर्यतिसकोंतृ
कीन्याईतुच्छभासताहै ॥ हेरामजीऐसाआनंदत्रिलो
कीकेराजकरिनहींप्राप्तिहो ॥ करअमृतकेपान
कीएतैभीऐसाआनंदनहींहोता ॥ जैसाआनंदसं
तोषवानकोंहोताहै हेरामजीइच्छारूपीरात्रिहै अ
हृदैरूपीकमलकोंमुरझाइलेतीहै ॥ जबसंतो
षरूपीसूरजउदैहोताहै ॥ तबइच्छारूपीरात्रिकाअ
भावहोजाताहै ॥ जैसेक्षीरसमुद्रउज्वलताकरिकेशो
भताहै ॥ तैसेसंतोषवानकीकांतिसोभतीहै ॥ हेरा
जीजोत्रिलोकीकाराजहै ॥ परइच्छानिवृत्तनहींहु
तबदरिद्रीहै ॥ अरुजोनिर्धनहैपरसंतोषवानहै
तबसबकाईश्वरहै सोसंतोषकिसकानामहै सो
वृत्याकरु ॥ जोअप्राप्तिवस्तकीइच्छानकरै ॥ अरु

कूंइष्टअनिष्टबिषेरागद्वेषनकरैतिसकानाम
तोषहै।अरुसंतोषकानामपरमपदहैसंतोषवां
नपुरुषसदाआनंदरूपहै।अरुआत्मस्थितिकरि
त्रिप्तभयाहै।तिसकौंअवरइच्छाकछूनहीफुरती।अ
रुसंतुष्टताकरिकैउसकाचित्तप्रफुलतरहताहै।जै
सेंसूरजकेउदेहौंसौंसूरजमुषीकमलप्रफुलतहोताहै
तैसेंसंतोषवांनकाचित्तप्रफुलतहोताहै।जोअप्राप्ति
वस्तहैतिसकीइच्छानहीकरताअरुजोअनीछतप्रा
प्तहै।तिसकौंजथासास्त्रकरमकरिकैग्रहणक
ताहै॥तिसकौंसंतोषवांनकहितेहैं।जैसेंपूर्णमासी
काचंद्रमा॥अमृतकरिकैपूर्णहोताहै॥तैसेंसंतोष
नसंतुष्टताकरिकैपूर्णहोताहै॥अरुजोसंतोषवे
हितेहैं।तिसकौंरिदैरूपीबनबिषेसदाउपशमअरवि
रूपीफूलपडेअत्यंतहोतेहैं॥हेरामजीजोचित्तसं
तेंरहतहै।तिसबिषेनानांप्रकारकीइच्छापडीउ
होतीहैं।जैसेंसमुद्रतेंनानांप्रकारकेतरंगउत्प
तीहै।अरुजोसंतुष्टआत्माहै सोपरमआनंदवे
कौंजगतकेपदार्थोंबिषेहेयअरुउपादेयबु
होती।हेरामजीऐसाआनंदसंतोषवांनकोहो
माअष्टसिधकौंअरुजेपायतेंभीनहीहोता।अ
नकीहैतेंभीनहीहोता।संतोषवांनसदासांतिरूपै

संतोषरूपी वृक्षों करि तिसकी सांति होगई है ॥ ऐसी कार
णते निर्मल है ॥ हे रामजी संतोषवान पुरुष सबको प्या
रा लागता है ॥ जैसे परिपक्क फल अरु बालका सुंदर होता है ॥
अरु सबको प्यारा लागता है ॥ तैसे संतोषवान पुरुष सब
को प्यारा लागता है ॥ अरु स्तुति करने जोग्य है ॥ जिस
पुरुषको संतोष प्राप्ति भया है ॥ तिसको परमलाभ हुवा है
हे रामजी जहां संतोष है तहां इच्छा नहीं रहिती ॥ अरु संतो
षी खेदवान नहीं रहिता ॥ उह उदार आत्मा है ॥ अरु सदा आ
नंद करि त्रिपति रहिता है ॥ जैसे मेघ पवन के आये तें नष्ट
होजाता है ॥ तैसे संतोष के आये ते इच्छा नष्ट होजाती है ॥ अ
रु जो संतोषवान पुरुष है ॥ तिसको देवते रिषी ईश्वर सबन
मस्कार करते हैं ॥ अरु धन्य धन्य करते हैं ॥ हे रामजी इस
संतोषको आश्रयोगे तब परम सोभा पावोगे ॥ इति श्री मनो
[illegible] प्रकरणे संतोषनिरूपणंनाम [illegible] ॥ १५ ॥ अथ [illegible]
[illegible] ॥ हे रामजी अवर जेते कछु दान तीर्थ आदिक साध
न हैं ॥ तिनों करिके आत्मपद की प्राप्ति ऐसे नहीं होती ॥
जैसे साधसंग करिके आत्मपद की प्राप्ति होती है ॥ साधसं
ग रूपी इक कल्पवृक्ष है ॥ तिसका फल आत्मज्ञान है ॥ जिस पु
रुषने इस फलकी रक्षा करी है ॥ सो अनुभव रूपी फलको
पावैगा ॥ हे रामजी आत्मानंद तैं रहित है ॥ सो संतों के संग
करि ज्ञान के पाए तें अमर होता है ॥ अरु जो विपत्तों करि
दुषी है सो संतों के संग करि संपदा को पावता है ॥ आपदा

रूपीकमलैंकौंनासकर्त्ता॥संतौंकासंगगाढनहै।संतौं

गतिकरिइसकेहिदैबिषैग्यांनरूपीदीपकजगावताहै॥
तिसकरिकैअग्यांनरूपीतमनष्टहोजाताहै॥अरुव
मोक्षस्वरूपैकौंप्राप्तिहोताहै॥इहजडिकिसीभोगपदारथ
कीइछानहींरहिती॥अरुबंधनांनहोताहै॥अरुसब
तेऊंचपदविषैबिराजताहै।जैसेंकल्पब्रिछकेनिक
टिगएतैं।बांछितफलकीप्राप्तिहोतीहै।तैसेंसंतौं
केसंगकरिबांछितफलकीप्राप्तिहोतीहै।रामनामसंसा
ररूपीसमुद्रतेंपारउतारनेवालासेतरूपहै।जैसेंजीव
रनवकाकरिकैपारकरताहै।तैसेंसंतजनजुग
तकरिकैसंसारसमुद्रतेंपारकरतेहैं।अरुमोह
रूपीमेघकानासकरतासंतौंरामपवनहै।जिन
कादेहादिकअनात्माविषैसनेहनष्टभयाहै।अरु
सुद्धआत्माविषैस्थितिभईहै।तिसकरिकैत्रिप्ति
भईहै।इहजडसंसारकेइष्टअनिष्टविषैचलाय
मानन्हींहोता।सदासमताभावविषैस्थितिहै।ते
संतसंसारसमुद्रकेपारउतारनेकौंपुलहै।अरुदुख
प्रदारूपीस्त्रीकौं।पिरजडसम्मतनासकरतेहैं।दे

दार्थकी प्राप्त होती है॥ परंतौं अप्राप्तउ
त्तमतें नीच होता है॥ तिसकौं पदार्थकी प्राप्त न होवे
ती॥ जिनौं पुरुषौंने सतसंगका त्याग कीया है तें नरक
रूपी अग्निविषे जलकर दोहकरि जलैंगे अरु जिनौं
पुरुषौं सतसंग कीया है॥ तिनकौं नरकरूपी अग्निक
नास करता साधसंग होवे है मेघकी न्यांई॥ हे रामजी सत
संगरूपी गंगा है॥ जिनकूं सतसंगरूपी गंगाका स्नान
कीया है॥ तिनकौं यज्ञ दान तपादिका॥ साधनसाथ
क प्रयोजन नहीं॥ उह साधसंग करिके परमगतिकौं प्रा
प्ति होवेंगे॥ तातें और सब उपाधौंकौं त्यागिकरि सतसं
गकौं सेविये॥ जैसे निरधन चिंतामणि आदिक धनकौं
खोजता है तैसें मनोहूं सतसंगकौं खोजे॥ अध्यात्मादि
क तीन तापौं करि जो पडे जलता है॥ तिसकौं सीतल
करनेहारा संतौंका संग है॥ जैसे तपी हुई पृथ्वी मेघक
रि सीतल [illegible] होती है तैसें संतौंके संग करि हृदा सीत
ल होता है हे रामजी मोहरूपी [illegible] सकता सतसं
गरूपी कुहाडा है॥ सतसंग करिके उह पुरुष अविना
सी पदकौं प्राप्ति होता है॥ तिस पदके पायेतें बहुरि अव
कछु पावनेकी इच्छा नहीं रहती॥ अरु सबतें उत्तम होता
है॥ जैसें सब अपूर्व रत्नतें लक्ष्मी उत्तम है॥ तैसें सतसंग क
तौ सबतें उत्तम है॥ तातें अपने कल्याणके निमित्त सतसं
ग करणा उत्तमकौं जो पहे॥ हे रामजी उह चारौं जो मोक्षके॥ द्वा

रपालनउनकोंमैंकहेहौं॥जिनोंद्रुरुपोंइनकेसाथप्रीति
करीहै।तेसीघ्रहीआत्मपदकोंप्राप्तिहोहैं।अरुजोइ
नकीसेवनहींकरतेसोमोक्षकोंप्राप्तिनहींहोतेहेरा
मजीइनचारोंविषेएकभीजहांआवताहैतहांसंतोष
अरुविचारसाथसमभीआवतीहै।जैसेंजहांसमुद्रहोत
है।तहांसर्वनदीयांआवतीहै।तैसेंजहांसमहोताहै।त
हांऔरतीनोंआवतेहैं।अरुजहांसाधसंगहोताहै
तहांसमसंतोषविचारभीआवतेहैं।जैसेंजहांकल्पवृक्ष
निकटहोताहैतहांसबसंपदाआनिस्थितहोतीहै।
अरुजहांसंतोषहोताहै।तहांसमविचारसाधसंगभी
आवताहै।जैसेंपूर्णमासीकेचंद्रमांविषेसंपूर्णकलासंप
एकठेहोतीहै।तैसेंजहांसंतोषआवताहै।तहांतीनों
भीआवतेहैं।अरुजहांविचारआवताहै।तहांसंतोषउप
समअरुसाधसंगभीआवताहै।जैसेंश्रेष्टमंत्रीकरिलक्ष
मीराजविषेआनिस्थितहोतीहै।तैसेंजहांविचारहोता
है।तहांऔरभीतीनोंआवतेहैं।तातेंहेरामजीचारोंमें
निएकठेहोवेंतबतोपरमश्रेष्टहै।अरुजोचारोंनहोवें
तोएकभीहोवैतौचारोंआनिस्थितहोवेंगेमोक्षके
प्राप्तिहोनेकोंइहपरमसाधनहैंजिन्होंनेइनकेउपावकरिउ
नकीप्राप्तिनहींहैतौसंतोषपरमलाभसतसंगपरमग
ति विचारपरमज्ञानसमपरमसुखहैरामजीइहपरमक
ल्याणकेकरतेहैं।जोइनकोंकरिकेसंपन्नहैं॥

स्तादिकनीउस्तुतकरतेहैं। तातेंदंतोंसाथदंतनकोंबाइ
करिकेइन्द्रियोंकोंआश्रेकरिकेमनकोंवसकरु। हेरां
मजीमनरूपीहस्तीविचाररूपीअंकुसकरिकेवसहो
ताहै। अरुमनरूपीवनविषेवासनारूपीनदीचल
तीहै। तिनकेसुभअसुभदोकिनारेहैं। अरुपुरुषार
थकरनायहहै। जोअसुभकीओरतेंरोककरिसुभ
कीओरचलावणां। जबअंतरमुखीआत्माकेसुखअमृ
तकाप्रवाहहोवै। तबतूंपरमपदकोंप्राप्तिहोवैगा॥
हेरामजीप्रथमपुरुषार्थकरनायहहैजोअविचा
ररूपीनिद्रादूरिकर्णी। जबअविचारदीसादूरहो
वैगा। तबआपहीप्रवाहचलैगा। हेरामजीदृस्यकीओ
रजोप्रवाहचलताहै। सोबंधनकाकारणहोताहै। अरु
जबआत्माकीओर। अंतरमुखप्रवाहहोताहैसोमोक्ष
काकारणहोताहै। अबजोजैसेंतेरीइछाहोइतैसेंकरु॥
इतिश्रीमनोस्वाप्नकारणोसाधयंनामप्रपंचमाळनिर्वाण
समाप्तिः॥ अथवसिष्ठोवाच॥ हेरामजीइहजोमेरेबच
नहैंसोपरमपावनहैं। जोविचारवांनमुमुक्षुअधिकारी
है। तिसकोंइहबचनजोपढ़े। कैसेंबूझनेहैंजोपरम
बोधकाकारणहैं। जोउत्तमसुमुक्षुपात्रहैं। सोइनोंबच
नोंकोंपाइकरिसोमनसाहै। अरुइनबचनोंतेंसोमो
पावतेहैं। जैसेंमेघोंकेअभावहूएसरतकालविषै
चंद्रमांअरुसूरजकासमसोमापावतेहैं। सुकृत्यकास

सत्संगकौ। अभ्यासद्रढ़करिकैं ऐसासोमलताहै। अरुसन्त
जनोंकेतत्वरूपैवंध्याकरिकैआकासमेंजताहै। तैसें
जज्ञासीअरुनिरमलबचनोंकीमहिमाहोतीहै। हेरामजी। ३
तूपरमपात्रहै। अरुमेरेबचनपरमउत्तमहैं। इहजोमहारा
मायणमोक्षउपायेसास्त्रहै। सोआत्मबोधकापरमकापरम
कारण। अरुपरमपावनआकांक्षकीमहताहै। अरुसुभआच
रणकाकहैहै। अरुनानाप्रकारकेदृष्टांतकहेहैं। अरुजिनके
बहुतेजन्मोंकेपुन्नआनिएकठेहोतेहैं। तिनकाकल्याण
होताहै। अरुफलोंकरिकैकियदृताहै। तबतिसकों
इहसास्त्रश्रवणहोताहै। अरुजोअधमनीचहैं। तिनकोंइ
सकाश्रवणनहीप्राप्तिहोता। उनकीवृत्तिइनकेश्रवणबि
षेनहीआवती। जैसेंजोधरमात्माराजाहोताहै। तिसकी
इच्छान्यायेसास्त्रबिषेहोतीहै। अरुजोपापात्माराजाहोत
है। तिसकीइच्छानहीहोती। हेरामजीजैसेंपुन्नवानकीइ
च्छाश्रवणबिषेहोतीहै। अरुअधरमीकीइच्छानहीहोती।
जोपुरुषइसमहारामायणमोक्षउपायेसास्त्रकाधेनकेरण
णवानिहकामकेमुषतेंश्रद्धासंजुगतश्रवणकरै। अरु
आदितैंलेकरिअंतपरजंतबिचारै। एकाग्रभावहोइकरि
तबतिसकासंसारभ्रमनिवरतहोजावै। जैसेंजेवडीमें
तभ्रमदूरिहोजाताहै। तैसेंआत्मतत्त्वदेखतेहैं
णोतें।

सो बैराग्यप्रकरण है ॥ सो बैराग्यका प्रथम कारण है ॥ हे रामजी मारु
स्थल बिषे बृक्ष नहीं लागता ॥ पर बडी बरषा होवै तब त
होतो बृक्ष उत्पति हो आवता है ॥ तैसे अज्ञानी का रिदारूप
जो मारुस्थल है ॥ तिस बिषे बैराग्यरूपी बृक्ष नहीं उपजता
पर इस मायारूपी जो बडी बर्षा है ॥ तिसकर रिदेरूपी मारु
स्थल बिषे बैराग्यरूपी बृक्ष उत्पति हो आवैगा ॥ तिसका ए
क सहस्र पंचसौ श्लोक है ॥ तिसके अनंतर मुमोक्षु बिव
हार प्रकरण है ॥ तिस बिषे परमा निरमल बचन हैं ॥ तिसक
रि के प्रथम निरमल होता है ॥ जैसे मलिन रूई मणि का जतन
कीये तें उजल हो आवती है ॥ तैसे इसके श्रवण तें इह निर
मल हो आवता है ॥ अरु बिचार के बल तें आत्मपद पाव
णे को समरथ होता है तिसका एक सहस्र श्लोक है ॥ तिस
के अनंतर उत्पति प्रकरण है ॥ तिसके पंच सहस्र श्लो
क है ॥ तिस बिषे बडी सुंदर कथा दृष्टांत रूप महत कही है
सो कैसी उत्पति कही है जिसके बिचारे तें ॥ जगत का सत
ल भाव मन तें चल जाता है ॥ अरथ यह जो जगत का स
त्यताभाव जाणीता है ॥ हे रामजी इह जगत मनुष्य देवता
दैति पर बँदीयां देस लोक पृथ्वी अप तेज बायु आकास
दिक स्थावर जंगम भासता है ॥ सो अज्ञान करि भासता है
अरु इसकी उत्पति कैसे भई है ॥ जैसे जेवडी बिषे सर्प उत्प
ति होता है ॥ अरु सीपी बिषे रूपो उत्पति होता है ॥ अरु सू
रज की किरणां बिषे जल भासता है आकास बिषे इस

रावंद्रमाभासताहै।जैसेंअंधकारविषेरज्जुभासताहै।मनोराज
कीसृष्टहोतीहै।संकल्पकापुरहोताहै।स्वप्ननगरहोता
है।सुवर्नविषेभूषनकल्पितहोतेहैं।समुद्रविषेतरंगहो
तेहैं।आकाशविषेनीलताहोतीहै।जैसेंनदीकाविषेवेग
तें।किनारेकेवृक्षपर्वतचलतेदृष्टआवताहै।बद
लोंकेचलतेचंद्रमाधावतानजरआवताहै।तैसेंक
थाकेअर्थभासआवतेहैं।अरुशून्यविषेपूतली
यांनदिस्यतिनगरतेआदिलेकरिअसत्यपदार्थ
है।जैसेंअसतपदार्थसतरूपहोयभासतेहैं।तैसें
हीमनजगतकासरूपहै।अर्थकांजेकहन
है।अरुजोअरण्यरूपभासताहै।सोअज्ञानकरि
भासताहै।अज्ञानकरिउत्पतिहोताहै।अरुज्ञा
नकरिलीनहोजाताहै।जैसेंनिद्राकरिकेस्वप्न
कीसृष्टउत्पतिहोतीहै।अरुजागेतेनिवृत्तिहो
जातीहै।तैसेंअविद्याकरिकेजगतउत्पतिहो
ताहै।अरुसम्यकज्ञानकरिकेजगतनिवृत्तिहो
जाताहै।सोअविद्याभीकछुवस्तुनहीसर्वब्रह्म
चिदाकाश शुद्धस्वरूपहै।सोनित्यहैअनंतहै
परमानंदसरूपहै।तिसविषेजगतनहींउपजा
हैनलीनहोवेगाहै।ज्योंकात्योंआत्मस
आपविषेस्थितहै।तिसविषेजगत

इतनीउतती हैं॥ परन्तु बिनांभासती है॥ तैसे इहसृष्टि
मनबिषेइस्थितहै॥ बास्तवतेकछूबण्यांनहीं॥ सभ
आकासरूपहै॥ जबचितसंवेदनइसपंदरूपहोता
है॥ तबनानांप्रकारकाजगतहोकरिभासताहै॥ अ
निस्पंदहोतीहै॥ तबजगतमिटजाताहै॥ इसप्रकारि
उत्पतिप्रकरणबिषेजगतकीउत्पतिकहीहै॥ तिस
अनंतरइस्थितप्रकरणहै॥ तिसबिषेजगतकीइस्थि
कहीहैं॥ सोकैसेकहीहै जैसेइंद्रधनुषआकासरूप
है॥ अरुअबिचारकरिकेतिसबिषेवास्तकभाव
होतीहै॥ जैसेसूरजकीकिरणोंबिषेजलाभासहोता
जैसेजेवडीबिषेसर्प॥ असम्यकदृष्टिकरिप्रतीतहो
है॥ तैसेंअज्ञानकरिकेजगतकीप्रतीतहोतीहै॥ जै
मनोराजकरिकेजगतरचलेताहै॥ उत्पतिसोकछू
हीहूंवा॥ तैसेंइहजगतभीसंकल्पमात्रहै॥ जैसेंजब
गमनोराजहै॥ तबलगउहनगरहोताहै अरुजब
मनोराजकाअभावहूंवा॥ तबनगरकाअभावहो
ताहै॥ तैसेजबलगअज्ञानहैतबलगजगतहोताहैं॥
बसंकल्पतेरहितहूवातबजगतकाअभावहोजाताहै॥
सेइंद्रब्राह्मणकेपुत्रहूंकी॥ दसहूसंकल्पकरि
इस्थितिभयासोसंकल्पकरिकेउत्पतिभया॥ अरु
कल्पहीकरिकेइस्थितभईया॥ तैसेइहजगतभीहै
कपदारथअरथरूपनही हेरामजीइसप्रकारि

तप्रकर्ण बिषै कहा है॥ तिसके तीन सहस्र श्लोक है॥
तिसके बिचार ने करिके जगत सत्ता जाती है॥ तिसके
अनंतर उपसम प्रकर्ण है॥ तिसके पंचसहस्र श्लो
क है॥ तिसके बिचारे ते॥ अहंत्व आदिक बास
ना लीन हो जाती है॥ जैसे [illegible]क के ज्योति ते तम की
बासना लीन हो जाती है तैसे बिचारवान की अहं
त्व आदिक बासना जाती है काहे ते जो उसके निश्चे
बिषै जगत नहीं रहता॥ जैसे एक पुरष सोया हो
ता है॥ तिसके सुपने का जगत भासता है॥ उसके नि
कट जो जाग्रत पुरष बैठे है॥ तिनको उसके सुप
ने का जगत असत्य का सरूप है॥ तैसे बिचारवान के
रहे जगत असत्य का सरूप है॥ जब असत्य का सरूप ही
हूआ तब बासना कैसे रहै॥ जब बासना नष्ट हू
ई तब मन भी उपसम होता है॥ तब देषने मात्र उस
को मन चेष्टा होती है॥ परु उसके मन बिषै अर्थ रू
पी इछा नहीं होती है॥ जैसे रतां की अग्नि देषणे
मात्र होती है॥ अर्थ कारी नहीं होती॥ तैसे उसकी
चेष्टा होती है॥ हे रामजी जब मन बिषै इछा नष्ट
होती है॥ तब मन भी निरबान होता है॥ जैसे स
नेह ते रहित दीपक सहिज ही निर्बाण॥ होता है
तैसे इछा ते रहित मन निर्बाण होता है॥ [illegible]
का हि उपसम प्रकर्ण है॥ तिसके

बांग्याप्रकाश्याहैजोसेथरहासोई॥ २५५०० ॥ श्लोकहै
तिसबिषेपमैनिर्बाणप्रकरणकहाहै॥ बिचारकोइते
अज्ञानकरिके॥ जोचित्तद्वन्द्वरूपचित्तकीग्रंथिहै
सोनिर्बाणहोजातीहै॥ जैसेमतेकालबिषेमेघकेअ
भावतेसुरज्याकाशहोताहै॥ तैसेपुरुषबिचारकरि
केनिर्मलहोताहै॥ हेरामजीअहंकाररूपीपिसा
चहै॥ सोबिचारकरिनष्टहोताहै॥ जेतीकछुइच्छाफु
रतीहैसोनिर्बाणहोजातीहै॥ जैसेपथरकीसिलाफु
रणातेरहितहोताहै॥ तैसेइच्छातेरहितहोताहै॥ जे
तीकछूजगतकीजात्राहैसोतिसकोहोइचुकतीहै
जोकछूकरनाथासोकरिचुकताहै॥ हेरामजीसरीर
केहोतेही॥ आहीअसरीरहोजाताहै॥ अरुनानाप्र
कारकाजगतउसकोनहींभासताहै॥ जगतकीनेतते
उहअंधहोजाताहै॥ अरुअहंत्वआदिकजगतभ्रम
तिसकोनहींभासता॥ जैसेसूर्जकोअंधकारनहींद
ष्टिआवता॥ तैसेउसकोजगतनहींभासता॥ अरुऐ
सेपदकोप्राप्तिहोताहै॥ जिस्केकिसीअंशमात्रबिषेज
गतसरहै॥ जैसेसमेरपर्बतकेकिसीकोणबिषेकमं
लहोताहै॥ तिसकेऊपरिभवरेकुस्थितहोतेहैं॥ तैसेब्र
ह्मकेकिसीकोणबिषेजगतसरहै॥ तहपुरुषअचेत
चिन्मात्रहै॥ अरुरूपअलोकमनस्कारतिसको॥ आ
कासरूपहोजाताहै॥ हेरामजीजिसपदकोउहप्राप्त

कह्यो है। तिस पद की उपमा ब्रह्मा बिस्न रुद्र भी नेम क
हते हैं। तो भी करने कों समर्थ नही॥ जो ऐसा अर्थ रु
द्र जो इस के महत्त्य कों कहै नही॥ इति श्री महा रामायणे
मोक्षउपाये मोक्षबिवहार प्रकर्णे सत सहंस्री सं
तीयां बाल्मीकी बाक्य देवदूतोपकत प्रकर्णो बिस
श्राम बर्नन नाम सर्ग॥१७॥ बसिष्ठो बाच॥ हे रामजी इस प
रम उत्तम बाक्य है इस कों बिचारनें हारा उत्तम पद कों प्रा
प्ति होता है। जैसें उत्तम क्षेत्र बिषे उत्तम बीज पाये तें उत्तम फ
ल ही उत्पत्ति होता है। तैसें इन के बिचारनेवाला
उत्तम पद कों प्राप्ति होता है। कैसें बाक्य हैं इह जुगत रू
प बाक्य हैं। हे रामजी जुगति तें रहित बाक अर्थ भी हो
वें तो तिनकों त्यागकरीये अरु पोछें बाक जुगति सहित
होवे। तौ तिनकों अंगीकार करीये। हे रामजी ब्रह्मा के
बचन जुगति तें रहत होवें। तिनकों भी तृण की
न्याई त्याग करीये। अरु बालक के बचन जुगति सं
युक्त होवहि तन तिनकुं कों अंगीकार करियें। ऐसें न
करीये जो पिता का कूप होवे। तिस बिषे षाराजल हो
वे। अरु निकटि मिष्ट जल होवे। तिस कों त्याग करि
नाम के निमत्ति षारा जल पांन करिये। पिता का जांणि
करि षारा जल पांन कर्यो। सो चलता है तैसें ...
टेका बिचार न कीये। जो जुगति पूरबक ...

रखकहे॥ अरुबोधकेपरमकारणहैं॥ जोउत्तमपुरुषका
मुहोकरि॥ इससास्त्रकोंआदितेलेकरिअंतपर
जंतपढैअरुअर्थकोंपंडितसोंश्रवणकरिकेबिचारै॥
तबतिसकीबुद्धिसंस्कारीहोवैगी॥ प्रथमवैराग्यप्रकरण
केबिचारतैंइसकोंवैराग्यउपजताहै॥ जेतेकछुसंसा
रकेरमणीकभोगपदारथहैं॥ तिसकोंविरसदेखैगा
अरुकिसीपदारथकीबांछानरहैगी॥ जबभोगपदा
र्थविषैवैराग्यहोताहै॥ तबसातरूपआत्मतत्वबि
षैप्रीतिउत्पत्तिहोतीहै॥ तबबिचारकरिबुद्धिसंस्का
रीहोवैगी॥ तबसास्त्रकासिद्धांतबुद्धिबिषैआनिउप
स्थितिहोवैगी॥ अरुसंसारकेबिकारसोंरहितबुद्धिनि
र्मलहोवैगी॥ जैसेसरतकालविषैबद्दलोंकेनाशहोनेक
रिआकाशनिर्मलहोताहै॥ तैसेंबुद्धिनिर्मलहो
वैगी॥ बहुरिआध्याबाध्याकीपीडाउसकोंनहोवैगी॥
हेरामजी ज्योंज्योंबिचारदृढहोवैगा॥ त्योंत्योंसांतिआत्म
होवैगा॥ तातेंजेतेकछुसंसारकेजतनहैं॥ तिनकोंत्यागि
करिइससास्त्रकोंबिचारै इसकोंबारबारबिचारनेकरि॥ चे
तनसत्ताउदैहोवैगी॥ ज्योंज्योंचेतनसत्ताउदैहोवैगी॥ त्यों
त्योंलोभमोहादिकबिकारनष्टहोवैंगे॥ जैसेसूर्यउदैज्यों
ज्योंहोताहै॥ त्योंत्योंअंधकारनष्टहोताहै॥ तैसेंबिकार
नष्टहोवैंगे॥ बहुरितिसकोंप्राप्तिहोवैगी॥ जिसकेपायेतें
संसारखोजमिटजावैगो॥ जैसेंसरतकालबिषैमेघनष्टहोज

तेहैं॥ तैसें संसार के षोभ मिट जावेंगे हे रामजी ज्ञानवान पुर
षकों॥ संसार के रागद्वेष बेध नहीं सकते॥ जिस पुरुष कौं बच
पहर्या है॥ तिसकों बांण नहीं बेध नहीं सकते॥ तैसें तिसकों
रागद्वेष रूपी बांण नहीं बेध सकते अरु जोगों की इच्छा नहीं
रहती॥ जो बिषै जोग बिद्यमान प्राप्त भी होते हैं॥ तो भी तिन
कौं बुद्धि विषै बिजत करिके नहीं ग्रहण करते हैं॥ अरु जो
णि करि बाहज नहीं निकसती॥ अंतर आत्मा मांहीं विषै स्थि
त रहती है॥ जैसें पतिब्रता इस्त्री अपणे अंतहपुर तें बाह
ज नहीं निकसती॥ तैसें बुधि अंतर तें नहीं निकसती हे राम
जी बाहिज तो उह जी प्रकृति जननू की न्याईं दिष्टि आवत
है॥ जो कछु अनिछता प्राप्त होता है॥ तिसकों जोगता है
अरु करता दृष्टि आवता है॥ पर अंतर तें तिसकों राग
द्वेष नहीं फुरता हे रामजी जेता कछु जगत कौ उत्पत्ति
रूप लै का षोभ है सो ज्ञानवान कौं कष्ट देन नहीं सकती
जैसें उसमूल तक की उषी बेली कौं आंधी चलाइ नहीं स
कती॥ तैसें ज्ञानवान कौं जगत का कष्ट नहीं होता॥ अरु सं
सार की वोरसें जड होजाता है॥ अरु चैतन्य की न्याईं
अरु समुद्र की न्याईं गंभीर होता है॥ अरु सुमेर पर्वत की
न्याईं स्थिर होता है॥ अरु सम चंद्रमा की न्याईं सीत
ल होता है॥ हे रामजी आत्मज्ञान करिके परम पद
कौं प्राप्त होता है॥ जिसके पाए ते कछु पाव
ने जोग कछु नहीं रहिता॥ सो अ

मेरामोक्षउपायेशास्त्रहैकैसाशास्त्रहै ॥ जोनानाप्रकारके
दृष्टांतइसविषेकहेहैं ॥ दृष्टांतइसकानामहैसोसुण जो
वस्तुअपरछिन्नहोवै [illegible] विषेनआवै ॥ तिस
कीनांईजोदेषणेंविषेआवै ॥ तिसकेदृष्टांतकरिसमझि
एवृष्टिकजोसमझियेतिसकानामदृष्टांतहै हेरामजीइस
जगतकाकारजकारणरूपहै ॥ अरुआत्मामें कारजकार
णतेंरहितहै ॥ आत्माअरुजगतकीएकताकैसेंहोवै ॥ ता
तेंजोमेंदृष्टांतदेवौंगा ॥ तिसकाएकदेसअंगीकारकरणा
अरुदेसकरिअंगीकारनहींकरणा ॥ हेरामजीकारज
अरुकारणकी [illegible] रषांकरीहै ॥ तिसकेनिषेधने
कोंमैंसुपनदृष्टांतकहोंगा ॥ तिसकेसमझनेकरितेराभ्र
मनाशहोवैगा ॥ दृष्टअरुअदृष्टपकाभेदमूरषोंकोंभासता
है ॥ तिसकेदूरिकरणेअरथजोसुपनदृष्टांतकहोंगा ॥ ति
सकेविचारनेकरिमिथ्याविनाशकल्पनाकाअभाव
होवैगा हेरामजीतेसीकल्पनाकानाशकरतामेराइहशा
स्त्रहै ॥ जोपुरुषआदितेंलेकरिअंतपर्यंतइसकोंविचा
रतापंडितहैंसहितसमसकारीहोवैगा ॥ जोपदारथकों
[illegible] होवै ॥ अरुइसकोंविचारेतबदृश्यभ्रमतिस
कानाशहोजावैगा ॥ इसशास्त्रकेविचारविषे अवरकिसी
तीरथतपदानादिककीअपेक्षानहीं ॥ जहांसथानहोवै
तहांबैठे ॥ अरुजैसाभोजनग्रहविषेहोवैतैसाकरीये ॥ अ
वारवारइसकाविचारकरीये ॥ तबआत्मज्ञाननहीहोजा

वैगा॥ अरु आत्मपदकौ प्राप्तिहोवैगा हे रामजी इह आत्मप्र
कासरूपहै। जैसैं अंधकारबिषेपदार्थहैपनहीं आवता॥
अरुदीपकेप्रकासकरि अरुचक्षुसहितपाईताहै॥ तै
सैं आत्मरूपीदीपकबिचाररूपीनेत्रोंसहितहोवै। तबआत्म
पदकीप्राप्तिहोवैहै हे रामजी आत्मज्ञानबिचारबिनाक
रसतापकरिप्राप्तनहीं होता। जबबिचारकरिहै तब आत्मा
सकरियेतबप्राप्तिहोताहै। तातैंमोक्षउपायजोपरमपा
वनमार्गहै। तिसकेबिचारकीयेतें ज्ञातज्ञेयमनसर्वेज्ञा
वैगा। ज्ञातकोदेषतें देषतेंज्ञातमात्रमिटजावैगा। जैसें
सरपकीभ्रांतिमोहोतीहै। सो बिचारकरितमिटने [illegible]
ईताहै। अरुजबबिचारकरिदेषियेतबसरपभ्रम [illegible]
ताहै। सर्पकाआकारजो [illegible]
नष्टहोजाताहै तैसें [illegible]
जावैगा। [illegible]
जन्ममरणका [illegible]
[illegible]
मोताको [illegible]
बिचारवान [illegible]
संसार [illegible]
रणकारे [illegible]
ताहै [illegible]
तैसे [illegible]

इंकों इच्छा निष्ट बिषै की प्राप्ति बिषै इच्छा है सो नहीं करती
सदा एक रस रहिता है। अरु मन के संकल्प तें रहित शांत
रूप होता है जैसे मंद्राचल पर्बत के निकसे तें क्षीर समु
द्र शांति पाया है तैसे संकल्प बिकल्प तें रहित हुआ पुरुष
शांति रूप होता है। हे रामजी ऐसा पुरुष जो तेज होता है सो दीप
क होता है। अरु ज्ञानरूपी तेज जिस घट बिषै उदै होता
है। सो सत्त शांत रूप होता है। अरु तिस बिषै संसार के
बिकार को फुरना नहीं रहिता। जैसे कलिजुग बिषै उपद्रव के
तो। सिषा वालातागउदै होता है। सो कलिजुग के अभाव
हुए नहीं उदै होता। तैसे ज्ञानवान के चित बिषै बिकार न
ही उत्पति होता। हे रामजी संसार भ्रम। आत्मा के प्रमाद
करि उदै होता है। सो आत्मा के पावणे बिषै जतन बिना
शांति होता है। फल पत्र काटने बिषै भी कछु जतन हो
ता है। पर आत्मा के पावणे बिषै जतन कछु नहीं। कांहे
जो बोध ही करि जाणीता है हे रामजी जो जीव मात्र
ज्ञानसरूप है। तिस बिषै इस्थिर हो रह्या क्या जतन है
आत्मा सुषरूप अद्वैत रूप है। अरु जगत भ्रम मात्र है जो
पूरब अपर बिचार कीए ते जिसकी सता न पाईए। तिस
को भ्रम मात्र जाणीए। अरु रूप स्वरूप अपर बिचार कीए तें
त होवै। तिसकौ सतरूप जाणीए ऐसो इस जगत कौ स
ता न आदि बिषै पाईती है। न अंति बिषै पाईती है ता
स्वप्नवत है जैसे स्वप्न आदि बिषै नहीं पाईता। अरु

प्रबोधका परम कारण है जो गुरु बुद्धवान पुरुष स
कौं प्रकास गुरु विचारै।। तिसकौं भी ग्रहै आत्मपद
की प्राप्ति होवैगी तातें समझो इस उपायका जो प्रका
रि न्यास करो।। इति श्री [illegible] समनिरूपण
नाम सर्गः।। नमो रूप प्रकाश संपूरण स्वभावे।। साधकनी
रमा हिरदा का ना बाजो सा हिरदे के बीच ब्रह्म जका ना अप्र सेरा मद
म की तिसकौ दंडवत का।। तिन का सकार नमो तो इस्वारी।। तिसै
ग्रंथ संपूरण कीया।। सकल समाप्त।। ए रसा कै कुं डो रूप
[illegible] तिन स्वरूप कौ [illegible] गो
बिरगुरकौं नितिभी।। नमो सकल सब साधुजन
प्रसाद ज्ञान मत चरो।। हरचंद सतगा।।१।। श्री
[illegible] नित तिनमें मा हृदय भारी।। अपति नम
पति सहा गुरु भारी।। नाम तत्व मग्या सकल काहो पे
गा मन स्थान मसाय मंगल होये।। २।। रूप न रेख न भेख न
ही कोई।। ज्ञानी रहत न बंधानी पेमोइ।। पाप न ता पर
ही संसारा।। सीत ऊष्ण ते रहत निन्यारा।। ३।। के सी
तिको य प्रथा कही ये।। ज्यों गेहंग न देरान होये।।
बाकै ते अंतर इ प्रकासै।। तन पद नाम जानि तेजा
[illegible]।। वो कौ हृदय बाहरजे कहाई।। ४।। सक्ति कहै
ऐसो है ता ना का सबदम ही प्रकासा।। महत तन है
ज्ञान नमा सा।। तब हम बोल्त है कारन द्वारा।। ति
न को नाम कहै करतारा।। ताकौ सक्ति दोइ उ सम जा
नो।। विद्या र कन्न विद्या मानो।। ५।। ग्रमात्म विद्या नि

तिराजै॥ प्रथम रच्यौ ब्रह्म छिव्याजो दृबि राजै॥ सो
है सुधन हीत नहारै॥ कैछु बासननांजसु बिस्ता
रै॥७॥ तास्मातोइ चर द्विषरायो॥ जलमांइ नार
पनगायो॥ तातैंनी नमश्क्ति हिस्ताछो॥ रजत्मस्त
इह छिधी श्रनुमारी॥८॥ सातिक बिग्र रज अहंकृा
रुद्र॥ सो तांमस तीनौं गुणा जहंवा॥ ययेत रंगन्नसी
पद हीसमांनो॥ बाह्रज इइ करत जुगनांनां॥ ए॥ त
त पांचू मिलि सिष्टि उपाई॥ यो संसार हूवौ हे आई॥
प्रथम सबद आकास हि आयो॥ ता पाछें सिन पौन
चलायो॥१०॥ तिजतत भयो तास्मा गेंआइ॥ जल करि
रज दीसत है साइ॥ जल पृथीला तें घट हूवा॥ पिंड ब्र
ह्मंड गिनं कि नजूदा॥११॥ हिरणा पद्म सनांमसा दि
नो॥ सुतका सिर का सिर करि आनो॥ ताकार
करि सिष्टि उपाइ॥ तेराई

एकबार बोवत जो षेतो ॥ सब प्रकार भूमि प
फल देतो ॥ १६ ॥ छठो अंस राजा कौं जावै ॥ रैत
यों कोइ न संतावै ॥ पुत्र समांन गिरै रैति कूं जांनैं ॥ पि
समांन रैति नृप मांनैं ॥ १७ ॥ चोर नहीं न्याव मदस
का ॥ प्र कौ छीवत तन हीको बालका ॥ बूडो मा पम
नी सभ जांनैं ॥ लघु के नांम सम करि मांनैं ॥ १८ ॥ नांम
षमपैन जो वसतावै ॥ द पा मा व सब के मन भावै
नफ कोदे वाराहन कोइ ॥ विनै गुनै कों स्फं भ
होइ ॥ १९ ॥ घरि घरि कथा साधु हरि पूजा ॥ तिह वे
न्यांन धरम न ही दूजा ॥ मन कूं पार षट देहो भीरी
स्तितेलीज पुरी हो सारी ॥ २० ॥ राजा सिष्यि न्याव सिध
न कोइ ॥ सब हो षेम जो कित रन्यारै ॥ नृप ति बाग
बडो एक लायो ॥ नर पर फल षरै सम जायो ॥ २१ ॥
बनन देन जांनैं तन मांनो ॥ उपमा न्यारे राग तो
कौ नांनां ॥ फलै फूलै बहुत प्रकारा ॥ नाम बनी
न्यारे हजारा ॥ २२ ॥ ताके फल नप सीरिष मांही
साधु हदर है ता मांही ॥ कथा कोरत नन हरि गुन गा
रै ॥ सुनै पार षट सुरग पडुंचावै ॥ २३ ॥ सुर पति
आदि जहां न्य जन आया ॥ सुर ते तो सकौं उ सब आया ॥ व
सी सभा न्य रची कैन्या है ॥ हरचंद को स्तुति
कराइ ॥ २४ ॥ हरचंद बडो सती जग मांही ॥ सब कूं दे
करत नाहीं नां ही ॥ सत तो लन कूं मेघ बनायो ॥

एकदेव सतकर कैन्यायो ॥२५॥ विष्णभिनहुते
उनमांहो ॥ सतनी लन नेजेयो इहहगांहो ॥ इहव
नत्रापर ध्यान लगायो ॥ रयो ॥ ख्यक हनजांसा
नपायो ॥२७॥ सुकरन्या इविप्रीतितवाहै ॥ डर
मसबपारित पारिग्राहै ॥ बहुतनमां निरापत
कैकैस्यो ॥ बागदानतापै नसीडस्यो ॥२८॥ रति
जानि हसीनहांनांहो ॥ पोदेस्वरसूरवनमांहो ॥
चौथोजुसमो दिहिडास्यो ॥ नृपन्यायोमोजाइ पुक
स्यो ॥ २९॥ नृपसुकलीहकी कलनबहो ॥ सुकसुव
गतप्रस्योमन हे हो ॥ सतजुग नृपतिसिकारन हो न
राजासोचकोपालन सोतो ॥ ३०॥ रांनीसुनयो नि
षिकत छपायो ॥ धरमतहां अधरमकि तन्यायो ॥
साधुरहतबागकेमांहो ॥ पादेगोरसाधरमजांहो
३१॥ तवराजा साबसा पबुलायो ॥ चढोसिकारसि
रराकन्यायो ॥ अबराजा वृध्याजीव हिमारै ॥ सवारथन्त्र
पसिकारि विचारै ॥ ३२॥ हरि देदराय चढ्यो तिहिंव
हे ॥ दलवनपडा सुरके नांहे ॥ हाथ्या जो इहू सौ हि
सकीनां ॥ मोरा बेहकेसा ज्यसबदीनां ॥ ३३॥ जासमां
फटेजनी करिजाहै ॥ तिहित्यागारी कीजै साहै ॥ चढू
दिसाहलनकारे होहै ॥ निकस्यो सुर रव इसमधिसोइ
३४॥ हो तो तहां दिष्टिसोन्यायो ॥ निकस्यो नवे
नन्हीपायो ॥ जूस्यानेदामनि प्रकासे ॥
दिष्टिहसरैमा

सो म घिग पोसो चद हल्यावे । घोडो हांकि पूछि तकों
दीये । मारि मारि पीछे तैको प्रेत रूप । ता रैं जार हों
लग न्याये । रिष दन नमें तहां बैठे पाये । रिष कहे छिष
रसे गत्या गये । त्यो स्थितें उत्तरि न्याय पग लागये । उद्धी
जो रे हम ते अस ग्राउ चरै । राजा छरो बीनती करै । मेक
माग कै छु न देजोजे । मेरो मद न परिद्र कीजे । १७ ।
रिषकहत है । कहे रिषी सुर मुनि हो राई । हमां गो सो दो
पो ति जाई । थोडे का ग ज्या चि कहा कीजे । हमांगो सो मो कै
दीजे । १८ । राजा वाचा । राजा कहे सबै कछु तेरो अ
के छ्या ते जिमें चेरो । तुम्ह रो मेटि सबै कछु धरि है । ना न मु
न धन सम रपन करिहै । १९ । रिषउ वाचा । सगा हो
राज धरा सब यांकें । ध्यान लग्या मो सब त्या कें । जल सं
ल झारी कर लीनी । संकलप त्याग्यो र कछु कीनी
४९ । ता छ तीन कौ मेल भुलायो । जल संकल्प गाछ्यो कर
ता यो । दीन्हो दान चटन न्या स्वल्या यो । रिष कहे यो
हम यो मरा यो । ५० । सब धन क्षम सबो लस्यो न्यायो । तो
तुम सन न्याय जो निसवारो । राजा तबै परा यो न्या
यो । रिष न्या चिंत टि न बटे हो च ल्यो । ५२ । कोम
न पग पेजार छि नाई । तुट कोउ ररी रिष चल्यो दु
ले । नृपति च ल्यो पीछा ते न्यावे । तुमें सलगा घ ह्य
हि जावे । ५३ । बरस र हे दृष्टि बन मांही । नृपति म
ति कछु छ्या पै नाही । न गरी नि कोटि पडे तेग्या
दे । तबहि जवा रिष बरि पहपाई । ५४ । म नो त्यार

श्रम्ब कंन्लागे॥ विप्र कहै यह मो हि चव्है॥ सब रज दा
रि को प हिको यो॥ राजा कहै वचन में दीयो॥ ४५॥ हो
मइच्छा जो वन कछु नांही॥ मति दूषो मेरे मन मांही
सो वनमयो मारो रजमारे॥ सूनो विप्र परोहत हीमा रे॥ ४६॥
रे तिहकी मोकूं नी सुमारो॥ ब्राह्मन कहा बात है प्यारी
मुनि सुनि विप्र हसे मन मांही॥ राजा नहिं छोडि हम जां
ही॥ ४७॥ राजा उवाच॥ नृपति कहै ये बैन न भाषो ५
तुम साधु सम धरम ही राखो॥ कीन कोन की जी मग
हो॥ जो मन करो विप्र बलि जांऊं॥ ४८॥ तुम सब के म
न की गति जानो॥ सब के जीव एक मति मानो॥ और
प्रकृति जि नि मिनि कहत जगत॥ ताते जग नां नाव तन हूं द
भयो॥ ४९॥ आज्ञा देह राय रे जांऊं॥ सुन विनती तेरे ह्रिय
लांऊं॥ आज्ञा दई दीलमति लादो॥ तीन लाख कोम नदि
मनां दीयो॥ ५०॥ राजा उठि निरन द्वा सहि जाई॥ उत रू
ता संग है पगंत्रा है॥ पीछली बात नृपति कहि दीन्ही॥ सु
र हता सम छै मुनि लीन्ही॥ ५१॥ रानी मुनि मारी सुप पा
ये॥ धनि राजा रानी मनि जाये॥ पह धरम रिके तै नृप क
यो॥ धरत जि न जि मग रे हो स्वयं॥ ५२॥ मुनि नृप सों रह ि
गके नो॥ तुम कलि मांहि धरम जस लेतो॥ टील करो जिन ि
प्र रि साचे॥ पहिले धरम कलिं के बचा है॥ ५३॥ सुत
र हित मधु घीलि तिमा ईं॥ तुम छिन दमी कौन पै हो ई
चले मैं वन त जिन गीन धारा॥ धरम तो सम मन हरिचं
धरा॥ ५४॥ गांडा संवत सचीन रूमा जे॥ या ली ज्ञना

तोलटमबाजे॥ पतिव्रतातारासमकोहै॥ सुकरु
तासषिनिनेमंगमोहे॥ सोदिकरैतोधरमनमाहै
तामनमैधरैनकोइ॥ ज्यांनंदसमहितनहि प्रघेज्याठ
तराजोरांनीसिरन्चाये॥ एकगांवकोधणीक
चै॥ ताकोबांमनबाहरिन्याचै॥ हरचंदचक्रवतीउग
धरमारी॥ दे घोतोकोनाजज्यूंमारी॥ ऐसीज
निकरैगाकोइ॥ हरिचंदसमदातानहीहोइ॥ विप्र
कैहेवरसबमनमही॥ ज्यापापकाबोलमेसबही॥
तापडाकलिकोदीनो॥ टकेटकेनीलांकरिली
नो॥ ज्यूंपंछमांहिबटपारलूटिहि॥ तागाटमीकछूट
हिछूटिहि॥ ऐसीभांतिविप्ररकोया॥ कालपे
नौरकहाडपदीया॥ कहैनृपतिमेरोकछूनांही॥
धांमधनल्यायाहनमांही॥ मोमेमनज्युंवरनहीव
रिमांनो॥ मेरोबोलसाचयहजांनौ॥ राजामरेल्योर
तेल्यावै॥ टपरासीटीकोकरिवावै॥ इहवि
धतमेरोकरिजांनो॥ मोसमांनबांमनकोमांनो॥ रा
जाछत्रैकोनरहमावै॥ होनबूरसोलोगडपावै॥
अबरिषकहैदांमदैनाई॥ मालम
डारनछेडयाजाइ॥ हरचंदऊतोचक्रवतीमारी॥
लोछेनभूगतैधरमारी॥ अबहपतनीबांमनके
ल्याइ॥ यहधरनजोदांमदैनाइ॥ कैअपनौबोलछो
टकावो॥ तोमैजाकंमतिडपपावो॥
छुटवनितावेचोतनमेरो॥ दांवपागार

रणीमेनेरे॥ शिष्यनआच्या धरमेरी बेडन चोनां
गाजाइ हिकोन्हेरे घरमांही॥ देया राजागवा द
॥ तबराजा दिष्यंत दिषायो॥ पहिल्यैति हासको
रहीआयो॥ एकपुरीके लासपगडै॥ शिव प्रसाद
पावे सिधिपाई॥६६॥ शिवन्य रुम्म्यातनुदेसतिजा
नोसाहिब मांधूराक करिमांनी॥ साहिब सा ज्यामु
केजो पावैसो ईगतिसाधासंन्यावे॥६७॥ भ जेमह
कांमधुरगति हौ हैं॥ धरफेरि आवतनुगजो वे॥
कपुरीके लासरहो है॥ हिर्तगईपहिहतत्र्याहे
॥६८॥ हिज्ञबो ध्यान रिपहीपगवे॥ ताते नांम बार
ह्यारसीपावे॥ कासी कूंके लास रहांनी॥ मुक्ति के न
ता हीतेजानी॥६९॥ ताते पतीन्न सिमैनाही॥ मा
नो वचन वेद ति हमांही॥ तबनारायानी दूंकेरली
या॥ वेतापर्डे वचकोदीया॥१७०॥ निज पुरतज
केकीयोपयानो॥ लोकसकल हासा करलानो॥ राग
विरोग रूचोतन मांही॥ जो हरम बलमयोतिहवार
॥१७१॥ कहैकैन कहता नहीआ है॥ कथा बढैजोक
थिम बगावै॥ ताते आवृयोरी कारि यारी॥ जोकछू मई
सैन समजाई॥१७२॥ जो भवतनु चल्यो है सा थ्या॥ ता
रह्या मोर दोऊ हाथ्या॥ आपने आपने धाम सिधावे॥ ह
मरेसंग काहू नपावो॥१७३॥ सोचहंगे सबहनि कोहि
वापरा जे सरसो चहे जे हा॥ सरान नविमलन नहो
डी॥ का परवान करैगा कोई॥१७४॥

नतकेहैं। धरम करनको थाकि जिम रहैं। देह छिछो
न्हेंचोपन होइ॥ मन तन धरम न जो मन तिको इ॥ स
हमत जे कहा जग जीया॥ पहि बिचार हृदै तब कीया॥
र कोनी बोल्यो हिसारा॥ तीन तेरह्यो पंथ मैं न्यारा॥
ह पुमाघ मध्य लगो छिदि षावै॥ ऐसी चाल पुरिक ठ
चलो मित बिचार नहीं होइ॥ आस्त पति जर त हिमोइ
रत्ति त्रोछ मम ध्यान चलाया॥ पगां पाइन
कराया॥ हरि जस हरि षट चन चचारन॥ आधिकत जन के
हैन बिस्तारन॥ तप भी बडो टरै सुरमारा॥ नवरि
तेज जुलम बिस्तारा॥ पुरै को लक्ष्मन बिस्तारी॥ कै
मत देह रूपन प्रजारी॥ कोमल के चरपरयो धे
माई॥ रानी नहो सुरछा गति आई॥ बातन पातै बो
नआयो॥ नार बिना रानी छछपावै॥ राजा रहो तन
चिगा बैसी॥ बामन के च्यो दीतप हकै मी॥ ऋठ थो
मै आइ रहा नी॥ रन के सुषदुक चो वो पानी॥
तिसम रेका गति सो होई॥ सुत जच्यो परैस मो
ईत नी कहत राजा हूं गिरयो॥ बामन तब ही साच म
रयो॥ कंडम रीजर दाइन को जांही॥ बिप्रली पा
पात्र मांही॥ पहिले नेरहि तास दिपायो॥ पीयो नहीं
उसी महलायो॥ मातापिता प्यासे मे पीके तो
ते दिन जग मैं जीके॥ राजा रानी जाइ पियावो॥
पीछे मेरी छिमल्यावो॥ तब जलले राज
राकीन्हो॥ जलपायो मेरी सिया दीन्हो॥ तब नृप कहै र

आया॥ वामो लैन गैर के आया॥ [illegible]॥ निसा मई शिव
कीयौ उजालो॥ ब्रांमन के घो घास रे चालो॥ बांभि
रो टालारा कीन्हौ॥ इक इक तीनां भिर रवी न्हा॥
॥ कीये निकांम घर ले माहे॥ त्यो कोइ मोल जा मे गौ
ई॥ मग लो लोग तमामो जोई॥ नै सीम नी घमोल कौ
वै॥ दोहा॥ देषो कोन विप्र तिह आई॥ इमा मलूको
दे कत है माई॥ विप्र कहै के हारन तेरो॥ इच रज
मही बडुल हन केरो॥ सोरठा॥ देषे इह मो ग्रि को लै
मांझे भार नारि मनमोहै॥ कोमल कवर मरोटी मां
॥ [illegible]॥ माता पितादी कुंग हि हा थे॥ इक मार रा
भिर लीये॥ तासमती कोन बल वीयो॥ गनि को
लि ऐन के आई॥ सूरतिया कनारि मुनि भई॥ [illegible]
॥ मनिका वाच॥ विप्रहि कहो पाही हलै के॥ पाचे
मोल लेहै मोद ह॥ ब्रांमन वाच॥ बांमन के
ला घर कलेस्यू॥ नारि सा थित मरे कारि देस्यू॥ [illegible]
॥ रुक्मिनी मत वाचे॥ न बर स हित मसम स्योम न मांहु
कोन गेर मातालै जांही॥ इहि सौ चर ताजा गीव आ
मलौ गेर रग नी नहीं पायो॥ १०८॥ राजा वाच॥ स
कांम बहो लग घरं इन के रो॥ विप्र मांनि बचन इ
मेरो॥ मनिका वाच॥ तब मनिका पिजी बचे
बषाने॥ आप मरी घलो और ही जाने॥ १०२ मां यमी

समकति हकौजे॥ त्रियापुत्र मोलि क्यूं दीजे कर
तले दनारिसु तका जे नतिन कूं बेचत देखा जी
१०३ रेते पुरष होइ का कोप॥ पुत्र नारि बेचन चि
त दीयो॥ ऐसो मो पुत्र देषो हिजी जो॥ ता के मटे के हाथ न
नी जे॥१०४॥ राजा तब चो॥ न कटी राड आइ क्यूं मांह
राजा हरिषि कै थौ मन मांही॥ चांदर राके सहर के मांही
छूटो रहै धनी कोइ मांही॥१०५॥ गति का नाकेती
रिलेग पो॥ सब काहू नर पाथर ह्यो॥ ऐसी विधि तहां
को ति ग हो इहै। षिल चेमा करै सब कोई॥१०६॥ ८
दोहा॥ सत सा मत्या रहै सही॥ बचन सह ग मिथ्या होइ
ध्यान दास मन्या है कारय हि॥ मूलन मानौ कोइ॥१०७॥
सोरठा॥ धरम पुत्र करि जान॥ त्रिजरा जा हरचंद के
छयो॥ ध्यान यहि तरम्या मिवाइ कै सुषसैं न कयो॥१०८
हरि मी हरचंद ग्रंथ ता ग्रन्थ पत्र संख्या॥ ५२॥ दोहा
धरमर है तैस ठर ह्यो॥ धरम गये सब जाइ॥ धरम है
ता को पसू॥ सो को पसु क्रि पद पाइ॥१॥ चौपइ॥ पु
न्य तिहा सस सुनों ऊ मनाई॥ पत नी गोर को पसु षिपाइ
सील घटै कोई म क्रि छुडावै॥ हरख वो चित लतराय क
रे॥२॥ मन का हि कै बेठ पधारे॥ हरण लक्ष्हा ब
न तु चारे॥ नगर कहा व्यारू तहो मांही॥ जा तहि गज
न देनी ही॥३॥ पेर मन कूं मति लक्ष्मा न.

त्रहेजाने॥ एकोग्यारहजासो महलावै॥ मनमें प्रदा

हा होइजावे॥ [illegible] टरमनवाचिलतराप्रक्षमा

कठ्योनाखुरमोईतनपापो॥ कथ्यावेकेचारु

हो॥ सम्रमकेधमखिहेमवहो॥ [illegible] स्मकरषीमुरके

तपकीन्हो॥ ध्यानसमाधिमाहिमनदीन्हो॥ पहली

सवतीरथकरिन्हायो॥ विधवत्तजयूवेदनमेंगा

[illegible] सथनएकलक्ष्योसुधमारे॥ जहांजोगव

लगाईतारी॥ ध्यानधरतहरूमनकेमे॥ तबसु

रपतिनाबचनमत्कोपा॥ [illegible] जाइछरोजहांरेषब

निदघर॥ [illegible] मोररहेजंलाखर॥ हाकेतपु

नाथहरांनो॥ मेरोलोकामारतहैमानो॥ [illegible]

[illegible] नसुनावे॥ मुनिमरापडोरकितपो

नदसुरपतिवोल्यो॥ [illegible] नी॥ नेमीमकेकहांम

[illegible] मोधमरापमुक्तिजीवपावे॥ [illegible]

ताचतेंधावतिपावे॥ [illegible] नेवचनरंमातदा

॥ रिषन्रस्थानतहांचलिआई॥ [illegible] पगनृप

बहोविधिफुनकारा॥ मकेनेमृगारवन्योंनग

सारा॥ मीजनजगनामेडरिमाई॥ दमकेनवचे

नकांमनिमसाई॥ [illegible] कांमकेबेनवहोता

छिवोले॥ मुनिनइंद्रोनेचनदोषाले॥ तबरमाप

केमेबवनापो॥ बेलचरीला रूतनवदलापो॥

॥१२॥ नेत्र तीन सहित लक तिलक ठा॥ सीस जल जे सो
करि घाट॥ करि त्रिसूल मंत्र सिव सो है॥ बनी जोग
ता लसन सो है॥१३॥ लग्यो सुरति सिव केटिन हां आर
जोग बचन मुनि सुति रुचि पाई॥ तापी छे छिय बख्या
न कीनो॥ सहन सिंगार न करम जीनो॥१४॥ छूटि मन
प॥ ईस मुनि केरी॥ नारि सरूप कौ पोतन फेरी॥ जग को
मनां बचन बषांन्यो॥ केलि स राय पठायो मुनि जांन्यो
॥१५॥ रूपी जैयो लै रे तन धारी॥ पहलो गात न लषी भ
री॥ कलह का तनी यहू कहा कीयो॥ स्यो सरूप धरि
के ठगि लीयो॥१६॥ रंभा॥ का वै॥ रूपी सराप नारि यो ज
न्यो॥ सीस चरन धरि बचन बषांन्यो॥ उमरो बचन गंट
न होटरे॥ मोरत भूर समझि कन परे॥१७॥ द जि
ना वै॥ चेम कनो जरा इहै मोहे॥ जा के जा इ कन्यां बहो
इथी राज जाति चौं हां नां॥ तो कें आइ बरे गो रंभा॥१८
मां बतसरस रेगे मारी॥ कलह का तनी बचन उचार
लागे कथा नाही बिसतारी॥ मं त्रि हिनां सं हे पातवा
॥१९॥ लागे मुनि फिरि ध्यांन ही लायो॥ मघ पहां तिवे
प मन भायो॥ मंत्रि काज प्रसंग यहू लायो॥ रंभा
र सुर गम सुर पायो॥२०॥ जमत हि कह्यो उधार बत
बो॥ तब हो रिष बोले ग तिपावो॥ न्यु करि चंद यो
मती मान्ते॥ धरम घट न कौ पम न जान्ते

॥ विप्र सुजै राजा स्वै माती
॥ रिहजात ॥ रकोग्यै गुरु को हिसे हलारै ॥ गुरुदेव पु
उपदेसै सार ॥ मो स्ति लेन म हकोई न ल्यावै ॥ करे
कोटिक दिव तलावै ॥ २२ ॥ नकटीक सोना करि
कीनी ॥ गति का चलीना रिनहीलीनी ॥ मीच मोल
को घरघाले ॥ कै कछू कहे मतन हीमाले ॥ २३ ॥ जो
छु कहै मोई हो जाई ॥ पा ॥ जामो घरि कहा न लाई ॥
मन कहै वचन मुनि मेरो ॥ यहां मोल को देतन ते
॥ २४ ॥ वचन छुटि करिजं मैं जो को ॥ कैरे राजजा
निजनेके ॥ राजा न बावै ॥ नृपति कहै मुनि वान ते
री सकैल दोष विह स्यातेरी ॥ २५ ॥ दामन वहुजा
निलकुकलायो ॥ हे रै संगि हद्धि ल्यायो ॥ [illegible]
जा यतु [illegible] ॥ विप्रवत न हीको ये अस्मनाम्यो ॥
राजा वचन मतिकरि लीनो ॥ मैं भामन कै लूतितु
दीनो ॥ करुनां लूति राजा जीव ल्याई ॥ कै हनाम
हरिजी सु पदाई ॥ २७ ॥ निकस्यो तहां ते ररिष स्य
हे ॥ ल्यातिसु मर मांनां मक हाई ॥ विप्र वडो बुल्ह
ल्यवतारी ॥ याही कार नि देही मारी ॥ २८ ॥ ताहि दे
षि राजा त्रसि धायो ॥ नयौ पाइ मुनि मीम हलायो ॥ प
हैर मग [illegible] पवडनांमी ॥ ताकौ छिप लिपरी के
ल्योनी ॥ २९ ॥ विप्र भात राजा स्त मा पी ॥ यहि मावे
राजा ये दाषी ॥ कहै कषी सरस्त नोसु वारा सीर

गर को हेतु मधर ॥ [illegible] ॥ देख कह्यौ
सिंदा नदीयो ॥ विद्या मित्र वचनो को पो ॥ सकल रा
ज सुष धाम सिन धाम ॥ [illegible] हाथी पन [illegible] र पे गाम ॥ २१
ने नमाष नायी छे [illegible] र ॥ सकल [illegible] दे न होगे रा
और करै कछु [illegible] नांही ॥ मान सब [illegible] दे [illegible]
ही ॥ २२ ॥ रानी कंवर ति को सेज्या ॥ सीस घास है चनके
आ रे ॥ गयो छो सपे को न मुलावे ॥ दिग मेरी बामन
श्यावे ॥ २३ ॥ हम तो दुषी क्रम केमारे ॥ परिहर सं
ग मन मये दुषारे ॥ को न मोल ले हम अपराधी ॥ [illegible]
मानी दरिद्र किन साधी ॥ २४ ॥ [illegible] सुमर मां [illegible]
॥ [illegible] सुमरमां कहै विचारी ॥ [illegible] मोलि ना र
तनारी ॥ सुष मागे सो नो हि [illegible] ॥ दे [illegible]
मोर घर जांऊ ॥ २५ ॥ मान समोल करे जो को ई ॥ ताको
पाप बहुत सि हि होई ॥ नर देही [illegible] को [illegible]
जो तन धर्यो मुक्ति पद पावे ॥ [illegible] तन धरि भक्ति कर
तन ही को [illegible] ना को तन [illegible]
यो राजा सुष पायो ॥ मेरो [illegible] ॥ २६
प्र ने ना रि सं [illegible] ना हि लिवाई ॥ [illegible]
को ही ॥ [illegible] सुमर मां ना [illegible] ॥ [illegible]
त किन लेक्यो ॥ २७ ॥ राजा [illegible]
थ है लो ही ॥ [illegible]

तजोऽ रिषराई ॥ मेरीबड तुमसीड तु कार्ह
माटिमिली मोरचकरलीनी ॥ छिस्वामीइ
तोतनही नी ॥ छिडकहै रनाहमो पे ॥ डटला
मागत हूं नोपे ॥ [illegible] मली बात राजा कहे ऱ्यारे
ता ॥ छिमारिषमगपक्षरे ॥ बिछस्तखिरहमपौ
निमारी ॥ पीवछिछोहमहैकै नारी ॥ [illegible]
मुतूरहै ॥ अप्रेमनहुकोलावै ॥ पितापहा ॥
कोरहो ॥ टहलकरनकेनांही कोई ॥ डटल्युष
कोमिरिमाई ॥ [illegible] क्रमहीन काहे के जायो ॥ तुरैग
के माहूं के आयो ॥ पांचबरष के रहि गतिलेषी
गतमातछूषिछु रनहु मेघी ॥ [illegible] कबपति
ीटहतमनकोनी ॥ न्हबैके रता कै सीगतिदीनी
ही ॥ मुपनि बुषिन्हपिकारी ॥ गरमें बांह धरि रोगी
री ॥ [illegible] फटे हीयो मुषबोलन आवे ॥ मुतसहि
मनयमुभ ॥ [illegible] वरमो चतनिमतिडषावे
दहको ॥ [illegible] छोरन आवे ॥ [illegible] का
पा [illegible] जैनाई ॥ कोई काल बिछोह करा
ाके बाहमातागलिडारी ॥ हगीबाहत्रपतग
॥ मातापिता बिछोहन भावै ॥ रोवै केवर
समझावे ॥ हेपुत्र जीन करौ बिषाद ॥ माक
लकेरमाई साध ॥ [illegible] तुमछि

नहमैंकौनपतिपालैं॥कौनबिबधिडषन२
कौंटलै॥काहेकेंजीयोजगमांही॥मैंमति
हीनमूर्षोकछुनाही॥८०॥रानीत्रियाच॥रानीक
हैरहैसगनेरै॥केमेरहमागनहीमेरो॥मैमदमा
गनीपतिडषदेषो॥पूरनपायन्ह्यो पनैलेषे॥प
तिकेसंगबिपतिकछुनांही॥मांगिनोषरकचो
ररहांही॥राजाऐकसोश्रमनन्होरे॥श्रबलोकाम
मकतिकरिजानै॥८१॥वारीषटहकमोलकं
लीनी॥गांधियोविमायातिमिहीनी॥गंचबरषके
बालकमानै॥मोमुतकहाटहलकोजानै॥गहन्म॥
देवदेवकरिकौनमिछोन्हे॥दोनोकवरत्रघतिकेमो
न्हे॥बिप्रजाइन्ह्यपनेघरिराषे॥कबचनतन्रकदे
नहीभाषे॥८२॥जोजीयमरैटहलकरिआवै॥मैन
[redacted]॥कंडपगवे॥बिप्रमाजोतिनसंरहा
चे॥माइमनयमटगातकूपावे॥८३॥बिप्रबडोतु
ल्लोअवतारी॥वाकेमनदरसिधहेमा॥भाषडेटकौ
कौनचलाचे॥वाकेमहूमेरघरिआवे॥जुह॥जेको
इकेहेरयोकछुनांही॥नपतिसतीलेनहेनाही॥छ
तोराजजिनदीयोत्यागी॥मोकहलेपञ्जोरयेमागी॥
८४॥बिस्वामित्रकहाछिनलायो॥ऋषिनमुमरमां
कहाभिदीयो॥ हेचेमोलमोबोलधुलायो॥दीयोः

काहीकहीवहजायो पद ब कुरिक घाराजोपेजा

इ ली लो नोकसायरोरहे विश्वामित्र ब्रह्म

तारा [illegible] करारेनृपईतच्चारे [illegible] कामकीपो

जपकाहोताई [illegible] आधीदईकांमनदीज्याईमा

त [illegible] गलोमरिलीजे [illegible] केनेनृपजापनीपकु

लीजे [illegible] कह्योनृपतिधीरजधरिस्वामी [illegible] सब

देप्यो [illegible] तनजोमी [illegible] मकटिपख्योमरनिजिहकेरी

धनीरापिहेजिमतिमेरी [illegible] काटिबिगा

प्रकोदेसोई [illegible] प्रापहिचांपी [illegible] हहोई [illegible] सहसदे

त [illegible] देषोमतहचरजपहज्यावे [illegible]

गालियातिकरिज्यामिमांने [illegible] कोईकहाकरिज

नेराजाकहेबानतीमेरी [illegible] रिषरामनजीमरज्याहू

तेरी [illegible] जरजकरीसाहिब [illegible] पाई [illegible] फेरहू

मफेनिकस्योनाई [illegible] ककबकसंगहिसारा [illegible] मीलब

रनदेहतनहारा [illegible] ककरमनिरूदेतहेफेरी

राजाभेव कुसुमतिह बेरी [illegible] राजादेषिहूमपोमीला

भया [illegible] लेकेगामोला [illegible] रचनमुनलजारी

हरलागे [illegible] कमीज्यानृराहकेलागे [illegible] समलासाथप

कतनहारी [illegible] ब्रह्म धीज्याइदेहजमपारी [illegible] कि

कु रसहतजोनस्योजाई [illegible] हरिचंदकाजदेतहेमा

री तबहीहमरिषबचनमुनावे [illegible] सोहमोहीदेउ

लेहमोंनावे॥दोहा॥रिषगौतमउवाच॥याकोंमोलबतान
रिषमोहि॥परिमोहिरहिमिरडेटदीलाष॥दोहा॥
फफरैहमहतावे॥नरमगरमकहिफफरैबो
लौसुहमांग्योक्यांपावनमोलें॥दोहा॥छंद॥ग्यान
गुमान॥कहैरिषीस्वरबोलननटारूं॥डेटलाषमेंलू
टिनपाऊं॥टांकोरहैकिटांकबिकाई॥टमरीघाटि
लेतनहीसाई॥दोहा॥अलीबातफफरैकहेआई ग
रजतहांबितमिलेनकाई॥न्टपकेपाहिजाइजब
बोले॥हौंताकोंलेताहौंमोले॥दोहा॥टहलबदोत
ऋासंगकेआई॥गलौरहनदेउंमोलें॥राइकहै
तबइछांतेरी॥करिमुंटहलमक्तिजोमेरी॥दोहा॥
फफरैकहैटांमगिनिलेहू॥डेटलाषतुमभाख्यो
पेहू॥बिमस्योडसमुषबादोपायो॥रिषमोकहै
मालैबपायो॥१०॥रूपाकेरोनामीसटमोई मे
रोजंमावेंत्यहोई॥बिप्रकहैकारजसिंधतो दो
मानमहैचिंदीपोबिहंमोहीं॥१०४॥आपबिक्यो
गाबोलननटास्यो॥सतबहौननोटस्योनटास्यो
फफरैहंमरापघरिल्यायो॥समगरीरैतीरमर
चायो॥१०२॥दिनमरहटमेराषेसोई॥मवेमारो
देवेसबकोई॥मुषमनिदेषोकमकरिलीज्यो॥ते
मानसजालनतुमदीज्यो॥१०३॥ मेरचरांमोज

नहैतैरे॥ हरचंदकहैघनाहमेरे॥ जबकरैवकों
चौक्सनायौ॥ एकक्षनीतक्षरेसुहच्यौगे॥७४॥ मे
सौकहैबहुतदिनकेरे॥ हमरचंदकहैरिजकौ
जातेरो॥ चौवेहकेलोम[illegible]हियायो॥ रहैछिप्रमक्ख
चौंसबोतुन्हायो॥७५॥ बहुरिकथारिषमदिख्या
॥ जहांरानीकंवरहैसोइ॥ मिगधरहबरहवाना
सुन्यौदै॥ सुरमीपजुपकबडबनपाचै॥७६॥ क्षु
मभूरंरानीजनकेरो॥ सुरुबडमांतिवुदारउरे
चौकौदपपरहडोछनै॥ सुतरहिनामदेछिमम्म
॥७७॥ अनदेखी छिनतजेजुआंनो॥ जुन्धारानिग्र
पुजिनजानो॥ केरैटहलरिष्रमंदिरमांही॥ बा
तकमगछैतनैनांही॥७८॥ सेवाकोरिषिमोगला
गावै॥ पातरदैसुनन्हपुरमावै॥ क्षाप्रसादमाध
करधारै॥ मागहोइ यावेतहेचेरो॥७९॥ संतपु
नअहोंनसुरयाहैं॥ देवमोमतजिनकिगिबाहै
॥ हबीनतीक्षमरासुरलीजे॥ संतचूरनकरता
मदीजे॥८०॥ फुनिनपांहिरहैघरचेरे॥ होइप्र
दरांमनीतेरे॥ याकृपनकेकजनितिगावै॥
धीलहो सुषदेवनतावै॥८१॥ केहैपरीदूतेबा
सुतमेतो॥ क्षाप्रसादपेपमांजेतो॥ नबकंक्सु
लागोतडुनायो॥ क्षाप्रसादक्षात्मगायो॥८२॥

परत मिर रह्यो पराये॥ आगे अब जग दीसुरजां नैं
हार ह्यो मिरचले पीरां नैं॥१००॥ अरु मेरा मन की ह
लेसी॥ तोर जन्म मैं सकल भरि हेसी॥ अरु मेरा वंदन
भ मक हीयो॥ अब रुहितास उहां ही रहीयो॥१०१॥ मा
तुतैं मां ताय॥ परीयो॥ उम होडो माहि वहिन करीय
क हियो मुख ह्लो न बयो॥ रुवे सुत रुहतास डस्यो वन म्हे
॥१०२॥ कृष्ण अपडा टही लाई॥ होत वरसो म्हेवो वन
गली॥ अनि मुसर मांझि पवहु रो॥ होडो मति छाडो
के रो॥१०४॥ मो मरनैं को सोचन कोई॥ माता मोर वडे
दुख होई॥ मो विन माता अन्न भाई॥ हूचा ल्यो वा ही
हिराई॥१०५॥ पिता मोरउ बेडषपो वि॥ हम यरा नि
सनी रम रावे॥ क्रो[illegible] कहा वल चलेन कोई॥ दमैं मि
चलैसी विध होई॥१०६॥ आचे मिलै परे फनि क्कीपे
हमउ मधनी छिछो हो दीयो॥ तुम्हारे संग महा सुख
यो॥ अब कहा करुं अनेनहीं आयो॥१०७॥ ऐसी विधि
रुहितास पुकारा॥ छाती कूटि पछ्याध रम्ही रा॥ ज्यू
रुहितास तवं वेस वहचा॥ घरी च्यार सारा हीमतवा॥१०
८॥ रसना रां मस रुहितास उचारै॥ जी वनेन ही मरन
मन धारे॥ सवै उछि जिन मुरति मंमा री॥ वेहो रिलगे
रनै म[illegible]री॥१०९॥ तुम पाछे हम क्युं करि जा हीय
[illegible]रु [illegible] मन मैं हैनां ही॥ कहे रुहितास मुनो रे म

तनउकह्यौ पुत्र रतनश्रीकार॥ करतार च
मेटीजाई॥ मनकी मंस्या सांनउयाई॥ ॥ करम
नेश्रवसतिहलागे॥ होतवर चौविषमताज्यौगे॥ च
तिरहितासमश्रुप्रहेप्रेरी॥ हेतोपुरसंमश्वुभ्रकिम
कीरी॥ ॥ दरकोधनीकरैसोछाजे॥ शुभफिरिआ
हफिरैरनयाजे॥ वाढीमतमोनकोटीयो॥ मेघनीक्षा
मसतमहीदीयो॥ ॥ तवमारोमनविमीस्याई॥ दस
हितासमलारहैसाई॥ ॥ पेजहावहांमैस्थिपारे॥ पउक्षा
मतनकंविचरेसारे॥ ॥ क्षौरूपरहितासमश्चके
॥ ऊ वापउपहाथतहमेला॥ ववांश्रुपतरवपार
होई॥ तिहसोडस्योपरयौडुमोई॥ ॥ श्रपडस्योर
तैगयो॥ श्चजौहाथडारधुपस्यो॥ मगरेघा
गतहाज्याई॥ जैतैरहितासश्चौनगतिपाई॥ ॥
रेह्रियाटमिडुमहरेवे॥ छिनरहिहासर्को
होवे॥ यातनपीरबोलनहीश्रावे॥ पुनिरहिता
सघासमफावे॥ ॥ कोरैश्चपडस्योकरमेरो॥
तवहस्सोजीवरहिकैरो॥ ॥ गीचोटमोरतनश
॥ पश्रौहरितेजिरतमंझारी॥ ॥ मतिर
करेहरितासउचारे॥ हउश्चबैचौसरहैथारे
तिडुमरमस्यो कहीयो॥ श्रवडुमसेउनास
रहीयो॥ ॥ दीसैसाहकोमनहीश्रायो॥ ह

परतमिररह्यौपरायो।।आगैअबजगदीसुरजानै
हारस्यौमिरचलेपीरानै।।१००।।अरुमेरामनकीह
लेसी।।औरजन्ममेंसकलमरिहैसी।।अरुमेराबदन
मकहीयो।।अबरुहितामठहांहीरहीयो।।१०१।।मो
कूतेमांतायग।परीयो।।उमहीडोमाहिबहिनकरीयो
हियेमुखहोतबयौं।कहेयो।सुतरुहितामडस्योंबनमेवो
।।१०२।।कष्टअपडांटहीनाही।होतबरमोमेवोबनमें
गही।।अनिमुमरमांझिपबहुरो।हीडोमतिछाडोरुन
केरो।।१०४।।मोमरनेंकोसोचनकोई।मातामोरबडे
दुखहोई।।मोबिनमाताआनुपाई।क्योंकर्यौधारैही
हैराई।।१०५।।पितामोरठैडपपोरि।।कूमप्रसांभिर
मनीरमरावे।।कैसेंकहांबलचलेनकोई।।हमेंमी
चबैसीविधिहोई।।१०६।।साचोमिलोपरैफुनिकोपे
हमबमधनीहिष्ठीहोवीयो।।तुम्हारैसंगमहासुख
यो।।अबकहाकरुंनेंनहीजायो।।१०७।।नैलीछिरु
रुहितासपुकारा।।छातीकुटिपछ्याधरमारा।।ज्यु
रुहितामत्यांदेसबरुचाछ्रीच्यारमारहीमतवा।।१
०।।रमनांरांमरुहितासठचारेमोबनेनहीमरन
मनधरो।सबैउबिजिनमुरतिमंमारी।।बहोरिलंगक
रनेम[illegible]री।।१०९।।उमपाछेहमक्यूंकरिजांहीयु
हरु[illegible]सबमेंहेनांही।।कहेरुहितासमुनोरेमं

ई ॥ इहां रहो मति रांम छांडाई ॥११०॥ ने समरि केसं
कहि दीनी ॥ तब सा रूप करमां दीनी ॥ करि प्रणाम
उग रिषि रिचाले ॥ देषो दई कौन घर घाले ॥१११॥
की माह टूज जन पावै ॥ कही रिक हा सो कह दिखावै
बन मध्य रिषि अपछले जंम मारे ॥ मात्यछ रायं परिषहि रे ॥
सब बालक देख्या सुत नाही ॥ रांनी सोच कीयो मन
ही ॥ जंचो पे कर रह्यो हि दिव्या वै ॥ तनू रहि तास मन
डो ध्यावे ॥११२॥ पुत्र नदी मे ईस्वर छबदी न्हो ॥ ल्य
साम रांनी तब ली न्हो ॥ नकैधर नांउ न सुष केरी
मवेत कहा कहै गे टोरी ॥११३॥ बालक मम मठि निव
मबरूषा ॥ रोइ कह्यो रहि तास हिमरवा ॥ रांनीन
बोलनै पाई ॥ चरन परी सुरझा गति आई ॥११५॥
त बिवोग कदन कूं नाही ॥ ऐसे सोच कयो इस मगं
कहा बिवोग कह्यो नही जावै ॥ सीवर रवहो तक
नही ल्यावै ॥११६॥ दोहा ॥ बिहबान लागो सुतरि
राहे गिराई मरदन कर बालक कहे
बोल ऊ माइ ॥११७॥ तब बोली रिष सुतन सं ॥
टवन उचार ॥ कहा नये क्यो करि मत वो ॥ बीर क
बो हार ॥११८॥ तब बोले बालक समकल अपने
करन्या हा ॥ पीछे दरछत नारत ॥ नो मिप स्यो उनिम
॥११९॥ ओर हि तास केही ऊनी ॥ नीत ढवन

सालः तापीछेदंनसबेकरिमारग्रलागेबाल ॥२२७
२२॥इतिश्रीहरचंदसतगंड ॥भाषारंनीपुत्रबलप
निष्ठिबोग्रदेश्वनोनामछ्लीपोध्याय॥२॥दोहा॥कंद
नकसनीबकुसहे॥कांवसदेनहीधीर॥त्योपुरषदे
जोत्रापदासतछांडतनहीधीर॥१॥चौपई॥फिरि
बालकरेकपुषिझाई॥बकुस्योकथाकहीसबाई
मेरेपुत्रमानायोझ्सी॥बालकसकलमाथिहेमाषी
॥२॥रिषसेतीपुनांमकहायो॥श्रहरबकुतराषि
ज्योछायो॥तुमसुंबचनकह्योमुनिमाई॥रिषकोटह
लछोडिमतिजाई॥३॥नृपश्रादिजोबचनउचारी
सोमबकहीसमझिस्योमारी॥तरिषठीमाताबनवोरी
चलतबतायोकुतीलागेरी॥४॥मुनिसूहतासपेसो
लिहिपायो॥लीयोगादिमेबोलाबुलायो॥बोल्योपुत्र
काहात्रयोतोही॥श्रगमहरनोंहीकहेमोही॥५॥मर
मुष्पयोपरेबंदिश्राई॥दीनश्रनांथचल्योतजिमांई॥
ग्रस्योगादमेंसोमनचायो॥मातातरहीकेरमोलायो॥६
॥तबरुहितासबालरोकश्राधी॥मातीदरेश्केलीर
धी॥मैंपापीकछूटहलनकीनी॥करतान्नस्निसेगी
निदीनी॥७॥चलतेप्रांनकहूंनहीपायो॥रांमकहत
उचकीसंगध्यायो॥मृतकभयोमानबिललावो॥हजोमग
कोनपंहांश्रावो॥८॥तुनिश्रकेलीमृतगमुतपासे॥रि

कहसीदोकसपानासे ॥ सोचरोकन्यौरमनन्यावे ॥ सु
जैदागमोरकरयावे ॥९॥ तचैनहीबजतहरकोयो
न्यंहाथबांधिगहिलीयो ॥ हतगमारहैतेहेमारी ॥ बउ
तछमरिचलीलेनारी ॥१०॥ देवदचकरिमरहटन्यु
यो ॥ यहडषसकोतनहीहेगायो ॥ बहौतबोवोगकेहै
न्यांही ॥ कौनकगोरबननहैनांही ॥११॥ मरहटध्यै
नबईधननांही ॥ बेमंदरनहीतिहिगांही ॥ बरषेमेद्व
जराउषहवो ॥ जैमोकहजांनिमुतमतवो ॥१२॥ चुनी
कटकलीमरहटकेरी ॥ औरन्यातिउनित्याईफेरी
रंथीछाककरेमघमांही ॥ औरमंनिषतहांइजौनांह
॥१३॥ फमबालिजबवांपीदीयो ॥ न्योलेबलतबही
नउषदीयो ॥ मेघबरसतबास्यौतहांन्यांनी ॥ चोरन्य
नौउपरितांनी ॥१४॥ याकेसंगन्यौरनहीकोई
पूरयाकेबनबमवतनहोइ ॥ वाबातेवोजाइवे
जहै ॥ जैसीमांतिदिनगपोविहाई ॥१५॥ देखिधू
राहतहांवौरै ॥ एजांन्योकोइफकतचौरे ॥ ता
मातमहमारेमाही ॥ पउच्योतहांदेरीयोन्याहि
॥१६॥ तबदेष्योरहितामहिमतवो ॥ मनिजांन्योरांनीत
हयो ॥ सरजबसनांमईन्यायो ॥ योकहिराजाम
षपायो ॥१७॥ मायामोहजगेनोमतिकोई ॥ धमेमो
उरषनहोई ॥ मनकमरतमोचहेन्यावे ॥ मोइमोव

भक्तिनरिपावै॥१९॥जेकोईकहैसाधकबस्ना॥का
रजभिनकारनहैजन्ना॥कारनसाधम्नाकोना
हीं॥ कारजदेहकुठदेनाहीं॥१२॥ देहधर्योभक्ति
केआवै॥सोतनगयोसोचमनपावै॥तातैमोचतुचि
नहिहोई॥सुतकहैनामभक्तहैसोई॥२०॥मैनारोम
गतक्र्यारा॥रानीकहैदेषिमोहारा॥ एकोबमनतह
मरोनांहीं॥ वोमननातदेतनठषांहीं॥२१॥ राम
धरमकीकथासुनाई॥मैभारविनसागनमाहीं॥ह
सरकमंगरेहौगात॥ रिषलागेसुषकहादीधात॥
२२॥ लाखोचीरफारिदेसाही॥ तोसुतजानजदेइतो
ही॥ तवफारिचीरलाखमेलेदीयो॥ पीछैदासकर
तहैकीयो॥२३॥ देयूवागगंगामेडार्यो॥ होतवहरस
दोत्यामनधार्यो॥ मैमारोलेराजाजाई॥ तबरानीरि
षमंदिरआई॥२४॥ तबरिषकहैनिलंमकहाहोई॥
रानीपाइपरीअरोइ॥सुतस्हितासमरनहिकीयो॥ल
गीबारादागमेंदीयो॥२५॥बालकन्यानकहीसोईते
मबसहैबीप्रडसहोई॥ सेवगबडोसुनहोतेरो॥का
रजमकलकरतहोमेरो॥२६॥धरमदासदसाक्ष्मसु
षहोई॥स्वारथपहिमभक्तोमतकोई॥रानीतपै
बरहस्योलीनो॥ऊमबमानऔरउपदीनो॥२७॥प
कोमीराइऔरथाहजा॥छोची बडोनहीमनपूजा॥

रानी कहाइ हार कै डास्यो ॥ पछै चो कुं घ
गरै मंचा स्यो ॥ १८ ॥ जो लोमां मंडडी ले मोई ॥ व
नीनी रम्र रनकै ल्याई ॥ तनसु धन ही हार गल मे
देखो कहै दीयो तन हैतो ॥ १९ ॥ मवा को रिकोह
गुलीयो ॥ बांदा गुलामां मारि डवदीयो ॥ देषन हार व
होतन जाई ॥ मसां मांहि बैठो नवराई ॥ २० ॥ लीयो
के मारी रिकोई ॥ राजा कह्यो मेदहैमोई ॥ बांदी लीये
बिषकी हारा ॥ ठमको रे मारे हो बिचारो ॥ २१ ॥ गसी
चोन लेन कुं ल्याया ॥ देषो हार मार तनलाया ॥ ल्यो ह
दी बांधि तिहि लीनी ॥ तवकहै रिषीस्वर ल्याडन दीक
२२ ॥ चोर दयादि दुषि देतन को ई ॥ या के मांग चोर कहि
होई ॥ जाइ राइपा लेगुदराई ॥ हार सुस्यो कयुं कहि म
मजाई ॥ २३ ॥ तव कौज ल्यो रे हमसारा ॥ मैं नीरां नसु
स्यो कयुं हारा ॥ तरलिया के इमोतन न पायो ॥ चोरां मांहि
के हामतलायो ॥ २४ ॥ संगति माधव नगीन ही काई ॥ रि
ल्याप्रमर हीतसाई ॥ तवउन कह्यो बातराक मांनो
छोम ति छियन कीजांनो ॥ २५ ॥ गुन्है पस्यो मरे गस्लिइ
॥ जोई छानामो करउ विचारा ॥ राजा कहै इरि लेजा
॥ मारो इनै वउतडषदावो ॥ २६ ॥ चोरी फेरि करै
हीको ई ॥ राजा करतल जतपवउ हो ई ॥ हारकाढि
पनो तनलीयो ॥ पीछे मारि वउतडषदीयो ॥ २७ ॥ चे

लेमारतेमरहटकोनी॥ सुतकहिनामनमुलेरानी॥३॥
हतहांतनषबरिनकोई॥ जांनेंहमारस्त्रीरेकेलाइ
रचा॥सतपथरीकरतेमंगथाये॥ बकुलतलोकमरह
टलेंलाये॥ राइकुतेमरहटरषवारी॥ मेच्योवकुत
देषिकेनारी॥ ३७॥ पूतमारतयहिक्योलायो॥ क
हांसुमैंकांसुसोपरायो॥ यातेमहासुषिथीमोहेसुत
मृवांमिहिमतिहोई॥ ४०॥ कहूंमारेसवहलाहेमाइ
चोरीकरीराइकोंमाइ॥ मर्वांकोरिकेहारहिरायो प
केलेदेषनीलायो॥ ४१॥ राजाकह्योतोरिहनडारै
हमसमकोनकहाहैमारो॥ धुरमोगनहीमिट्योतुम्
हारो॥ राजाकह्योनजैसतहारे॥ ४२॥ घरमतवीर
हतामनकीजे॥ तोसारसुम्यांकेलागजीजे॥ कही
कोंनिस्त्रीरेमजरमाइ॥ रानीकह्योसुनीपोंन्याइ॥ ४३
कसुबमातहोइमवन्गावे॥ पोरानीराजासमछावे॥
काटिषडगमारनकुलीयो॥ बोलेनारिहहनेजिनर
यो॥ ४४॥ पायाकेहाथिषडगयहिदीजे॥ पोहमारेमेरी
गतिकीजे॥ मनमेंकहैमृतिहैआइ॥ पतिकेहाथि
मरूंमैंमाइ॥ ४५॥ लोककहैतैरीकेहालागे॥ तेरेहर
षिप्रांनरहत्याये॥ हरिचंदकहेसुनोरेभाइ॥ याके
जीवनैसोहीआइ॥ ४६॥ बकुलतलागदेष्योंडरथ्या
वे॥ मेरेहाथिमोचमननभावे॥ हरिचंदतेबहीषडग

करिलेई ॥ तीनूं लोक के पानें मेई ॥४८॥ सबै ब्रह्मं
सब है देखंवा ॥ है है कौं ॥ देवूं जपि सूं वा ॥ स्वानाग
कमै होई ॥ जहां मजिष कहै सब कोई ॥४९॥ हर च
षडंग बादन के जाई ॥ ब्रह्मा विस्न गह्यौ कर
ई ॥ ब्रह्मा विस्न गह्यौ कर ज्ञाई ॥ महादेव ज्ञा प
बोल्या ॥ सब देवां तेरा मत तोल्या ॥५०॥ हिंस्या मि
तार हमारा ॥ कफ रो कहूं सजम कहि पारा ॥ ज्ञ सिं
रमां ज्ञ जतन लीयो ॥ तकर हम सुरा पति कीयो ॥
ध्यान ज्ञा इन्द्र तीन तन धार्यो ॥ मेरो बैरी लोयो ति
मारै ॥ कामी रा इन्द्रा रिषछ दीयो ॥ सब देवां मि ले
त नकीयो ॥५१॥ गनिका रूप सक्ति ही माई ॥ तो सूत
तो चली छिमाई ॥ जितने कूं इन्दर सतो पायो ॥
तन सूं जा निकाल्यो ॥५२॥ चटहि वान देवता ज्ञा
तेजो भइ सरीर सवाया ॥ दक्ष प्रजापति सबद जे होइ ॥
सुनि तीन लोक में सोई ॥५४॥ सब को ढिंत कीन
ल्या ता तो संगि तिरपह हम जाणा ॥ गंगा मधि
हिता सब हांयो ॥ ज्यल तो तिर ॥ दिष्टि मांज्ञा यो
राजा पगरु नाम कराई ॥ माता मिली मीन ले
ज्ञाई ॥ ज्ञ जितापतें के चन काटे ॥ सुत रहि
सरूप इहं बाटे ॥५६॥ क्षपदीप ज्ञारनीम जोई ॥
पति महत करत है सोई ॥ बडो मती मारे जगम

तोउपरांतिह मरे नांही॥५७॥ मांगि मांगि बोलै सुर-
मारे॥ तेरे काज आइ तन धारे॥ तब हरिचंद कहै छि-
छिमैसी॥ मांगन कौ रु आसनां कैसी॥५८॥ तब सुर क-
है कछु तो लीजौ॥ पीछे दोस हमैं न दीजौ॥ तब हरि-
चंद कहै देऊ बर ये जा॥ ऐसो के मैं काऊ जिन देऊ-
५री॥ देवधमे सुनि बिस्मै हे सा॥ ब्रह्मा कहे पाया ब-
र ऐसा॥ तीन लोक तेरी जै होइ॥ अंतरी षराष न है र-
सोइ॥६०॥ आपन सो हरिचंद करि लीनो॥ अंतरी-
ष लोक और रचि दीनो॥ हरि हू आमां न सम बारे छि-
धमे नाथ मिले हे सोइ॥६१॥ मौं थे हाथ ताम के दीया-
अजर अमर तिर मे करि लीया॥ तारू जिसी सतीन-
ही काइ॥ पतिबरता कूं मांसि मिगाइ॥६२॥ सुत र-
हितामति सो सुत कौनै॥ जो फिरि टै ते न सौनें तौ-
नौ मिलि पूरन सुष पायो॥ मग तिहां न मे जानि मना-
यो॥६३॥ क्रम पषे नहीं भक्ति जगावै॥ सा ति ग क्रम है-
र नही आवे॥ क्रमकै फल आमन कांइ॥ अरु र-
आपो देवै छिटकाइ॥६४॥ मे मेरी कर तिन मांनैं
फल आम गा बिचि नही आनै॥ मग हिति मान गावै
नही जानै॥ हरि तदे सक्रम नकं गंनै॥६५॥ देतक-
सो टीह षेनां ही॥ पछि भक्ति होन घट मांही॥ ७ पगे-
प्रेम ने मन व त्यागै॥ मग तिआ इ अंतर जो जागै॥६६

गहगहाइ प्रेमउरम्यो मै ॥ हिरैमां चलनताउधल्यो मै
पहलीवनसोंसैनजरावे ॥ पीछें महावसंतरूनल्यावे
६६ ॥ पहलकमोंटो हरिचंदीदीनो ॥ तापीछे ताको
गतिकीनो ॥ साधकेसोंटी महनउहेलो ॥ मांग्यो विना
मगतिकितमेलो ॥ ६७ ॥ साधमगतिसवकोइगावै ॥ मा
यांमुहमेंगहिजावै ॥ छत्रीमरसतीहोइकोइ साध
सबदरांपिहेमोउ ॥ ६८ ॥ तातें हरिचंदमतीवषांनं
मावमतिकोस्थहीजानं ॥ मोगछिद्रोगमोगछिट
कोवे ॥ तापीछें कोइगतिपावे ॥ ६९ ॥ मोहडोहमम
तछिटकायो ॥ मरनहन्योपनिमतनडीगायो ॥ छद
रतनजाकेमुतत्वो ॥ हरिमगताहरिमजिन्या
मुदो ॥ ७० ॥ विस्वामित्रल्यापरोंस्पषी ॥ सुजोध्यादं
इमलोपरारापी ॥ हरिचंदकहेकोमनहीन्यावैति
रमांइलकोराजकरावे ॥ ७१ ॥ सैन्यागांस्त्रोरनकंदी
जै ॥ दीयोराजकहाफिरिलीजै ॥ तवरिषकहिताम
समझावे ॥ पुरेराजसुजोध्यापावे ॥ ७२ ॥ तवहिवात
नहितामवषांनी ॥ मेरोमोहनटैमतिस्यांनी ॥ देखें
स्यांपजवनहींलीते ॥ राइकहेकृपाकरिदीये ॥ ७३
पितामीचरिवन्यग्यामांनी ॥ सुजोध्याराजकहोत
नत्यांनी ॥ कीयोराजनहीमनमायो ॥ तवहुहिर
रहितामवमायो ॥ ७४ ॥ पीछें स्यामरसपीहंसैर

सागरबैसो निहि दरस न होइ। तनही देह हरिचंद
सिंह रूप। मति जांनौ तन मैं कोइ सूप।।७५।।स
जांन ददेह सिंहि पाइ। सब सुष पावै कछू माइ
काछे भेष मनी मन आनै।। सो हरिचंद राजा करि
जानैं।।७६।। भेष धरयां कछु भक्ति न होइ। सनमु
ष गति जांनि है सोइ। जिन औगन नहीं देह धराइ
सब कौं औगन लेहि उठाइ।।७७।। सो सुष बचन कौ
लोय बांनी।। औगुन को नैन अकाज्ञानी।। तो मे
री कहि कौन चलावै। घाटि बाधि कछु बोलनी
आवै।।७८।। जे कोई कहन जांनै सोइ। तौ कुंतधि
त कहन कूं होइ। तो मैं कहूं संतौ मसांनी।। बिष
कौ बचन तैं तरी मांनी।।७९।। पूरे औगन नांहि न अं
नै।। भुधरै सरस कहै तै जांनै। बचन बचन मैं ले
गुन गांनै।। सत को बचन फूठ करि मांना।।८०।। घरे घ
रे मैं रैसो न दी जाइ। जिन तीम मखी सो मै गाइ। धु
रि हु धि सौ भरै मन निसारै उन कौ औगन मति कोइ
धारै।।८१।। दोहा।। उदधि दीन करि लीजिये जै
सन भार अगार। ध्यांन दान सब कुछ जिये। अगा धं
न भक्ति अपार।।८२।। जो लषि न का उमुर मति
लै।। सब पंडित कलि मांहि। रोम समांन न लि
षि सकै। तो हरिचंद सन तांहि।।८३।। ध्याइतो।।

नपा ग्रंथ की ॥ अनेक कथा बिस्तार ॥ हरिचंद सत ति
रदै धरै ॥ सो जन तरै पारि ॥ २४ ॥ जो उचरै या ग्रं
थ को ॥ जो सुनै मन चित लाइ ॥ ध्यान धरै सो पा
म पद ॥ पाप ताप छिप जाइ ॥ २५ ॥ इति श्री हरि तो मो
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ततपदं त्वंपदं असी निरंजनं ॥ धंनो
चिदात्मरांम ॥ जासु प्रगासे ग्रंथ यहु ॥ अति सु
दुर सुषधांम ॥ पढै सुणै सुभ पामिहै ॥ १ ॥ नमो नमो गुर रा
मरांम ॥ नमो नमो गुर अरु सुषधांम ॥ नमो नमो गुर अ
मित अजीत ॥ नमो नमो गुर अगातीत ॥ २ ॥ नमो नमो
गुर दीनदयालं ॥ नमो नमो गुर परम कृपालं ॥ नमो नमो
गुर अगम अपारं ॥ नमो नमो गुर जगत अधारं ॥ ३ ॥ न
मो गुर भगवत रूपं ॥ नमो नमो गुर जोति सरूपं ॥
नमो नमो गुर अलष अनंतं ॥ नमो नमो ॥ सो ॥ श्री गुर देव
॥ ४ ॥ दोहा ॥ नमो नमो गुर कृपानिधि ॥ पूरन ब्रह्म
समांन ॥ जैन वसै मो हृदै रहि ॥ १ ॥ श्री गुर परम निधान
॥ रांम मत प्रकासि पंथ चर ॥ पावै नर वर छांहि तिम
षट गुर रस्मि मिले ॥ नव सागर के मांहि ॥ दै गुर
जामें बहा जात है ॥ नर सम मेद अघवार ॥ दै

मोहि जु काढी ए॥ अपनी कृपा धार ॥७॥ श्री
गुरु वाच॥ सोरठा॥ चित बिथा कहि मोहि मे
रम मसे मया तोहि घणा॥ जिन तै कानं तोहि
पूछे जो कछू पूछे हा॥ ८॥ शिष्य उवाच॥ मुनि
सिष गुरु के वेन॥ जा दृग दरस पडे मसो॥ रम रम
प चैन॥ तब बोले सिव प्रश्न पह॥ ९॥ श्री गुरु उ
मुक्त्यता॥ श्रुन कृत तम पद अरथ को॥ जे पे तत्वो
राति॥ तै से मोहि समझा इये॥ १०॥ श्री गुरु वा
च॥ सोरठा॥ गुणो सिष धरि कान॥ तत पद के
अमरथ को॥ करे मकल बिख्यान गीता मे
जैसे लिखो॥ ११॥ तत पद ईश्वर सो कहै॥ त्वं पुनि
प्रत्यगात्मान॥ तत त्वमसी के अरथ को॥ तत पद ई
श्वर जानि॥ १२॥ महावाक्य मैं यों लिख्यो॥ तत प
मसी को ज्ञान॥ सो ई है मम मको मनय॥ जे पैम
रा बिख्यो॥ ते॥ १३॥ तत पद ईश्वर सो कहै॥ त्वं पद को
हि जीव॥ असी पद ब्रह्म कहावही॥ जीव ईश्वर
की सीव॥ १४॥ षट ऊर्मी सहत जो ईस है॥ षट वि
कार सो हि जीव॥ ऊर्मी विकार सों जो परे॥ ब्रह्म
रूप सो ही पीव॥ १५॥ अथ ईश्वर के षट ऊर्मी वर
नन॥ ज्ञान श्री ह भुद्दलन्यत्या॥ जस बिद्या बल जो
री॥ ये षट ऊर्मी जहां पाइए॥ ईश्वर कहावे सो ॥ १६॥

नयाग्रंथ की॥ धर्मकथा बिस्तार॥ हरिचंद मतहि
रदै धरै॥ सो जन उतरै पारि॥ ८४॥ जो न चवै या ग्रं
थ को॥ सो गुनै मत चित लाइ॥ ध्यांन लहै माप
म पद॥ पाप ताप मिटि जाइ॥ ८५॥ इति श्री हरितो श्री
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]॥ तेतपद तें पद लषीनि रमै॥ धनं
चिदात्मरांम॥ जासु प्रगासो ग्रंथ यह॥ स्तुति मु
ट रस षंम॥ पढै सुनै भ्रम मिटै॥ १॥ नमो नमो गुर रा
म रांम॥ नमो नमो गुर अब्रह्म षंम॥ नमो नमो गुर अ
मित अजीत॥ नमो नमो गुर रवि गुनातीत॥ २॥ नमो नमो
गुर दीनदयालं॥ नमो नमो गुर प्रेम कृपालं॥ नमो नमो
गुर भगवत पारं॥ नमो नमो गुर जगत उधारं॥ ३॥ नमो
नमो गुर भगवत रूपं॥ नमो नमो गुर जोति सरूपं॥
नमो नमो गुर सकल षजनवं॥ नमो नमो॥ श्री गुरदे
[illegible]॥ नमो नमो गुर कृपानिधि॥ पूरन ब्रह्म
समांन॥ ४॥ सेन व तै मोहि रषि ए॥ श्री गुर प्रेम निधान
[illegible] मांमत प्रज्ञि पंथ चर॥ ५॥ पावै नर वर छांहि ति
मिर तट गुर तिमिर मिटै॥ मंदमाग के मांहि॥ ६॥ गुर
जा मैं ब्रह्म जानत हो॥ नर समसै दम्बार [illegible]

मोहिजुकाढी ॥ अपनी क्रिपाधार ॥७॥ श्री
गुरु वाच ॥ सोरठा ॥ जिन लिख्यो कहि मोहि भे
र मम मैं भयो तोहि यह ॥ जिन तैं कानहु तोहि
पूछे जो कहु रह्यो सो ॥८॥ शिष्य उवाच ॥ सुनि
शिष्य गुरु के बैन ॥ ज्यों दृगन मय प्रेम सों ॥ सं मरु म
न पू चैन ॥ तब बोले शिव ब्रह्म पद ॥९॥ श्रीगुरु उ
मुवन्यं ता ॥ जुन नृत मम पद अर्थ को ॥ जो में तुम लो
राति ॥ ते में मोहि समजाइये ॥१०॥ श्रीगुरु उवा
च ॥ सोरठा ॥ सुणो सिद्ध धरि कान ॥ तत पद के
हम अर्थ को ॥ करो मक तब ब्यान ॥ गीता में
जैसे लिख्यो ॥११॥ तत पद ईश्वर सों कहे ॥ जो ते
प्रता मन मान ॥ त तमसी के अर्थ को ॥ तत पद ई
श्वर जानि ॥१२॥ महावाक्य में यों लिख्यो ॥ तत
मसी को ज्ञान ॥ सोऽहं सम सम को समनय ॥ जे मैं म
न बिख्यो ॥ ॥१३॥ तत पद ईश्वर सो कहे ॥ त्वं पद को
हि जीव ॥ असी पद ब्रह्म के हारहो ॥ जीव ईश्व
की सींव ॥१४॥ षट प्रमाण सहत जो इसमें ॥ छट वि
कार मोहि जीव ॥ प्रमाण विकार सों जो परे ॥ ब्रह्म
रूप सो ही पीव ॥१५॥ अथ ईश्वर के षट प्रमाण बर
नन ॥ ज्ञान श्री रु भुसन ता त्या ॥ जस वि द्या ब जो
ई ॥ ये षट प्रमाण जहां पाइये ॥ ईश्वर कहावे सो ॥१६॥

जाकौ नांम कहि जगदीस ॥ ताहि जांनि इह्यां ॥
कोईस ॥ सब लोक है जाकौ साखि ॥ पगताके मत
दै पानाखि ॥ २१ ॥ दसं दिसा जो श्रोन कहावै ॥ सब
समं इजा तउ समावै ॥ सनाम पती जो अगम अपा
रमा बली कहिए सो ज्ञानन मझार ॥ २२ ॥ सकल
नदी जाके प्रभेद ॥ ताकौ किन हूं न पायां भेद ॥ र
विससि जाकै नैन जो नम ॥ परून पचौ भीताके
प्रांन ॥ २३ ॥ दोहा ॥ अपदला हि सहंस्र है ॥ लोचन
सहंस्र अपार ॥ सहंस्र नांम संतन भाषही ॥ सो ॥
वेद विचार ॥ २४ ॥ अथ हिरण्य गरभ नाम ॥ हि
रण्य गरभ जा सौं कह्यौ ॥ ता मैं यह पद चांनि ते
उपति सैषा लना ॥ नी न्यौं अक्षय प्रिय भांन ॥ २५ ॥
धुन न्यां नांमनां मते ॥ धुन कार अकार ॥ हिरण्य
गरभ को अर्थ यह ॥ सब विसतु उपंकार ॥ इती हि
रण्य गरभ ॥ अथ अक्षर विस्वरूप नाम ॥ अति सूक्ष्म
अति सब लट है ॥ अबि क्षय नैं ल अक्षर ले ती ॥
जा वपु जा सौं कह्या ॥ अरे सीष समझोगा तवै
पद अर्थ ओ चरनी यां ॥ इष्ट कोटिका मंग ॥ २० ॥
इती तनपद निरमैं सदा बाकाप्र चांन ॥ सि
ध ॥ श्री गुरप्रम निधांन ॥ सहाउ रूप अति
त है सोउ समग्रम बखांण ॥ सो सौ हित नर कहै

रसी॥ कौन है मुक्ति॥ कौन है बंध॥ कौन है माया॥ कौन है
ब्रह्म॥ कौन है चेतन॥ कौन जड ब्रह्म॥ कौन है षेत्र
कौन षेत्रग्य॥ ४०॥ कौन है सार॥ कौन असार॥ कौ
न है उरध॥ कौन है नाश॥ कौन है अबाची॥ कौन
बचनार्थ॥ कौन है अलष॥ कौन लषावे अर्थ॥ ४१॥
कौन है अनवै॥ कौन बिनरेषा॥ कौन है मैछग्य॥ कौ
न अवेषा॥ कौन है बिश्व रुमि रहे कौन॥ कौन है
ग्यान बिग्यान॥ कौन॥ ४२॥ दोहा॥ बिक्रम अबको कं
हो कोउ रहौ॥ बिनामी अबिनामी कौ॥ ग्या॥ बिद्या अ
बिद्या मैं कहो॥ बचन अबाची कौ गा॥ ४३॥
उत्तमोइ समै प्रश्न है॥ उन कौ उत्तर देत॥ जे मैं है ते मै
कहौं॥ बुधि बांनी में हेत॥ ४४॥ श्री गुरु वाच॥ मन ले प्र
श्न पूछे उमता ता॥ सुनो उ मेरे चित देबा त॥ यह मनमें ते
राय हुप्रश्न है॥ बंध मुक्ति को कारन मन है॥ जब म
न मांहि बासना धरी॥ तब मन बंध्यो जाहि बरी॥
जबहि मन निरबास होइ जाइ॥ तबही मन फि
रि मुक्ति कहाइ॥ अकार रूप सो जांनो माया॥ निर
कार सो ब्रह्म बताया॥ ब्रह्म चेतन्य माया जड रू
प॥ बंध है षेत्र जीव षेत्रग्या॥ ४६॥ दोहा॥ सार ब्रह्म
प्रमात्मा॥ जड आत्म सकल असार॥ चेतन्य ब्र
ह्म सो उरध है॥ सत्यप्रकृत्न सो नारि॥

स्त सो हि अखंड चौजानो ॥ बाच्य अर्थ मे रूप द्रव्य
गु ॥ चेतन है पन मे सो अंतःकरण षकहाचे ॥ लक्ष्य अर्थ
रूप सिनामु हावे ॥ ४९ ॥ देह त्रयांते अंतैवेक ह्यो
भिन्न षट्गुन तैं न्यारा रहै सो ॥ मेघ छव्र दृष्टांत कयारम
त ॥ अब सम्प्रग्यो मह क्षांतनन ॥ ५० ॥ अति वि
भोर हठिसि बिट दोसार ॥ कमि ष्वि मेतर ह्वै ॥ दाम
निरपाछ दिखि प्रयाग अस्थूल ॥ उपाधि अतित
मो है निरमल ॥ ५० ॥ दिक्षि द्रष्टि मे भिन्न दे
अविक मोक्ष विभाव ॥ अग्नि नामी सो अघटक
ह्या ॥ नाम रूप घटक ह्या ॥ ५१ ॥ अज्ञान अवि
द्या जान्यो ॥ विद्या आत्म ज्ञान ॥ सब्द विचार
मो वचन है ॥ सत्य अतित निरनाम ॥ ५२ ॥ मन बच
परै मो अंतर बच ॥ तहां न बाणी बाक्य ॥ सो सिव
तेरा रूप है ॥ जप किट का ग्यामे ताक्य ॥ ५३ ॥ सो सिष
जैसे जाति मा ॥ घाजत है सो हवत ॥ अक्षि पड्ड
पहचानि ॥ कनै करां न नैर हत है ॥ ५४ ॥ सो उत्तर
प्रश्न उत्तर कहै ॥ सास्त्र बाक्य प्रमान ॥ पूछै जो कछ
पूछ ह्यां ॥ हो सिष चतुर सुजान ॥ ५५ ॥ सिष बाच
ब्रह्म जो तुम अक्रिय कह्या ॥ माया कहीं जिन रे
प ॥ जग कैसे करि भयो है ॥ श्रीगुर प्रम अनूप ॥
श्रीगुर बाच ॥ जगत नाति मिष्ठ अ सून करि ॥ बरन्हु

सकी रीत ॥ इह प्रकार जगत है भयो ॥ सो श्रुति चित दे
सीत ॥ ८७ ॥ जगत उत्पत्ति श्रवन श्रम करे ॥ वेद वचन
ते मन मैं धरे ॥ वेद माहि सिष नें सैं कह्यौ ॥ सो पेमे
व जगत उतपन भयो ॥ ८८ ॥ जैसैं अग्नि उपजे आपु
उपन और रवि कै उन ताप ॥ रवि इंधन जब भयो
संजोग ॥ तब उपज्यो पावक सहज हि योग ॥ ८९ ॥ त्यों म
या ब्रह्म मिले सिष जब ही ॥ तब उपज्यो जगत समान तैं न
ही ॥ माया ब्रह्म के मिले मंझारा ॥ पावक रूप उ
पज्यो संसार ॥ ९० ॥ वार्ता ॥ नाक ब्रह्म इच्छा आरसी न
के ब्रह्म इच्छा मांन ॥ आन इच्छन ही मे लाभ या ॥ उप
जौ अग्नि प्रमांन ॥ ९१ ॥ नाक ब्रह्म इच्छा ब्रह्म को ॥ नाक
ब्रह्म इच्छा माये ॥ आन इच्छन मे लाभ या ॥ जगत उपज्यो
आए ॥ ९२ ॥ ज्यूं पावक भयो आप तें रूपन सूर मिलाए
त्यूं जगत उपज्यो आप तें ॥ माया ब्रह्म प्रताप ॥ ९३ ॥ दू
सरो जगत उतपत्ति रनें ॥ वेद माझ प्रवांन ॥
॥ शिष्य उवाच ॥ श्रीगुरु जी पे विनती सुनीजे ॥ याम क्या
को उत्तर दीजे ॥ आन इंधन जो ब्रह्म उमक्यो ॥ ता
ही ते मन संसै भयो ॥ ९४ ॥ जो कहो ब्रह्म के इच्छा ना
थी ॥ काहे के वेद माहि प्रकाशी ॥ वेद मांहि तैं सैं मे बध्या
न ॥ यो मैं कह्यो बहो तमो ज्ञान ॥ ९५ ॥
मैं करि कह्यो ॥ ताही तैं मोहि संसै भयो ॥

नांमकरीजै ॥ ज्याकथाकछुभेतरदीजै ॥ हरि ॥
श्रीगुरुरुवाच ॥ शाषि वेदकी ॥ सोरठा ॥ हो सिष्य गेमेंग
ति ॥ ब्रह्म मद्याज्ञ नइछहै ॥ वेदजकी याबषान मा
वेदन्ह तीत मो ब्रह्म है ॥ ८१ ॥ ब्रह्म कहा वैमाइ ॥ जत
मेंसबदन पाईये ॥ सरूपटातें होये ॥ घाटा द्वि
मायामवै ॥ हरि ॥ ब्रह्ममद्याचेतन्य ॥ मायाजडै
मोहवत ॥ तामेंकछुभेदन ॥ योमंसेशिषप्रहरो ॥
ये ॥ शिष्यउवाच ॥ श्रीगुरुजीयेबिनतीहमारी ॥ कृ
किया उमहमपधारी ॥ ब्रह्ममायाकोबातजन
है ॥ सो तेकहैसंक्यामन ल्याई ॥ ८० ॥ मायाजोतुम
टवेतकही ॥ सोकैसेंकरिचेतनभई ॥ जडचेतनकै
सेंमयेमेला ॥ कैसेंब्रह्मनिरंतरिषला ॥ ८१ ॥ कैसेंब्र
ह्मनियारारहै ॥ सबैव्यापीकैसेंस्वह: कैसेंचेतनमु
नःप्रकास ॥ कैसेंघटघटकौपीबास ॥ ८२ ॥ जडचेतनम
आतजनादो ॥ ऐसैहैतेसेंसमझावो ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ सो
सिषऐसैंजांन ॥ मायाजोचेतननई ॥ सकलकरे
बषान ॥ श्रावणकरैतुमसिषही ॥ ८४ ॥ न्यायजडह
नीत ॥ दोहा ॥ जंतुवककोमतास ॥ जडःलोहाजि
ये ॥ त्युं चेतनकोमनास ॥ मायाचेतनभ ॥ ८५ ॥ ज्यु
चेतनहिमंत ॥ ज्योंलोहापावककैगये ॥ त्युंमाया
ब्रह्म मिलानभये ॥ त्युं जडलोहातुं जडमायाचु

बकमाव्क चेतन माया॥ ८१॥ ज्यूं सो हाथ में प्रावकवध
या॥ त्यूं माया में ब्रह्म समाया॥ ज्यूं जल मैं नरवो सेतार
यो माया में ब्रह्म नियारा॥ ८२॥ ज्यूं पावक करि विद्युत
प्रकासा॥ त्यूं ही ब्रह्म नेज कौ रासि॥ ब्यापक है॥
गनि अषंड॥ त्यूं ब्यापक ब्रह्म सकल ब्रह्मंड॥
८८॥ दोहा॥ ज्यूं जल घट मैं रबि लसै॥ हैर बिमथ प्र
काम॥ त्यूं माया में ब्रह्म है॥ रबि तै मै प्रकास॥ ८४॥
इती ब्रह्ममाया निरूपण॥ ब्रह्म माका प्रवेश स पर
न॥ त्रिषट्टेवा ८५॥ परब्रकिया उचार॥ घन रूप तरोर का
धोड्स पद्म मझारा॥ सो कैसै बपषेन है॥ ८६॥ श्री गुरु बो
॥ सोरठा॥ सुनि सिष्य बपड़िस्तार॥ जैसे है तैसे कहूं॥ तत्व
न तन निरधार॥ चन्हैप चष चकां॥ ८७॥ ज्यूं नचैर स्त न पजी
छाया॥ त्यूं ही ब्रह्म सन पजी माया॥ ज्यूं थिर न चरछा
या चल रूप॥ त्यूं ही ब्रह्म थिर माया त्रम कप॥ ८८॥
ब्रह्म सता चेतन नर्मै माया॥ तिन ही पेह प्रपंच मन
माया॥ मल प्रकिति गुण॥ आत्मक हीये॥ रज मत
तम गुण तीनूं हिये॥ ८९॥ ब्रह्मा विष्णु शिव त्रि
गुण सरूप॥ पंच तत तैर चेत्रमंड॥ विधि उनकै
रण वकपौन॥ पंच मगनि को प्रासनि [illegible]
दोहा॥ पानू के प्रपंच पेह॥ त्रिगुण [illegible]
छिम छिम जो मथ्या॥ प्राकृत जा को [illegible]

ऐसें पंच तत्तनि कै ॥ तिनकौ भयौ सरीर ॥ सो अब वर
नन करत हूं ॥ भिन्न भिन्न रै धीर ॥ ९९ ॥ अथ पं
रतन ॥ पृथ्वी ऐसें धारी रैहै ॥ अस्थिर मधौं रम
स ॥ महा कठोर [illegible] भाव पेह ॥ फिरि पृथ्वी मैं बास
ल्घु ॥ जलकौ ऐसें मलौ हूं कह्यौ ॥ पावक जाणं सुं
च ॥ जलन नाई घट मैं फिरै ॥ छेदक है वहि जाय ॥
पावक ऐसें सोतेज है ॥ नासित लै है वास ॥ सबै
हार भिछन करै ॥ भष लगो फिरि तास ॥ ९९ ॥ वा
यु ऐसें घट पौन है ॥ नीर सुखावै सोय ॥ फिरि फिरि
या सू लगावही ॥ आवत जावत जोय ॥ १०० ॥ आका
स ऐसें घट पौलि है ॥ सुन्य भये तें ई जांणि ॥ आतम
मनि भास यै करै ॥ अंतःकरण लिंग संनि ॥ १०१ ॥ सुनै
सिष इम सहंडी यं ॥ सकल कही विष्यांन ॥ जांन इंद्री यां
कर्म इन्द्री यां ॥ पंच पंच प्रवांन ॥ १०२ ॥ पांच तत्व तें दस
भई ॥ कर्म इंद्री और ज्ञान ॥ सो अब वरनन करत हूं
सुनि सिष चतुर सुजान ॥ १०३ ॥ पृथ्वी तें ये दो भई ॥ नासा
गुदा सो बीर ॥ जल कौ इंद्री ये कहूं ॥ जिभ्या लिंग सरी
र ॥ १०४ ॥ नैन चरन कहै अगनि कै ॥ हाथ त्वचा भ्य
वायु ॥ वांणी सरवन अकास की ॥ ये दस इंद्री यां बताय
१०५ ॥ कर्म इंद्री वांणी तीन ॥ गुदा लिंग पंचम प्रवीन ॥ क
म इंद्रीयां की है पांच ॥ इनकौ कीया नृग नाचै सांच ॥ १०६

१०६॥ तीक्रम इंद्री॥॥ चक्षु स्रोत्र जिभ्या ग्राण ॥ त्वचा
स्यौ पंच प्रधान॥ ग्यान इंद्री पायें कही पांचौ इनाकौ कि
यौ गत्ता नैं सौं च्यौ॥ १०७॥ रूप रस गंध सौं सिज्या स्पर्स सब्द
स पसै पंच प्रधान॥ काम क्रोध लोभ मोह अहंका
र पंचम जो सो हा॥ १०८॥ तनमात्रा पांच विषै से बेदांतम
हि लिषे है॥ सोरठा॥ रूप हि जै पंच भोगन मोह जे प
ज्यौ सब्द तै॥ रस तै उपज्यौ क्रोध॥ काम सपरस ते ब
ध्यौ॥ १०९॥ गंध मधे अहंकार॥ विषै पांच इनके कहे
इनके धरम प्रकार॥ कहत बिहारी लाल अब॥ ११०॥
रूप को ग्राहक चक्षु है॥ जिभ्या रस को स्वाद॥ गंध ग्रह
ण नासा करै॥ बांणी सरे इन स्वादि॥ १११॥ प्रेम परस त्व
च है चांमि है॥ सीत उष्ण जो जांन॥ सब्द ग्राहि क्रम इं
द्री अंस को चन परसरांन॥ ११२॥ पांच तत्त दस इंद्री बि
षैक है तुन मीत॥ अंतःकरण चतुष्ट जो॥ बरन्तं ई न क
री नि॥ ११३॥ संकल्प विकल्प जानैं जोई॥ सो ही मन पह
चांनि॥ समिन धरम मन का कह्या॥ सां नैं मांन सरूप मा
न॥ ११४॥ निस्चै कारज जो करै॥ बुधि कहावै सोय॥ ब
कि के कैरै सब बरनी का॥ त्याही तै सब होय॥ ११५॥ अनु
मान चिंता धरै॥ चिंत करि रिस छै ध्यान॥ चिंता चार जे
चित वृत्ती॥ सो ही चित है तान॥ ११६॥ अहं धरम जि
स का कह्या॥ अहंकार है सोय॥

जो बहिं तूं मैं होय ॥ ११७ ॥ बीस च्यारि तत्त्व ये कहे ॥ मैं
र पचि तत्त्व पचीस ॥ यों सैं नामरूप जड़ सर्व ॥ जीव चेत
बीचि ईस ॥ ११८ ॥ चौबीसूं जाग्रत कहे ॥ स्थूल स
पहै सोय ॥ मन कौं संकल्प नीयें जाका सुपनां होय ॥
११९ ॥ पहला बिपरजनन कियाइ जाकहुं बर्षान
लिंग स्वरूप जासुं कह्या ॥ सुखिम जाको नांम ॥ १२० ॥ पं
च पवन दस इंद्रीया ॥ मन बुधि मन अहंतत्व ॥ सूक्ष्म स्वरूप
जासुं कह्या ॥ सुषिम रूप की गति ॥ १२१ ॥ तीजा रूप ज
सुं कह्या ॥ सुषोपति है सोय ॥ मूल प्रकृत माया ये है ॥ स
त्रह और चौबीस ॥ जातैं होय न भास है ॥ ते के जागे
गदीस ॥ साषी कहत पचीसवां ॥ १२२ ॥ तीजा रूप जासुं
कह्या ॥ जड़ कौ कारन मूल ॥ ताही सूं ये होय है ॥ सूक्ष्म
म रूप अस्थूल ॥ १२३ ॥ तीनूं कहे सरीर ॥ और तीय
या जीव के ॥ जब लग तजै न बीर ॥ तब लग मुक्ति न
पाईये ॥ १२४ ॥ चौबीसूं जाग्रत जे ॥ सत्रह सुपन न हो
ये ॥ सुषोपती कारन तैं जे ॥ तुरीया सी मानैं सोय ॥ १२५ ॥
जाग्रत कौ स्रमित जे ॥ सुपन न आपेरैन ॥ सु
षोपती महि जे मिटै ॥ तुरीया प्रकासे चैन ॥ १२६ ॥ स्व
जीयां चेतन सो काया देह स्वरूप ॥ नहीं आत्मा राम
मैं बास कीनां ॥ अहंकार की संगति पाये जी ॥ ग
ए स्वरूप मैं आप भुलाय दीनां ॥ १२७ ॥ इस देह कें ते

सतमांमिलीया॥ जिनमतकं हां मिञ्रमलीनां
तनमनक्रेत जिके रूपलखे॥ सबै दूरयसा राखकद्वि
टीकां॥ १२ श्लो॥ ततपद शोड सुपक्ष जो॥ जगतत प
निप्रपंच॥ शुद्धमायासमादये है॥ सकल वस्तु वस्ने स
चै॥ इती त्रिधाबेवतमा मायांविहारीकितप्रथमे
प्रभावः॥ अथ ज्ञानी पोषमा व वरन नां॥ मिथ्या का द
ग मो गै॥ धनश्रीगुरदेव जिन श्री समं शोहरयो॥ जी
व मयो जिहने वसो मोहि वरनि सुनाइये॥ १ श्रीगुरजी
येकरो वर्णानां॥ पेक द्विस्त के सेमयो नां नां॥ जीव स
ज्ञाके से कारिपाहे॥ सो ज्ञितांन कहो समझाई॥ २ बहे
क्रिया करियाविधक हो॥ अब वियापीके सें कहो॥ ३
कैसे चेतनसुतः प्रकास॥ कैसें घटि घटि कीयो बास
४॥ कैसे सबहस्तं रहै निपारा॥ जैसे कहो सकल बिस्तार॥
कैसे जीव मयो पैन गयो॥ जैसे बनो गुरु सबे गया॥ ५॥॥
श्रीगुरुवाचः॥ दोहा॥ सुनो सिष तुम ध्यान करो॥ हि
त चित थी तिलगाय॥ जैसे है तैसे कहुं॥ सब तनरम
देहन सा ये॥ ५॥ सोरठा॥ ज्यूं सूरज है येक॥ त्यूं ब
ह्म नी ये कहै॥ जल घट मध्य अनेक त्यूं ब्रह्म घट
घट विषे॥ ६॥ ज्यूं रवि सुतः प्रकास॥ त्युं प्रकास त्यूं
ब्रह्म है॥ ज्यूं रवि घट घट वास॥ त्यूं ही ब्रह्म प्रतिवि
बघट॥ ७॥ जैसे गगन अखंड है॥ व्यापक है स

रुगये ॥ तैसैंब्रह्मअखंडहै ॥ व्यापिरह्योसबमांहि
॥ सबतेंन्यारासब बिषै ॥ जैसैंकह्योआकाश ॥ तैसैं
हीयेहब्रह्महै ॥ न्याराअबनिवास ॥ ९ ॥ ज्यूंअसि
[illegible] ॥ ज्यूंससिप्रतगगनमें ॥ प्रतिबिं
जलमांहि ॥ मारूतसुंजलहलनहै ॥ त्यूंससिबीह
लदिखाये ॥ १० ॥ ज्यूंससिअस्थितगगनबिषै ॥ त्यूंब्रह्म
थिरपहचांनि ॥ प्रतिबिंबजलहलनहै ॥ आबिद्या
मंगिअग्यांन ॥ ११ ॥ ज्यूंससिघटितदेषीये ॥ जलसार
तकेमांहि ॥ त्यूंघटितजीवआत्मा ॥ चितऔपाधि
केनांहि ॥ १२ ॥ घटैबढैससिकीकला ॥ ब्रह्मकलान
रुपर ॥ समद्रिष्टीसमदेषहो ॥ छडितमांनकूं ॥ १३
बसनअसुद्धफिटकिहै ॥ निर्मलज्यूंआकास ॥ त्यूं
निर्मलआत्मा ॥ निर्मलसुपेदकाम ॥ १४ ॥ सो
रंग ॥ लालस्यामऔरपीत ॥ बस्तरंगनफटकहै
औरोपतंगहीमीत ॥ ज्यूंआरोपतिजीवमयौं ॥ १५
[illegible] ॥ जबरंगलीछोटगये ॥ फिटकिअस्याम
हीसुधवत ॥ त्यूंजीवब्रह्मकरहाये ॥ मंगतितजैजो
जटकी ॥ १६ ॥ ज्यूंफिटिककेहाथोलाल ॥ मंगतिर
गुतपाषिकी ॥ त्यूंजीवआत्मलाल ॥ संगतिअंतःक
रणकी ॥ १७ ॥ अंतहकरणमझार ॥ प्रतिबिंबजीव
आत्मा मनबुधिचितअहंकार ॥ जागितेंग प्रतिबिंबै

च्यारि कही नव दस कही ॥ दूसरै तैंतीस पचीस ॥ पचीस तैंती
स बखितल गी ॥ जिन छुटे पंचीरी सा ॥१९॥ जैसे सूरज के
उदै लोग करैं नित किंत ॥ तैसे जीव प्रकास मुत्ति न सहै
न कोश्रित्या ॥२०॥ ज्युं सजै हि लोकमन ॥ रैन छतौ रहै सै
या ॥ तैसैं जो छवि न इस्टीयां ॥ रहे जो मृतन गहोये ॥२१॥ जो
ब बिनास बजंट सही ॥ जैसे सृतन कहो ये ॥ जीव सता सु
जाग है ॥ ज्युं सूरज गनि होये ॥२२॥ जो प्रसता संग्या
हौ ॥ तन हरै सन जान ॥ आपनी आपनी जिन का
म बहौ कौन पछान ॥२३॥ सुपौ पिषु समजी बकथ्या
जैसैं नयो सजीव ॥ जह प्रकार भिरन न करै ॥ जैसी मं
ग्या ली वृ ॥२४॥ प्रम हैं स प्रमा ह्मा ॥ पारब्रह्म है जो
ये ॥ माया नाजन्ह श्यास तैं ॥ उस रस्ते हावै सोये ॥२५
ईसत्नै सजी वृ आत्मा ॥ ग्रिसि निरव पसां हौ ॥ जीव
रूप कि ग्रौन रयो ॥ ज्युं दीपक घरमांहि ॥ २६ जैसे
पी वक पेक है ॥ घटि घटि दीपक जोति ॥ तैसे बह्म जे
पेक है ॥ घटि घटि ब्रह्म उदोत ॥२७॥ ज्युं रवि छिति भि
सु नीर सै ॥ निरखाई थल मांहि ॥ तैसै जीव रूप हरयां
नि लै ॥ सुमै कोई नांहि ॥२८॥ ब्रह्म
ईसत्नै सजी व जानि ॥ जीव नस्यो सन
न ब्रिस्वपलीये मानि ॥२९॥

बगाये ॥ तैसे ब्रह्म अखंड है ॥ व्यापि रह्यौ सब मांहि
न ॥ सब तैं न्यारौ सब विषै ॥ जैसें क ह्यौ आकास ॥ ऐसै
ही पूरन ब्रह्म है ॥ न्यारौ सर्व निवास ॥ ९ ॥ ज्यूं सूर्य प्रति
[illegible] ॥ ज्यूं ससि परम गगन मे ॥ प्रतिबिं
जल मांहि ॥ मारुत सुं जल हलन है ॥ त्यूं ससि बीह
न दिखाये ॥ १० ॥ ज्यूं ससि अस्थित गगन विषै ॥ त्यूं ब्रह्म
थिर पद चांनि ॥ प्रतिबिंब जल हलन है ॥ अरु छाया
मै गिनि ज्ञान ॥ ११ ॥ ज्यूं ससि षंडित देषीये ॥ जल मारु
त के संगि ॥ त्युं षंडित जीव आत्मा ॥ चित्त औपाधि
के संग ॥ १२ ॥ घटै बढै ससि की कला ॥ ब्रह्म कला नि
रधार ॥ सम दृष्टी सम देषही ॥ षंडित मांन करा ॥ १३ ॥
ब्रह्म सत्त सुधि फिटकि है ॥ निरमल ज्यूं आकास ॥ त्यूं
निरमल सुध आत्मा ॥ निरमल सुद्ध प्रकास ॥ १४ ॥ सो
रठा ॥ लाल स्याम अरु सेत पीत ॥ बस्त्र रंग न फटक है
औरोपतं सही सोत ॥ त्यूं आरोपति जीव मयो ॥ १५
[illegible] जब रंग ली ऊठ गये ॥ फिटकि अस्याम
ही सुध वरन ॥ त्युं जीव ब्रह्म कर हाये ॥ संगति जैं जो
जन की ॥ १६ ॥ ज्यूं फिटिक के हाथे लाल ॥ संगति र
ग उपाधि की ॥ त्युं जीव आत्म लाल ॥ संगति अंतःक
रण की ॥ १७ ॥ अंतह करण मजार ॥ प्रतिबिंब जीव
आत्मा ॥ मनबुधि चित अहंकार ॥ जागि ठगी प्रतिबिंब ॥ १८

च्यारि कही नव दस कही ॥ द्वैसैं तेतीस पचीस ॥ पचीस तेती
नव क्रित लही ॥ क्रिन कुं तेपन्नी रीस ॥ १९ ॥ जैसैं सूरज के
उदै लोग करैं नित क्रिन ॥ तैसैं जीव प्रकास मुं तन सइंद्रै
न को भिन्न ॥ २० ॥ ज्युं सजे छि लोक सब ॥ रैन इती रहैं से
य ॥ तैसैं जो चविन इंद्रीयां ॥ रहैं जो भिन्न गहोय ॥ २१ ॥ जो
र भिन्न सब जल मइ ॥ जैसैं भिन्न कहोय ॥ जीव सत्ता सु
जाग ही ॥ ज्युं सूरज गनि होय ॥ २२ ॥ जो वसताजु भाग
ही ॥ तन इंद्री मन भ्रान ॥ आपनी आपनी क्रिन का
म नही कौ जपाझान ॥ २३ ॥ सुंगिग्गां मिष क्रम जीव क्रण
जैसैं नयो मजी बाज ह्वप्रकारि भरनन करैं ॥ जैसी मं
गा नीव ॥ २४ ॥ प्रम हैं सब मा हमा ॥ मा रत्नि हली हैं जो
पे ॥ माया माक न्न मायास तें उसर क हावे मोय ॥ २५
रैसन्नं मजी चन्नात्मा ॥ भिन्न तिं निवन पमाही ॥ जीव
रूप कै मौत न सौ ॥ ज्युं दीपक घर मांहि ॥ २६ ॥ जैसैं
पो वक्र पेक है ॥ घटि घटि दीपक जोति ॥ तैसैं इक स्रजे
पेक है ॥ घट घट भिन्न उदोत ॥ २७ ॥ ज्युं रवि भिन्न मि
मनी रवै ॥ निरजाई थल मांहि ॥ तैसैं जी व पह वा
नि ले ॥ मसे कोई नांहि ॥ २८ ॥ झलअनसर झेर कद्य
रैसन्नं मजी चजानि ॥ जी नन सौ मन भाखिसे ॥ म
न भाखिवपनी पोमांनि ॥ २९ ॥ झलावतं कुंधी रूप है

जठमंगतिकोयेजीव॥ ऊमंगतिकेवसाढतै॥ न्या
ममतपदपाव॥ ३०॥ सोरठा॥ जठःकेजेतेधरम॥ जीव
न्यारेपेन्यापसे॥ जीवमयोजहकम॥ न्यायमांहि
रपनकौयि॥ ३१॥ धरमअक्रमजोथेइके॥ थेअरूपतीसे
मांनि॥ तबहीजीवकहाइये॥ जठमंगतिअसांन
३२॥ न्यात्मअधिमोंवीमरयो॥ मलोन्यात्मसांन॥ ज्ञ
मंगतिकेप्रतापते॥ न्येमोमयोन्यसांन॥ ३३॥ जठके
मंगतिपायके॥ जीवमयोजठरूप॥ मंतछिनन्यांनद
योयेकरि॥ पस्योन्यंधेरेकूप॥ ३४॥ सिपतनयाम
नामांहते॥ किंयोविधेमढयांन॥ न्येहंगावमढ
मुक्तिकौ॥ मलिनयोमतसांन॥ ३५॥ घटकूरमोके
वसिपरे॥ हेयेगयेन्यतिदीन॥ जेसेन्यूपतिरेनमें
निजमासीवसिकीन्ह॥ ३६॥ न्यपन्यधारीरेनमें न्य
येपोवरीहारि॥ वांधितिघोनिजेमाकरनहार
मेरचुकार॥ ३७॥ दसम्हांननमेंयेकम्रिग॥ न्यपावे
उसघेर॥ न्यपनेन्यपनैजोमहित॥ थेछैन्यपतीवो
र॥ रेनी॥ जसमनइडीखांन ना॥ येचत न्यायेन्याय ६
मृगनाइमिचिन्यात्मा॥ पावैन्यतिमनाप॥ ३८॥
किमर्डिबान्य॥ घटउरमीकहेकोनहै॥ सोको
न्हेहतारे॥ उमविनकोमसेहरै॥ सोठरमनी

पररायो॥४०॥ श्रीगुरुरुवाच॥ षटतेरमी मिथ्यात्वन
करि। बारमौं इनकौ रीति॥ षट थिकारमोजीवके
गुणठाकरमीति॥४१॥ कुपक्ष भमो हसोन अपमान
कुध्यानिषाजनमनितजानि॥ सीतते इम्हरष
औरसोक॥ येषटतेरमी जीवके रोग॥४२॥ इनका
कारनजटनहोत॥ म्लनजुद्वि च्यार हैही पिछानि
जुद्वियासकिजीव कनबनहै॥ तवजु थिबुद्धिसबरेम
कोगहे॥४३॥ जुद्धि चयामक्तिबांधिजहलीये॥ तव
हीजीवमेजबसौको यो॥ तबयुहकोयोमूपोजेन
तबहोनयोजीवदनतो॥४४॥ दोहा॥ नुद्धि च्याकेबा
सहोयैकै॥ कोन्हे कनमनुकमा॥ कनफांसिमें आये
कोलागेजुचनी गुना॥४५॥ नुद्धिच्यारोक्तिमहल
जबपरी॥ तबनिजभथिमनई सकीहरी॥ सतिचित
नानंदमयो रूप॥ सो तैजस्यो नरसके कूप॥४६॥
जन्मरूप लिये जन मांनि॥ सतचित नमिस्योन
वहीहोन॥ हाहचा सब थकी देह॥ सो तैकहेमर
हैयेहा॥४७॥ मेरी देह राजदैमेरो॥ गयोसरानायो
थेरो॥ देहआनिमानजबैयेहकी यो मरनआमर
समानितबलियो॥४८॥ सोसो॥ मरनआमरसदा
योमानि॥ जबइनमानो आपमे॥ तबही मयो जु
सानि॥ मैमेरी ममता नसी॥४९॥ चौपई॥ मैंहोव

मनमैंसैंछली । मैंहूं ब्राह्मणमैं ब्रह्मचारी
यतामैंहूं मिथ्यारी ॥५०॥ मैंहूं जैनी जोगी सन्यासि
वैरागी मैंहूं तत्वदर्शी । मैंहूं पंडित बडभागियानी ।
मैंहूं मूरख कछु न जानी ॥५१॥ मैंहूं मैं चिसी लिंग्य को
मैं रागद्वेष मैं रहैनारी । मैं स्त्री तिव्योरा मैं पुत्र तिसा
मैं नपुंसक नाम मैं रतिकांपा ॥५२॥ मैं बहा ॥ मैं
त मैं ठकता । मैंहूं चतुर मैं प्रवीन । मैं राजा मैं रंक
मैंहूं धनकुलीन ॥५३॥ मैंहूं तैतमम छिमसुपी । मैं
नीच मूढ मैं ऊंपी । मैंहूं गोरा सुंदर स्यांम मैंहूं धनी
मैं हैं बहोमाम ॥५४॥ मैंहूं फिदरी मैं स्वतिदीन मैंहूं
हलका प्रस्वाधीन । मैंहूं बालक मैं हूं ज्वांन । मैं वृ
तिमोटा तिबलनिबलत ॥५५॥ मैं ख्याति संज्ञा मैं ख्याति
होरा । ऊ झिमम म मलानदी मैं कौरा । मैं सत बुझि
यतनद्रसी । संसारी मतीमैं सुखि पुसी ॥५६॥ मैं व
धनमैं बधौंहूं । कैसैं सुद्रहैं । मैं पापी कछु नांकीया
हाहाकार करैन ॥५७॥ श्रीगुरुवाच ॥ ममहूं मैं कहिता
रहो । स्वहि व्या कियो स्वाधीन । जीव मैं पांको ऊपै
धीनयो मतिहीन ॥५८॥ निज मैं रूप जब न हायो
तको संगति पाये । तैसें सिध भेखीन यो । भेखी संग
के स्वाये ॥५९॥ के हरसुत पेकबन छिपे । बेलत
पर्ने घात । स्वैज्या घात ते च्याहयो राम्मो भेखीन

हो॥ तितही सिंघ बन आये है। फिरि घरी आवै सोय।
छेली संग छेली भयो। तजबल दीनौं षोय॥६४॥ दोहा॥ नि
ज सरूप जब भूलियो। आपा रूप लीयो मांनि। तितही
संगति विच सौ करै। ऐसो भयो अग्यान॥६५॥ एक दि
न ताके बन विषे। सिंघ मिल्यो एक आय। दोनों देषै
आपमें। दोनों रहे रसाय॥ दो॥ तब उन इन सुं यें कह्यो
अरे कमति कहा कीन्ह। आपा आप गवायकै। छेली
संग तिलीन्ह॥ दो॥ ये हतो तेरा नष है। इनें कही गज
दिषाये। तब के हरसुन यरजीयो॥ छेली गई पलाय
॥६५ ताहर संग तिज वकरी। तबही भई संभार। हर
ष भयो तब सिंघ सुत। निज आपा लीयो सार॥६६
॥सिंघ वचन॥ पहले तैं जु विगाडी सो। पीछे सारी
तोहि। निजकुल संग तिज वकरी। तब मुधि आप जी
सोही॥६७॥ श्रीगुरु वाच॥ तैसेही अग्यान मन। जीव
बिगाड्यो आय। इंद्रियन की संग निकरी। जगबन
में न रमाये॥६८॥ जब याकों गुरु मिलै। सिंघ
संत करै प्रमोध। तब याकें निज ग्यान होये। देषै
आपा सोधि॥६९॥ तातैं याकैं चाहीये। गुरसंग
तिको ध्यार्य॥ गुर प्रताप विग्यान होये। छिनै रेश
जी मारि॥७०॥ जबही आये जीवतन मैं। पावै आप
ना रूप॥ तैसें संघ पिछानो पो॥ आपनां रूप सरूप॥७१

तातैं जीव स्रिष्टि मैं कूरै ॥ गुर के मारग नैं जाये ॥ हाथ जोड़ि
उपमा करै ॥ रहै चरन लपटाये ॥ ७२ ॥ सुनैं हाथ न स
हैये ॥ कष्ट मेटि लै जाये ॥ तन मन धन न्यौरपन करै
जो कष्ट गुर हम मैं पाये ॥ ७३ ॥ जो गुर कहै सो मांनि लै
कपट न राषै चित ॥ गुर मैं च्यांन तत पूर है ॥ माया सौं न
सिष मित ॥ ७४ ॥ गुर पुरष कर जांनीये ॥ तिन को दे
ये उपास ॥ गुर को आस पास रहै ॥ मात पांन हो पै मस
७५ ॥ स्रष्टि गुर प्रच्या महा पुरष सोनि मात्रिकी ॥ सं
क्रिया नम त्रिधीर ॥ ऊतै दसा रतन पारस मन ॥ दया सि
धु गंभीर ॥ ७६ ॥ ऐसे गुर संतुष्टी ये ॥ सुष जगपासी
सीष ॥ श्री गुर सजीतौ दिवी जीये ॥ सरूप गयान की
भीष ॥ ७७ ॥ सिष्य लछण ॥ विनती कर कर जोरि कै
मन का कयाह लेतात ॥ गुर दिक्षा मो हिदी जो वये
मद त्रिरह को तात ॥ [illegible] ॥ जब गुर सि
मुष दयाल हाये ॥ प्रथम कह्यो बैराग ॥ हो सिष मा
या मोह तजि ॥ सब ही का कर त्याग ॥ ७९ ॥ या दे
मन है राग जो ॥ अति निरमल सुध मन्या ये ॥ सो गुर त
हि दिटावही ॥ सब त्रिरवै को गोपाप ॥ ८० ॥ या ही
को हूं न्यारथ है ॥ ऐह जानि ले मोछि ॥ संसार थ
प्र लोक सुष ॥ दोन्यौं तजो अभी छि ॥ ८१ ॥ पुहुप
मै लोक सुष ॥ सो ही सिष्या जांनि ॥ संसार थे प्र लो

कमुष ॥ मिथ्या वही पहचांनि ॥ ८१ ॥ त्रिलोक लोक
ने स्या दिखे ॥ सुरनर नाग पताल ॥ ब्रह्मलोक बैकुं
ठ सुष ॥ ऐसे मनजु मनौ छारा ॥ ८२ ॥ इस्या ब्रह्म ने स्यादि
ने ॥ स्नौर चौदह ब्रिहमंड ॥ ऐसब मिथ्या रूप है ॥ इनै
काल का डंड ॥ ८४ ॥ ऐसब मिथ्या रूप है ॥ नाम सत्त मि
त्र पेह ॥ सब नांहीं इकठ है ॥ इन का न जो सनेह ॥ ८५
॥ चौपई ॥ ऐजो दीसै चौदह भवना ॥ इन मैं फिरि फिरि स्र
म्या वना ॥ जो तुम कहै निज निरमल ॥ तौ सब तुम
जानौ निज फांस ॥ ८६ ॥ जो तुम चाहो निज कल्याण
कौ ॥ स्याम सम वषुष जांणा ॥ जब लग इन का
करै न त्याग ॥ तब लग होय न दिढ बैराग ॥ ८७ ॥ बि
न बैराग मुक्ति नहीं जाय ॥ बैराग बिना सब फूठो भाव ॥
बैराग समान नहीं साधन और ॥ जाते निज गति पावै
ठोर ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ जब ही आयै जो जोर तब दिढ
होय बैराग ॥ सुत दारा धन धाम तजि ॥ सब का करि त्रि
त्याग ॥ ८९ ॥ बैराग उपदेस गुर सिष कुं करै ॥ जिग्या
सी हे मन मैं धरै ॥ उपदेस गुरु का सत्य करि जानै ॥ पंच
रूप वस्तु नित्य करि जानै ॥ ९० ॥ जब जिग्यासी गह बैरा
ग ॥ जीवन कारक रै सब त्यागा ॥ या प्रकार तत्पदकूं
जानै ॥ असी पद ब्रिह्म निरंजन जे ॥ ९१ ॥ तत्पद त्वं जे
त्वंपद समावै ॥ तत्प

जग्यासीजैसेकरै। गुरप्रसादसबसागरतिरै।
दोहा। जीवमिटैजबहंसहोये। हंसमिटैब्रह्म
घटआकास जोमिटै। मठआकासमहाकास।
याप्रकारिजीवब्रह्महोये। घटमठकीजोरीति।
दअरथजोबनीया। जोतुमपूछोमीत। ९५
कारजोदमुक्तिहोये। घटमठजोदिष्टंत। तत
दतंपदअरथीये। जैसैलिख्योवेदांत। ९६
ज्ञाना। धरमसरूपवरननकरै। श्रीगुरपरमक्रिपा
ते। जाकैकियेजीवमुक्तिहोये। आवागमनमिटैजंजाल
गुरुस्याधीगी। प्रमधरमयेहजांनि। स
सोचितवनरूपकी। आज्ञाकोहोयेहांनि। जन
ममरणकामनदमिटै। ९७ प्रमधरमयेहजांनि
सतसंतोषअहिंसादया। सबक्रितियेहसमांनि।
च्यारसुनोविस्तारसुं। ९८ अथसतबरनन। दोहा
सत्यसुननामसतापेषना। सत्यहीसबदउचार
सत्यकोचितवनतिरहै। जाकाहिरदामझार
रह्यो। इतीसतहेत्याह। अथसंतोषबरनन। धो
धणाजोआयजुहै। ताहीमेंसंतोषहमेसो अधिक
मंरही। ताधीरजमुंमोक्ष। १०० इतीसंतोष
अहिंसाविध्रजितबरनन। मनकरिघातन
सवाना। तनकरिडंडैनकोये। बांनीबांछन

मांरीये ॥ध्यानमनकाऊ होये॥ १०१॥ इतौ हिंस्या बिञ्जु-
अंत ॥ अथ स्था वरनन ॥ न्हैषे सत्य कछू देरुरा॥ २
वनीदया जीव जांणि ॥ उषैधा की सत्य पालना ॥
अथा मक्तिके छूसन ॥ १०२॥ इतौ दया निरनैं ॥ च्यारि या
वक है धरमको ॥ सबकौ ये हन अधिकार ॥ धरम मल
वरनन कीये ॥ उसमधमे ये हच्यारि ॥ १०३॥ मिथ्यात्वाच
कौन कम मकना अत्र सु ॥ किन काके रेजो त्याग ॥ क
रम अकम प्रिकर मज्ञो ॥ जिन जिन करो विभाग
॥१०४॥ श्री गुरूवाच ॥ मुनौं सिष्य चिन दे कथा ॥ जै मैं क
म प्रकार ॥ जो ईम प्रिति करने कहै ॥ सुरनिस मान
सिम न भार ॥ १०५॥ वरनत्र प्रन प्रिति जो कहै ॥ ये म
ब कमठ चारों ॥ अवस्म मे वसो कीजी ये ॥ जैसे ईव अ
धिकार ॥ १०६॥ अन्न मांनादिक मधता ॥ दांति देव नां
थाहां ॥ मध्यादिक मत्ता कम जो ॥ हरि सेव सुर मिष्टा ट
१०७॥ नित्य नैमित्त जो मरनिके है ॥ जब लग देह अ
मिमांन ॥ तब लग करना कम ये हां ॥ अस्यरपन श्री मृग
होन ॥ १०८॥ सत्य करम निह कांम करि ॥ बीच्या धरे
न कोये ॥ त्रिम मल होये अस्रपन करे ॥ मिभ्यपद प्रापति
होये ॥ १०९॥ इतेकेरम कारवें कहे ॥ जब लग देह अ
भिमांन ॥ अस्य ज्ञासांने बेह्की ॥ करे कम्म निहकांम
११०॥ इतेकम ॥ अंनांपीनामोह नौ ॥

श्रियात्याग ॥ तेहन वैठन संतनां ॥ इन सुं तें मन लाग
॥ १११ ॥ ऐसी रीत के कर्म है सदा सदैव छिन होय ॥ हेत
सु जम न्यारे रहो ॥ ऐ हम्न परदा होय ॥ ११२ ॥ कहनो
सुन नांपै धनो ॥ सो नृप सन का सोन ॥ गंध ग्रहन पढो
चोन नो ॥ प्रति क्षरे क्ष्मिसोन ॥ ११३ ॥ ऐइ दोन के
कर्म है ॥ इन सुं रहो निर्लेप ॥ सुभाव कनन होय जात
है ॥ ऐ हजक हो सछेप ॥ ११४ ॥ इनी प्रकार तो कर्म
सुरति क हेतचारि ॥ विक्रम सुनो क्रमसिम छन ॥ सो
है लोकाचार ॥ ११५ ॥ लोकाचार जो लोक गति ॥ बे
लाचार तक्रिरीन ॥ स्वारथ हित ऐको जोय ॥ वे द
हो ते न विपरीत ॥ ११६ ॥ जदा है मो पसु दंन ॥ उदार
मदपोन ॥ ऐ विक्रम कहा वही ॥ स्वारथ हित जो गा
॥ ११७ ॥ निदा त्रुगलो हर खा ॥ मन पै राइ तात ॥ है ऐ
रोज नन्या परे ॥ सदा मम न संघात ॥ ११८ ॥ काम क्रोध
मद लोभ मोह ॥ ऐहै सिध विक्रम ॥ इन कौ पैसोपाप
रे ॥ छुटि जाये निज धरम ॥ ११९ ॥ [illegible] र न
सुके सेसुक्रि हो ॥ ऐ सन न्यास मजो कर्म ॥ जो गविन
न छुट हो ॥ तेन काये हजो धरम ॥ १२० ॥ के प्रकार के क
म है ॥ कै से इन का मरम ॥ इन का सो हि वेतर के हि
सम क्रि दैय हमरम ॥ १२१ ॥ कर्म सकल सुगन त्यो
हे सगवन उसेम ॥ गीता मे जो प्रस्न कहे ॥ सूरतु न प्र

त्यउपदेस॥२३॥साषी॥ आतमस्य मेवस्तुगतभया॥ कि
नक मेसुमन्छुडमजो॥ इनमेंमुक्तिहोएकया॥ जि
मेहैसेमेकह्यौ॥ श्रीगुरुकबीरजी॥२४॥दोहा॥ त्रनोप्र
करमकेभागनि॥ जैसेदेहबषानि॥ संचितऔरप्रा
रब्धिकह्यौ॥ क्रियामानतीजोजानि॥२५॥ चौपई॥ ति
प्रकारिविषईनकीरीत॥ सोउतमउनौंचितदैमीत।
प्रथमसंचितसुंछिहोतात॥ पूरबजनमकेरेकरम
ज्ञाय॥२६॥ जोसेरहेहैमेंज्ञनलेधरै॥ बहौतकालनक
संग्रहकरै॥ राषतरामतनमाउरीना॥ बैचनलाग
नांहिबिकांना॥२७॥ तैसेंधीनीमनमांहिबिचारा॥ ता
छुनसेसन्यायेकनिकारा॥ जबपेहसनकरिरैहेऊ
हारा॥ तबफिरिलावनलेऔरनिकारा॥२८॥ दोहा॥
जोजोछुनपाछैरहै॥ सोसोसंचितजांनि॥ जोजोताउ
सोगहै॥ सोप्रारब्धप्रवांन॥२९॥ प्रारब्धकेसुं
कह्यौ॥ आलबधिसोहीजांनि॥ क्रियामांनतासुंक
ह्यौ॥ जोसुबकरैबीषांन॥३०॥ प्रारब्धकरमसोभो
गहै॥ जबलगरहैसरीर॥ संचितऔरक्रियामांनस
ज्ञानीमुकताबीर॥३१॥ जबलगभोगसरीरका तब
लगभोगैभोग॥ भोगरहैजबसबपरिरै॥ हैप्रतिछ्योग
हैबालबोगमिटैतबमरजारै॥ त्यहींगतिबैपजांनि
॥३२॥ छ्योगमिटैजबमरजारै॥ त्यंजा.

मुक्ति ज्ञानी कहै ॥ नहै संसार तिनेहा ॥ चिरज
सोरठा ॥ नष्ट पूरब लक्ष सबै ॥ दोहा ॥ ऐक संकाम ई
हि ॥ संसजकहो गुरज्ञान ॥ ऐह ज्ञानी मुक्त होय ॥ सचि
और क्रियावान सो ॥ १३५ ॥ दोहा ॥ सो कैसे करि मुक्ति
और रहै होवता ये ॥ प्रोक्ष प्रारब्ध सामही ॥ कैसे मु
क्ति कहाय ॥ १३६ ॥ श्री गुरुवाच ॥ बहोत घाम को जो दि
सि ॥ ज्यो धरी पुन घर माहि ॥ और चक्र पावक ताते सं
कल घाम जरि जांहि ॥ १३७ ॥ त्यों हो ज्ञान प्रकाम ते ॥ सच
क तसब जरि जाय ॥ क्रियावान स्यू मुक्ति ॥ सहि चिनकी
जताहि ॥ १३८ ॥ सहै भारि कछू को जीय ॥ सो सूक्ष्म संभ्रात
व्य ज्ञानी तीनों होसदी ॥ ज्यों ठोर रहे सिहत्य ॥ १३९ ॥
जीवन मुक्ति ज्ञानी कह्या ॥ जाके ज्ञान प्रकाम ॥ ब्रह्म
ज्ञान प्रकाम ते ॥ जीवन मुक्ति बिलास ॥ १४० ॥ प्रारब्ध
के सम सब भोगवै ॥ ज्ञानी ताते मुक्ति ॥ जानै सो ग सरीर
का ॥ कैरे बैवेक कोउ गति ॥ १४१ ॥ चोपई ॥ संचित औरु
प्रारब्ध हि जा हि ॥ ऐसो मुक्ति सो ज्ञानी कहा हि ॥ सचि
त जारि ज्ञान प्रकाम ॥ जैसे जरे सुरंम्नो घाम ॥ १४२ ॥ प्रा
रब्ध कै सम सो भोग सरीर ॥ तासुं रहे जन्या रां धीर ॥
क्रियावान सो धरै न धरता ॥ तासुं मुक्ति कह्या सुधि वंत ॥
१४३ ॥ उदासीन होय करणी करै ॥ ज्यों पद सुहं गन ताधे ध
रै ॥ अपना कारज निबरते साय ॥ ठेसे को तिक साघी होय ॥
१४४ ॥ दोहा ॥ ज्ञानी सहै ते मुक्ति है ॥ ताम्रं समेना हि ॥

ग्यान बिग्यान प्रकासते ॥ औरु बेबेक बल साधि ॥१४५
भुषि बुबेके बल जोर सों ग्यानीर है न्रसंग ॥ सावधांन है ॥
ये मित संगें करि बैराग अभंग ॥१४६ दोहा बैराग षड्ग
मारे मद ॥ ज्ञानी ग्यान प्रकास ॥ सावधान होये बचि
रहै ॥ फंद नसायाकारि ॥१४७ इती ग्यान कसयबिपा
कसपूरण ॥ शिषउवाच ॥ अमेष जोग के अरथ कों
कैन हिजां लीनो ॥ सो कों बरन सुनाइये ॥ जो कछु रे
न को रीत ॥१४८ ॥ श्री गुरुवाच ॥ बिग्य नांम है दोय वें ॥
मानै कैरे जये का भुगमतु गन जो येक है ॥ सो ही जो
ग बिमेष ॥१४९ सोरठा ॥ ग्यान अरु प्यान दोउ येक है ॥ मन बुधि
येक है जाये ॥ रबि मिसि दोनों संग चले ॥ धर है हिगिगग
न येक जाये ॥१५० ॥ आतम प्रमातम मिलै उर तिनि
ति येक होये ॥ जो गन्र रथये जानीये ॥ तो मिलिये के
होये ॥१५१ बबेक अरथ बिचार है ॥ बिन बिचार नर
अंध ॥ जीव का धरम बबेक है ॥ जामें मुक्ति निरबंध ॥१५२
तीजा ने उबबेक है ॥ सो अबादरि मास ॥ बिन बबेका जे ॥
कछु करै ॥ सो ही बंधन फास ॥१५३ ॥ जो कछु करै बि
चार करि ॥ सो सुषरूप न धांनि ॥ बबेक सहाये कजी
व का ॥ ता में परचेन हानि ॥१५४ ॥ राज कियो जन का
दिकों ॥ करि बबेक बिचार ॥ बिन बिचार जग हून
ही ॥ आये नरक मंझार ॥१५५ ॥ इती बिमेष जोग स्थि

साधनजोग स्यामके। औरहै हे

बताये। जिनकेकोपरमुक्ति है। जोगजुगतिकोपा

जोगसाधनसिध्यवन

रे। साधजोगकेत्र्यंग। सोत्रखवरननकारन

नोसाधप्रसंग। १५७। आसनप्रानवरोकम प्र

त्याहारजमनेम। आसनध्यानसमाधिगति

जुसाधनषेत। १५७। करमजोगयेकहतहे

तानलमतमाहि। समाधीननिजरूपके सुषम

घिदरसाय। १५८। दो। समदमतनईआउप

नदसाधनच्यारि। अथमगतिश्रराधना ज

नाहिचार। १५९। माँषिजोगयेकहतहे। न

मुक्तिहोये। क्रमजोगतेकठिनके। ऐहत्रष

ऐ। १६०। सो। औरप्रमकिआल। ऐहत्र

ननकरो। मिन्यमिन्यत्रस्थाये। जथाकथाक

वकहो। १६१। मुनिशिषईनके

थकौ। सबहीनप्रितिलगाये। जिनके

होये। ततप्रमात्मपाय। १६२। पहलैसम

थमुनि। त्र्यंतहकरगाहेच्यारि। ईनकीत्र

सकरै। मनवुधिचितत्रहंकार। १६३।

दवनकरैदमईद्रीयां। क्रमारगजोतन

त्रषरषपेहीकह्यो। दसत्रसिकारिलेये।

॥ तनकोइच्छ्यानितिरहै॥ ततइच्छा कहीये
इच्छाहितकोरजो॥ चाहतनउपसैकोये॥
इच्छा॥ कामुक्तिरोयजो उपजही॥ ताकोफिरि
उचनमोक्षि हो जैसदृगयहउतमपमनिजमाछि
॥ उपमा॥ हेदेवचनकोरगरवचन॥ माह
॥ सावधीतिसंसिनिलै॥ अथायेहपहचोषि
॥ अथा॥ मरवणामजनविद्याजस्मा॥
॥ ता॥ मतमगतिगरकोदहता॥ नव
॥ याइतीनकथा॥ पटनपतंवनहविक
हरिध्यान॥ तमरमगदोदवचन
इती मुक्ति॥ पाचके प्रपंच यो॥
छिप्रइहिसेजोमया॥ पाछि
करनजाकागटमया॥ कारन
रूपनकामसे॥
विचारपेहा हितना
नेतहामलनविद्याहो
रा॥ आत्मविचार
तनजननामीसा
तनपदन्नात्मा॥
दीपवन॥
ध्यना॥ सुपप

कह्यौ ॥ गुनि सिष चतुर सुजान ॥ १७७ ॥
सुषमा सांषि जोग ॥ कपल चुन चतुवांन
वाणी चारि जो कोन है ॥ औगुर देहे
वताय ॥ मध्य कहा तै उपजै ॥ फिरि कहां जाय समा
य ॥ १७८ ॥ परा पसंती मध्यमा वैषरी
वाणी च्यारि ॥ तिनका अर्थ ... करौ ॥ भिन भिन
प्रकार ॥ १७९ ॥ परा पसी है नाभि मे ॥ पार ब्रह्म है चां
न ॥ उछ्म सबद तातै उठै ॥ ... पसंग प्रान ॥ १८०
पसंती ... नहीं रही ॥ बास हिरदै कु स्थान ॥ जो पिजं
ने जोग पत है ॥ नर सम से को हानि ॥ १८१ ॥ मध्यमा र
हती कंठ मे ॥ करती सब्द विचार ॥ पसंती जो कछु उप
ना ॥ सो ही लेती सुधारि ॥ १८२ ॥ वैषरी वास वाकी है
बाहरि सब प्रकास ॥ जे तौ वांणी जगत मे ॥ वैषरी की
रैनि वास ॥ ॥ वर्ण कछु टत
कहा रंच कना गे न्याग ॥ कोउ मो गाली चबै ॥ छ
सो हे यु न्याय ॥ १८३ ॥ यू उनि उपजै नाभि तै ॥ पवन
सबद जो आदि ॥ हिरदै कंठ मो हो पै के ॥ मुष सो क
न्याय ॥ १८४ ॥ वांणी वेद जो सास्त्र को ॥ और जब वा
णी होय ॥ न्याय मे बांणी न्याहि के ॥ वैषरी प्रगटै सो
१८४ ॥ मधि मांहि है सो उपजे ॥ वैषरी करै प्रकास ॥
रथ ग्यान सब वैषरी ॥ जा मे सब्द निवास ॥ १८५ ॥

रौ॥सोरठा॥ब्रह्मज्ञानबैराग॥माहीप्यारि
करी॥निन्यनिन्यकियोविसाऽ॥ब्रह्ममाय
सोरठा॥जज्ञासीप्रतिबोध॥प्रश्नतेसर्व
ग॥आत्मनिरनैमोष॥जथाकथाकरितुरे
उत्तजा॥श्रीगुरुकरैबषांन चारिमहा
नहै॥हमकोंनांहीग्यांन॥क्रियामिधिक्रब
॥१८८॥श्रीगुरुवाच॥दोहा॥कहूंमिषमुनिस्
ष्यै॥चारिकरूंबषांन॥जाग्रतस्वपनसुष
पतीतुरीयाजांनि॥१८९॥पांचतनतेन्या
रोइक्रिनपचीस॥जामैसवजाग्रतरहै
ताकोईस॥१९०॥जाग्रतचामाचक्रसोंस्य
हांलसकार॥नृसमानीराजसनहै॥मो
ष्यलगपार॥१९१॥जाग्रतमैंजोक्रिनकौ
।सोसुपनेंहींरूपधरि॥बोधैबो
॥१९२॥इतीजाग्रतविसन्नावस्था॥सत्वःत
वामाकैन[illegible]षार॥सइंजस्य
।सुक्षिरनहांतेरूकार॥१
रुमोगनेहांसोगीया॥उधाद्रिकसब
।तुरीयासुनोसुषप

कह्यौ ॥ मुनि सिष चेत सु जान ॥१७५॥ ईती श्रासरम्
छिलास ॥ अष्टांग साधि जोग ॥ कपल बचन उदान
भिषु माल ॥ बाणी च्यारि जो कोन है ॥ श्री गुरदेवे
बताये ॥ सबद कहां तै पडै ॥ फिरि कहां आये सम
ये ॥१७६॥ श्रीगुरवाच ॥ परा पसंती मधिमा बैषडी
बाणी च्यारि ॥ तिन का अर्थ बरनन करै ॥ भिन्य भिन्य
प्रकारि ॥१७७॥ परा पिंड है नाभि मै ॥ पार ब्रह्म है तां
न ॥ शुध्य सबद तानै कहै ॥ सोम बाये संग प्रान ॥१७८॥
पसंती प्र... नहीं रहै ॥ बासा हिरदै स्थान ॥ जो विज्ञ
न जोगपत है ॥ सरस समै कीं हानि ॥१७९॥ मधिमा र
हती कंठ मैं ॥ करती सदा बिचार ॥ पसंती जो कछु उप
ना ॥ सो ही लेती सुधारि ॥१८०॥ बैषडी बासा बाकी है
बाहरि सहै प्रकास ॥ जे ती बाणी जगत मैं ॥ बैषडी बा
है निवास ॥१८१॥ अथ जीव चिदात ॥ अर कछुट तज्य
कला रंच कला गेआगि ॥ कौ जैसो गो जी नहे ॥ सुष
सो हो ये ऐ ध्यास ॥१८२॥ पुंथ्न नित पडै ना मिटै ॥ पहलू
सबद जो आदि ॥ हिरदै कंठ सो हो परकै ॥ मुष मो करै
अवाज ॥१८३॥ बाणी बेद जो साम्र को ॥ और जग बा
णी होये ॥ आत्मा सो बाणी आदि है ॥ बैषडी प्रगटे सो ये
॥१८४॥ मधिमा हिरदै मोठ पडै ॥ बैषडी करै प्रकास ॥ श्री
रथ ज्ञान सबद बैषडी ॥ जामें सबद निवास ॥१८५॥ इति

॥इतीवांणी॥सोरठा॥ब्रह्मजांनैब्रह्म
उरनमकरौ॥भिन्नभिन्नकियांबिना
केसरथकौ॥सोरठा॥जड़मांमेंमतिकी:
प्रदेसका॥आत्मनिरंतैसाधि... १८
९०मिथ्उंलाचा॥श्रीगुरुकौंवचमांन
स्याकौंनहीं॥इनकौंनांदांज्ञान॥
सबहै॥१८०॥श्रीगुरुवाच॥दोहा॥
इस्मातुजे॥ आकिकरंवधान
पतो॥चौथांब्रगयाजांनि:
दिल॥स्यारब्रकिंनपचांम
ब्रुसातांकोइंम॥१९॥०॥
छिरजदांनखार॥...
गअस्थलनपार॥१९॥ ज्ञा...
नांनाकमनअपार॥सांग्ठ...
अपार॥२॥ [illegible]
वनो॥ ... नथ ॥वांनी
किमिनां छिमनननदां [illegible]
[illegible] मनतेनोमनेनानामांग [illegible]
नन [illegible]
[illegible]
[illegible]

कहै ॥ गुनि सिष चतुर सुजांन ॥ १७५ ॥ इति श्री ज्ञा
[illegible] सुषमांहि जोग ॥ कपल देव [illegible]
श्री गुरु सिष्य ॥ बांणी च्यारि जो कौन है ॥ श्री गुरदेव
बताये ॥ सबद कहां तैं उपजै ॥ फिरि कहां समाये ॥ म
ये ॥ १७६ ॥ श्री गुर उवाच ॥ परा पसंती मधिमा ॥ बैषरी
बांणी च्यारि ॥ तिनका न्यारे अर्थ बरनन करे ॥ भिन्न भिन्न
प्रकारि ॥ १७७ ॥ परा प्रांनी है नाभि मैं ॥ पार ब्रह्म है सां
न ॥ उठ्यं सबद तहां तैं ठैठे ॥ स्वास मग पै संग भांन ॥ १७८
पसंती प्र[illegible] नहीं रहै ॥ बामा हिरदै स्थांन ॥ जो पिं
मै जो गुपत है ॥ मरम सम मैं कोहांनि ॥ १७९ ॥ मधिमां र
हती कंठ मैं ॥ करती सदा बिचार ॥ पसंती जो कछु तेप
ना ॥ मो हो लेती सुधारि ॥ १८० ॥ बैषरी बामा बाक दे
रहरि सहु प्रकास ॥ जेती बांणी जगत मैं ॥ बैषरी के
निवास ॥ १८१ ॥ [illegible] ॥ बर कछु टत जु
कहा रंच कलागे न्यारि ॥ कोठ मैं गोलो चलै ॥ छछ
होये न्यूं स्यास ॥ १८२ ॥ ये धुनि उपजै नाभि तैं ॥ पहल
बढ जो आहि ॥ हिरदै कंठ मो होय कै ॥ मुष मो करै
प्रकास ॥ १८३ ॥ बांणी बैद जो मानुष की ॥ और जबा
होये ॥ न्यूं ग्यांनी बांणी न्याहि तै ॥ बैषरी प्रगटै सो ये
ध मधि मांहि तैं सो उपजै ॥ बैषरी कै रै प्रकास ॥
र ग्यांन सब बैषरी ॥ जा मैं सबद निवास ॥ १८४ ॥ इति

॥इती दोहा॥सोरठा॥ उहै ज्ञान वैराग॥ भली भांति
बरनन करी॥ भिन्न भिन्न कियो विभाग॥ उहै माया
के अरथ को॥सोरठा॥ जज्ञासी प्रतिबोध॥ प्रश्न उत्तर
प्रदेस का॥ आत्म निरने सोध॥ जथा कथा करि तत्त्व रे
१८७॥ सिष उतरा थ॥ श्री गुरु कहे बषांन. चारि अव
स्था को नहै॥ हम को नाही ज्ञान॥ क्रिपा सिष कहु
सब है॥१८८॥श्रीगुरुवाच॥दोहा॥ कहुं सिष सुनि अ
वस्था तुमे॥ चारि करूं बषांन॥ जाग्रत सुपन सुषु
पती॥ चोथी तुरीया जांनि॥१८९॥ पांच तत्त लै या
दिये॥ और दस इन्द्रिय पचीस. जामे सब जाग्रत रहै
जुगला ता कोई स॥१९०॥ जाग्रत थान मध्य छै से स्थ
छिर जहां अकार॥ ज्ञान सोनो राज मन है॥ भो
ग नाम स्थूल जगपार॥१९१॥ जाग्रत मे जो किन को
नाना क्रम अपार॥ सो सुपन नहि सूष मरि॥ बांधे बो
धन पार॥१९२॥ इती जाग्रत अवस्था वर्णन॥ मन त
न का जहां चुमिया॥ वासा कंठ विचार॥ सईजन्म
भिमानी हि मन नहां॥ स्थिर नहां उकार॥१
९३॥ मन वैसो गत नहां सोगोया॥ उभारि कमब
तत॥ सपनां अवस्था ये कही॥ तुरीया सुनो सुष पु
ति॥१९४॥ सहा घोर जनम नहां॥ स्मृत के कब्रन सो रात
म॥ जाग्रत स्वप्नेता ए कमाया को भोर॥१९५॥ अ

कहै।। मुनि सिष चत्रभुज जान।।१७५।। [illegible]
[illegible] अर्थ मांहि जोग।। कवल चक्र उनमान
[illegible]।। बाणी च्यारि जो कौन है।। श्रीगुर देहो
बताय।। सबद कहां तें ऊपजै।। फिर कहां जाय सम
ाय।।१७६।। श्री गुरु [illegible]।। परा पसंती मध्यमा।। बैषरी
बाणी च्यारि।। तिनका अर्थ वरनन करै।। भिन्न भिन्न
प्रकार।।१७७।। परा प्राणी है नाभि मैं।। पार ब्रह्म है स्था
न।। प्रथम सबद तहां तें ऊठै।। स्वास मग पे मग्न ध्यान।।१७८
पसंती पू[illegible] नहीं रहै।। बाणी हिरदै स्थान।। जो पिंड
न जोग पेत है।। अरथ सम मै कोई हानि।।१७९।। मध्यमा र
हती कंठ मैं।। करती सदा विचार।। पसंती जो कछु उप
नां।। सो कहै लेती सुधारि।।१८०।। बैषरी बाणी बाक है
बाहरि सबद प्रकास।। जेती बाणी जगत मैं।। बैषरी के
है निवास।।१८१।। [illegible]।। अरध कछू दरज
कला रंच कला गै त्यागि।। कोई सो जा जो चलै।। छष
सो होय न्याय।।१८२।। गूंधनि तपजै नासिलै।। पहल
सबद जो आदि।। हिरदै कंठ सो होय के।। मुष सो करै
न्याव।।१८३।। बाणी बैद जो सास्त्र की।। और जब
णी होय।। न्यारा जो बाणी आदि लै।। बैषरी प्रगटे सो य
१८४।। मध्यमा हिरदै सो तपजै।। बैषरी करै प्रकास।। त्या
रथ स्थान सब बैषरी।। जा मैं सबद निवास।।१८५।। [illegible]

॥इतीबांणी॥सोरठा॥ब्रह्मज्ञांनबैराग॥भगतीच्यारि
प्रकारनकरौ॥नित्यनित्यकियोबिचार॥ब्रह्मभाग्य
केनरषसकौं॥सोरठा॥जज्ञासीप्रतिबोध॥ब्रह्मतेंनरते
प्रदेसका॥स्वात्मनिरनैसोध॥जथाकथाकरितेवरे
१८७सिषउवाच॥श्रीगुरुकरोबषांन च्यारिप्रकार
स्याकौंनहै॥हमकौंनांहीग्यान॥क्रियासिधिम्रब
सबहै॥१८८॥श्रीगुरुवाच॥दोहा॥कहूंसिषसुनिस्व
वस्थाउभै॥च्यारिकरूंबषांन॥जाग्रतस्वपनसुषो
पती॥चौथोतुरीयाजांनि॥१८९॥पांचज्ञानतेंन्द्रा
हिले॥च्यारिप्रकिनपचीस जामैंसबजाग्रतरहै
मुख्यातौकोईस॥१९०॥जाग्रतकामाचहौमैं॥स्र
ष्टिरजहांनसकार॥स्रमसांनीराजसमनहो॥मो
गम्रस्थलनम्रपार॥१९१॥जाग्रतमेंजोक्रिनकौ
नानाक्रमनम्रपार॥सोसुपनेंहेस्रूपधरि॥बांधेबं
धनम्रपार॥१९२॥इतीजाग्रतअवस्था॥अथस्वःप
नकाअहांचमिया॥वासाकेचनम्रबार॥सइजम्र
भिमानीहिमननहा॥स्रष्टिरनहांउहकार॥१
९३॥मनवैमोगसहामोगीया॥उधाहिकमब
नन॥सपनांम्रवस्थायेकही॥तुरीयासुमोसुषप
ति॥१९४॥समहाघोरजनस्नानहां॥स्रष्टैकचनमोरात
म॥ग्यारहसोदेवनासमायाकोमोर॥१९५॥म्र

[illegible] । मोहिचारकेसुरथ
मैसमहाहिवार । चक्कोसपदेसानका । कौ
हुसबकौ नमोरि । ३३५ मैकोकहनाइकह
धकैनेगुनम । कोसदेसहकोरहदरनमोल
न । ३३६ [illegible] । मोहिदेसब । इसलापिसत
मानतारहिनाएवंसिरचरचेहै । ३४६ । रिद्धि
नहिमाप । सेवन । सिधीमथैसो ३४० । पंचा
वीमसिम्राय । सबनबकाहिसहैं हिया । सिन
कोलोवचाय । वसोनवहनमासमा । ३३८ । हि
[illegible] । ससवाहिसकोसुचरच्छह । सदाभसे
हैसोम । समरजुकुसबसेनामहों । इराधकोपहला
न ३३९ सवचाहिसैहिनरहे । सबकाहिकरु
हिसाहे । सोहिरहिरहेहिचारवे । सुकैसमावैम
माप । ३४० सासिहहेहेसमाकिया । सहकाहि
उसरोन । उनोसासनामनपैमोसिखा । सामैसदउ
नीति ३४३ [illegible] । सबाह हि । सुमेसहितिनोमिलमे
कौहि हेस्रीमोहिकहरह । सोकोइसुससैडारहो । मोर्ड
सुपावहुकिनेहु । ३४२ सोवेवेवेनमापही । [illegible]
[illegible] । रहसपासहिलयनहो । सोनैहसेमाको
३४३ [illegible] । पहारपसाहुनीजा
कौहि । सदासहरकोमाद । सकारदेपसहलाम

वत ॥ ज्यों सोरंक न राव ॥२४३॥ पंच सूत आतम की सृ
ष्टि । त्रिगुण लहम जो देह ॥ निज सरूप छिन नो सम व
रानि निज प्रगटै यह ॥२४४॥ डरी सामी मिका तास क
स्रनै न धुनि प्रकाश ॥ सब ब्रह्म सो ब्रह्म है ॥ चेतन
तत सह जो नाद का मानै ॥ प्रत्यक्ष ज्ञान सो मिका वसिष्ट
मनै सुनै ता मै मन दीजै ॥२४६॥ गरबै वछ ना मोहि पु
रष हम रे प्रस्फूर्ति हो य सम प्रकाश जै मै कहीं गै सम
नै ॥२४७॥ श्री मुख कहै ॥ सुध सम कल अवलक रो ॥ सक
ल करू हि ध्यान ॥ प्रहस्त इनकौ सम सु लि ॥ पीछे अ
थन ध्यान ॥२४८॥ दोहा ॥ षेचरी भूचरी चाचरी अ
चरी उनमनी पांच ॥ महामुद्रा सहै वैक स्रा ॥ पाना ज
तम तसांच ॥२४९॥ प्रथम षेचरी को सुनि अ
वियांन मिध्यांन मै होय सम रथ ॥ वेदना क्षुधा रको उ
तीत ॥ लपनी अनमो मांते मीत ॥२५०॥ गुर प्रतीत
सुनि स्कै करै ॥ फिर मन सम सैको इनहि धरै ॥ ज्ञान स
षक डिट नग है ॥ ग्यान जिन करि पाये मल द
है ॥ २५१ ॥ चेतन ब्रह्म न ब्रह्म ये उलास ॥ जोगी नि स
करै अभ्यास ॥ ग्यान जोग कोई जो गाड है ॥ ता मै स
मेल मन रहै ॥ २५२ ॥ दोहा ॥ षेचरी मुद्रा मुष सो वि
छडी करै अभ्यास ॥ जोगी अनमन समौ लीया ॥ छेच
री करै निवास ॥ २५३ ॥ भूचरी ॥ भूचरी नासा मैं रहै

नकांनांवउमि॥ पीछेअरथबतांमि॥४५॥सत्यचि
दानंदरूपहै ताकोअजअक्रियअचलअनंतनामु
धब्रह्मकूटस्थहै॥ आत्मसदाएकहोत॥४६॥आय
लिलिरह्यो॥सतिनांवजीनेकह्यौ॥आपनेसत्य
आधार॥सतिसतिसुलोकसब॥ताठौरसतिमेंज
र॥४७॥चेतन्यनांवजानेकह्यौ॥सुयंमेंचेतन्य
जमहिकचेतनकीयो॥जातेचेतनमन्यो॥४८॥आ
नंदनांवजानेकह्यौ॥जोहैनिजआनंद॥ताकेआ
नंदलेसस्यौ॥जपेत्रिलोकप्रबंध॥४९॥अद्वैतनांवजा
तेकह्यो॥जामेंदुजानांहि॥आपआपमेंआपहै
जुंजलबोलामांहि॥५०॥अजनांवजातेकह्यौज
न्ममरणसुंहीन॥अजअविनासीजावेता॥आप
आपमेंलीन॥५१॥अक्रियनांवजातेकह्यौ॥ता
मेंक्रियानांहि॥करणाकरणवृत्तिरहत॥क्रिया
दिकजिमनांहि॥५२॥अचलनांवजातेकह्यौ॥
सदाअचितअटल॥चलकांमसंसोपाकह्यौ॥आतम
हैनिहचल॥५३॥अनंतनांवजातेकह्यौ॥आप
रमेवप्रमांन॥सुरनरमुनीलैयादिक॥नेतिनेतव
खांनि॥५४॥प्रबुद्धनांवजातेकह्यौ॥ऐसेंकह्यौजो
मांन॥सुयंप्रकाससप्रकासहै॥व्यापकअवरसब्यां
न॥५५॥कूटस्थरूपकोसाकह्यौ॥जैसेंअ...

ये ॥ जगत कारन नौन समझा ॥ यहै देवहै नहीं कोय ॥ ५६ ॥
आत्मा नाम जाने कह्यो ॥ आप आप में आप ॥ जैसे
मेले सानया ॥ है साहीर ह्यो व्यापि ॥ ५७ ॥ छुटे तन नाव जा
ने कह्यो ॥ कारिक [illegible] न होय ॥ आप आप ते उपजी
या ॥ कह्या कह्या नहीं कोय ॥ ५८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ऐसा जो परमात्मा ॥ पारब्रह्म चिद्रूप ॥ सब क
साखी जानत ॥ सो [illegible] पने राजरूप ॥ ५९ ॥ [illegible] राज
लपन जन्म मिति ॥ देह धरम परहजा नि ॥ [illegible] मे
ह्या गहत है ॥ छुध्या द्विषा जान ॥ ६० ॥ सकल पविक
लपपापउन ॥ रागदोष हरष सोग ॥ ये सब मन के
धरम है ॥ त्रिनि रहै रजोगेग ॥ ६१ ॥ साम आप मानते
ह्यादि ते ॥ और कुमन्य पुत्र जो कर्म ॥ इनमें ते रान
हीकछु ॥ ये सब मन के धरम ॥ ६२ ॥ मन को ज्ञाछ
कुछिहै ॥ तिन का मन ढ जीर ॥ जा सं सब संचे करै
सो तौ मन है गार ॥ ६३ ॥ निश्चै कारज जो करै ॥ बु
द्धि है सोय ॥ सो जीत बुधि नाकह्या ॥ बुधि ह्रि
मैं होय ॥ ६४ ॥ मूली ज्ञान चिंतापदे ॥ चित्त के
है सोय ॥ सो जीते चित्त नां कह्या ॥ चित्त चिंता में है
ये ॥ ६५ ॥ [illegible] धरम जिस का कह्या ॥ जो है [illegible] तिन
हंकार ॥ [illegible] चित्त चित्त वतन परे ॥ [illegible] हंकार
है ॥ ६६ ॥ ते [illegible] चित्त चिद्रूप है ॥ सदा नित्य निरधार है
न

मेहमातेरी क्या कह्यो॥ तू गंभीर नहि आहो॥ ६७॥ सो
न्हकरण चतुष्टै॥ इनको सकल उपाधि॥ ये अरु
माया तत्व हे॥ चेतन उद्योत सो॥ गाथा॥ ६८॥ ये जो मापु
ईश्वोया॥ मिथ्या सकल ल सार॥ इनका नमसको सद
सब कुं जांनन हार॥ ६९॥ सुन्या चित ल्यामन दरूपत्या प
राते परे लूनूप॥ ये मैंनां सब जरु मइं श्चेतन नमिन्धि
रूप॥ ७०॥ बंधन नौ कैं ऐसी हे॥ फिरि फिरि माने दे
ह॥ देह पेह होये जापुणी॥ तेरा रूप न रेह॥ तेरा रू
प अज्ञांन हे॥ मुक्ति रूप निरबंध॥ बधि मुक्ति ते ब
हिरा॥ सतचित आनंद मुकंद॥ ७१॥ सब उपाधि
तें रहित तूं॥ वाको सब को जोपे मन बच परे सो त
नमां सुं॥ थिर स्वरूप तू होय॥ ७३॥ सुप्रस्थ मत्तरीप
रही॥ सुपुप्त का सप्त का प्त॥ तू निरबाकिल सुथित
सदा॥ सुख निधान सुखरासि॥ ७४॥ निरमोह निरलो
भ रे॥ निरविकलप निज ज्ञांन॥ नारायण॥ निरबे
रतू॥ निरबांण निरधांन॥ ७५॥ निरउपंच निर्द्व
का मतूं॥ निरविकार निरक्षार॥ निस्य निरंजन
निरगुण॥ निरमैल निरभार॥ ७६॥ निरमाछक
नही क्रोध तू॥ निरहंकार निरमांन॥ हे केवल
नि कलमत॥ निज स्वरूप निजथांन॥ ७७॥ निज
रम कौं निज मैं धतू॥ नै तसां पूरुनां पूरन करबा

रिमजनन्हिन॥केछुनन्याहैहाथ॥१३॥कं
रमंगीदोपजनां॥पेकोहेमनपेकेरांम॥छेदा
मुक्तिका॥५॥हैमुमराहैरांम॥१४॥कबीरबनब
केस्या॥कारननपानेरांम॥रांममरीषाजन
ले॥तिनमारेसबकांम॥१५॥कबीरसोदिननि
नो॥जादिनसतमिलाय॥सुकनरेगरितेहिय
पापमरीरांमजाय॥१६॥कबीररांमरांमरहिबोब
निसदिनसाधनसग॥कहीजोकोनविचारतेत
तोनेदेलोसतरंग॥१७॥मनदीयाकहूंओरही॥तन
साधकेसग॥कहेकबीरकोरीगजीकैसेलागे
रंग॥१८॥कबीरसाषिसबदबडसुन्या॥सिद्ध
नमनकादाग॥सगतिमेसुधस्यानहीं॥ताकाब
गयभागा॥१९॥कबीरसगतिसाधकी॥जोकारजां
तेकोय॥चंदनतेबनचंदनसया॥बांसमनचंदनस
होय॥२०॥कबीरचंदनकेबिरे॥बेध्याकापल
स॥आपसरीषाकरिलिये॥जोहोतेउनपासि॥२१
कबीरमलीयागरकोबासमें॥बिछरहेसबकोय
कोहेगुननेदनगारे॥पेमलीयागरनहीकोय॥२२
कबीरमलीयागरकोबासमें॥बेध्याढाकपलास॥
मनकेबंधबेधीया॥औरहैजुगेजुगपास॥२३॥कबी
बीरमलीयागरकेपेसा॥सरपरहैलपटाय॥संग
हेमबिखनीनीया॥सुरनकेहांसमाय॥२४॥कबी
रचंदनजैसेसंतहै॥सरपजीसासमार॥ताकैते
लपट्यारहे॥आगेनहीबिकार॥२५॥कबीरचं
सहिरपेहेसनमें॥मतिरषिगारेषमा॥सुगर
रपेनिगुरसों॥दुजगमेरपेदाम॥२६॥कबीर
रोकीनायाभयरो॥आवमनक्रिमेसाय

पलटी [illegible] मन का [illegible] कान [illegible] ॥२७॥ कबीर जा
पलटदर मन साध का। तापल कोव जिहारि॥ रांम का
वरम नाव से॥ नी जे जन्म गुमा रि॥२८॥ कबीर ते दिन
गये अकारथी॥ संगति भई न संत॥ प्रेम बिनां पसु
जीवनां॥ भक्ति बिनां भगवंत॥२९॥ कबीर जा घर मे
क्ति नही॥ संत नही सिक मांना॥ ते घरि जम डेरा दी
या॥ जीवत भये मसांन॥३०॥ कबीर पिछमि साछ मारग
नही॥ हरि ते भये सांग पूहो॥ तिन पूतदर मन साध का
कहै कबीर मो हित कौ॥३१॥ कबीर मेरा मन हंसा रमे
हंसा गगनि रहाय॥ भुगला मन मांने नही॥ फिरि गुगन
फिरि जाय॥३२॥ कबीर ता सों संग करि॥ जो रमे जे हेरा
[illegible]रा जा रांमां सुरपा नी॥ रांम बिनां बेकाम॥३३॥ कबी
र रांम भुलावा नेजिया॥ दीया कबीरै रोय॥ जो सुखमाध
संग मे सो बैकुंठ न होय॥३४॥ कबीर था ईकोट का। पं
डीपी वेन कोय॥ जायपरे जब गंगमे॥ सब गंगोदिक हो
य॥३५॥ कबीर मन पंछी भया॥ मन मांने तहां जाय॥ जो
जैसी संगति करै॥ सो तैसा फल खाय॥३६॥ [illegible]॥
॥साषी॥१६५॥ अथ साध कौ अंग॥ कबीर जे नामी
गा बोलना॥ तेता साधन जांनि॥ पहली थाह दिखाय के
[illegible] बैठे दसी जानि॥१॥ कबीर कं जल देखि न धीजिये॥ ज्
गा सां मांझै ध्यांन॥ धोरे बैठि चये टिमी॥ यूं ढेंढे अग्यांन
॥२॥ कबीर अेष अग्ती न का॥ करहति रेख पराधी माह
रि दीसे साध गति॥ मांही बडा असाध॥३॥ कबीर बा
बी कहै साधू रे॥ मरपन मासु था जाय॥ मूरख बैठ ईना
करे॥ मरपज्यां न कौं खाय॥४॥ कबीर सो मन हरदका
टपके कोया बिनांम हथफाडि काजी मया॥ [illegible]
न का नाम॥५॥ कबीर रैनि [illegible]
[illegible]

...ज्ञानि बिना॥ कहु न आवै हाथ॥
रामसी दोय जनां॥ येके के मनं येक राम॥ बेदाता
मुक्ति का॥ देयु मरावै राम॥ १४॥ कबीर बन बन
फिरया॥ कारन अपने राम॥ राम सरीषा जन मि
ले॥ तिन सारे सब काम॥ १५॥ कबीर सो दिन जिर
ना॥ जा दिन संत मिलाय॥ अंक भरे भरि भेटिये
पाप सरीरां जाय॥ १६॥ कबीर रांम रांम रटिबो कै
निसदिन साधन संग॥ कहो जो कौन बिचार तें न
होवै नहीं सतरंग॥ १७॥ मन दीया कहूं और ही तन
साधं के संग॥ कहै कबीर कोरी गजी कैसे लागे
रंग॥ १८॥ कबीर सा प्रिय बदन कु मुन्या मिठा
न मन का दाग॥ संगति मे सुध स्यान हीं ता का ब
ड भाग॥ १९॥ कबीर संगति साध की जो का रं जो
वै कोय॥ चंदन तें बन चंदन भया॥ आ सम न चंदम
होय॥ २०॥ कबीर चंदन के बिरे बेध्या ढाक पला
स॥ आप सरीषा करि लिया॥ जो होते उन पासि॥ २१॥
कबीर मलीयागर को बास मे॥ बिछ रहे सब मोय
कहे उन चंदन मारे॥ पेम लीपाउ रन दी होय॥ २२॥
कबीर मलीयागर को बास मे॥ बेध्या ढाक पलास॥
मन कबहु बेधीया॥ जो रहै उनी उग पास॥ २३॥ क
बीर मलीयागर के पेसो॥ सर पर है ल पटाय॥ संग
हे सबि सगीनी या॥ सुम न के हां सम माय॥ २४॥ कबी
र चंदन जैसे सु संत है॥ सरप जो सा संसार॥ ता के
लपटेयो रहे॥ जागे नहीं बिकार॥ २५॥ कबीर चं
दन के पासि मन मे॥ मति रहि गारे बरसा सुगर
र पे निगुर से॥ दूजा ग हरनर पंच दास॥ २६॥ कबीर
री की न्या भी यरो॥ जा हम न की मे जाय॥ मन संगति

पलटी मनसा मन काम कान षोय ॥१९॥ कबीर जा
पलटर मन साधका । तापल को हरि हारि । राम का
दरस नां बसे । तौ जे जन्म सुधा रि ॥२८॥ कबीर ते दिन
गये अकारथी । संगति भई न संत । प्रेम बिनां पसु
जीवना । भक्ति बिनां भगवंत ॥२९॥ कबीर जा घर मैं
भक्ति नहीं । संत नहीं सिक मांना । ता घरि जम डेरा दी
या । जीवत भये मसांना ॥३०॥ कबीर रिधि सिधि मागै
नहीं । हरि तुम पै मांगू एही । निति प्रति दरस न साध का
कहै कबीर मोहि देहो ॥३१॥ कबीर मेरा मन हैं मार मैं
हसा गगन निरहाय । ज्ञान न मांनै नहीं । फिरि गगन
फिरि जाय ॥३२॥ कबीर ता सो संग करि । जो रमै जे है रा
राजा राम भोछ च या तौ । राम बिनां वैको भाया ॥३३॥ कबी
र राम भुलावा मेलिया ॥ दीया कबीरे रोय । जो सुष माधु
संग मैं । सो बैकुंठ न होय ॥ ३४ ॥ कबीर षाइ कोट की । पा
नीपी वै न कोय । जाय परै जब गंग मैं । सब गंगोदिक है
य ॥३५॥ कबीर मन पंषी भया । मन मांनै तहां जाय । जो
जैसी संगति करै । सो तैसा फल षाय ॥ सुदिति ॥ ५८ ॥
॥ साधी ॥ ११२५ ॥ अथ साध को अंग ॥ कबीर जे नाम
ताबे लगा ॥ ते ता साधन जो निपद ली था हरि षाय के
नबहै देसी नां भिा ॥१॥ कबीर ऊजल देषिन धीजिये । ज्ञ
ग ज्यूं मांडै ध्यांन ॥ धोरे बैठि चपेटसी । यूं ले बूडै ग्यांन
॥२॥ कबीर भेष अतीत का । करतूति करै अपराध । बाहि
रि दीसै साध गति । मांही बडा असाध ॥३॥ कबीर बा
बी कूटै बावरे । सरप न मार्या जाय ॥ मूरष बावरे ना
डसै । सरप जगत को षाय ॥४॥ कबीर सो मन हूं धका
टप के कीया बिनां म हरि धका दि को जी भया ॥ करवा घ
न का नाम ॥ ५ ॥ कबीर रैनि दुरै बास र घुटे ॥ बनि

र सोधा कगुरु करतम्या॥ नैसां बह्यासं नेह
कबीर साधू आवत देखि कै॥ मन मैं करै मरोर
सो तौ होयगा चूहरा॥ बसै गांव कै ओर॥३॥ मा
वत साधन दरिसिया॥ ज्ञान दीया रे य॥ कहै
कबीर नाद मको॥ मुक्ति कहां तै होय॥४॥ कबी
र साधू भूषा भाव का॥ धन का भूषा नांहि॥ धन का
भूषा जे फिरै॥ सो तौ साधू नांहि॥६॥ कबीर सा
ध्यां पांडे नांहि॥ मांगै च्यारि रतन॥ धूंनी पानी
थरा॥ मरथ सेती अन्न॥७॥ कबीर खोजन मे
न प्रीत सुं॥ दो जै साधु हु लाय॥ तो वतन जस होय ज
गत मे॥ अन्त परमपद पाय॥८॥ कबीर हुं साधन
के संग रहौं॥ अन्त कहूं नही जांव॥ जो मोहि
र पैप्रीत सु॥ साधन मुख होय पाव॥९॥ कबीर सा
हमारी आत्मा॥ हम साधन का जीव॥ साधन मधे यु
रहौं॥ ज्युं पेस मधे घीव॥१०॥ कबीर ज्युं पेस मधे घीव है॥
त्युं रसिर ह्या सब ठौर॥ ब्रह्म नास रे तन बडु भिले
मथि काटै तै ज्योर॥११॥ साधन दीजत दुमर सम॥ तहां
पुस्ता लौ लाग॥ कहैं कबीर निरमल भया॥ साधजन
के संग॥१२॥ कबीर सोई दिन भला जा दिन साधु मि
लाय॥ अंक भरे भरि भेटिया॥ पाप सरीरां जाय॥१३॥
र॥ कबीर साध मिलै तौ हरि मिलै॥ सुहर हो नै रप
मान सावा वाक मना॥ साध न्याय लेय॥१४॥ कबीर

।साधनहीकोदेह्या।लषो
जोचाहैअलषकों।तोइनहीमैलषिलेह्।।१५।।क
बीरसाधनकेरीदया।हैं।छापजेवकुंतनआनेदा।।को
टिविघनपलमैंटरै।षमिटैयाकलषुषकुंदा।।१६।।सुष
देनाडुषमेटना।हरिकरनअपपराध।।कहैकबीर
वेकबमिलै।।परमसनेहीसाध।।१७।।कबीरहरिदर
बारीसाधहै।इनतैसबकछुहोय।।वेगिमिलावे
रांमकों।।देनैमिलैजोकोय।।१८।।कबीरसाधुषोजा
रांमका।धसैजोमहालांमांहि।।औरनकोंछुदाल
गोहनकोंछ्या नांहि।।१९।।कबीरघ्रिहीमेंवैसाध
कों।।साधसुमरैरांम।।यामेंषोषाकछुनहीं।।सरैदो
उकाकांम।।२०।।कबीरजाघरसाधनसेवहीं।।पार
ब्रह्मपतिनांहि।।तेघरमरहटसारषा।।भूतवसैत
मांहि।।२१।।कबीरसाधनकोंझूपरीभली।।नांसाक
टकोगांव।।चंदनकीसुकटीभली।।नांबबूलकी
बनराव।।२२।।कबीरगुरपटनसबसबमें।।ज्ञान
दगवैगवा।।रांमसनेहीबाहरा।।ऊजडमेरेगांव
२३।।कबीरहैगैगैवरसघनघन।।छत्रधजाफह
राय।।ताभुषतैंभिक्याभली।।जोहरिसुमरतदि
नजाय।।२४।।कबीरहैवरगैवरसघनघन।।छत्रप
पतीकीनारि।।तासुंपटतरनांतुलै।।हरि
जनकीपनिहारि।।२५।।कबीरक्यूंनृपनारीनिं

ह ॥ मांग्या कोउ हे कन स्यो ॥ नैसां वस्यो संनेह ॥ क
कबीर साधू आवत देषि के ॥ मन में करै मरोर
सो तो होयगा चूहरा ॥ वसै गांव के छोर ॥ ३ ॥ स्यो
वत साधन के हि सिषिया ॥ जान न दीया रेय ॥ कहै
कबीर ता दास को ॥ मुक्ति कहां तें होय ॥ ५ ॥ कबी
र साधू मुष ना चले ॥ धन का मुष मांहि ॥ धन का
मुष ते फिरै ॥ ते तो साधू नांहि ॥ ६ ॥ कबीर साध
आया पांहनें ॥ मांगे च्यारि रतन ॥ धूंणी पानी सा
थरा ॥ सरधा सेती अन्न ॥ ७ ॥ कबीर जो जन औ
न पीतसूं ॥ दो जै साधू लाय ॥ तो वह नंस होय ज
गत में ॥ अंत परम पद पाय ॥ ८ ॥ कबीर हंस साधन
के संग रहो ॥ अन्न कहूं नहीं मांग ॥ जो मोहि क
र पेषी नमः ॥ साधन मुष होय षाव ॥ ९ ॥ कबीर साध
हमारी आत्मा ॥ हम साधन का जीव ॥ साधन मधे यू
रहौं ॥ ज्यूं पै मधे घीव ॥ १० ॥ कबीर ज्यूं पै मधे घीव है ॥
यूं रमि रह्या सब ठौर ॥ बकता सरोता बहु मिले
मथि काढैं ते ओर ॥ ११ ॥ साधन दीजन दुम रस ॥ न हो
दुष्या लौ सूंग ॥ कहै कबीर निरमल भया ॥ साधन
के संग ॥ १२ ॥ कबीर सोई दिन भला ॥ जा दिन साध मि
लाय ॥ अंक भरे भरि भेटिया ॥ पाप सरीरां जाय ॥ १
३ ॥ कबीर साध मिले तो हरि मिले ॥ सो हरि हीनें रष
मान सरोवर ... ॥ साधन आपन लेय ॥ १४ ॥ कबीर

निराकार की आरती ॥ साधन ही की देह ॥ लषै
जो चाहै अलष कौं ॥ ईन्ह ही मैं लषि लेह ॥ १५ ॥ क
बीर साधन केरी रूपा है ॥ भय जैसे हैं नहि आनंद को
दिष्यन पल मैं टरै ॥ प्रेम ईश्वर कला भ उदा ॥ १६ ॥ सुष
देनो उपमेटना ॥ हरि करन न आपपराधा ॥ कहै कबीर
वे कह मिले ॥ राम सनेही साथ ॥ १७ ॥ कबीर हरि दर
बारी साध हैं ॥ ईन तैं सब कछु होय ॥ बेगि मिलावै
राम कौं ॥ ईनै मिलै जो कोय ॥ १८ ॥ कबीर साधु षी ज्या
राम का धूं ॥ सै जो महा ला माहि ॥ औरन कौं छूटा र
रै ईन कौ छूटा नांहि ॥ १९ ॥ कबीर ग्रिह ही मैं वे साधु
कौं ॥ साधु भी मरै रांम ॥ या मैं षोषा कछु नहीं ॥ सरै दे
ऊ कौ कांम ॥ २० ॥ कबीर जा घर साधन सेवही ॥ पार
ब्रह्म पति नांहि ॥ ते घर मरहट सारषा ॥ भूत बसै त
न माहि ॥ २१ ॥ कबीर साधन की झूपरी भली ॥ ना साक
ट को गांव ॥ चंदन की कुटकी भली ॥ ना बंबूल को
बन राव ॥ २२ ॥ कबीर दुरपट न सुष सब मैं ॥ ज्ञान
दगंधे गांव ॥ राम सनेही बाहरा ॥ ऊजर मेरे मांव
२३ ॥ कबीर है गै वर सघन घना ॥ छत्र धजा फह
राय ॥ ता सुष तैं भिष्या भली ॥ जो हरि सुमरत दि
न जाय ॥ २४ ॥ कबीर हैवर गैवर सघन घन ॥ छत्र
पती की नारि ॥ ता सुं पटतर नां तुलै ॥ [illegible]
पनिहारि [illegible]

अपनी संगति रै ॥ मिलि जु जिये अमृत ॥ ४८ ॥ कबी
र कहै मन कौं नहीं ॥ मन कै कैसनूं जांनि ॥ जेता हरि
कै नांम जे ॥ ते ता कंहू निं ॥ ४९ ॥ कबीर आ
साध करि है छिये ॥ आसा धन दषिये कोय ॥ ताकै
रहै हरि नहीं ॥ हांनि तसी कं होय ॥ ५० ॥ कबीर
रसव साध का करतन कौ जै कोनि ॥ जहूं उदि मसं
छमी ॥ आलस मैं निकहां नि ॥ ५१ ॥ कबीर दरसन सा
धकै ॥ माहि रआवै याद ॥ ले षा मैं सो ही घरी ॥ बा
की दिन बादि ॥ ५२ ॥ कबीर दरसन कौ जै साध का ॥
दिन मैं कई एक बार ॥ आसो जो का मेह ज्यूं बहुत
करे उपकार ॥ ५३ ॥ कबीर कई बार नहीं करि स
कै दोय बषत करि लेय ॥ कबीरा साधु दरसन कौ
लैद गान हीं देय ॥ ५४ ॥ दोय बषत नहीं करि सकै
दिन मैं करियै कै बार ॥ कबीरा साधु दरसन तें उत
रै भव जल पार ॥ ५५ ॥ ऐक दिनां नहीं करि सकै ॥ दू
जै दिन करि लेह ॥ कबीरा साधु दरसन तें ॥ पावै उत
म देह ॥ ५६ ॥ दूजै दिन नहीं करि सकै ॥ तीजे दिन
करि जाय ॥ कबीरा साधु दरसन तैं ॥ मोक्ष मुक्ति फ
ल पाय ॥ ५७ ॥ चौथे दिन नहीं करि सकै ॥ बार बार
करि जाय ॥ या मैं विलम न कीजिये ॥ कहै कबीर
समझाय ॥ ५८ ॥ बार बार नहीं करि सकै ॥ पाष
षि करि लेय ॥ कहै कबीरा संत सो ॥ जनम सुफल
करि लेय ॥ ५९ ॥ पाष पाष नहीं करि सकै ॥ मास मा

पायो याकै कछु नहीं ॥ ज्यूं कात्यूं भरपूर ॥१९॥ जिन
जैतौ कौ है भजन कौ ॥ तैं जैतौ कौ है ध्यांन ॥ भज
न भजन के मधि मैं ॥ सो कबीर मन मांन ॥२०॥ जै
जैतौ महापिगूढ है ॥ देजैतौ फिरि सोगहँत ॥ खी
न दीन के मधि मैं ॥ सो कबीर निज मंत ॥२१॥ क
बीर देख्यौ तौ दोजग जाकै ॥ देख्या मीमांहि
देख्या देख्या किम कूं देकैं ॥ मांहि बहै सब मांहि
॥२२॥ मांहि रहनां मैं दान मैं ॥ सन कुछ सहनां ना र
ज सब रखौर जगदीस कै ॥ मधि मैं बसै कबीर
॥२३॥ गुरू नहीं चेला नहीं ॥ नहीं मुरिद न हीं पीर
ऐसा नहीं इस्जा न हीं ॥ तौ मिलै ब्यादास कबीर
॥२४॥ हींदू [illegible] ठै देहोर ॥ मुसलमांन समातादा
स कबीर न हो थ्या वहां ॥ जहां दोन्यां को परवीन
॥२५॥ हींदू तुरक के बिच मैं ॥ मेरा नांम कबीर ॥ जीव
मुकतावन [illegible] कारमैं ॥ अवगति धरया सरीर [illegible] ॥२६॥
कबीर हींदू तुरक के बीच मैं ॥ मुबद के निर
बांन ॥ दुधनका दुम्तिकै स्त ॥ मैं रहता रह
मांनां ॥२७॥ हींदू म्या राम कहै ॥ मुसलमान
खुदाय ॥ कहै कबीर सो जीवता ॥ दोऊ कै मांग
न जाय ॥२८॥ कबीर हींदू क कैतो मैं नहीं ॥ मु
सलमान भी नांहि ॥ पांच तत्त का पूतला गैब

बैमांहि॥२०॥कबीरगैबीआयागैबतैहै
लगायाजैस॥उलटिसमानांगैबमैं॥तबक
रहैगाजैब॥२१॥कबीरगैबीलोगलीप
रै॥ज्यूंजगैबीकोइएक॥ज्यूंजगैबीकैतष॥
जाकेहिरदैबबेका॥२२॥कबीरज्यागैबोजीप
मुवा॥पीछेरह्यासुलाय॥मधिमांहिबासा
रै॥ताकौकालनखाय॥२३॥साचेकोईनम
हौ॥झूठकेस्यानहीजाय॥साचेझूठकेमधि
॥रह्याकबीरसमाय॥२४॥कबीरज्यूंतिका
लीनहोलनां॥ज्यूंतिकोमलीनज्युप॥ना
मलीनबरसनां॥ज्यूंतिकोमलीनधुप॥ज्यू
॥ ग॥६७॥साखी॥१२६५॥ज्यूंसमझकौअंग
ज्यूंग॥कबीरसमझैकौमेरीघनी॥ज्यूंसमझ
केनांहि॥हारनपाछैसमझका॥फिरफि
गोतांषहिं॥१॥कबीरसमझज्यासमझ्यापूछै
ज्यूंनसमझैसोमोन॥बोलेबडुलसमझाबै
तासौंजीबैकोन॥२॥कबीरसमझैसमझैएपै
ज्यूंनसमझेमबपेको॥समझ्यासोहीजानि
केहिरदैबबेका॥३॥कबीरकोटिसयू
छिमुपे॥कथैबिचारैलोप॥समझ्याघट
निपै॥रहैनबिकारनहोय॥४॥कब
जोषिपे॥समझिसमांनो

वदसुरतिकैअंतरै॥अलषसुरसनिरबां
न ८ कबीरदसतौलग्योतिइगौकमे॥उ
मकांकहौ अलेष॥सारसबदजांन्यानहीं॥अ
षेपदेसौनेष॥९॥कबीरकथतकथतज
गथाकिया॥थाकोमदैषलक॥देषतनजर
नआईया॥हारिकह्याअलेष॥१०॥कबीर
कथतकथतजगथाकीया॥गोईजोगुनग
न॥देषतनजरनआईया॥हारिकह्याबेह
न॥११॥कबीरबैचैनीजगराषीया॥साहिबनू
रनिनार॥आपरकेरबषतक॥बंदेकिसक
करेगेदीदार॥१२॥कबीरतीनलोकमवरां
मजपतहै॥जांनिमुक्तिकोधांम॥रांमकेउ
नमि द्रगटकीया॥तिनकहासुनायोनांम
॥१३॥ कबीरजगमेच्यारयूंरांमहै॥तीनरांम
बौहार॥चौथारांमनिजसारहै॥ताकाकरै
वचार॥१४॥कबीरऐकरांमदसरथघरि
डौलै॥ऐकरांमघटघटमेबोलै॥ऐकरांम
काशकलपसारा॥ऐकरांमत्रिगुनतें
न्यारा॥१५॥कबीरकौनरांमदसरथघरडो
लै॥कौनरांमघटघटमेबोलै॥कौनरांमक
मकलपसारा॥कौनरांमत्रिगुनतेंन्या
रा॥१६॥कबीरअकाररांमदसरथघरडो

निराकार घट घट मैं सो है ॥ ब्रिंद रांम कांम
कलप सारा लेम सब ही तें न्यारा ॥ १७ कबीर रां
सकल सूवना रहै ॥ तिन को नाही मांड ॥ जिने
साहिब संसार कीया ॥ सो किन हूं न जनम्या है
॥ कबीरजी की साषी माहैं ॥ ता को करि हू
सेव ॥ जो था या है सो मसकां ॥ तैन ही हमारा देव
॥ कबीर रहै निरालामां झते ॥ सकल मां
हि तिहि मांहि ॥ कबीर रांम षेतात सकौं ॥ इजा मै
सैना हि ॥२० कबीर सब घट माहि समाइया ॥ सो
साहिब नहीं होय ॥ सकल मांड मैं रमि रह्या
रा साहिब सो ए ॥ २१ कबीर साहिब मेरा एक
ही ॥ इजा कह्या न जाय ॥ इजा साहिब जो कहूं
तो साहिब घारारि साप ॥ २२ कबीर जाके
हि माथा नहीं ॥ नाही रूप के रूप ॥ पहुप
सते पातला ॥ ऐसा तत्त अनूप ॥ २३ कबीर
चारि कुं जीके भजन मैं ॥ भूलि परे सब संत
सौ रामु मरै ता मकं ॥ जाके गुजा न जानै न
कबीर तिब ठलम बूल जो जानै ॥ नाम
सौ जगदीस ॥ कै है कबीर जनम मैं मरे
हि धरन ही सीस ॥२५ कबीर जनम मरन
सूं रहै सहै ॥ मेरा साहिब सोय ॥ बलिहारी
ता पीव की जिन

मैं मेरा जो मंनि कै ॥ दूजी आपी नोस ॥१०॥ क
जो कछू कीया सो तुम कीया ॥ मैं कछू कीया नां
हि ॥ कहो कहा जो मैं कीया ॥ तुम ही थे मुझ मां
हि ॥११॥ कबीर कीया कछू न होत है ॥ अन
कीया ही होय ॥ कीया कछू ही होत तो करत
और न कोय ॥१२॥ कबीर जिसन हीं कीय जि
न ॥ जिसन जिन सब कीय ॥ दरसै नेरी मांई या
से टिन मकै कीय ॥१३॥ कबीर ये कछू ही नां
नहै रे कके मांही ॥ छिन लाय ॥ समरथ मेरा
मांईयां ॥ स्ना देहिं जगाय ॥१४॥ कबीर लोगु
नहीं राजन नहीं ॥ मन का कग कबीर ॥ ऐसा
म सूरथ मन तर ॥ नाहिं जगावै बीर ॥१५॥ कबी
तुम नों समरथ मांईयां ॥ दिट करि पकरो बां
हो ॥ धुर ही ले पंकज आवे हो ॥ जिन छाडो मंझ
मांहि ॥१६॥ कबीर समरथ थोरा के ये दे ॥ रथ
के देह पंक जाय ॥ मार ग मांहिन छोडिये ॥ पि
ब बिन बिरद लजाय ॥१७॥ कबीर हैन के बा
न बाघरी ॥ हैन तन धांदे स्याह ॥ नो दहू दि
स है फना फन करै ॥ समरथ पारि निबाहै ॥१८॥
कबीर घट समंझ लषि नाय रे ॥ तहै जो लहे
रियार ॥ दिन दरिया समरथ छिना कौ

लिये॥ सहज रहै समाय॥ बिषै क्रोध नैं निर
बिसर है॥ सबद न छ्या जाय॥७॥ कबीर सीत
लता नहीं॥ उपजै बूझ्या गियान॥ जिहि बै
संदर जग जल्या॥ सो मेरे उदक समान॥८॥
कबीर के सबदन बोलिये॥ सजन बिर चै
तीन॥ गंगाजल सीतल नया॥ उबनफोर॥
स्यातीन॥९॥ कबीर कागा काको धन हरै
को पेल कहा धन देय॥ जिभ्या कारन आ
पनो॥ जग अपनो करि लेय॥१०॥ कबीर जि
भ्या मैं अमृत बसै॥ जो कोइ जानै बोलि॥
बिषै बासिरक का कतरै॥ जिभ्या तनै हीलै
ला॥११॥ कबीर जिभ्या केर जिभ्या हूथा॥ जि
भ्या प्यारी जागि॥ जिभ्या सजन रलि मिलै
जिभ्या लागै आगि॥१२॥ कबीर सहज ते
राम कों निकै॥ सबर सदेष्या तोलि॥ सबर
समां हीं जीभ रस॥ जो कोई जानै बोलि॥
१३॥ कबीर बोलत तो अबोल है॥ जो कोई
जानै बोलि॥ हियै तराज तोलि कै॥ तब
मुष बाहरि बोलि॥१४॥ बो
के॥ बैठे जग संसारि॥ कहै कबीर वा
की॥ कब ह्रन आवै ॥
साषी॥२०५४॥

बीर कुमन जौ पूछौ समन कौ ॥ आसा मा
गै लोइ ॥ नांव बिहुंना जग मुवा ॥ कुमन
कहा तै होइ ॥ २५ ॥ कबीर बारी बारी आप
नी ॥ चले पियारे मित ॥ तेरी बारी जी बरा
नी रे आवै नित ॥ २६ ॥ कबीर माली आवत
देषि कै ॥ कलियां करी पुकार ॥ फूलै फूले
चुनि लिये ॥ कालि हमारी बार ॥ २७ ॥ कबी
र बादी आवत देषि कै ॥ तरवर करी पुका
र ॥ मेरे पात समै नहीं ॥ पंषी बसते आपार
॥ २८ ॥ कबीर फागुन आवत देषि कै ॥ बन रू
ना मन माहि ॥ ऊंची डारी पात था ॥ दिन दि
न पीरे थाहि ॥ २९ ॥ कबीर पात गेत रवर
सूं कहै ॥ बिलम न मानौ मोर ॥ आइ है निब
सतन कौ ॥ जेहां जो कै न हांतौ र ॥ ३० ॥ कबी
र तरवर पात सूं यूं कहै ॥ सुनौ पात ये क
बात ॥ या घर याही रीत है ॥ ये क आवत ये
क जात ॥ ३१ ॥ कबीर पात पुकारता यूं कहै
सुनि तरवर बनराय ॥ अबके बिछुरे ना
मिलौ ॥ दूरि पड़ैंगे जाय ॥ ३२ ॥ कबीर कहै
तन बाजार मैं ॥ कहां परी अबतौ हि जे
तन रवर रहीन जौं ॥ चल्यो जात है माहि ॥ ३३

कबीरपीपलपांनजरनीग्रांहुंसन्नादेकै
घेरि॥ग्राहीरसिबाहोयम्या॥त्र्यपनीत्र्यपनीबे
रा३४॥कबीरदौंदधीलाकरी॥गहीकरेपुक
रा॥मतिरमिपरौकुहारकै॥जारैइजीबार
॥३५॥त्र्यरछ्या॥दौंकरमाभ्रकरीकाया॥कुह
रकाला॥लाग्यो॥कबीरमेराबीरकुहारका
तमतिजारैमोहि॥एकदिनऐसाहोयगा॥मैंज
लूंगीतोहि॥३६॥कबीरजालनहारानीमुरा
दपजलावनहार॥हैहैकरतानीसुपे कान्हि
करूंपुकार॥३७॥कबीरजोऊगेसोत्र्याथवै
फूलैसोकुमलाय॥जोचिनेसोढहपरै॥जो
म्यासोमरिजाय॥३८॥कबीरजोपहरयासो
फाटिया॥ नावधरयासोजाय॥ कबीरसोह
ततह्या॥जोसतगुरदीयाबताय॥३९॥क
बीरजोपहरयासोफाटिया॥जोमायासोजोप
कबीरयासंसारमें॥ दीयाहीरहजोय॥४०॥
कबीरनिधडककैंगरांमबिन॥चेतनकै
पुकार॥एजतनजलकाबुदबुदा॥बिनस
तेनाहीबार॥४१॥कबीरपांनीकेराबुदबुद
ईसीमनखकीजाति॥देखतहीछिपजाहि
गे॥ज्यूंतारापरभाति॥४२॥कि   ९६२

हैं गोंविंद्र जथा जाय । जामैं मिष्टि है नौ मौ नाप
टै केवल केवल कुर स्वांनी कापु । तामें सू नंद
पछि वसायु । नौरंग नैन नन्या है जाइ । न्यू
कवल मधि षि पैं है षा ई । लौ पांस्यौ सु ऊप्ति निमा
षो । जामें मूल ग्यान मधि राषौ । सुरति कवल
का बूझि चित्तंना । छाडमपहिं मरा लूसे थांन
छौ । ऐसा मूल ग्यान गौहरां कें । ल्या दिल्ये तिक
रै टेलषां कें । इंसे प्रसे हिल्लि मिल्लि छैलै । ल्यापति
रै स्यौरन कें दैतै ॥ ११ ॥ विकट पंथ इव सुनौ हेम
रा । दौ प्रवन कै मधि है मारा । निलव वांनिग
हां लगी किवारी । इल कैसो दै सुष मंगरी ॥ १२
विकट पंथ विकट है गैला । दौ प्रवन कै मधि
है सैला । सिष हि सुमेर सुंनि कै ला सा । गंगम
पुरी का सुनि तेरा सा ॥ १३ ॥ तिल प्रवांनि मैं है नि
रहै नौ । पलपल परवै है सुष चै नौ । ग्यान सन
मधि सुरसनौ । तुम लहु मत जहां पैले कुरसनौ
॥ १४ ॥ विकट सिंध विकट नसु तांनां । कुल्ला दिके
लका दिक थांनां । सोलासैष जो जैन पहिचानि
या । जहां तिवैं नीनी जहर जरिया ॥ १५ ॥ पादहै मु
ननला इंमाई । लापरि सुरसि निसरनी लाई
कुल्ल रंड हि कादी ड हां जा । बडे बडे जोध्या सुपिछै

अउडोरिहैमा रगसंका॥ संख्यावीज जरै
ममटोका॥ जहांमो नमरोवर विंहबल लो
मा॥ विनां चंचमांनी चुगिहंमा॥ १९॥ हदम
जपरिहवंनदमांमे॥ संनहदनादगुंवेवजतो
मे॥ रगञ्जननजलाहलवांनी॥ निरखिछवि
मुनिंपैदिलवांनी॥ २०॥ लाहदीपमुनोंजवेसा॥
लजवझलाहलहोतहमेसा॥ मतरिपदंमजो
जनविमनारा॥ सिनिसिंनिजेदकंञ्जंन मारा
२१॥ जहांचिमञ्जनोहंमहै माही॥ घटमररिरि
वकिरनितयाही॥ चोवा जेदमनसुगनिवांमा मध्य
मोंरागंधिउमासा॥ २२॥ नीमदीपलीलंञ्जवांनां
जपतपञनीपरिक्रमा वांनां॥ जहांहंमञ्जुगनामु
जांहीं॥ गुरुगुजानलगावरिपांही॥ २३॥ गुमी
पदमजोजनप्रवांनां॥ तोलेकुंकाये हदउनमानै
हदमसुरिजतेजमरीमा॥ वेचेमचलमुनीरिष
धीरा॥ २४॥ सिंघचक्रमुकुतागलमुकेसी॥ धोडिम
पदमजडेसिरपोसी॥ तौरुगंजारकेलगीबुम
पिंकनफ्रोलाहीटंमवावासा॥ २५॥ कुंनिपीलवलो
क[illegible]रे॥ घोडिसमजाहंमपगधारे॥ कोमल
मनिमुकतैपरिमाला॥ सोमीअदमुलरुपविं
माला॥ २६॥ तोमसांनउजियारमांञ्ज॥ मध्यो

॥ कबीर है मनैं मया तो क्या हूवा ॥ मालय
रि च्यारि ॥ कप विकर्णा लपे हि कै ॥ औडनरी
रि ॥ कबीर नवनी नया तो क्या नया ॥ मुक्ति
ननतो हि ॥ पारथी पाहनतांह ॥ हिगमारघ्याहि
॥ कबीर नट किन बनि बहो लंघा ॥ नवैनै
हो नहि मोहा ॥ पैतो तबहीं तनबै ॥ चोनचोर
के मांहा ॥ कबीर के तसेवे रनवैठही ॥ जो
नहि पहिफल ॥ काल केपट हि रहैबसे मधुक
रनपे है फल ॥ कबीर कहां बना है बाहिनी
भी हियां सुकोम ॥ चाने छिपके ठक रै ॥ सारीजो
॥ कबीर छिनकपटी सबसू मिले मां
हि कपट सब तोरा ॥ पैक हर जनपे कसूर सीला
पीछे जौर ॥ कबीर न्हा गेड पनक नका प
हि बिम महि कोरा ॥ न्हा गेपीछे जौरसी ॥ संहिप
सुषबोरा ॥ छल्लांरा ॥ द्रैया ॥ मादी ॥ हरेथु ॥ कुष
महि पीकोन्तरा ॥ कबीर समदिष्टी सतगुरक
॥ करमकिया सबदहि ॥ नयाकजीपरायो
॥ कसौतिरमलसूर ॥ कबीर समदिष्टी
सतगुर कीया ॥ तर मगया सबदहि ॥ जाकोक
मन हो ॥ जामर ग्याहरूप हिया ॥ कबीर समदि
स्टी सतगुर किया ॥ दिया तो हि वाल स्यांन ॥

जहां देषूं तहां येक है॥ दूजा नांहि आंन॥३॥क
बीर समदि षी मनगुर किया॥ मेल्या नरम बिका
न॥ जहां देषूं तहां येक है॥ मादिब का दिदार॥४॥
कबीर समदि षी मनगुर किया॥ मन पाया बि
न राम॥ जो हम कूं दिन पाल्लनां॥ सो गया तुम्हारे कौं
संम॥ ५ कबीर समदि षी मनगुर किया॥ सीत
ल मन ता होइ॥ सबै जीव को आतमा॥ लषै येक
सी सोय॥६॥ अंग॥ २३॥ साषी॥ ३२०॥ अथ
हेतप्रीति कौ अंग॥ कबीर स्याम कमलने हेनमह
दूजा आलप सनेह॥ जब हो जल लंबि छू रे रात
बहोत्यो मैं देह॥१॥ कबीर हरि संतन जिन हे त
कीन्ह॥ करि हरिजन सूं हेत॥ माल मुलक कछु
रि देत है॥ हरिजन हरि ही देत॥२॥ कबीर जे
सी प्रीति कुटंम सूं॥ तैसी हरि सूं होइ॥ संत कब
रा पूंछ है॥ काज न बिगरे कोइ॥३॥ कबीर त
म प्रीति करि॥ जो नरका हैयारि बन का बी
ध न राचिये॥ दे मन लागै मारि॥४॥ कबीर तु
न बेन ते और इक बहे॥ प्रीति करै सब कोइ क
बीर प्रीति सों जानिये॥ ईन नैन्यारी होइ॥५॥
कबीर प्रीति बहोत संसार सै॥ नाना विधि
होइ॥ कन मप्रीति सो जानिये॥ हरिजन हरि सू है

संबदीखाय। आप्रांजमारैसबदपीव मोम
मराहूरसजाय॥ [illegible] मानमजिलामा
षीरनगरगम। कबावबेका। आवनब
द। सदगुरम लिदीव। [illegible] कबीरसबद
बैरैचरपरहरै। मैनचारैजाय बारामास
बिलावना। छुमैपैकैनाय॥ [illegible]
सहरनांस। चैनावलेदै। चरहंडेपहरै
बारामासबाराह। सगुलबाय। बिलोवैमा
धनकरै। ऐकनाय॥ वमेसूरकोपहिहट
उकासबरपबाचै। हिसकोठेचै॥ ७०
[illegible]
[illegible] कबीरसबतोसेमीहोरपा
री॥ मनन्मतिकिरमनकोन्ह। मरताकोनै
कासिदे। हाथिसिदे सनका॥ कबीरबै
लदमामाबाकिया। सबदसूनैमबकोर॥ जै
सनदेषितनीसगे। दोककलनामीहोई॥ २
कबीर [illegible] ऊमनकेतिकसी। चितहपि
ऐकबदेको। ननततमोपैपीवके। सहरहै
नैरहा॥॥ कबीरमनीजलनहैतिकसी॥ पा
वकासुहूरसमेह। सबदसूननजीहेनीकस्या
नलिनहै सबदेहा॥ कबीरमनीमरामना

या॥ तनमनकोयाघांन। दीयामनकोजाणीवं
मुहटकरेबधांन॥४॥ कबीरमतीबिचारी।
तकीया॥ कागेसेजबिक्राइ॥ जैसतीपीउ
आउना॥ चकुंदिसआगिलगाइ॥ दोकं
रमतीउकारेसलिचटी॥ हुलिरेमीतमस
ना॥ लोगबटाऊसबगया॥ हमउमरहेनिः
ना॥ कबीरमतीनदीसेपीसना॥ जोयीसेस
रांग। साधुजीबनमागही॥ जोमांगेसोमा:
आ॥ कबीरकेतोहिसूछहेसठी॥ जीवतक
नजटया॥ मूढापीछेमनकरे॥ जोबांनांबि
दलजाय॥ ५॥ कबीरमतीयाकेसतीया
जेरेमरेकीलार॥ सतीयांसोहीजानिहै॥
जेरेसजारिसेसारि॥१०॥ तोजा॥८०॥ साखी॥
॥२६५६॥ आथअथ्यापजकोअंग॥ कबीरकहि
तोइकहे। पढीयांपाजेष॥ जसजेससबहि
करि॥ सबहीमांहिलेष॥ ५॥ कबीरजेत
घटतेनामना॥ बहोबांनीबहोजेष॥ सबघ
आपकहेंइरह्या॥ सोहीआपअलेष॥२॥
कबीरपारब्रह्मसूजरया॥ दरीयारतप
बालकबिनामाली नहीं॥ सूहेजेनासचार
कबीरजाति जातिकेपाजेना॥ जातिजा